सन्तमत प्रकाश

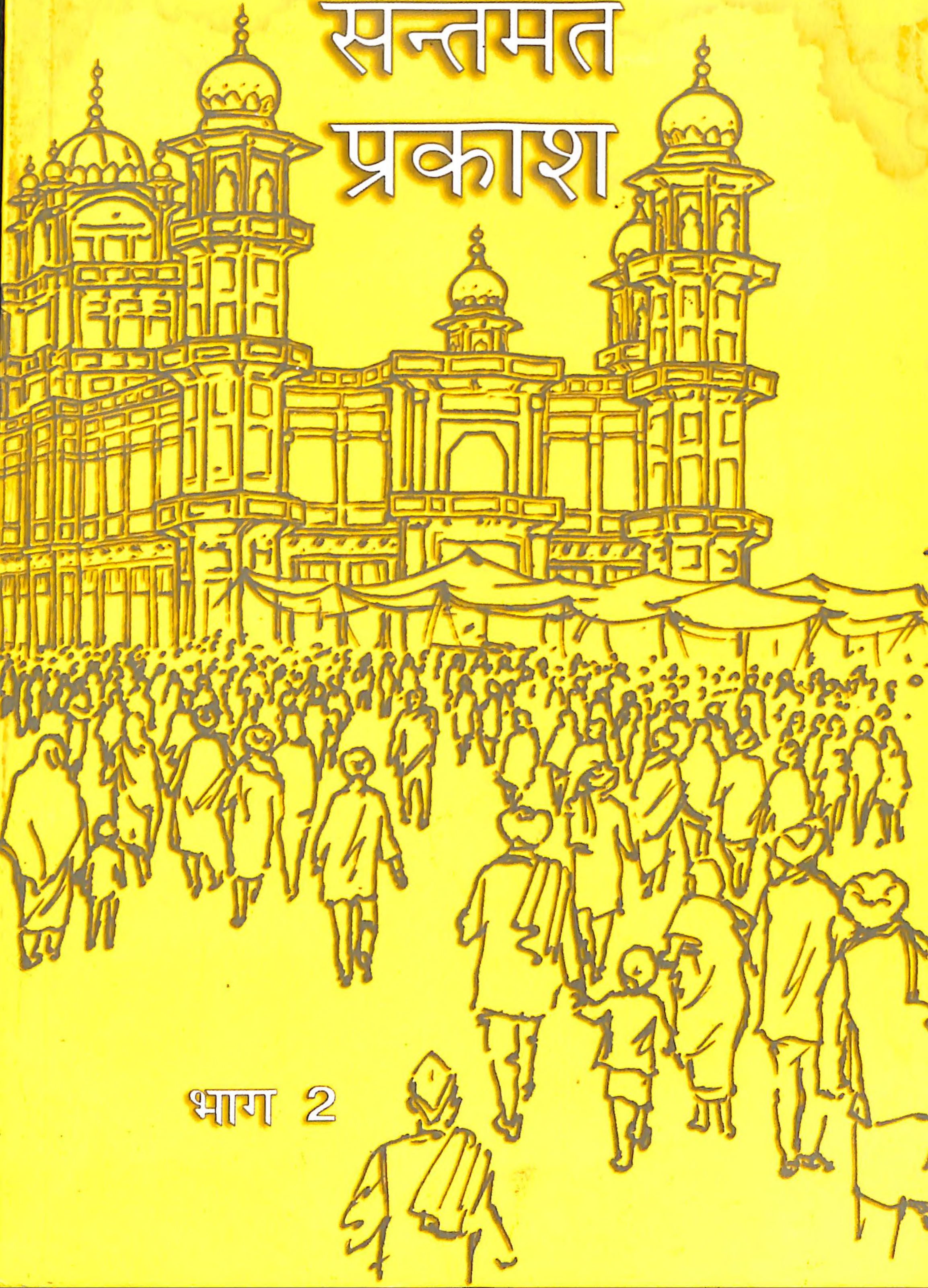

भाग 2

सन्तमत प्रकाश
भाग 2

सन्तमत प्रकाश
भाग 2

हुज़ूर महाराज सावन सिंह जी के
सत्संगों का संग्रह

राधास्वामी सत्संग ब्यास

प्रकाशक :
जे. सी. सेठी, सेक्रेटरी
राधास्वामी सत्संग ब्यास
डेरा बाबा जैमल सिंह
पंजाब 143 204

© 1966, 2007 राधास्वामी सत्संग ब्यास
सर्वाधिकार सुरक्षित पहला संस्करण 1966

पद्रहवाँ संस्करण 2007

मुद्रक: लक्ष्मी ऑफ़सेट प्रिन्टर्स

Published by:
J. C. Sethi, Secretary
Radha Soami Satsang Beas
Dera Baba Jaimal Singh
Punjab 143 204

© 1966, 2007 Radha Soami Satsang Beas
All rights reserved First edition 1966

Fifteenth edition 2007

14 13 12 11 10 8 7 6 5 4 3 2

ISBN 978-81-8256-745-0

Printed in India by: Lakshmi Offset Printers

सत्संग-सूची

प्रकाशक की ओर से		7
प्राक्कथन		9
पाठकों से निवेदन		13

शब्द	वाणी	पृष्ठ
1. निहचलु एकु सदा सचु सोई	गुरु अमर दास जी	15
2. जानै अंतरजामी अचरज अकथ अनामी	सन्त दादू दयाल जी	53
3. घर महि घरु देखाइ देइ	गुरु नानक देव जी	59
4. सतगुरु का नाम पुकारो	स्वामी जी महाराज	67
5. नामै ही ते सभु किछु होआ	गुरु अमर दास जी	117
6. गुरु कहें जगत सब अंधा	स्वामी जी महाराज	145
7. दरसनु भेटत पाप सभि नासहि	गुरु अर्जुन देव जी	165
8. गुरु कहें खोल कर भाई	स्वामी जी महाराज	183
9. इसु गुफा महि अखुट भंडारा	गुरु अमर दास जी	197
10. नाम निर्णय करूँ भाई	स्वामी जी महाराज	213
11. गुरू गुरू गुरु करि मन मोर	गुरु अर्जुन देव जी	249
12. सीस उतारै हाथ से	पलटू साहिब	255
13. तेरीआ खाणी तेरीआ बाणी	गुरु अमर दास जी	259
14. धन्य धन्य धन धन्य पियारे	स्वामी जी महाराज	271
15. होदै परतखि गुरू जो विछुड़े	गुरु राम दास जी	277
16. क्यों फिरत भुलानी जगत में	स्वामी जी महाराज	281
17. जिनि तुम भेजे तिनहि बुलाए	गुरु अर्जुन देव जी	285

18. हम संतन की रेनु पिआरे	गुरु अर्जुन देव जी	289
19. राम गुरु पारसु परसु करीजै	गुरु राम दास जी	293
20. स्रुति बुँद सिंध मिलाप	तुलसी साहिब	301
21. दुनीआ न सालाहि जो मरि वंञसी	गुरु अमर दास जी	311
22. गुरू गुरू मैं हिरदे धरती	स्वामी जी महाराज	331
23. मनु खिनु खिनु भरमि भरमि	गुरु राम दास जी	365
24. भगति पच्छ हठ करि रहेउँ	गोस्वामी तुलसीदास जी	371
25. घरि रहु रे मन मुगध इआने	गुरु नानक देव जी	395
सन्दर्भ-सूची		407
सन्दर्भ-ग्रन्थ		413
अनुक्रमणिका		415
हमारे प्रकाशन		421

प्रकाशक की ओर से

सन्तमत कोई धर्म या सम्प्रदाय नहीं है। यह धर्म, जाति और देश की मनुष्य के द्वारा बनायी हुई सीमाओं से परे है। यह आवागमन के चक्र से छूटकर परमात्मा से मिलने का व्यावहारिक मार्ग है। किसी भी जाति, देश या धर्म का व्यक्ति इसे अपना सकता है। परमात्मा हमारे अन्दर है, हमारा शरीर ही उसके रहने का स्थान है, सच्चा हरि-मन्दिर है, परन्तु लोग उसे बाहर जंगलों-पहाड़ों, नदियों-सरोवरों में ढूँढ़ते फिर रहे हैं। बाहर न वह कभी किसी को मिला है, न मिलेगा। उसे पाने के लिए हमें अपने अन्तर में जाना होगा। अन्तर में जाने का भेद केवल किसी पूर्ण सन्त या सतगुरु से ही प्राप्त हो सकता है। सन्त अपने सत्संगों में हमें बार-बार समझाते हैं कि मनुष्य-जन्म ही परमात्मा को प्राप्त करने का अमूल्य अवसर है। इस अवसर का लाभ उठाओ, जीते-जी अन्दर परदा खोलो और मुक्ति प्राप्त कर लो। यहाँ मौत के बाद का उधार नहीं है। यह जीते-जी मुक्ति प्राप्त करने का मार्ग है।

परम सन्त हुज़ूर महाराज बाबा सावन सिंह जी ने लगातार पैंतालीस वर्षों तक सन्तमत के इन सिद्धान्तों को अपने सत्संगों में सरल और बोलचाल की भाषा में समझाया है। आपके सत्संगों में उच्चकोटि के विद्वानों से लेकर साधारण किसान तक आते थे। आपकी वाणी को सुनकर सबकी जिज्ञासा शान्त होती थी, आपकी बात सबकी समझ में आती थी तथा सीधी अन्तर में उतर जाती थी। आपका हरएक शब्द अमृत की बूँद के समान था, जो संगत के दु:खी और तप्त हृदयों को शीतलता और शान्ति प्रदान करता था।

हुज़ूर महाराज जी के पवित्र सत्संगों का यह हिन्दी अनुवाद बहुत लोकप्रिय हुआ है। कुछ ही वर्षों में इसके कई संस्करण निकल चुके हैं। इसमें अनुवाद को फिर से देखकर सुधारा गया है। आशा है, पाठक इस पुस्तक का पठन और मनन करके लाभ उठायेंगे।

डेरा बाबा जैमल सिंह,
ज़िला अमृतसर (पंजाब)

एस.एल. सोंधी,
सेक्रेटरी,
राधास्वामी सत्संग ब्यास

प्राक्कथन

हुज़ूर महाराज जी के सत्संग आज भी मेरे कानों में गूँज रहे हैं। चालीस साल तक हज़ारों लोगों ने उन्हें संसार में सबसे बढ़कर माना। हुज़ूर के मुख से निकला हरएक लफ़्ज़, प्रत्येक शब्द, उनके शिष्यों का जीवन और प्राण ही बन गया। उनके सत्संग आनन्द-विभोर करते थे, प्रेरणा देते थे, लोगों के मन और अन्तर को मोह लेते थे, उनके सब प्रश्नों का उत्तर देते थे, उनकी हर ज़रूरत को पूरा करते थे। उनका हरएक शब्द एक अचूक मरहम था, जो संगत के दुःखी व तप्त हृदयों को शीतलता प्रदान करता था; हरएक शब्द अमृत की बूँद था, जो कि उनकी प्यासी आत्माओं को तृप्त करता था। बहुत बड़ी संख्या में संगत तल्लीन हो उन्हें सुनती थी। स्त्री, पुरुष और बच्चे अपने आप को भूलकर पूर्ण शान्ति के साथ बैठे रहते, उनके चेहरे रूहानी तेज, प्रेम और शान्ति से चमकते थे। वह एक कभी न भुलाया जा सकने वाला नज़ारा था। महाराज जी की गम्भीर और मीठी वाणी, सुननेवालों को अपने माधुर्य और मिठास से मोह लेती थी। प्रत्येक व्यक्ति आत्मिक चेतना, आन्तरिक स्फूर्ति और ताज़गी प्राप्त करता था।

इस पुस्तक में दिये गये सत्संग, विचारों में हृदय को छूनेवाले, ज्ञान में गहरे और रूहानियत से परिपूर्ण होते हुए भी इतने स्पष्ट व सरल, विवेकपूर्ण और अमल में लाने योग्य हैं कि इनमें कुछ भी घटाने, बढ़ाने या समझाने की गुंजाइश नहीं। ऐसा करना तो मानो सूर्य के सामने दीपक रखना होगा।

हर समय और हर देश के सन्तों ने वही एक सन्देश दिया है। सबने एक ही सत्य का उपदेश दिया है। उन सबने इसी बात पर ज़ोर दिया है

कि परमात्मा एक है और सभी मनुष्य आपस में भाई-भाई हैं। उनका सन्देश हमेशा ही प्रेम, दया और नम्रता का रहा है। वे नये धर्म और मज़हब बनाने नहीं आते, वे सांसारिक पदार्थों को पाने और लोगों या देशों पर अपनी सत्ता जमाने के लिए नहीं आते। वे हमें एक करने के लिए आते हैं, अलग-अलग टुकड़ों में बाँटने के लिए नहीं। उनका उद्देश्य मालिक के मिलाप के लिए तरसती आत्माओं को वापस अपने धाम ले जाना है, उन्हें ग़लत मार्ग पर चलाकर और भटकाना नहीं। वे मनुष्य को माया के भ्रम-जाल से निकालने के लिए आते हैं, इस दलदल में और फँसाने के लिए नहीं। उनका जीवन मेहनत और मुहब्बत, कर्म और भक्ति, सेवा और क़ुर्बानी का होता है। ग़रीबी, पवित्रता और परमार्थ उनके जीवन के साथी होते हैं।

उस एक परमात्मा में विश्वास सब धर्मों की बुनियाद है। वे, एक ही मंज़िल पर ले जानेवाले अलग-अलग रास्ते हैं। धर्मों की आत्मा वास्तव में एक ही है, केवल वह अनेक प्रकार के लिबासों में लदी हुई है। 'तूने अनेक रास्ते बनाये हैं, वे सब प्रकाश की ओर ले जाते हैं।' इसमें कोई शक नहीं कि उनके रीति-रिवाज, उनकी रूढ़ियाँ और शरीअतें, उनके नियम और संस्कार अलग-अलग हैं, परन्तु सत्य का सार, हक़ीक़त या रूहानी बुनियाद उन सबकी एक ही है, समान है। सन्त, जो कि मालिक के प्यार में लीन रहते हैं, धर्मों के बाहरी रूपों और रिवाजों को छोड़कर सच्चे आन्तरिक धर्म को अपनाते हैं। वे छिलके को त्यागकर मगज़ या गिरी को ग्रहण करते हैं। वे निर्मल और ख़ालिस रूहानियत का उपदेश देते हैं, क्योंकि बाहरी विभिन्नता या फ़र्क़ हमें एक-दूसरे से अलग करते हैं, पर आन्तरिक आत्मिक एकता का तार हम सबको जोड़कर एक कर देता है। 'दृष्टि का लक्ष्य एक ही है, पर दृष्टिकोण अलग अलग हैं। इसी प्रकार हक़ीक़त एक ही है, पर हम उसे अलग-अलग निगाहों से देखते हैं।' इस बुनियादी आन्तरिक एकता का पूर्ण ज्ञान ही हमें एक स्तर या सतह पर मिलाने में सहायक होगा और कट्टरता, असहिष्णुता तथा आपसी झगड़ों से परेशान संसार को शान्ति प्रदान कर सकेगा।

इस बात से कोई इनकार नहीं कर सकता कि परमात्मा एक है, उसी ने संसार की रचना की है, कि हम केवल मालिक से मिलकर ही मुक्ति प्राप्त कर सकते हैं, कि मालिक उजाड़ों, पहाड़ों और गुफाओं में नहीं रहता, बल्कि उसका निवास हमारे अन्तर में है, कि उसके मिलाप के लिए मनुष्य को शरीर में खोज करनी चाहिए, कहीं बाहर नहीं, न बाहर उसे किसी ने पाया है और न कभी बाहर उसे कोई पा सकेगा।

सब मंजूर करते हैं कि मनुष्य और परमात्मा के बीच में मन का परदा है, जिसने मनुष्य को अन्धा कर रखा है और जिसको हटाने पर ही परमात्मा के दर्शन हो सकते हैं। मन, इन्द्रिय-सुखों तथा विषय-भोगों में डूबा हुआ है। वह इनसे तभी हटाया जा सकता है, जब उसे कोई ऐसी वस्तु मिले, जो बहुत ऊँची, मीठी, महान् और दिव्य हो। सन्त कहते हैं कि वह 'वस्तु' है दिव्य-धुन, शब्द, कलामे-इलाही, होली घोस्ट, वर्ड, लोगॉस या नाम जो कि तीसरे तिल में निरन्तर धुनकारें दे रहा है। यह तीसरा तिल वह स्थान है, जहाँ सबका दाता दात दे रहा है, जहाँ अमृत बरस रहा है। इस नुक़्ते या केन्द्र पर हमें शरीर की चेतनता को समेटकर लाना या स्थिर करना है और फिर उसे निरन्तर गूँजनेवाली उस सर्वव्यापी सत्ता के दायरे में लाना है। तभी हम परमात्मा को पा सकेंगे।

इस कार्य के लिए न मज़हब बदलने की ज़रूरत है, न रोज़गार या व्यवसाय बदलने की और न कोई ख़ास प्रकार के लिबास या भेष धारण करने की। इस मार्ग पर जवान भी आसानी से चल सकते हैं, बूढ़े भी। सन्त मनुष्यों को कायर नहीं बनाते। अपने पास आनेवालों को वे निश्चित सुझाव देते हैं कि अपने माता-पिता, परिवार और बच्चों, मित्रों व रिश्तेदारों तथा दीन-दुखियों के प्रति अपने कर्तव्य निबाहें। जो मालिक से प्यार करते हैं, वे उसकी सृष्टि से भी प्यार करते हैं। आत्म-समर्पण परमात्मा के मिलाप की कुंजी है। यह निर्बल को बल, जिज्ञासु को रूहानी दृष्टि, प्रेमी को प्रियतम, भक्त को भगवान्, सेवक को सुख, पापी को पवित्रता, बँधे हुओं को आज़ादी और नश्वर मनुष्य को अमरता प्रदान करता है।

हुज़ूर महाराज जी ने अपने सत्संगों में बड़ी सरलता और स्पष्टता के साथ इन विषयों तथा परमार्थ की अन्य बातों को समझाया है। उन्होंने परमात्मा को अपने अन्तर में ढूँढ़ने और उसे अभी, इस जीवन में प्राप्त करने का अमली तरीका हमें बताया है। मुझे आशा है कि सच्चे जिज्ञासु इस पुस्तक से लाभ उठायेंगे।*

उसका प्यार बिलकुल ही अवर्णनीय है, मैं कैसे उसका वर्णन करूँ?

—चरन सिंह

* हुज़ूर महाराज बाबा सावन सिंह जी के सत्संगों के अंग्रेज़ी संग्रह की भूमिका से हिन्दी अनुवाद।

पाठकों से निवेदन

हिन्दी पाठकों में यह बात देखने में आती है कि वे गुरुबाणी का शुद्ध उच्चारण नहीं कर पाते हैं, क्योंकि गुरुबाणी में शब्दों के अन्त में ह्रस्व इ (ि) और ह्रस्व उ (ु) का जो प्रयोग है, वह हिन्दी में प्रचलित नहीं है। देखने में यह व्यर्थ-सा जान पड़ता है परन्तु गुरुबाणी में शब्द के अन्त में लगने वाले इन स्वरों का अर्थ की दृष्टि से एक विशेष महत्त्व है।

गुरुबाणी को पढ़ते समय प्रायः इन स्वरों का उच्चारण नहीं किया जाता। जैसे आदि ग्रन्थ के आरम्भ में आये शब्द 'सतिनामु' का उच्चारण 'सतनाम' ही होता है। उदाहरणार्थ:

> कामु क्रोधु परहरु पर निंदा॥ लबु लोभु तजि होहु निचिंदा॥
>
> —आदि ग्रन्थ, पृ. 1041

उपरोक्त पंक्तियाँ पढ़ते समय इसका उच्चारण इस प्रकार किया जायेगा:

> काम क्रोध परहर पर निंदा॥ लब लोभ तज हो निचिंदा॥

इसी प्रकार:

> अंतरि बाहरि सो प्रभु जाणै॥ रहै अलिपतु चलते घरि आणै॥
>
> —आदि ग्रन्थ, पृ. 1042

इसका उच्चारण इस प्रकार होगा:

> अंतर बाहर सो प्रभ जाणै॥ रहै अलिपत चलते घर आणै॥

इसलिए हिन्दी पाठकों से निवेदन है कि बाणी का पाठ करते समय शब्द के अन्त में आनेवाले इन ह्रस्व इ (ि) और ह्रस्व उ (ु) का उच्चारण न करें।

—प्रकाशक

मारू महला 3

निहचलु एकु सदा सचु सोई॥ पूरे गुर ते सोझी होई॥
हरि रसि भीने सदा धिआइ निगुरमति सीलु संनाहा हे॥ 1॥
अंदरि रंगु सदा सचिआरा॥ गुर कै सबदि हरि नामि पिआरा॥
नउ निधि नामु वसिआ घट अंतरि छोडिआ माइआ का लाहा हे॥ 2॥
रईअति राजे दुरमति दोई॥ बिनु सतिगुर सेवे एकु न होई॥
एकु धिआइनि सदा सुखु पाइनि निहचलु राजु तिनाहा हे॥ 3॥
आवणु जाणा रखै न कोई॥ जंमणु मरणु तिसै ते होई॥
गुरमुखि साचा सदा धिआवहु गति मुकति तिसै ते पाहा हे॥ 4॥
सचु संजमु सतिगुरू दुआरै॥ हउमै क्रोधु सबदि निवारै॥
सतिगुरु सेवि सदा सुखु पाईऐ सीलु संतोखु सभु ताहा हे॥ 5॥
हउमै मोहु उपजै संसारा॥ सभु जगु बिनसै नामु विसारा॥
बिनु सतिगुर सेवे नामु न पाईऐ नामु सचा जगि लाहा हे॥ 6॥
सचा अमरु सबदि सुहाइआ॥ पंच सबद मिलि वाजा वाइआ॥
सदा कारजु सचि नामि सुहेला बिनु सबदै कारजु केहा हे॥ 7॥
खिन महि हसै खिन महि रोवै॥ दूजी दुरमति कारजु न होवै॥
संजोगु विजोगु करतै लिखि पाए किरतु न चलै चलाहा हे॥ 8॥
जीवन मुकति गुर सबदु कमाए॥ हरि सिउ सद ही रहै समाए॥
गुर किरपा ते मिलै वडिआई हउमै रोगु न ताहा हे॥ 9॥
रस कस खाए पिंडु वधाए॥ भेख करै गुर सबदु न कमाए॥
अंतरि रोगु महा दुखु भारी बिसटा माहि समाहा हे॥ 10॥
बेद पड़हि पड़ि बादु वखाणहि॥ घट महि ब्रहमु तिसु सबदि न पछाणहि॥

गुरमुखि होवै सु ततु बिलोवै रसना हरि रसु ताहा हे ॥ 11 ॥
घरि वथु छोडहि बाहरि धावहि ॥ मनमुख अंधे सादु न पावहि ॥
अन रस राती रसना फीकी बोले हरि रसु मूलि न ताहा हे ॥ 12 ॥
मनमुख देही भरमु भतारो ॥ दुरमति मरै नित होइ खुआरो ॥
कामि क्रोधि मनु दूजै लाइआ सुपनै सुखु न ताहा हे ॥ 13 ॥
कंचन देही सबदु भतारो ॥ अनदिनु भोग भोगे हरि सिउ पिआरो ॥
महला अंदरि गैर महलु पाए भाणा बुझि समाहा हे ॥ 14 ॥
आपे देवै देवणहारा ॥ तिसु आगै नही किसै का चारा ॥
आपे बखसे सबदि मिलाए तिस दा सबदु अथाहा हे ॥ 15 ॥
जीउ पिंडु सभु है तिसु केरा ॥ सचा साहिबु ठाकुरु मेरा ॥
नानक गुरबाणी हरि पाइआ हरि जपु जापि समाहा हे ॥ 16 ॥[1]

सत्संग के बचन

यह बात विचार करने योग्य और समझने योग्य है कि जब तक हमें वह परमेश्वर, वाहिगुरु या अकालपुरुष नहीं मिलता, तब तक हम किसके साथ प्यार करें, किस के साथ मुहब्बत करें और किसकी पूजा करें? इस मक़सद को पाने के लिए आप सारी दुनिया को सामने रखो। दुनिया पाँच तत्त्वों की बनी हुई है—मिट्टी, पानी, आग, हवा और आकाश—और इनकी पाँच ही क़िस्में हैं। पहली वह जिसमें एक तत्त्व प्रबल है, बाक़ी चार तत्त्व भी हैं, मगर नाममात्र। अगर मन भर साग को सुखायें तो शायद चार-पाँच सेर रह जाये, क्या, पैंतीस-छत्तीस सेर पानी था जो कि उड़ गया, बाक़ी कुछ मिट्टी भी है, आग भी है, हवा भी है। डॉक्टरों ने साबित किया है कि कई सब्ज़ियों में पचानवे प्रतिशत पानी होता है। आगे आ गयी दूसरी जमात (क़िस्म)। वह कौन-सी है? कीड़े-मकोड़े, इनमें छिपकली, बिच्छू, चूहे, साँप वग़ैरह शामिल हैं। इनमें दो तत्त्व प्रबल हैं—आग और हवा। इनको पानी की ज़रूरत नहीं। मैं जब नौकरी में था, मुझे ऐसे-ऐसे जंगलों में काम पड़ा जहाँ पर बीस-बीस मील तक पानी नहीं मिलता था,

मगर छिपकली, बिच्छू, चूहे, साँप वग़ैरह सारे ही जीव देखे। मैंने उन्हें कभी बीस मील पार तालाबों या नदियों में पानी पीने के लिए जाते नहीं देखा। वे अपने लायक़ पानी सब्ज़ियों में से निकाल लेते हैं। इन सभी में ज़हर होता है, ख़ासकर उन जंगलों के साँप-बिच्छू का काटा हुआ आदमी इतनी जल्दी मर जाता था कि पानी भी नहीं माँग सकता था। तीसरी जमात में तीन तत्त्व प्रबल हैं—आग, हवा और पानी। वह कौन-सी है? पक्षियों की। चौथी 'क्लास' कौन-सी है? पशुओं की, इनमें आकाश तत्त्व की कमी है, बाक़ी चार तत्त्व-आग, हवा, मिट्टी और पानी—पूरे हैं। आदमी में पाँचों तत्त्व पूर्ण हैं।

अगर सारी दुनिया में कोई उत्तम और श्रेष्ठ जन्म है तो वह आदमी का है। हमारे वेद-शास्त्र कहते हैं कि देवी-देवता भी (जिनकी हम पूजा करते हैं) मनुष्य-जन्म के लिए तरसते हैं। मुसलमान कहते हैं कि आदमी को सभी फ़रिश्तों ने सजदा किया है। अगर पाँच तत्त्वों वाला आदमी एक तत्त्व वाले पत्थर की पूजा करे तो वह क्या बनेगा? पत्थर। मिसाल के तौर पर, अगर कोई बादशाह के नौकर की सेवा करे तो वह नौकर उसको क्या बना देगा? नौकर। इसी तरह, अगर आदमी चेतन होते हुए जड़ की पूजा करे तो वह जड़ वस्तु उसे क्या बनायेगी? जड़। पीपल, तुलसी और अन्य पेड़, मतलब कि जितने एक तत्त्व वाले जीव हैं, वे हमारी पूजा के योग्य नहीं। बाक़ी रही दूसरी जमात कीड़ों आदि की—कीड़ों में दो तत्त्व प्रबल हैं। हमारे अन्दर पाँच तत्त्व हैं, इसलिए वे भी पूजा के योग्य नहीं। तीसरी जमात पक्षियों की है। वे भी पूजा के योग्य नहीं, क्योंकि उनमें तीन तत्त्व प्रबल हैं और आदमी में पाँच तत्त्व। चौथी जमात पशुओं की है। वे भी पूजा के योग्य नहीं क्योंकि उनमें चार तत्त्व हैं और आदमी में पाँच तत्त्व।

केवल आदमी में ही पूरे तत्त्व हैं। आदमी से बढ़कर और कोई पूजा के योग्य नहीं। चार्वाकों* (नास्तिकों) के सवालों का जवाब आज तक

* आत्मा, परमात्मा, परलोक में विश्वास नहीं रखनेवाले, ये भौतिकवादी 'खाओ, पियो, जीओ' के जीवन-दर्शन को मानते हैं।

किसी ने नहीं दिया। सभी मज़हबों के मुखियाओं को सम्बोधित करके वे कहते हैं कि जो तुम्हारा परमेश्वर है, दिखाओ! वह कहाँ है? उनका दावा है कि परमात्मा है ही नहीं। इसी तरह देव समाज जैसे मत को माननेवालों से पूछो, वे भी कहते हैं कि परमात्मा है ही नहीं।

अब परमेश्वर मिला नहीं, दूसरा वह इन आँखों से देखने-दिखाने वाली चीज़ नहीं। आदमी, आदमी की (जब कि वे बराबर-बराबर हैं) पूजा नहीं करता, क्या किया जाये? तो सन्त कहते हैं कि जिस तरह एक तार कलकत्ता, बम्बई या किसी और शहर के साथ जुड़ा हुआ है, उसके सिरे पर दो यन्त्र होते हैं जिन्हें बैट्री भी कहते हैं। उस तार का जिस-जिस शहर से सम्बन्ध है, वहाँ-वहाँ एक बैट्री ख़बर लेती है और एक ख़बर देती है। अगर उस कमरे में दस-बीस बैट्रियाँ ऐसी पड़ी हों जो कि उस तार से नहीं जुड़ी हों तो क्या वे ख़बरें लेंगी? हरगिज़ नहीं। इसी तरह जो महात्मा कमाई करके, परदा खोलकर अन्दर रूहानी मण्डलों पर जाते हैं, मालिक से बात करते हैं, उनकी बैट्री का तार मालिक के साथ जुड़ा हुआ है। हम ऐसे महात्मा के पास क्यों जाते हैं? इसलिए कि उनकी बैट्री जुड़ी हुई है, हमारी भी जोड़ दें।

हम चाहे उसे उस्ताद कह दें, गुरु कह दें या कुछ और, मगर वह नहीं कहता कि मैं गुरु हूँ, बल्कि कहता है कि मैं सेवादार हूँ। गुरु अर्जुन साहिब ने कहाँ कहा है कि मैं गुरु हूँ? बल्कि वे तो कहते हैं:

> कहु नानक हम नीच करंमा॥ सरणि परे की राखहु सरमा॥[2]

गुरु राम दास जी कहते हैं:

> नानकु गरीबु ढहि पइआ दुआरै हरि मेलि लैहु वडिआई॥[3]

उनका फ़रमान तो केवल यह है कि ऐ शिष्य, तू एक बार परदा खोलकर हमारे साथ अन्दर चल तो सही! जब अन्दर हमारी हैसियत देखेगा तब जो मर्ज़ी हो कह लेना। जब तक हमें परमेश्वर नहीं मिलता, हमारी पूजा के योग्य केवल वही महात्मा है जो अन्दर जाता है। खण्ड-ब्रह्माण्ड,

ईश्वर-परमेश्वर, सभी हमारे अन्दर हैं, बाहर से किसी चीज़ को लाने की ज़रूरत नहीं। सतगुरु और कुछ नहीं करता, सिर्फ़ आपकी रूह को उस शक्ति के साथ जोड़ देता है। सतगुरु यह नहीं कहता कि आप अकेले जाओ, बल्कि जब आप नौ दरवाज़ों को छोड़कर, दसवीं गली में चढ़ो, उससे भी आगे चढ़ो, वह हर मंज़िल पर साथ है। फिर वह यह भी नहीं कहता कि काम-काज छोड़ दो बल्कि घर-बार, बाल-बच्चों में रहकर अपना काम-काज करते हुए परदा खोलो और देखो कि तुम कौन हो। वह तो दोनों हाथों में दात लिये खड़ा है। आप देखते हो कि महात्मा इतना कहता भी है, मगर हम नहीं मानते। वजह यह है कि मन हमारा दुश्मन है, जो अन्दर नहीं जाने देता। हमारी रूह जन्मों-जन्मों से मन की दासी बनी हुई है। हम मन के कहे खाते, मन के कहे पीते, मन के कहे रिश्ते-नाते और अन्य सभी काम करते हैं। रूह मन के अधीन है। आप कहोगे कि मन जड़ है और रूह चेतन। रूह मन के अधीन कैसे हो सकती है? सुनो! जिस तरह अमर बेल होती है, उसकी अपनी जड़ नहीं होती, वह पेड़ पर पैदा होती है, पेड़ पर बढ़ती है और आख़िर पेड़ को ही सुखा देती है, इसी तरह हमारा हाल है, चेतन आत्मा जड़ मन के द्वारा सुखाई हुई है।

निहचलु एकु सदा सचु सोई॥ पूरे गुर ते सोझी होई॥

यह तीसरी पातशाही, श्री गुरु अमर दास जी महाराज की बाणी है। बाणी का एक-एक लफ़्ज़ करोड़-करोड़ रुपयों का है। हमें सुनकर विचार करना चाहिए और अपने आप को बाणी के अनुसार चलाना चाहिए। ऐसा न हो कि हम सत्संग में बैठे हों, पर हमारा मन बाज़ारों में, खेतों में या कहीं और जगह फिरता हो, बल्कि ध्यान के साथ सुनें और घर जाकर विचार करें कि जो कुछ बाणी कहती है हम उस पर चलते हैं या नहीं। अगर चलते हैं तो वाह वाह, अगर नहीं चलते तो चलना चाहिए।

अब कहते हैं कि सारी दुनिया का परमेश्वर एक ही है। यह नहीं कि हिन्दुओं का और है, मुसलमानों का और, सिक्खों और ईसाइयों का और है, बल्कि वह परमात्मा सबका साँझा है।

परमात्मा, परमात्मा है। वह चोरों के भी अन्दर है, ठगों के भी और बदमाशों के भी। इसी तरह वह हिन्दुओं, मुसलमानों, ईसाइयों, यहूदियों, मतलब कि हरएक आदमी के अन्दर है, मगर दुनिया को ख़बर नहीं, क्योंकि आँखों के पीछे परदा डालकर हम सबको बाहर निकाला हुआ है। इसको (आदमी को) पता नहीं कि मेरे अन्दर क्या सामान है। जिस तरह विद्या की ताकत हरएक तालिब-इल्म (विद्यार्थी) के दिमाग़ में है, मगर जो स्कूल जाता है वह तालीम हासिल करके बी. ए., एम. ए., डॉक्टर और इंजीनियर बन जाता है। जो स्कूल नहीं जाता वह कुछ भी नहीं बनता। विद्या की ताकत उसके दिमाग़ में भी है, मगर उसने उसका फ़ायदा नहीं उठाया।

जिस तरह किसी के घर करोड़ रुपया दबा हुआ हो मगर वह उसे खोदकर न निकाले, बल्कि बाहर कौड़ी-कौड़ी माँगता मर जाये, वह ख़ाली आया और ख़ाली ही चला गया। अगर खोदता तो मालामाल हो जाता। इसी तरह वह ख़ुदा, परमेश्वर हमारे अन्दर है, अगर हम अन्दर नहीं खोजते तो ख़ाली आये और ख़ाली चले जायेंगे। अब सवाल पैदा हुआ कि वह अकालपुरुष, जो सारी दुनिया का एक ही है, उसका पता कहाँ से लगा? कहते हैं—गुरु से। जिस तरह विद्या का पता उस्ताद से लगता है, इसी तरह, जब हम किसी कामिल फ़क़ीर के पास जायेंगे, वह अन्दर का रास्ता बतायेगा। जब हम उसकी हिदायत के मुताबिक़ कमाई करेंगे तो वह परमेश्वर अन्दर मिल जायेगा।

परमेश्वर न वेदों में है, न शास्त्रों में, न ग्रन्थों में। अगर किताबों में होता तो सबसे पहले गुरुद्वारों के भाइयों और मसजिदों के मौलवियों को मिलना चाहिए, मगर ऐसा तो नज़र नहीं आ रहा और जब तक वह न मिले, हमारा जन्म-मरण ख़त्म नहीं हो सकता। हमने मन के कहे लगकर कभी नरकों में, कभी स्वर्गों में और कभी चौरासी में ठोकरें खाईं। सो, गुरु अमर दास जी कहते हैं कि ऐ पुरुष! अगर तू जन्म-मरण ख़त्म करना चाहता है तो किसी पूरे गुरु, कामिल मुर्शिद के पास जा, वह तुझे अन्दर

जाने का रास्ता देगा, तू कमाई करके परदा खोलकर परमेश्वर से मिल जायेगा, परमेश्वर-रूप हो जायेगा।

हरि रसि भीने सदा धिआइनि गुरमति सीलु संनाहा हे॥

कहते हैं कि जो नाम के रंग में रँगे गये, जिन्हें नाम की लज़्ज़त आ गयी, मुर्शिद की तालीम को अपना लिया, जो मुर्शिद के अधीन हो गये, उनको कोई फ़िक्र नहीं। शील का अर्थ है 'जत' यानी संयम, 'पाकदामनी'। 'संनाहा' कहते हैं कवच को जो एक लोहे का कोट होता है ताकि गोली का असर न हो। अन्दर रेशम की कई तहें होती हैं। लड़ाई के वक़्त उसे बादशाह या वज़ीर अक्सर पहनते थे। फ़ारसी में उसे ज़िरह बख़्तर कहते हैं। जो नाम है, वह कवच है, जो शील है, मुर्शिद की ढाल है। जिसके पास ये दो चीज़े हैं, उसे कोई ख़ौफ़ नहीं।

जिस वक़्त गोपीचन्द गोरखनाथ के पास जाकर योगी बना, गोरखनाथ ने सोचा, यह राजा है, क्यों न इसकी मान-बड़ाई को निकाल दें। यह सोचकर गोरखनाथ ने कहा, "पुत्र, पहले अपने शहर (राजधानी) में जाकर भिक्षा माँग।" जब माँगने गया, जो पैसा देनेवाला था उसने रुपया दिया। क्यों? क्योंकि यह हमारे शहर का राजा है। जब अपने घर आया तो रानियों ने सोचा कि राजा तो योगी हो गया है, हमें हार-शृंगार क्या करना है? उन्होंने सारा हार-शृंगार योगी की झोली में डाल दिया। माँ ने देखा कि इसने दौलत के ढेर फिर इकट्ठे कर लिये, इन्हें ही तो छोड़कर गया था, यह फिर फँस जायेगा। यह योगियों के आगे जाकर रखेगा और योगी खा जायेंगे, इसके पास कुछ नहीं रहेगा। जब माँ के पास आया तो उसने कहा, "हे योगी! देख तू त्यागी है, अब गृहस्थी नहीं। तू मेरे दरवाज़े पर माँगने आया है। मेरा अधिकार है कि मैं तुझे जो मर्ज़ी ख़ैरात दूँ। मेरी तीन बातें याद रखना। एक, अच्छे से अच्छा खाना खाना; दूसरा, अच्छे से अच्छे बिस्तर पर सोना; तीसरा, मज़बूत से मज़बूत क़िले में रहना।" कहता है, "अगर कोई और होता तो मैं उसे बताता। तू मेरी

माँ है, तेरे कहने से ही मैं योगी बना हूँ, ये तीनों चीज़ें ही मेरे उसूल के ख़िलाफ़ हैं।''

माँ ने कहा, ''पुत्र, तू नहीं समझा। आ, मैं तुझे समझाऊँ। पहली बात यह है कि तू भूखा रहना, जब भूख ज़बरदस्त हो जाये तो बासी से बासी और निकम्मा (बेस्वाद) खाना भी अच्छा लगता है। तू उस वक़्त खाना खाना। बाक़ी अभ्यास में जागते रहना। जब नींद सख़्त तंग करे, तब सोना, तुझे ऐसी नींद आयेगी जो नरम से नरम बिछौने पर भी नहीं आती। तीसरा, तू राज छोड़कर योगी हुआ है, तेरे पास जवान स्त्रियाँ भी आयेंगी, छोटी भी आयेंगी और बच्चियाँ भी आयेंगी। तू महात्मा के पास रहना, महात्मा का कहा मानना, यह ही मज़बूत क़िला है।'' सो, शब्द की कमाई ही महात्मा के पास कवच है। जो नाम के रंग में रँगे गये, जिन्होंने गुरु की मति ले ली, वे दुनिया से बेख़ौफ़ ज़िन्दगी बसर कर गये।

अंदरि रंगु सदा सचिआरा॥ गुर कै सबदि हरि नामि पिआरा॥

कहते हैं, जिन्होंने अन्दर परदा खोल लिया वे ही दुनिया में दाना हैं, समझदार हैं, बाक़ी सारे बेवकूफ़ हैं। अब सवाल पैदा होता है कि वह सच्चा रंग कौन-सा है? कहते हैं, शब्द का! गुरु ने शब्द दे दिया, हमने शब्द की कमाई की, वह प्यारे से प्यारा नाम अन्दर प्रकट हो गया। अब कहते हैं कि हरएक आदमी के अन्दर पाँच शब्द बज रहे हैं। जो मालिक से मिलने की राह है वह एक ही है, वह सबके अन्दर है और वह परमात्मा की बनायी हुई है, किसी वली, अवतार, पैग़म्बर या महात्मा ने उसे नहीं बनाया। हम न उसे घटा सकते हैं, न बढ़ा सकते हैं और न ही बदल सकते हैं। फिर यह सनातन (अनादि) से सनातन है। इसी लिए सन्त कहते हैं कि लोग सनातन को नहीं समझते। अगर विचार करें तो नींव तक सनातन चला जाता है, विचार न करें तो उनकी मर्ज़ी।

अन्दर जो शब्द है, वेद उसे 'नाद' कहते हैं, ऋषि-मुनि 'आकाशवाणी' कहते हैं और मुसलमान 'बाँगे-आसमानी', 'कलामे-इलाही' और 'निदाए-आसमानी'

कहते हैं। सतलोक तक हरएक मंज़िल पर यह एक शब्द है। किसी मुक़ाम पर चेतन माया मिल गयी, इससे नीचे ब्रह्म और माया हैं। वहाँ शब्द का रंग और है। नीचे आकर माया प्रबल है और शब्द गुप्त है। शब्द तो एक ही है, मगर जैसा-जैसा देश है, वैसी-वैसी उसकी कैफ़ीयत (हालत) है। जो वर्णात्मक है, वह यहाँ दोनों आँखों तक ख़त्म हो जाता है। आगे तुरिया पद में सूक्ष्म शब्द है। ब्रह्म में कारण शब्द है। इससे आगे पारब्रह्म का शब्द है। जब ये तीनों देश शब्द के ज़रिये पार हो जाते हैं तब आगे सोहं का देश आ जाता है। सोहं का अर्थ है, 'जो तू है सो मैं हूँ'। वहाँ रूह रूपी बूँद मालिक रूपी समुद्र को देखकर कहती है कि मैं उसकी ज़ात हूँ, वह समुद्र है, मैं बूँद हूँ, वह परमात्मा है, मैं उसकी अंश हूँ। जो पारब्रह्म में गये हैं वे भी कहते हैं कि हम उसके अंश हैं और जो सचखण्ड गये हैं, वे भी कहते हैं कि हम उसके अंश हैं। अब ब्रह्म है दूसरा दर्जा और सचखण्ड है पाँचवाँ दर्जा! जो ब्रह्म पद में गये हैं वे भी सच कहते हैं, मगर उनकी अपनी-अपनी रूहानी तरक़्क़ी में बहुत फ़र्क़ है। इस तरह जिसने प्राइमरी पास की, वह भी कहता है कि इल्म ला-इन्तिहा है यानी इसका कोई अन्त ही नहीं है और जिसने एम. ए. का इम्तिहान दिया, वह भी कहता है कि इल्म ला-इन्तिहा है। मगर उनमें लियाक़त का फ़र्क़ है।

नउ निधि नामु वसिआ घट अंतरि छोडिआ माइआ का लाहा हे॥

कहते हैं, नौ निधियाँ, अठारह सिद्धियाँ, सारी ख़ुशियाँ, सारी शान्ति देनेवाला नाम है। कहाँ है? घट में। घट कहाँ है? यह (सिर की ओर इशारा करके) उलटा रखा हुआ घड़ा है। कहते हैं, जब यह इस घट में अमृत को पियेगा तो माया का सारा ज़हर उतर जायेगा। अब सारी दुनिया में मुश्किल यह है कि हम पढ़ने पर ज़ोर देते हैं, चढ़ने (आत्मिक चढ़ाई) पर नहीं। अब कहते हैं कि क्या किताबें पढ़ने से मुक्ति होती है? कभी नहीं।

गुरु नानक साहिब कहते हैं:

पड़ीअहि जेते बरस बरस पड़ीअहि जेते मास॥
पड़ीऐ जेती आरजा पड़ीअहि जेते सास॥
नानक लेखै इक गल होरु हउमै झखणा झाख॥[4]

लेखे में एक ही बात है, बाक़ी सब यों ही हैं। फिर कहा है:

नानक कागद लख मणा पड़ि पड़ि कीचै भाउ॥
लाखों मन काग़ज़ प्यार के साथ पढ़ लो।
मसू तोटि न आवई लेखणि पउणु चलाउ॥
बेशुमार काग़ज़ लेकर हवा की तरह लिखते जाओ।
भी तेरी कीमति ना पवै हउ केवडु आखा नाउ॥[5]

फिर भी तेरा अन्त नहीं पाया जाता। सारा दिन किताबें पढ़ते जाओ, कुछ भी नहीं बनता। अगर आप मिठाई की किताब को सारा दिन पढ़ते जाओ तो न स्वाद आता है, न पेट भरता है। क्या मिश्री की बातों से मुँह मीठा होता है? कभी नहीं! मिश्री खाने से स्वाद भी आता है और मुँह भी मीठा होता है। ग्रन्थ साहिब में पढ़ने पर नहीं, करने पर ज़ोर है।

रईअति राजे दुरमति दोई॥ बिनु सतिगुर सेवे एकु न होई॥

अब श्री गुरु अमर दास जी कहते हैं कि क्या राजा, क्या प्रजा, क्या अमीर, क्या ग़रीब, सभी बाहर दुर्मति यानी मनमत में बैठे हुए हैं। जब तक इसे कोई रूहानी मण्डलों पर जानेवाला गुरु न मिले, यह नाम के साथ जुड़कर एक न हो, यह परमेश्वर से मिलकर परमेश्वर नहीं होता। बिना नाम, बिना पूरे गुरु के न कोई अन्दर गया है और न ही जायेगा। यह तालीम, यह होका गुरु नानक साहिब का है। अब जो हमारे भाई धर्म-पुस्तकें पढ़कर कहते हैं कि हम अन्दर जा चुके हैं, बेशक लोग ग़ुस्सा होंगे, लेकिन असलियत यही है कि उनका ख़याल ग़लत है। पोथियों में नाम

की महिमा है, नाम नहीं। गुरु नानक साहिब कहते हैं कि नाम बड़ा ऊँचा है। वह लिखने, पढ़ने, बोलने में नहीं आता। वेद-शास्त्रों, ग्रन्थ-पोथियों से हमारा प्यार क्यों है? जब हम उन्हें पढ़ते हैं तो वे हमें खींचते हैं, नाम की तरफ़ ले आते हैं।

एकु धिआइनि सदा सुखु पाइनि निहचलु राजु तिनाहा हे॥

कहते हैं, जो परदा खोलकर ऊपर जाते हैं, एक नाम के साथ अपनी आत्मा को जोड़ते हैं, अगर सुखी हैं तो वे, अगर ख़ुशी है तो उनको, अगर जन्म सफल है तो उनका। उनका रूह रूपी क़तरा करोड़ों खण्डों-ब्रह्माण्डों से परे परमात्मा रूपी समुद्र में मिलकर समुद्र हो गया। क्या कहते हैं गुरु साहिबः

नाउ हमारा अचरज कहिये, हम होते अचरज रवानी॥
सिफत हमारी सब मूरत माहि, जोत सगल महि तानी॥[6]

जिन्होंने एक सतगुरु के साथ मुहब्बत यानी आशिक़ी कर ली, परदा खोलकर उससे अन्दर जा मिले, उनको वह लज़्ज़त मिल गयी। बाक़ी जो जाति-पाँति हैं वे हमारी बनायी हुई हैं। परमात्मा ने कोई जाति-पाँति नहीं बनायी।

एक सत्संगीः हुजूर! यह तरतीब (व्यवस्था) क्यों बनायी गयी?

महाराज जीः जो कोई नेक हुआ, उसे ज्ञानी, ब्राह्मण कह दिया, जो ज़ोर वाले हुए उन्हें क्षत्रिय कह दिया। जो दुनिया के काम-काज करते थे उन्हें वैश्य कह दिया। जो और निचले दर्जे का काम करनेवाले थे, उन्हें शूद्र कह दिया। जो ब्रह्म-ज्ञानी हैं वे जाति-पाँति को नहीं मानते और जो जाति-पाँति के पाबन्द हैं, वे ज्ञानी नहीं।

जब अन्दर यह नाम प्रकट हो गया, तब कोई जाति-पाँति नहीं रहती। जो ऋषि-मुनि हुए हैं, जब उनके खानदान की खोज करोगे तो क्या निकलेगा? उनके माँ-बाप की खोज करोगे तो क्या निकलेगा? कोई कहीं

से (किसी जाति से) आया है तो कोई कहीं से आया है। नारद जी ख़ुद कहते थे कि मैं कहारिन का बेटा था, मेरी माँ मुझे साधुओं के पास ले गयी और मैं उनकी जूठन खाता रहा।

अब कहते हैं कि इसका फ़र्ज़ है कि यह सतगुरु से मिलकर उसे अपने अन्दर प्रत्यक्ष कर ले, अन्दर सीधी सड़क है। सतगुरु कहता है कि सीधे चले जाओ। जब हम बाहर कहीं रास्ता भूल जाते हैं तो गाड़ी की आवाज़ या मुर्गे की बाँग के पीछे-पीछे चले जाते हैं, फिर आबादी आ जाने पर रास्ता पूछ लेते हैं। इसी तरह शब्द की आवाज़ है और वह अन्दर हर मंज़िल पर रहनुमाई (मार्ग-दर्शन) करता है। यह शब्द, आकाश और पवन—दो तत्त्वों से मिलकर बना है मगर जो शब्द अन्दर है, वह असली है और सारे खण्डों-ब्रह्माण्डों का मालिक है।

आवणु जाणा रखै न कोई॥ जंमणु मरणु तिसै ते होई॥

कहते हैं, वह मालिक है जो हमें जन्म-मरण में लाता है, योनियाँ भुगतवाता है, दुनिया में फँसाता है। इसमें किसी और का दख़ल नहीं, फिर भी वह मालिक इसके अन्दर है। करोड़ों दरिया, करोड़ों शान्ति और करोड़ों ख़ुशियाँ इसके अन्दर हैं। अफ़सोस! आदमी के अन्दर जो कुछ रखा है, आदमी को इल्म (ज्ञान) नहीं। जो लोग मालिक को बाहर ढूँढ़ते हैं, वे अपना वक़्त ज़ाया करते हैं। वह बाहर न किसी को मिला है और न मिलेगा। बाहर क्या है? काग़ज़, पानी और पत्थर। कहते हैं, ज़िन्दगी और मौत सबकुछ उसके अधिकार में हैं।

एक फ़क़ीर काबा जा रहा था। राह में क्या देखता है कि एक कुत्ता है, जिसके चारों पैर टूटे हुए हैं। पैरों पर से गाड़ी निकल गयी है, चल नहीं सकता। सोचता है कि मैं काबा जा रहा हूँ, इसे कहाँ लिये फिरूँगा? दूसरा, यह पलीत (गन्दा) जानवर है। फिर ख़याल आया कि इसका कौन है? तरस आ गया। उठाकर एक कुएँ पर ले गया। कुआँ वीरान था; रस्सी, चर्खी वग़ैरह का इन्तज़ाम नहीं था। दो-चार पत्ते इकट्ठे

करके उनका दोना बनाया और पगड़ी से बाँधकर कुएँ में लटकाया, पानी नीचा था, पहुँच न सका। साथ ही क़मीज़ को भी बाँध लिया, फिर भी पानी की तह तक नहीं पहुँचा। इधर-उधर देखा, कोई नज़र न आया तो सलवार उतारकर उसे भी बाँधा, तब दोना पानी तक पहुँचा। दो-चार दोने पानी के निकालकर कुत्ते को पिलाया, तब उसे होश आया। उसे उठाकर चल पड़ा। रास्ते में एक मस्जिद थी। वहाँ के मुल्ला से कहा कि तुम इसका ख़याल रखना, मैं काबा जा रहा हूँ, आकर ले लूँगा। जब रात को सोया तो बुशारत (आकाशवाणी) हुई कि तूने मेरे एक जीव की रक्षा की है, तेरा हज क़बूल है, अब चाहे जा या न जा। सो, अगर मज़हबी फ़र्क़ (धार्मिक भेदभाव) है तो समझ लो कि उस 'एक' का रंग नहीं चढ़ा। परमात्मा ने जन्म-मरण किसी वली, पैग़म्बर या अवतार के हाथ में नहीं दिया, बल्कि अपने हाथ में रखा हुआ है ताकि किसी को शिकायत का मौक़ा न मिले।

गुरमुखि साचा सदा धिआवहु गति मुकति तिसै ते पाहा हे॥

कहते हैं, जो गुरुमुखों, महात्माओं से राह लेकर रूहानी मंज़िलों पर जाते हैं, जिन्होंने परदा खोला, अन्दर नाम की लज़्ज़त ली, मेहनत करके मालिक के साथ प्यार कर लिया, वे पार हो गये। अब यह मनुष्य-जन्म में ही हो सकता है। अगर ग्रन्थ साहिब को मानें तो एक हो जायें। अगर अलग-अलग इष्ट बनायें तो अलग-अलग मज़हब हो जाते हैं। गुरु अर्जुन साहिब फ़रमाते हैं: नामु निधानु अपारु भगता मनि वसै॥[7] फिर कहते हैं:

संतसंगि अंतरि प्रभु डीठा॥[8]

ग्रन्थ साहिब में नाम की तारीफ़ है, नाम नहीं। ग्रन्थ साहिब की बाणी कहती है कि जाओ किसी गुरु के पास। हमें लोगों के पीछे नहीं जाना है, हमें बाणी के अनुसार चलना है। जो राह गुरु साहिब बताते हैं, वह बड़ी ऊँची है। हम दुनिया के शिष्य नहीं बनना चाहते। हम गुरु नानक

साहिब के शिष्य बनना चाहते हैं। जिधर बाणी कहती है, उधर चलो, मुक्ति का रास्ता गुरुमुखों के हाथ में है। जब हम उनसे राह लेकर अन्दर सच के साथ प्यार करेंगे, मुक्ति हो जायेगी। सिवाय गुरुमुखों और कामिल फ़क़ीरों के, सच्चा रास्ता कहीं है ही नहीं।

मौलाना रूम साहिब कहते हैं:

हमनशीनी साअते बा औलिया,
बिहतर अज़ सद साला ताअत बे रिया।[9]

औलिया-अल्लाह की एक घड़ी की सोहबत, सौ वर्षों की प्रेम से की गयी मनमर्ज़ी की बन्दगी से बेहतर है। गुरुमुखों के पास बैठने का इतना फ़ायदा है। अगर रास्ता इधर है और आप जाते हो दूसरी तरफ़, तो जितने गये, दूर हो गये! अगर गुरुमुखों के पास जाकर उनसे राह लेकर एक-एक कदम भी चलेंगे तो भी पहुँच जायेंगे। वह आपको मालिक से मिला देगा। वह हमारे और मालिक के दरमियान बिचौलिया है। क्या कहते हैं गुरु अर्जुन देव जी:

तैडी बंदसि मै कोइ न डिठा तू नानक मनि भाणा॥
घोलि घुमाई तिसु मित्र विचोले जै मिलि कंतु पछाणा॥[10]

हे परमेश्वर! तू मेरी आत्मा का पति है। तेरे बराबर कोई नहीं। लेकिन तू किसके ज़रिये मिलता है? सतगुरु रूपी बिचौलिये के।

सचु संजमु सतिगुरू दुआरै॥ हउमै क्रोधु सबदि निवारै॥

कहते हैं कि अगर यह सच हासिल करना है तो गुरु या कामिल मुर्शिद के पास जाओ। जो वह हिदायत दे उसके अनुसार मेहनत करके परदा खोलो, तब सच यानी शब्द मिलेगा। जब आप उस शब्द या आबे-हयात को पियोगे तो आपके हवासे-ख़मसा (कर्मेन्द्रियाँ)* और हवासे-बातिनी

---

* **पाँच कर्मेन्द्रियाँ**=हाथ, पाँव, ज़बान (बोलनेवाली) और नीचे की दो इन्द्रियाँ।

(ज्ञानेन्द्रियाँ)* सब क़ाबू में आ जायेंगी। करोड़ों किताबें, करोड़ों ग्रन्थ पढ़ लो, नफ़्स (मन) क़ाबू में नहीं आता। अगर क़ाबू में आता है तो नाम के द्वारा, कलामे-इलाही के द्वारा। जिस दवा से मन क़ाबू में आता है, वह आपके अन्दर है। जब रूह उस आबे-हयात को पीती है, उस बाँगे-इलाही को सुनती है, जन्मों-जन्मों के पाप नाश हो जाते हैं। जितने भी बड़े-बड़े परदे हैं, सारे उतर जाते हैं।

मौलाना रूम साहिब कहते हैं:

> गोश रा नज़दीक कुन काँ दूर नेस्त,
> लेकन ईं गुफ़्तन ब-तो दस्तूर नेस्त।[11]
>
> गुफ़्त पैग़म्बर किह् आवाज़े-ख़ुदा,
> मी रसद दर गोशे-मन हमचूँ सदा।[12]
>
> तुर्क ओ कुर्द ओ पारसी गो व अरब,
> फ़हम करदा आँ निदा बे गोशो-लब।[13]

क्या तुर्किस्तान वाले, क्या फ़ारस वाले, क्या अरब वाले, जितने फ़क़ीर अन्दर गये हैं, उन्होंने उस बाँगे-इलाही को सुना है। जिनकी रूह उस कलामे-इलाही के साथ जुड़ गयी, हम उन्हें मोमिन (आस्तिक) कहेंगे। जिनकी रूह कलामे-इलाही के साथ नहीं जुड़ी, वे काफ़िर (नास्तिक) हैं। जिस मुसलमान के पास कलमा नहीं, उसे मुसलमान कैसे कहेंगे? वह कलमा (नाम) लिखने, पढ़ने, बोलने में नहीं आता। वह अलिखित क़ानून और अनबोली भाषा है। किताबों में उसकी महिमा है, वह ख़ुद नहीं, वह नाम आपके अन्दर है। जब आप अन्दर जाओगे तब मिलेगा। अगर ग्रन्थों, पोथियों, किताबों से माँगो कि लाओ, नाम कहाँ है तो वे कहती हैं, जाओ अन्दर! नाम लफ़्ज़ नहीं। अगर लफ़्ज़ हो तो गुरु के पास जाने की क्या ज़रूरत है? किताबें लफ़्ज़ों से भरी पड़ी हैं।

---

* **पाँच ज्ञानेन्द्रियाँ**=आँख, कान, नाक, जिह्वा (स्वाद चखनेवाली) और त्वचा।

सतिगुरु सेवि सदा सुखु पाईऐ सीलु संतोखु सभु ताहा हे॥

कहते हैं कि अगर सतगुरु को अन्दर प्रत्यक्ष कर लें तो सदा के लिए सुखी हो जायें। फिर सतगुरु इसके साथ होकर कहता है कि चल अपने घर को। जिस वक़्त यह तुरिया पद या सहँस-दल-कँवल में पहुँचा, वहाँ अमृत पिया, मन-इन्द्रियाँ, काम-क्रोध, सभी क़ाबू में आ गये। फिर वे चोरी-चोरी नहीं जाते, बल्कि कहकर जाते हैं। कबीर साहिब ने कहा है:

पांचउ लरिके मारि कै रहै राम लिउ लाइ॥[14]

इस तुक पर मैं कई साल अटका रहा हूँ कि लड़कों को मारकर लिव राम के साथ कैसे लगती है? बहुत लोगों से पूछा, किसी ने नहीं बताया। जब कमाई की, पता लग गया। पहले काम निकलता है कि मैं जाता हूँ। फिर क्रोध निकलता है कि मैं जाता हूँ, इसी तरह सभी निकल जाते हैं। कबीर साहिब कहते हैं, जब पाँचों यानी काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार को मार दोगे, तब तुम्हारी लिव 'राम' के साथ लगेगी। कई सत्संगी, जो कमाई करते हैं, कहते हैं कि जी, आज दो निकल गये हैं। जी, आज एक निकल गया है। मैं कहता हूँ, धीरे-धीरे पाँचों निकल जायेंगे।

कर्नल साहिब (मेम्बर वाइसराय स्टाफ़): हुज़ूर! लड़के बनकर किस तरह निकलते हैं?

महाराज जी: तुम आदमी हो कि नहीं। वे तुम्हारी शक्ल में निकल जायेंगे।

कर्नल साहिब: क्या! वे ख़ौफ़नाक शक्ल में निकलते हैं?

महाराज जी: वे तुमसे डरकर निकलते हैं।

सारी दुनिया मन के अधीन है। जर्मनी और इंग्लैंड का झगड़ा किसने पैदा किया?* मन ने, जिसके अन्दर काम, क्रोध आदि पाँचों डाकू भी शामिल हैं। फिर वे कोई कम ताकत वाले तो नहीं हैं। जो उनके शिष्य हैं, उनके लिए तो वे ताकतवर हैं। जो नाम की कमाई करनेवाले हैं, उनके

---

* यहाँ इशारा द्वितीय विश्व-युद्ध (1939-1945) की ओर है।

सामने तो बिल्ली बनकर निकल जाते हैं, वे डरते हैं। सतगुरु की सेवा करके परदा खोल लो; काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार—पाँचों निकल जायेंगे। उनके बदले क्या आयेगा? शील, क्षमा, सन्तोष, शान्ति, विवेक। काल के दूत चले गये, दयाल के गुण आ गये या यों कह दो, डाकू चले गये और शान्ति वाले गुण आ गये। फिर अन्दर शान्ति की बादशाहत होगी कि नहीं?

हउमै मोहु उपजै संसारा॥ सभु जगु बिनसै नामु विसारा॥

कहते हैं, यह ताकत हरएक इनसान के अन्दर है, लेकिन अफ़सोस! दुनिया को नाम की ख़बर नहीं। न हम गुरु के पास जाते हैं, न नाम लेते हैं। अगर शील, सन्तोष धारण करके नाम की कमाई करते हुए परदा खोल लें तो न कभी जन्म लेना होगा, न मरना। मगर हम सतगुरु के पास जाते नहीं, जन्म-मरण ख़त्म होता नहीं। नाम से बेख़बर यानी नाम को छोड़कर यह जन्मों-जन्मों से दुःख पा रहा है।

अगर आप प्रेम से लोगों की बातें सुनो तो मालूम होगा कि कोई सुखी नहीं। मेरा तजुरबा है, मेरे पास बहुत-से लोग आकर बताते हैं। हाँ, जो थोड़ी-बहुत नाम की कमाई करता है, वह चाहे सुखी हो, बाक़ी कोई नहीं। अब जिन्हें गुरु नहीं मिला, नाम नहीं मिला, सुरत शब्द के साथ नहीं जुड़ी, उन्हें तो इतना भी पता नहीं कि हम सुरत हैं या शरीर। वे अपने आप को शरीर समझे बैठे हैं। जब शरीर को कोई कष्ट होता है, वे दुःखी होते हैं और जब मौत आती है, वह इसको शरीर से जुदा कर देती है, फिर अति दुःखी होते हैं, लेकिन जो सत्संगी हैं, अभ्यासी हैं, वे जानते हैं कि हम रूह हैं, शरीर नहीं। हमारा शरीर कपड़ा है। जब मौत आती है, वे ख़ुशी से शरीर त्याग देते हैं। अगर आप अपना कोट उतारकर फेंक दो तो आपको क्या दुःख है। अगर बूट निकालकर फेंक दो आपको क्या दुःख है? इसी तरह अगर आप इस शरीर को छोड़ दो तो आपको क्या दुःख? क्या आप शरीर हैं? नहीं।

जब मंसूर को सूली पर चढ़ाने लगे तो हुक्म दिया गया कि उसे पत्थर मारे जायें। लोगों ने पत्थर मारे। चुपचाप खड़ा रहा, उफ़् तक नहीं की। अब शेख़ शिबली भी वहाँ खड़ा था। कहता है, अगर मैं पत्थर मारता हूँ, यह फ़क़ीर तो है सच्चा, इसे पत्थर मारना धर्म नहीं। अगर शरअ (धार्मिक क़ानून) वालों की ओर ख़याल करता हूँ तो पत्थर मारना पड़ेगा। आख़िर एक फूल मारा। जब फूल लगा तो मंसूर कहता है, ''हाय!'' शिबली ने पूछा, ''तूने हाय क्यों की?'' मंसूर ने कहा कि तू मेरे राज़ (रूहानी अवस्था) से वाक़िफ़ था, तेरे फूल की चोट लोगों के पत्थर से बढ़कर है। आख़िर जब सूली पर चढ़ाने लगे तो पहले हाथ काट लिये, कहता है, ''मुझे इन हाथों की कोई फ़िक्र नहीं, मेरे पास वे हाथ हैं कि एक यहाँ और एक आकाश की चोटी पर।'' फिर पैर काट लिये गये। कहता है, ''मेरे पास वे पैर हैं जो एक यहाँ और एक रब की दरगाह में।'' फिर आँखें निकाल लीं। कहता है, ''ये आँखें फ़ना (नाशवान्) हैं, मेरे पास वे आँखें हैं जो बक़ा (अविनाशी) को देखती हैं।'' अब जब ज़बान काटने लगे तो कहता है, ''ठहर जाओ!'' फिर कहता है, ''ऐ मालिक! जिस तरह कुम्हार मिट्टी के बर्तन को बाहर से टकोरता है, उसके नीचे हाथ रखता है और बाहर से थापी मारता है! तेरी बदौलत मैं आज पास हो गया हूँ। मुझे उम्मीद नहीं थी कि मैं इस इम्तिहान में पास हो जाऊँगा। शुक्र है! शुक्र है!! आ जल्लाद, ज़बान भी काट ले।''

बिनु सतिगुर सेवे नामु न पाईऐ नामु सचा जगि लाहा हे॥

जिस तरह इल्म की ताकत हरएक आदमी के दिमाग़ में है मगर जब तक कोई उस्ताद नहीं मिलता, वह जाहिल (अनपढ़) आया और जाहिल ही चला गया। इसी तरह नाम सबके अन्दर है, मगर जब तक मुर्शिद न मिले, नाम का भेद न मिले, अन्दर परदा न खुले, तब तक यह ख़ाली आया और ख़ाली चला गया। इसने इनसानी देह का कोई फ़ायदा नहीं उठाया, हालाँकि इनसानी देह ऊँची से ऊँची है। कई क़ौमों के पैग़म्बर कहते

हैं कि ख़ुदा ने इनसान को अपनी शक्ल पर बनाया है। हिन्दू कहते हैं कि नर-नारायणी देह है। इसी तरह अन्य धर्म भी यही कहते हैं। जितने वेद-शास्त्र, ग्रन्थ-पोथियाँ हैं, सभी नाम की तारीफ़ करते हैं। चाहे आप उन्हें सारी उम्र पढ़ते रहो, कुछ भी नहीं मिलता। वे कहती हैं कि नाम तेरे अन्दर है। बुल्लेशाह कहते हैं:

इल्मों बस करीं ओ यार, इक्को अलफ़ तेरे दरकार।
बहुता इल्म अज़ाजील ने पढ़िया, झुग्गा झाहा ओसे दा सड़िया।[15]

सो, जो ख़ज़ाना है, वह इसके अन्दर है। अगर यह सारी उम्र पढ़ता रहे कि मेरे अन्दर है, मेरे अन्दर है, पर अन्दर न जाये तो बनता कुछ नहीं। आदमी का जन्म-मरण नाम के ज़रिये ख़त्म होता है। मुक्ति यानी आत्मा का परमात्मा से विसाल नाम के ज़रिये होता है। अगर नाम नहीं मिला तो जैसे कुत्ते-बिल्ले पेट भरकर चले गये, वैसे यह चला गया। अपना कुछ न बनाया।

सचा अमरु सबदि सुहाइआ॥ पंच सबद मिलि वाजा वाइआ॥

अब राज़ का इशारा देते हुए बतौर सवाल कहते हैं कि ख़ुदा का सच्चा हुक्म, सच्ची हिदायत, सच्चा क़ानून क्या है? 'सच्चा नाम'। वह कहाँ है? 'आदमी के अन्दर'! वह क्या चीज़ है? वे पाँच कलमे हैं, पाँच शब्द हैं, पाँच बाँगें हैं। वह भाषा नहीं, न तुर्की, न अरबी, न फ़ारसी, न अंग्रेज़ी। वे लिखने, पढ़ने, बोलने में आ नहीं सकते, वे आदमी के अन्दर बज रहे हैं। वह प्यारी से प्यारी, मीठी से मीठी लज़्ज़त है। उसका नमूना दुनिया में कहीं है नहीं। वह बयान में नहीं आ सकती। उसे इस्मे-आज़म कहो या सच। वह स्त्री, पुरुष, चाहे कोई किसी देश का है, सबके अन्दर है। फिर जो राह इसके अन्दर है, वह किसी आदमी की बनायी हुई नहीं। उसका कारीगर परमात्मा है, यह उसकी अपनी बनायी हुई है। वह आज की नहीं, बल्कि जब से दुनिया बनी है तब की है यानी रोज़े-अव्वल की है। हमारी ताकत

नहीं कि हम उसको बढ़ा सकें या घटा सकें। आप अनंदु साहिब में रोज़ पढ़ते हो:

> वाजे पंच सबद तितु घरि सभागै॥
> घरि सभागै सबद वाजे कला जितु घरि धारीआ॥
> पंच दूत तुधु वसि कीते कालु कंटकु मारिआ॥
> धुरि करमि पाइआ तुधु जिन कउ सि नामि हरि कै लागे॥
> कहै नानकु तह सुखु होआ तितु घरि अनहद वाजे॥[16]

उधर कबीर साहिब कहते हैं:

> पंचे सबद अनाहद बाजे संगे सारिंगपानी॥
> कबीर दास तेरी आरती कीनी निरंकार निरबानी॥[17]

बेणी जी ग्रन्थ साहिब में लिखते हैं:

> पंच सबद निरमाइल बाजे॥ ढुलके चवर संख घन गाजे॥[18]

मनुष्य के अन्दर वह गुरुबाणी, वे प्यारी से प्यारी पाँच धुनें हो रही हैं। अब मुसलमानों की तरफ़ आओ। मौलाना रूम कहते हैं:

> औलिया रा दर दरूं हम नग़महास्त,
> आशकां रा ज़ां हयाते बेबहास्त।
> नशनवद आं नग़महा रा गोशे-हिस्स,
> कज़ सितमहा गोशे-हिस्स बाशद नजस्स।[19]

औलिया-अल्लाह के अन्दर वह नग़मा (शब्द) है, जिसको सुनने से जन्मों-जन्मों की सोयी हुई रूह जाग उठती है। मगर हमारा क्या हाल है? अगर मस्जिद के सामने बाजा बज गया तो फ़साद हो गया, हालाँकि जैसे ये बाजे हैं वैसे ही वे (अन्दर के) बाजे हैं। ग्रन्थ साहिब में उन महात्माओं की बाणी दर्ज है जो पाँच शब्द की राह बताते हैं। मौलाना रूम, शम्स तब्रेज़ और अन्य कामिल फ़क़ीरों की राह पाँच शब्द की है।

जब तक हम लताइफ़े-सित्ता (छः चक्रों) में बैठे हैं, हमारे अलग-अलग तरीक़े, अलग-अलग मज़हब और अलग-अलग ख़याल हैं। जब आँखों के ऊपर चढ़ो तो एक ही है। वहाँ कोई भाषा नहीं, जब भाषा नहीं तो वेद-शास्त्र, ग्रन्थ-पोथी कोई नहीं। यही हज़रत मुहम्मद साहिब (मौलाना रूम की ज़बानी) कहते हैं:

गुफ़्त पैग़म्बर किह् आवाज़े-ख़ुदा,
मी रसद दर गोशे-मन हमचूँ सदा।

कि मेरे कानों में हर वक़्त कलमा यानी ख़ुदा की आवाज़ आ रही है। लोगों ने कहा, हमें क्यों नहीं सुनायी देती? तो कहते हैं:

मुहर बर गोशे-शुमा बिनहादे-हक़्क़,
ता ब आवाज़े-ख़ुदा नारद सबक़।[20]

कि ख़ुदा ने तुम्हारे कानों पर मुहरें लगा रखी हैं। जाओ किसी मुर्शिद के पास। वह तुम्हारे कानों की मुहरें खोल देगा ताकि तुम्हें वह आवाज़ सुनायी दे। वे पाँचों इलाही नग़मे इनसान के अन्दर हैं। अगर परमेश्वर से मिलने का कोई सच्चा रास्ता है तो वह पाँच शब्द का है।

सदा कारजु सचि नामि सुहेला बिनु सबदै कारजु केहा हे॥

जन्म-मरण ख़त्म करनेवाला, परमात्मा से मिलानेवाला शब्द है। कहते हैं, जिसे शब्द नहीं मिला उसका परमात्मा के साथ विसाल कैसे? बिना मुर्शिद न कोई अन्दर गया, न जायेगा। यही मौलाना रूम कहते हैं:

आँ पादशाहे-आअज़म दर बस्ता बूद मुहकम,

परमात्मा ने हमारी आँखों के पीछे परदा लगाकर हमें बाहर निकाला हुआ है, फिर खोलता कब है?

पोशीदा दल्क़े-आदम यानी किह् बर दर आमद।[21]

जब वह मनुष्य का चोला पहनकर, गुरु बनकर आता है। फिर क्या उपदेश देता है?

> ख़ामोश ओ पंज नौबत बिशनौ ज़ि आसमाने,
> क-आँ आसमाने-बैरूँ ज़ां हफ़्त ओ ईं शश आमद।[22]

चुपचाप होकर अन्दर तवज्जुह दे, तेरे अन्दर पाँच शब्द हो रहे हैं। कब सुनायी देंगे? जब यहाँ (दोनो आँखों) तक, छः चक्रों से ऊपर चढ़ेगा। जब तक यहाँ तक नहीं चढ़ता, तब तक लफ़्ज़ ही लफ़्ज़ हैं। सारी उम्र लफ़्ज़ जप-जप कर मर गया। लफ़्ज़ नाम नहीं। यही मौलाना रूम कहते हैं:

> आमद निदाए बेचूँ नै अज़ दरूँ न बेरूँ।

वह प्रेम की तान, वह मीठी रागिनी की आवाज़ आ रही है। पता नहीं कहाँ से आती है। आती ज़रूर है:

> नै चप नै रास्त नै पस नै अज़ बराबर आमद।

न दाहिनी तरफ़ से, न बाईं तरफ़ से, न आगे से, न पीछे से। फिर कहाँ से आती है? आगे कहते हैं:

> गोई किह् आँ चिह् सूइअस्त आँ सू किह् जुस्तो-जूईअस्त,
> गोई कुजा कुनम रौ आँ सू किह् आँ सर आमद।

जिधर से हमें उस कुल-मालिक की तलाश है, उस नाम की धुन के साथ रूह को जोड़ दो और उसके पीछे चढ़ चलो। फिर कहते हैं:

> दस्तूर नीस्त जां रा ता गोयद ईं बयाँ रा,
> वरना ज़ि कुफ्र रुस्ती हर जा किह् काफ़िर आमद।[23]

वह ऐसी मीठी है, उसकी ऐसी ताकत है कि मुझे अन्दर से (परमात्मा की) इजाज़त नहीं कि मैं वह भेद खोलूँ। अगर ज़रा भी उस भेद को

ज़ाहिर कर दूँ तो सारी दुनिया मोमिन हो जाये, कोई भी काफ़िर न रहे। गुरु अर्जुन साहिब का कथन है:

> नाम के धारे सगले जंत॥
> नाम के धारे खंड ब्रहमंड॥
> . . .
> नाम के धारे पुरीआ सभ भवन॥[24]

नाम सभी के अन्दर है। कहते हैं, जिनको वह नाम नहीं मिला, उनका आना फ़ुज़ूल है। जैसे कुत्ते-बिल्ले जन्म बरबाद करके चले गये, वैसे ही वे चले गये। अगर शब्द की लज़्ज़त नहीं आयी तो मुक्ति कहाँ? गुरु अमर दास जी कहते हैं:

> बिनु सबदै अंतरि आनेरा॥ न वसतु लहै न चूकै फेरा॥
> सतिगुर हथि कुंजी होरतु दरु खुलै नाही गुरु पूरै भागि मिलावणिआ।॥[25]

जब तक शब्द नहीं मिलता, वह अन्धा आया और अन्धा ही चला गया। कुंजी सतगुरु के हाथ में है। जब तक गुरु कुंजी नहीं लगाता, परदा नहीं खुलता। गुरु साहिब कहते हैं कि शब्द-मार्गी, शब्द-अभ्यासी गुरु दुनिया में हैं ज़रूर, मगर मिलते पूरे भाग्य से हैं।

दुनिया को पैदा करनेवाली ताकत शब्द है। शब्द ही मुक्ति देता है, शब्द ही सबकुछ करता है। अगर मनुष्य-जन्म पाकर इसने शब्द की लज़्ज़त नहीं ली तो समझो इसने मनुष्य-जन्म से कोई फ़ायदा नहीं उठाया। अगर कोई आदमी इस दुनिया में खुशी-खुशी मरता है तो केवल शब्द का अभ्यासी ही। बाक़ी कुल दुनिया, बादशाह से लेकर ग़रीब तक, रोते हुए ही जाते हैं।

ज़िक्र है कि अमृतसर की एक बीबी सत्संगिन थी, उसने आठ दिन पहले बता दिया कि मुझे जाना है, सतगुरु आ गये हैं। उस गली में कई ग़ैर-सत्संगी थे, शोर मच गया कि यह कोई योगी है, जो कहती है कि मुझे आठ दिन बाद चले जाना है। गली के लोग रोज़ गिनते कि आज

सात दिन रह गये, आज छः दिन रह गये। इसी तरह आख़िर देखा कि वाकई वह आठ दिनों बाद चली गयी, उसको सतगुरु ले गये। मौत के वक़्त शब्द के अभ्यासी को इतनी ख़ुशी होती है जितनी कि अपनी शादी की भी नहीं होती। मैं जब अमृतसर गया, वह सारी गली नाम लेने को तैयार हो गयी। मैंने कहा कि आप पक्के हो जाओ तब नाम दूँगा।

गुरु साहिब कहते हैं कि बिना शब्द के इसका जन्म-मरण ख़त्म नहीं होता, मुक्ति नहीं होती। जब अन्दर शब्द आ गया, सारे काम हो गये।

मस्ताना बिलोचिस्तानी: सच्चे पातशाह! जिसे शब्द की लज़्ज़त आ जाये, तो फिर वह गुरु पर क्या क़ुर्बान करे?

महाराज जी: मन!

एक बीबी: महाराज जी! मैं सबकुछ बता बैठी हूँ, मुझे बख़्शो!

महाराज जी: मैं क्या करूँ! तेरा अपना क़ुसूर है। अच्छा! बैठ जा, आगे से मत बताना।

कर्नल साहिब: यह बता देने से ज़ाया हो जाने का क्या राज़ है?

महाराज जी: सुनो! जिस तरह 'मेस्मेरिज़्म' (वशीकरण विद्या) वाले अपना असर दूसरे पर डालते हैं। अब जो शागिर्द अपनी तरक़्क़ी के बारे में बताता है तो दूसरे जिन्होंने अभी ज़्यादा तरक़्क़ी नहीं की है, कहते हैं, 'हाय! यह यहाँ तक जाता है, मैं क्यों नहीं जाता।' बस उसकी तरक़्क़ी बन्द हो गयी। जिस तरह आम ख़याल है—चाहे हमारी भैंस मर जाये, पर हमारे ताऊ का बछड़ा ज़रूर मर जाये। सन्त नामदेव जी कहते हैं:

> जिनि हरि पाइओ तिनहि छपाइओ ॥[26]

कबीर साहिब भी कहते हैं:

> राम पदारथु पाइ कै कबीरा गांठि न खोल्ह ॥[27]

अब एक व्यक्ति पारब्रह्म में गया है, उसकी क़ीमत कौन समझ सकेगा? अगर अनपढ़ों के बीच एक ज्ञानी आ जाये तो उसकी हस्ती को

कौन समझेगा? जिस तरह ज़ेवर है, उसे सन्दूक में छिपाकर रखा जाता है, क्या नाम ही ऐसी चीज़ है, जिसे बता दिया जाये। गन्दे बर्तन में दूध रखो, वह ख़राब हो जाता है, काम नहीं आता। कई पूछते हैं, ''जी! आप नाम क्यों नहीं बताते?'' बतायें क्या? हम उसे हरएक के अन्दर डाल देते हैं। हमारा नाम लफ़्ज़ नहीं, वह न तुर्की है, न अरबी, न फ़ारसी। वह आँखों से ऊपर है। क्या कहते हैं गुरु अंगद देव जी:

अखी बाझहु वेखणा विणु कंना सुनणा॥[28]

आप जीते-जी मरो, आँखें बन्द करो तो आपको हमारे नाम की ख़बर लग जायेगी। लोगों ने गुरु नानक साहिब के साथ क्या किया? हज़रत मुहम्मद साहिब को मक्का से निकालकर मदीना भेज दिया। एक बार उन्हें एक ग़ार (गुफा) में तीन दिन तक भूखे रहना पड़ा। हज़रत ईसा को सूली पर चढ़ा दिया, मगर जो प्रेमी हैं वे क़द्र करते हैं। क्या कहते हैं एक महात्मा:

सप्पां वाड़ समुंद घर शेरां पए बुकंन॥
जे जम होवे पाहरू प्रेमी न रुकंन॥[29]

नाम ऐसी चीज़ है।

खिन महि हसै खिन महि रोवै॥ दूजी दुरमति कारजु न होवै॥

कहते हैं, बिना नाम की लज़्ज़त लिये मुक्ति नहीं। बाक़ी जो दुनिया की लज़्ज़तें हैं, वे आने-जाने वाली हैं। जब आ गयीं, सुखी हो गया, जब चली गयीं, दु:खी हो गया। न यह आँखों के पीछे अन्दर गया, न परदा खोला, बाहर ही बाहर रहा। जो दौलत परमात्मा ने इसके अन्दर इसके लिए रखी थी, उसे हाथ भी न लगाया। न जन्म-मरण ख़त्म हुआ, न मुक्ति हुई।

संजोगु विजोगु करतै लिखि पाए किरतु न चलै चलाहा हे॥

जब तक हम (आँखों से) बाहर बैठे हैं, हम मन के कहे चोरी, ठगी, दुराचार, झगड़े, फ़साद व अन्य काम करते हैं। जब मौत आयी, धर्मराय के दरबार में जाना पड़ा, वहाँ हिसाब खोला गया। वह (धर्मराय) कहता है कि क्या करके आये हो? अगर बुरे कर्म हैं तो सीधे नरकों में भेज दिया। अगर सब पुण्य कर्म हैं तो स्वर्गों में भेज दिया। अगर कुछ अच्छे, कुछ बुरे कर्म हुए तो मनुष्य-जन्म दे दिया मगर मुक्ति न हुई। जब तक आत्मा नाम के साथ नहीं जुड़ती, तब तक मुक्ति नहीं होती। यह इन्तज़ाम परमात्मा का बनाया हुआ है। हम इसे तोड़ नहीं सकते, बदल नहीं सकते। जो इन्तज़ाम बनाया हुआ है, हमें उसके ज़रिये जाना है, और कोई राह है नहीं।

जीवन मुकति गुर सबदु कमाए॥ हरि सिउ सद ही रहै समाए॥

अब दुनिया मरने के बाद मुक्ति मानती है। सन्त इस मुक्ति को नहीं मानते। अगर आज मैं दो पैसे नहीं देता और कहता हूँ कि दो साल बाद आपको दो हज़ार रुपये दूँगा, क्या ऐतबार है? इसलिए सन्त कहते हैं कि अगर जीते-जी लज़्ज़त नहीं आयी तो मरने के बाद का क्या ऐतबार है। जो जीते-जी अनपढ़ है, वह मरकर भी अनपढ़ ही रहेगा। जो जीते-जी पढ़ा-लिखा है, वह मरकर भी पढ़ा-लिखा ही रहेगा। कहते हैं, अगर जीते-जी मुक्ति लेनी है तो गुरु के पास जाओ। गुरु क्या कहता है? कि शब्द को पकड़ो! जब हम शब्द को पकड़ेंगे तो मुक्ति हो जायेगी। सन्त इस मुक्ति को सच्ची मुक्ति समझते हैं। जब हमने मेहनत करके परदा खोल लिया, परमात्मा के साथ लिव लग गयी तो झगड़ा ख़त्म हो गया, फिर कौन आये और कौन जाये!

गुर किरपा ते मिलै वडिआई हउमै रोगु न ताहा हे॥

जीवन-मुक्ति का रास्ता, जीवन-मुक्त की पदवी गुरु की मदद से मिलती है। यह मेहनत करे, परदा खोले, अन्दर गुरु हर मंज़िल पर साथ होकर

मदद करता है। वहाँ न शिष्य का शरीर, शरीर है, न गुरु का शरीर, शरीर है। शिष्य का असली रूप क्या है? 'रूह' और गुरु का स्वरूप क्या है? 'शब्द'। गुरु कहता है कि तू मुझे गुरु मत कह, अपना दोस्त समझ ले, भाई समझ ले। जब तू अन्दर जायेगा, तब जो मर्ज़ी हो कह लेना—चाहे गुरु कह लेना, चाहे कुछ और कह लेना। शब्द तो बड़ी चीज़ है, अगर शिष्य गुरु के नूरी स्वरूप को भी प्रकट कर ले, वह भी साथ रहता है। देह-स्वरूप तो बाहर है ही। जिस तरह शुरू-शुरू में ज्योमैट्री की हदों या सिद्धान्तों को मानना पड़ता है, पर आगे जाकर तो उनका कोई अस्तित्व नहीं रहता। इसी तरह यहाँ गुरु का देह-स्वरूप है। वहाँ जाकर तो फिर मुशाहिद (गवाह) ही रह जाता है। जैसे कि एक बच्चा है, उसे मिश्री के ज़ायके की ख़बर नहीं, इसलिए उसे मिश्री की कोई क़द्र नहीं। अगर उसके मुँह में मिश्री लगा दी जाये तो फिर वह उसे नहीं छोड़ता। मेरे पास कई ऐसी रूहें आयी हैं जिन्हें नाम लेते ही एकाग्रता हो गयी। पहाड़ का ज़िक्र है—नाम देने की देर थी कि कइयों की रूह अन्दर के नज़ारे देखने लग गयी, मगर ऐसी पवित्र आत्माएँ कहीं-कहीं ही हैं। उस दौलत को हासिल करना, 'रूहानी मण्डलों पर चढ़ना' गुरु की मदद के बग़ैर मुमकिन नहीं, है सबके अन्दर।

रस कस खाए पिंडु वधाए॥ भेख करै गुर सबदु न कमाए॥

कहते हैं, न मुर्शिद मिला, न उसकी हिदायत मानी और न राह मिली। सारी उम्र ऐशो-इशरत, विषय-विकार व अन्य दुनिया की लज़्ज़तें लेता रहा, अपना कुछ न बनाया, ख़ाली आया और ख़ाली चला गया। अगर किसी के घर के अन्दर करोड़ रुपया दबा पड़ा हो, वह उसे न निकाले, बाहर कौड़ी-कौड़ी माँगता हुआ मर जाये, वह ख़ाली आया और ख़ाली चला गया। कहते हैं, यह कितने ही मज़हब अपना ले, कितनी ही क़ौमों में जाये, काला पहने या सफ़ेद, मतलब कि कितने ही भेष बना ले, बनता कुछ नहीं। बाहर से भेष बना ले, मगर अन्दर तो कुछ नहीं। अगर

कोई 'मजिस्ट्रेट' या 'थानेदार' की वर्दी पहन ले तो उसे 'मजिस्ट्रेट' या 'थानेदार' के अधिकार तो नहीं मिल जाते! मैंने देखा कि एक सिपाही थानेदार की तलवार पहने फिर रहा है, मैंने कहा कि तू क्यों पाखण्ड करता है। इसी तरह अगर अन्दर नाम नहीं आया तो समझो, कुछ भी नहीं बना। जिस तरह विद्या की दौलत बिना मेहनत के नहीं मिलती, उसी तरह यह भी बिना मेहनत के नहीं मिलती, बल्कि कमाई की चीज़ है। यह विषय-विकार भोगता है, पर गुरु जो शब्द बताता है उसकी कमाई नहीं करता। फिर इसका क्या हाल होगा? आगे बताते हैं:

अंतरि रोगु महा दुखु भारी बिसटा माहि समाहा हे॥

कि यह बीमार आया और बीमार चला गया। इसकी रूह परदों में ढकी हुई आयी और ढकी हुई चली गयी, ख़ाली आयी और ख़ाली चली गयी। अन्दर जो नाम था, उससे कोई फ़ायदा न उठाया। खोटे-खोटे कर्म किये और गन्दे-गन्दे जन्मों में चला गया, क्योंकि नाम नहीं मिला हुआ था। अब नाम न अरबी है, न फ़ारसी, न तुर्की, न अंग्रेज़ी, न किसी और भाषा में। वह पढ़ने में नहीं आता, मगर दुनिया लफ़्ज़ों को पढ़-पढ़ कर चली गयी।

बेद पड़हि पड़ि बादु वखाणहि॥ घट महि ब्रहमु तिसु सबदि न पछाणहि॥

अगर आदमी चारों वेद भी पढ़ ले, लेकिन अगर रूह नाम के साथ नहीं जुड़ती तो कुछ भी नहीं बनता। अगर पढ़ने से मुक्ति मिलती तो रावण को मिलनी चाहिए थी, जो चारों वेदों का पढ़ा हुआ ही नहीं, बल्कि भाष्यकर्ता यानी टीकाकार पण्डित भी था। वही रावण जिसका हम हर साल पुतला बनाकर जलाते हैं। सो, पढ़ने से कुछ नहीं बनता। यही तुलसी साहिब कहते हैं:

चार अठारह नौ पढ़े, षट पढ़ि खोया मूल।
सुरत सबद चीन्हे बिना, ज्यों पंछी चंडूल॥[30]

अगर कोई चार वेद भी पढ़ ले, अठारह पुराण, छः शास्त्र और नौ व्याकरण भी पढ़ ले, लेकिन अगर आत्मा नाम के साथ नहीं जुड़ी तो वह कैसा पण्डित है? जैसे चण्डूल। चण्डूल एक चिड़िया होती है, वह जिस पक्षी की बोली सुनती है उसी की नक़ल कर लेती है। अगर कौआ बोले तो कौए की नक़ल कर लेती है, अगर कबूतर बोले तो कबूतर की नक़ल कर लेती है। इसी तरह अगर नाम नहीं मिला, वेद पढ़कर लोगों के साथ वाद-विवाद करता रहा कि वेद बड़े हैं, तो वह पण्डित उस चण्डूल पक्षी की तरह है।

ज़िक्र है कि एक गाँव में कुछ माल-मवेशी आ रहे थे। एक राहगीर ने किसी से पूछा कि ये किसका माल है? वह कहता है, "मेरे गाँव का माल है।" उसने कहा, "तेरा क्या है?" कहता है, "एक मेरे ताऊ का बछड़ा है, बाक़ी के माल का मुझे पता नहीं और मेरा तो कुछ नहीं।" इसी तरह, ऐ पुरुष! अगर तूने अन्दर परदा नहीं खोला तो तेरा क्या है?

गुरमुखि होवै सु ततु बिलोवै रसना हरि रसु ताहा हे॥

अब कहते हैं कि अगर यह नाम जपकर गुरुमुख बन जाये तो इसे अन्दर की लज़्ज़त आ जाये। यह जीते-जी मुक्ति हासिल कर ले। यह गुरुमुख कब बनता है? जब यह नौ दरवाज़े बन्द करके तुरिया पद यानी सहँस-दल-कँवल में पहुँचे। फिर सहँस-दल-कँवल से ब्रह्म में और ब्रह्म से पारब्रह्म में पहुँचे। वहाँ अमृतसर है, उसमें नहाकर यह कहता है, 'मैं आत्मा हूँ', तब इसे अपनी पहचान होती है। जब तक इसे अपनी पहचान नहीं, इसे परमात्मा की पहचान कैसे आ सकती है? सो, कहते हैं कि जब यह गुरुमुख बनकर ऊपर चढ़ जाये तो इसका आना-जाना सफल हो जाये।

घरि वथु छोडहि बाहरि धावहि॥ मनमुख अंधे सादु न पावहि॥

बहुत-से लोग गृहस्थी छोड़कर साधु हो जाते हैं। कोई दुनिया की चाल-ढाल देखकर दुनिया से अलग हो गया, किसी का मन विद्या पढ़कर

उपराम हो गया। कोई महात्मा तो मिला नहीं, बना कुछ भी नहीं। एक औरत को छोड़ा, हज़ारों औरतों का पकाया हुआ खाया। एक घर छोड़ा, हज़ारों घरों में फिरा। मैं साधुओं की निन्दा नहीं करता। जो साधु भजन करता है और किसी के घर का खाता है, वह अपना भी कुछ बना लेता है और उन खिलानेवालों का भी कुछ बना जाता है, मगर इसमें घाटा तो यह है कि लोग ख़्वाहिश रखकर देते हैं। मैंने यहाँ तक देखा है कि औरतें अपने बेटे-बेटियों के सिर पर वारकर देती हैं। वे कहती हैं कि हमारी बला साधु ले जायें। कई दानी कहते हैं कि इसका फल आगे जाकर लेंगे। सो लेना-देना वैसे का वैसा रहा। तुलसी साहिब जी कहते हैं कि जो किसी का खाकर भजन नहीं करता, वह या तो ऊँट बनेगा या कुत्ता या सूअर! इसलिए, गृहस्थ में रहकर भजन करो। चाहे गृहस्थ में रुकावटें हैं, भजन-सिमरन थोड़ा होता है, मगर घर में अपनों के पास ही रहता है, बाहर तो नहीं जाता।

मुझे त्याग का बड़ा चाव था। घर छोड़ने का बहुत विचार था। बाद में समझ आयी कि मैं बड़ी ग़लती करने लगा था। अब कहते हैं कि घर-बार छोड़ा, भभूत लगायी, पर क्या बना? कुछ नहीं। अगर मन कोई ख़्वाहिश करे तो वह गृहस्थ में पूरी हो सकती है, मगर जो साधु हो चुका है, बाज़ार गया, मिठाई की दुकान लगी हुई है, मन कहता है, मिठाई खानी है तो किससे कहेगा? अब साधु को कौन खिलाये? वह कोई बहाना करेगा कि मुझे जूती चाहिए, कोई कपड़ा चाहिए या कोई किताब चाहिए, फिर जब कोई चीज़ मिल गयी तो उसे बेचकर मिठाई खायेगा। इसलिए गुरु अमर दास जी कहते हैं कि गृहस्थ में रहना चाहिए और हक़ की कमाई करनी चाहिए। गृहस्थ साधु की सेवा करते हैं।

जिस वक़्त मेरे पास सेवा देनेवाली स्त्रियाँ और पुरुष आते हैं तो उनमें ऐसे प्रेमी भी होते हैं जो बड़ी मुश्किल से रुपया कमाकर लाते हैं। उनकी कठिन कमाई को देखकर मेरी रूह काँप उठती है। अगर साधु उस रुपये को खाकर बरबाद करें और भजन न करें तो किधर जायेंगे!

अन रस राती रसना फीकी बोले हरि रसु मूलि न ताहा हे॥

कहते हैं, वह नाम या इस्मे-आज़म इसके अन्दर है मगर यह ढूँढ़ता बाहर है। यह बाहर जितनी बातें करता है, फीकी हैं। अगर सारा दिन 'मिठाई-मिठाई' करें तो न पेट भरता है, न स्वाद आता है। अगर बनाकर खा लें तो पेट भी भर जायेगा और स्वाद भी आ जायेगा। जो आबे-हयात है, हरि-रस है, वह आपके अन्दर है, बाहर नहीं।

मनमुख देही भरमु भतारो॥ दुरमति मरै नित होइ खुआरो॥

कहते हैं, जिन्हें मनुष्य-जन्म पाकर गुरु नहीं मिला, नाम नहीं मिला, उनका दीन-ईमान क्या है? 'मन'! मन के कहे खाया-पिया, मन के कहे झूठ, फ़रेब व अन्य बुरे काम किये। ऐसे मनमुख मन के कहे लगकर खोटी-खोटी योनियों में जाते हैं, खोटे-खोटे जन्म पाते हैं। उनको और कोई काम नहीं, पैदा हुए और मर गये, मर गये और पैदा हुए। चौरासी लाख योनियाँ बड़ा लम्बा चक्र है। अगर एक-एक योनि एक-एक साल की भी गिनी जाये तो चौरासी लाख साल चाहिएँ। जिन योनियों में उम्र हज़ारों और लाखों साल की हो तो चौरासी लाख योनियाँ भोगने के लिए अरबों-खरबों साल चाहिएँ। यह देखकर रूह काँप उठती है, मगर जो मनमुख हैं, वे बराबर चौरासी के चक्र में आते और जाते हैं।

कामि क्रोधि मनु दूजै लाइआ सुपनै सुखु न ताहा हे॥

जिन्हें नाम नहीं मिला, अन्दर परदा नहीं खोला, मन-इन्द्रियों के अधीन रहे, वे जलते आये और जलते ही चले गये। ऐसे लोगों को जागते हुए तो क्या, सपने में भी सुख नहीं। हमारी आत्मा मन के अधीन है। मन, इन्द्रियों के अधीन है और इन्द्रियाँ, भोगों के अधीन हैं। जो ज़्यादा भोग भोगते हैं उनके बारे में गुरु नानक साहिब कहते हैं:

बहु सादहु दूखु परापति होवै॥ भोगहु रोग सु अंति विगोवै॥
हरखहु सोगु न मिटई कबहू विणु भाणे भरमाइदा॥[31]

कि बहुत स्वादों से दुःख होता है और जन्म-मरण नहीं मिटता।

कंचन देही सबदु भतारो॥ अनदिनु भोग भोगे हरि सिउ पिआरो॥

अब गुरु साहिब कहते हैं कि जिसका अन्दर परदा खुल गया और आत्मा आसमानी मंज़िलों पर जाकर मालिक से जुड़ गयी, उसकी महिमा क्या करें? वह देह सोने से मिलकर सोना हो गयी। वह ख़ुद भी मुक्त हो गयी और जितने यार-दोस्त उसके पास आये, वे भी मुक्त हो गये। जिस तरह जो मक्खी शहद के प्याले के किनारे पर आ बैठी, वह शहद भी खा गयी और उड़ भी गयी। इसके विपरीत, जो शहद के प्याले के बीच में बैठ गयी, उसके पंख लिबड़ गये, उसने शहद भी न खाया और मर भी गयी। इसी तरह, जो मनमुख हैं, जिनका दीन-ईमान दुनिया है, वे दुनिया में भी दुःखी रहे और अपना भी कुछ न बनाया, वे मनुष्य-जन्म बरबाद करके चले गये। इसके विपरीत, जो गुरुमुख हैं उन्होंने दुनिया में भी इज़्ज़त पा ली और अपना काम भी कर लिया, उनका जन्म-मरण ख़त्म हो गया, वे मालिक के घर पहुँच गये।

महला अंदरि गैर महलु पाए भाणा बुझि समाहा हे॥

कहते हैं कि इसके अन्दर करोड़ों महल हैं, बेशुमार दरिया व पहाड़ हैं, बेशुमार चाँद और सूरज हैं, ख़ुद ख़ुदा है। आलमे सग़ीर (पिण्ड) आलमे कबीर (ब्रह्माण्ड) का नमूना है।

मौलाना रूम साहिब के पास कुछ असलियत से बेख़बर मौलवी आये और वाद-विवाद करने लगे। आपने कहा:

चूँ शवी महरम कुशाइम बा तू लब,
ता बिबीनी आफ़ताबे नीम शब।[32]

अगर आप आधी रात को सूरज देखते हो तो मेरे साथ बात करो। उन्होंने हैरान होकर पूछा, ''आधी रात को सूरज कौन देखता है?'' आपने फ़रमाया:

जुज़ रवाने-पाक ऊ रा शरक़ नै,
दर तलू-अश रोज़ो-शब रा फ़रक नै।[33]

वह सूरज है तो सबके अन्दर, मगर सिर्फ़ पाक रूहें उसको देखती हैं। उसके अन्दर चढ़ने पर दिन और रात में फ़र्क़ नहीं रहता। यही गुरु नानक साहिब ने आधी रात के वक़्त अपने पुत्रों से कहा, ''सूरज चढ़ा हुआ है'', पर उनकी समझ में न आया। फिर गुरु साहिब ने अंगद साहिब से कहा। वे अन्दर जाते थे, उन्होंने फ़ौरन कहा, ''जी हाँ! चढ़ा हुआ है।'' गुरु साहिब ने उन्हें चादरें दीं कि जा धोकर ले आ और वे धोकर ले आये।

फिर मौलवियों ने मौलाना रूम से पूछा कि अन्दर सूरज ही चढ़ता है या कुछ और भी है? आपने फ़रमाया:

अंदर आँ बहिरो-बीयबानो-जिबाल,
मुनकतअ मी गरदद ओहामो-ख़याल।[34]

अन्दर बेशुमार दरिया, पहाड़, जंगल हैं, जिन्हें हमारा ख़याल समझ नहीं सकता, बल्कि उनका ख़याल करने से ही रूह काँप उठती है। उन्होंने फिर सवाल किया कि यह सामान किस तरह मिल सकता है? आप कहते हैं:

नरदबाँहा ईस्त पिनहां दर जहाँ,
पाया पाया ता अनाने-आसमाँ।[35]

अन्दर हरएक आसमान पर सीढ़ी लगी हुई है। सीढ़ी-दर-सीढ़ी चढ़ते जाओ। जितने फ़क़ीर अन्दर गये, सभी एक ही तरीक़ा बयान करते हैं।

इसको चाहिए कि रब की रज़ा में राज़ी रहे, तब रब मिलेगा, लेकिन जब तक रब की दया न हो, यह उसकी रज़ा में राज़ी नहीं रह सकता।

आपे देवै देवणहारा॥ तिसु आगै नही किसै का चारा॥

कहते हैं कि जिसकी रज़ा है, जिसका भाणा है, हम उसे क्या कह सकते हैं? कुछ नहीं। यही शेख़ सादी कहते हैं:

> चु रद्द मी नगरदद ख़दंगे-क़ज़ा,
> सिपर नीस्त मर बन्दा रा जुज़ रज़ा।[36]

जब उसकी रज़ा, उसकी क़ज़ा का तीर टल नहीं सकता तो फिर सिवाय मालिक की रज़ा की ढाल के कोई चारा नहीं।

आपे बखसे सबदि मिलाए तिस दा सबदु अथाहा हे॥

फिर उसी मज़मून को दोहराते हुए कहते हैं कि जब वह मालिक किसी इनसान को, किसी क़ौम को, किसी मज़हब को बख़्शना चाहता है तो वह अपने किसी प्यारे को उस क़ौम में भेजकर उन्हें हिदायत देता है। जितने कामिल फ़क़ीर हुए हैं, उन सबकी हिदायत एक ही है। इसके विपरीत, आजकल जितने फ़क़ीर हैं, सबके मज़हब, सबकी क़ौमें अलग-अलग हैं, हालाँकि मौत के वक़्त सब एक हो जाते हैं। खैर! जो कामिल फ़क़ीर हैं, उनकी यह तालीम है कि किसी कामिल मुर्शिद से राह लेकर अपनी आत्मा को अन्दर उस कलमे के साथ जोड़ दो। वे शरीअतों को स्पर्श नहीं करते, बल्कि कहते हैं कि अपनी-अपनी क़ौम, अपने-अपने मज़हब में रहते हुए परदा खोल लो। वह कुल-मालिक है, वाहिद-हू ला-शरीक है, अथाह है। उसकी तालीम कुल आलम के लिए एक ही है। जब वह बख़्शता है तो हम इनसानों के लिए कुछ न कुछ इन्तज़ाम कर देता है।

जीउ पिंडु सभु है तिसु केरा ॥ सचा साहिबु ठाकुरु मेरा ॥
नानक गुरबाणी हरि पाइआ हरि जपु जापि समाहा हे ॥

अब सबकुछ कहकर प्रार्थना करते हैं कि ऐ मालिक! मेरा जीव, पिण्ड, प्राण सब तेरा है। तू हमारा शाहंशाह है, ठाकुर है। हमारा तन, मन, धन सब तेरा है। हम तुझमें समा गये हैं। हमारा तू ही तू है। फिर तू मिलता कैसे है? गुरु और गुरुबाणी के ज़रिये, और कोई ज़रिया है नहीं। जो सच्ची दौलत है, सारी दुनिया के लिए एक ही होती है। यही हज़रत मुहम्मद साहिब, हज़रत अली को समझाते हैं कि तू मुर्शिद की शरण ले। भाई, गुरु के सिवाय तेरा कोई नहीं। अब इसलाम के बहुत-से फ़िरक़े (सम्प्रदाय) ऐसे हैं जो कहते हैं कि मुर्शिद की ज़रूरत नहीं। लेकिन यह सच है कि बग़ैर मुर्शिद ख़ुदा नहीं मिलता। क्या कहते हैं:

गुफ़्त पैग़म्बर अली रा क-ऐ अली,
शेरे-हक़्क़ी पहलवाने-पुर दिली।[37]

अली फ़क़ीर था, बड़ा बहादुर था, बन्दगी वाला था। एक बार उसकी टाँग में तीर लगा। जब निकालने लगे तो दर्द हुआ जिसे वह सह न सका। लोगों ने पूछा कि इसे कैसे निकालें? कहने लगा कि जब मैं मालिक की नमाज़ में खड़ा होऊँ उस वक़्त निकालना। जब वह नमाज़ में खड़ा हुआ, रूह मालिक से जुड़ी और लोगों ने तीर निकाल लिया। सो, पैग़म्बर साहिब कहते हैं—तू शेर है, पहलवान है। लेकिन सच्ची पहलवानी कौन-सी है? 'किसी मुर्शिद की पनाह'।

या अली अज़ जुमला-ए ताआते राह,
बर गुज़ीं तू साया-ए-ख़ासे-इलाह।

जो उस रब के ख़ालिस (पवित्र) बन्दे हैं, तू उनकी पनाह ले, उनके साये में रह।

तू बरौ दर साया-ए-आक़िल गुरेज़,
ता रही ज़ाँ दुश्मने-पिनहाँ-सतेज़।[38]

जब तू उनके पास जायेगा तो काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार, जो तेरे दुश्मन हैं, सारे तेरे अधीन हो जायेंगे, तेरा कहना मानेंगे:

अज़ हमा ताआत ईनत लाइक़ अस्त,
सबक़ याबी बर हर आँ कू साबिक़ अस्त।
चूँ गरिफ़्ती पीर हीं तसलीम शौ,
हमचू मूसा ज़ेरे-हुक्मे-ख़िज्ऱ रौ।[39]

कहते हैं कि जब तूने गुरु धारण कर लिया, उसका पल्ला पकड़ लिया तो फिर कोई उज्र (एतराज़) न कर। चाहे वह जायज़ कहे, चाहे नाजायज़, उसके हुक्म को पूरा कर और कोई एतराज़ न कर, जिस तरह कि हज़रत मूसा ने हज़रत ख़िज्ऱ के सामने किया था।

ज़िक्र है कि एक बार हज़रत मूसा को अहंकार हो गया कि मेरे जैसा लायक़ कोई पैग़म्बर नहीं। उन्होंने परमेश्वर से कहा कि अगर कोई मुझसे बड़ा है तो मुझे बता। हुक्म हुआ कि नहीं, मेरे बन्दे बहुत बड़े-बड़े हैं, तू उनके बराबर नहीं। मूसा ने कहा कि फिर भी बताओ तो सही। ख़ुदा ने कहा कि फ़लाने दरिया पर जा। वहाँ तुझे एक फ़क़ीर मिलेगा। वह जो कहेगा, उसे मानना। जब मूसा उसके पास गया तो उसने कहा, ''मूसा! तू मेरी तालीम के क़ाबिल नहीं।'' मूसा ने कहा, ''हज़रत! जो आप कहोगे, मैं इनकार नहीं करूँगा।'' हज़रत ख़िज्ऱ ने कहा, ''बहुत अच्छा! जो मैं करूँ उस पर एतराज़ न करना।'' यह कहकर दरिया के किनारे-किनारे चल पड़े, आगे-आगे ख़िज्ऱ, पीछे-पीछे मूसा। एक जगह घाट पर कुछ किश्तियाँ खड़ी थीं। ख़िज्ऱ ने पूछा कि यह किसकी किश्ती है? लोगों ने कहा कि यह फ़लाने अमीर की है। फिर पूछा कि यह किसकी है? लोगों ने कहा कि यह फ़लाने रईस की है। फिर पूछा कि यह किसकी है? जवाब मिला कि यह फ़लाने यतीम, ग़रीब बच्चों की है। हज़रत

ख़िज़्र ने लात मारकर उस किश्ती के दो तख़्ते तोड़ दिये। मूसा ने कहा, "आप किसी अमीर की किश्ती तोड़ते, ये ग़रीब बच्चे थे, आपने बहुत बुरा किया।" ख़िज़्र ने कहा, "तुझे जो कहा था कि न बोलना!" मूसा ने कहा, "अच्छा! भूल गया। माफ़ कर दो।" आगे गये, एक गाँव से बाहर कहीं एक दीवार गिरी हुई थी। ख़िज़्र ने कहा, "इस दीवार को बनाना है। मैं पानी ले आता हूँ, तू गारा बना, या तू पानी ले आ मैं गारा बनाता हूँ।" ख़ैर, गारा तैयार हो गया। सारा दिन दीवार बनाते रहे। इधर शाम हुई और उधर दीवार तैयार हो गयी। अब सूना घर, किसी ने पानी के लिए भी न पूछा। भूखे-प्यासे, थककर सो गये। मूसा से रहा न गया। कहने लगा, "आपका यह काम भी उलटा है। अगर किसी गृहस्थ का घर बनाते तो वह हमसे पानी के लिए पूछता, रोटी के लिए पूछता, पर सूने घर में न किसी ने रोटी को पूछा न पानी को, भूखे-प्यासे सो रहे हैं।" ख़िज़्र ने कहा, "मैंने जो कहा था कि एतराज़ न करना, 'क्यों' न कहना!" मूसा ने कहा, "साहिब! भूल गया। आगे से नहीं कहूँगा।" आगे गये। वहाँ एक गाँव में एक जगह कुछ लड़के खेल रहे थे। ख़िज़्र ने पूछा कि यह किसका लड़का है? लोगों ने कहा कि जी, यह फ़लाने साहूकार का है। फिर पूछा कि यह किसका है? लोगों ने जवाब दिया कि यह फ़लाने ग़रीब का है। फिर पूछा कि यह किसका है? लोगों ने कहा कि यह फ़लाने सेठ का है। फिर पूछा कि यह किसका लड़का है? लोगों ने कहा कि यह एक फ़क़ीर का इकलौता लड़का है। ख़िज़्र ने उस लड़के को क़त्ल कर दिया। मूसा ने कहा, "आपके सब काम ही उलटे हैं। जिसके तीन-चार बच्चे हों, आप उसका बच्चा मार देते। इसका एक ही था, आपने उसे ही मार डाला।" ख़िज़्र ने कहा, "तू मेरी तालीम के क़ाबिल नहीं।" मूसा ने कहा, "हज़रत! मैं जाता तो हूँ, मगर मुझे यह तो बताओ कि आपने यह क्यों किया?" ख़िज़्र ने कहा, "सुन ले! किश्ती क्यों तोड़ी थी? एक बादशाह आ रहा है, उसके साथ उसकी फ़ौज है, वह सब किश्तियाँ उस पार ले जायेगा। सिर्फ़ यह टूटी हुई किश्ती छोड़ देगा। उस किश्ती का मालिक किश्ती की मरम्मत करके उसे फिर बना

लेगा और उसे पहले से ज़्यादा नफ़ा हो जायेगा। अगर एक ही किश्ती हो तो कितना फ़ायदा हो सकता है! जो दीवार बनायी है, उसके बीच में ख़ज़ाना है, जिसके मालिक यतीम बच्चे हैं। जब वे जवान होंगे, उन्हें मिलेगा। मुझे रब ने हुक्म दिया था कि इस दीवार को बना दे, कहीं ऐसा न हो कि उनके जवान होने तक यह बिल्कुल गिर जाये, ख़ज़ाना ज़ाहिर हो जाये और लोग निकालकर ले जायें। सो, यह मैंने उसके हुक्म से बनायी है और जो लड़का मारा है, यह भी रब्बी हुक्म से मारा है। उसका पिता बड़ा इबादत वाला है। यह लड़का बड़ा होकर चोर व ठग बनता और बाप को दुःखी करता। मैंने उसे मार दिया, अब उस लड़के का बाप आराम से भजन करेगा और मालिक जल्दी ही उसे और नेक लड़का देगा।'' यह सुनकर हज़रत चुप हो गये।

वाणी सन्त दादू दयाल जी

जानै अंतरजामी अचरज अकथ अनामी॥ टेक॥
नौ लख कँवल जुगल दल अंदर। द्वादस साहिब स्वामी॥ 1॥
सूरति कड़क कँवल दल नभ पर। झटकि झटकि थिर थामी॥ 2॥
जैसे जहाज चलै सागर में। बरदबान बहै धीमी॥ 3॥
तैसे यार प्यार लखि पाया। तब सूरति ठहरानी॥ 4॥
सूरति सब्द सब्द में सूरति। अगम अगोचर धामी॥ 5॥
का से कहौं पिया सुख सारा। ज्यों तिरिया मुसकानी॥ 6॥
नहिं ये जोग ज्ञान तुरिया तत। यह गति अकथ कहानी॥ 7॥
चंद न सूर पवन नहिं पानी। क्योंकर करौं बखानी॥ 8॥
सुन्न न गगन धरन नहि तारा। अल्ला रब्ब न रामी॥ 9॥
कहा कहौं कहिबे की नाहीं। जानत संत सुजानी॥ 10॥
बेद न भेद भेष नहिं जानत। कोऊ देत न हामी॥ 11॥
दादू दृग दीदार हिये के। सूरति करति सलामी॥ 12॥
मैं पिया प्यारी प्यारे पिय अपने। मिलि रहे एक ठिकानी॥ 13॥
सूरति सार संध लखि पाई। ये गति बिरले जानी॥ 14॥[1]

सत्संग के बचन

जानै अंतरजामी अचरज अकथ अनामी॥ टेक॥

दादू साहिब रूहानी मंज़िलों का वर्णन कर रहे हैं। जो रूहानी मंज़िलों पर गया है, वह उसको महसूस करेगा। वह मालिक अनामी है, उसका बयान

नहीं किया जा सकता। उसका कोई नाम नहीं और सारे नाम सन्तों ने रखे हुए हैं। वह अचरज है, अकथ है, वह जो कुछ है, सो है। जो रूहानी मंज़िलों पर गये, वे ही इस रम्ज़ को समझते हैं। रूह नौ द्वारों को पार करके दो दल के कमल या आँखों के पीछे सूरज, चन्द्रमा और तारों को पार करके तुरिया पद, सहँस-दल-कँवल में आ गयी।

नौ लख कँवल जुगल दल अंदर। द्वादस साहिब स्वामी॥

अब कहते हैं कि जब नौ दरवाज़ों को पार किया, आगे आँखों के पीछे दो दल का कमल आ गया। उसके आगे तुरिया पद मिलता है जो बारह दल का कमल है। यहाँ से पहली धुन शुरू होती है, सुरत का शब्द को पकड़ना यहीं से शुरू होता है। सन्तों का मत यहीं से शुरू होता है। जब नौ दरवाज़ों को लाँघकर, दो दल कमल में से होकर बारह दल के कमल में पहुँचे, फिर क्या हुआ? आगे कहते हैं:

सूरति कड़क कँवल दल नभ पर। झटकि झटकि थिर थामी॥

कहते हैं, मेरी आत्मा कड़ककर नीचे की मंज़िलों को पार करती हुई ऊपर चली गयी। मैं इस रास्ते से गया हूँ यानी सुरत ने शब्द को पकड़ा, आगे से शब्द ने गरजकर रूह को पकड़ लिया, खींच लिया। यहाँ रूह कड़ककर अन्दर जाती है। जो कैफ़ीयत (हालत) अन्दर मिलती है, मैं बयान नहीं कर सकता, वह देखने के क़ाबिल है।

सूरति सब्द सब्द में सूरति। अगम अगोचर धामी॥

कहते हैं, मेरी रूह ने शब्द को पकड़ लिया। यह सुरत, शब्द की अंश है। सुरत, शब्द में मिल गयी और अगम लोक में पहुँच गयी। अब किसी से पूछने की ज़रूरत नहीं। नौ दरवाज़ों से ऊपर तुरिया पद में आकर शब्द को पकड़ा और अगम लोक में पहुँच गयी।

का से कहौं पिया सुख सारा। ज्यों तिरिया मुसकानी॥

अब दादू जी कहते हैं कि वहाँ जो ख़ुशी है, वहाँ की जो लज़्ज़त है, मैं उसका क्या बयान करूँ! जिस तरह दस-बीस कुँआरी लड़कियाँ हों, उनमें से एक की शादी हो जाये और जब वह पति के घर से वापस आती है तो उसकी सहेलियाँ पूछती हैं कि बता, पति का प्यार कैसा होता है? वह जवाब नहीं दे सकती और मुस्कराकर आँखें नीची करके चुप हो जाती है। दादू साहिब कहते हैं कि यही हाल मेरा है। जिस तरह वह औरत अपने पति की मुहब्बत और मिलाप की ख़ुशी बयान नहीं कर सकती, इसी तरह मैं भी चुप हूँ। इसी तरह अन्दर की जो ख़ुशी और लज़्ज़त है, वह बयान नहीं हो सकती।

नहिं ये जोग ज्ञान तुरिया तत। यह गति अकथ कहानी॥

अब दादू साहिब कहते हैं कि न तो यह योग है, योगी तो मन-बुद्धि के ज्ञान में रह गये, और न यह ज्ञान है। यह कोई और ही चीज़ है। अजीब कैफ़ीयत है, अजीब ख़ुशी है, इसका कोई नमूना नहीं मिलता।

चंद न सूर पवन नहिं पानी। क्योंकर करौं बखानी॥

अगर मैं मिसाल भी दूँ तो दुनिया में ज़्यादा से ज़्यादा अच्छे सूरज और चन्द्रमा हैं, वहाँ न पवन है, न पानी। यह तो चीज़ ही कोई और है, क्या बयान करूँ! अब कहते हैं, कोई मिसाल वहाँ की है नहीं। मिसाल के तौर पर, अगर कोई गाँव का रहनेवाला किसी से पूछे कि ताजमहल कैसा है, तो क्योंकि उस गाँव में उसकी कोई मिसाल है नहीं, इसलिए बयान करनेवाला सिर्फ़ इतना ही कहकर चुप हो जायेगा कि वह एक बड़ी आलीशान इमारत है, जो कि बयान से बाहर है।

सुन्न न गगन धरन नहि तारा। अल्ला रब्ब न रामी॥

न तो कोई मिसाल ज़मीन पर मिलती है, न आसमान में। कहते हैं कि न वह अल्लाह है, न रब है, न राम है, न ब्रह्म है, न पारब्रह्म है, इन सबसे परे है। न सुन्न है, न गगन है।

कहा कहौं कहिबे की नाहीं। जानत संत सुजानी॥

कहते हैं कि मैं क्या कहूँ! यह कहने की बात ही नहीं। जो महात्मा पहुँचे हैं, सिर्फ़ वे ही जानते हैं, जो पहुँचे ही नहीं उन्हें कोई ख़बर नहीं।

बेद न भेद भेष नहिं जानत। कोऊ देत न हामी॥

कहते हैं, वेद, ब्रह्म यानी ओम् से पैदा हुए हैं, जो कि दूसरी मंज़िल है, यह आठवीं मंज़िल का ज़िक्र है! जो दुनिया है वह भेषी है। ये तो बाहर ही बाहर रह गये। कहते हैं कि मुश्किल तो यह है कि कोई भी नहीं कहता कि दादू जी! जो आपने देखा है, ठीक है। कोई भी हामी नहीं भरता। ज़रा विचार करके देखो कि हमारे वेद-शास्त्र, ग्रन्थ-पोथियाँ क्या चीज़ हैं? ऋषि-मुनि, सन्त-महात्मा, कामिल फ़क़ीर जिन्होंने मेहनत की, अन्दर परदा खोला, रूहानी मंज़िलों पर गये, जो नज़ारे उन्होंने अपने अन्दर देखे, उनकी व्याख्या हमारी रहनुमाई के लिए ग्रन्थों में दर्ज कर गये। अब जो नज़ारे उन्होंने देखे और वह लज़्ज़त जो उन्होंने ली, वह किताबों में नहीं। अगर कोई खाना बनाने की किताब हो, जिसमें लड्डू, पेड़े, मिठाई आदि बनाने का तरीक़ा दर्ज हो तो क्या उस किताब को पढ़ने से पेट भरेगा या लज़्ज़त आयेगी? हरगिज़ नहीं। किताब में तो उनके बनाने का तरीक़ा लिखा है। अगर किसी साहूकार की बही में रुपये दर्ज हों और कोई आदमी उस बही को उठाकर ले जाये तो वह रुपये तो नहीं ले गया, रुपये तो उसके ख़ज़ाने या तिजोरी में हैं। इसी तरह किताबों में ख़ुदा नहीं, ख़ुदा इनसान के अन्दर है। किताबों में

उसकी महिमा है, उससे मिलने का रास्ता है। अगर किसी ने मिश्री की तारीफ़ किसी किताब में पढ़ ली तो उसने उस लज़्ज़त को हासिल तो नहीं किया जो कि मिश्री में है, लज़्ज़त तो मिश्री को खाने से मिलती है। इसलिए उस मालिक की ख़ुशी, लज़्ज़त किताबों में नहीं आ सकती। डॉक्टर की किताबों में दवाइयाँ नहीं होतीं, किताबों में तो सिर्फ़ नुस्ख़े होते हैं, दवाइयाँ तो अस्पताल में होती हैं। इंजीनियरिंग की किताब में लकड़ी, लोहा, सुर्ख़ी, चूना आदि नहीं होते, किताब में तो सिर्फ़ उनका ज़िक्र होता है, वे चीज़ें तो स्टोर में होती हैं। इस तरह अगर किसी के मकान का नक़्शा बनाकर उसके सामने रख दिया जाये तो उसका मकान तो नहीं बन सकता। इसलिए जो परमात्मा है, वह किताबों, वेद-शास्त्रों, ग्रन्थ-पोथियों में नहीं। किताबें कहती हैं कि वह तेरे अन्दर है, इनमें तो सिर्फ़ ज़िक्र है। अगर उनको कहा जाये कि लाओ, तो कुछ जवाब नहीं देतीं। यह जो सन्तों का मार्ग है, बड़ा ऊँचा मार्ग है।

दादू दृग दीदार हिये के। सूरति करति सलामी॥

अब दादू जी कहते हैं कि मेरी अन्दर की आँखें खुल गयी हैं और मैं परमेश्वर को देखता हूँ। मेरी रूह उसे सलाम करती है। इस तरह गुरु अर्जुन साहिब कहते हैं:

नानक से अखड़ीआं बिअंनि जिनी डिसंदो मा पिरी॥[2]

यानी वे आँखें और ही हैं, जिनसे परमात्मा को देखा जा सकता है।

मैं पिया प्यारी प्यारे पिय अपने। मिलि रहे एक ठिकानी॥

मैंने मालिक के देश में पहुँचकर उससे विसाल कर लिया। वह मेरा पति है, मैं उसकी स्त्री हूँ। कहते हैं, इस शरीर के अन्दर ही रूह है और अन्दर ही वह वाहिगुरु, अकालपुरुष है। करोड़ों जन्म बीत गये, स्त्री और पति एक ही सेज पर हैं, न स्त्री ने पति को देखा, न सुहागिन हुई। कहते

हैं, जब आत्मा नौ द्वारों को छोड़कर ऊपर जायेगी और शब्द की लज़्ज़त लेगी, सुहागिन हो जायेगी। इसी तरह गुरु अर्जुन साहिब कहते हैं:

एका संगति इकतु ग्रिहि बसते मिलि बात न करते भाई ॥[3]

सूरति सार संध लखि पाई। ये गति बिरले जानी ॥

कहते हैं, मेरी रूह उस कुल-मालिक के समुद्र में जाकर लीन हो गयी, मेरा रूह का क़तरा समुद्र में मिलकर समुद्र हो गया। इस भेद को कोई विरला ही समझेगा, जिसने अपनी आँखों से देखा हो।

सलोक महला 1

घर महि घरु देखाइ देइ सो सतिगुरु पुरखु सुजाणु॥
पंच सबद धुनिकार धुनि तह बाजै सबदु नीसाणु॥
दीप लोअ पाताल तह खंड मंडल हैरानु॥
तार घोर बाजिंत्र तह साचि तखति सुलतानु॥
सुखमन कै घरि रागु सुनि सुंनि मंडलि लिव लाइ॥
अकथ कथा बीचारीऐ मनसा मनहि समाइ॥
उलटि कमलु अंम्रिति भरिआ इहु मनु कतहु न जाइ॥
अजपा जापु न वीसरै आदि जुगादि समाइ॥
सभि सखीआ पंचे मिले गुरमुखि निज घरि वासु॥
सबदु खोजि इहु घरु लहै नानकु ता का दासु॥ 1 ॥[1]

सत्संग के बचन

घर महि घरु देखाइ देइ सो सतिगुरु पुरखु सुजाणु॥
पंच सबद धुनिकार धुनि तह बाजै सबदु नीसाणु॥

श्री गुरु नानक साहिब से किसी ने सवाल किया कि महाराज! गुरु की क्या पहचान है और गुरु क्या देता है? गुरु साहिब ने फ़रमाया कि यह शरीर परमात्मा से मिलने का घर है। इस घर के अन्दर से उस घर का रास्ता है, जहाँ हमेशा रहना है। यह शरीर किराये का मकान है। कहते हैं, जो महात्मा हमें इस घर के अन्दर उस मालिक का घर दिखाये, वह सतगुरु है। त्रिलोकी फ़ना है। जो सचखण्ड है, वह फ़ना नहीं होता। प्रलय

में ओम् तक की सृष्टि ढह जाती है और महाप्रलय में सोहं तक ढह जाती है। सचखण्ड कहो, सतलोक या मक़ामे-हक़्क़, यह वह देश है, जहाँ न प्रलय जाती है, न महाप्रलय। इसी लिए सन्तों ने सचखण्ड को अपना इष्ट रखा है। जब हम सतगुरु के पास जायेंगे, वह कहेगा, तेरे अन्दर पाँच शब्द, पाँच कलमे, पाँच नौबतें बज रही हैं। अपनी सुरत को उनके साथ जोड़ दे। उनमें कशिश है। वे सहँस-दल-कँवल से शुरू होकर सचखण्ड में जाकर ख़त्म हो जाती हैं। क्षत्रिय हो या ब्राह्मण या कोई और क़ौम, यहाँ क़ौमों, मज़हबों का सवाल नहीं। हमें तो इल्म लेना है, रास्ता लेना है। हमें उसके (सतगुरु के) साथ कोई रिश्ता-नाता तो करना नहीं। कबीर साहिब मुसलमान जुलाहे थे, राजा बीर सिंह और बघेल सिंह उनके सेवक थे। गुरु रविदास जी जूते गाँठते थे, मेवाड़ के राजघराने की मीरा बाई और राजा पीपा जैसे क्षत्रिय राजपूत उनके सेवक थे। सो, जो इन पाँच शब्दों का रास्ता देता है, वह सतगुरु है। और क्या दिखलायेगा?

दीप लोअ पाताल तह खंड मंडल हैरानु॥
तार घोर बाजिंत्र तह साचि तखति सुलतानु॥

इसके अन्दर करोड़ों दरिया, करोड़ों पहाड़, करोड़ों सूरज, करोड़ों चाँद हैं। ख़ुद ख़ुदा इसके अन्दर है। ब्रह्म, पारब्रह्म इसके अन्दर हैं। जो परदा खोलकर हमें वहाँ पहुँचा दे, वही कामिल मुर्शिद है, पूरा गुरु है। इसके अन्दर मीठी से मीठी, प्यारी से प्यारी रागिनी हो रही है। जो रूहानी मण्डलों पर गये, चाहे वे अहले-हनूद (हिन्दू धर्म को माननेवाले) हों, चाहे अहले-इस्लाम (इसलाम को माननेवाले) हों, सभी ने यह लज़्ज़त ली। मौलाना रूम साहिब कहते हैं कि औलिया-अल्लाह को वह राग बड़ा प्यारा लगता है। मौलाना रूम कहते हैं:

बाँगे-अजब अज़ आसमाँ दर मी रसद हर साअते,
मी नशनवद आँ बाँगे-रा इल्ला किह् साहिब दौलते।[2]

मैं उस अजब बाँग को हर वक़्त सुनता हूँ। कहते हैं कि इस नग़मे को बड़े भाग्यशाली लोगों के सिवाय और कोई नहीं सुन सकता। फिर कहते हैं:

गुफ़्त पैग़म्बर किह् आवाज़े-ख़ुदा,
मी रसद दर गोशे-मन हमचूँ सदा।[3]

हज़रत मुहम्मद साहिब कहते हैं कि ख़ुदा की आवाज़ हर वक़्त मेरे कानों में आ रही है, तो लोगों ने पूछा कि वह आवाज़ हमें क्यों नहीं सुनायी देती? कहते हैं:

मुहर बर गोशे-शुमा बिनहादे-हक़्क़,
ता ब आवाज़े-ख़ुदा नारद सबक़।[4]

ख़ुदा ने तुम्हारे कानों पर मुहरें लगा रखी हैं। जाओ किसी कामिल मुर्शिद के पास ताकि वह तुम्हारे कानों की मुहरें खोल दे। मौलाना रूम साहिब कहते हैं:

ब-हफ़्तम चर्ख़ नौबत पंज दारी,
चूँ ख़ैमा ज़ि शश जिहत बरकंदा बाशी।[5]

आँखों तक यह शरीर क़ब्र है। इन छः चक्रों में नाम नहीं, केवल लफ़्ज़ हैं। नाम आँखों से ऊपर है। जो नाम मुक्ति देता है, वह आँखों से ऊपर है। जब तू छः मंज़िलों को लाँघकर सातवीं मंज़िल पर जायेगा तो वहाँ से पाँच नौबतें शुरू हो जायेंगी। वहाँ से लेकर मक़ामे-हक़्क़ तक पाँच नौबतें मुकम्मल हो जायेंगी। फिर कहते हैं:

आँ पादशाहे-आअज़म दर बस्ता बूद मुहकम,

रब ने हरएक इनसान की आँखों के पीछे परदा लगाकर उसे बाहर निकाला हुआ है। फिर खोलता किस तरह है?

पोशीदा दल्क़े-आदम यानी किह् बर दर आमद।[6]

वह अकालपुरुष मुर्शिद बनकर परदा खोलने के लिये आता है। फिर क्या हिदायत देता है?

ख़ामोश ओ पंज नौबत बिशनौ ज़ि आसमाने,

तू चुपचाप अन्दर तवज्जुह दे। अन्दर पाँच नौबतें बज रही हैं।

क-आँ आसमाने-बेरूँ ज़ां हफ़्त ओ ई शश आमद।[7]

जब तू नौ द्वारों से ऊपर चढ़ जायेगा, अन्दर की राह एक है। हाथ, कान, नाक, मुँह एक है। हम छः चक्रों की क़ब्र में बैठे हुए हैं। हमारी अलग-अलग भाषाएँ हैं, अलग-अलग लफ़्ज़ हैं। जब आप अन्दर जाओ, वहाँ कोई लफ़्ज़ नहीं। वह अलिखित क़ानून और अनबोली भाषा है। जो-जो कामिल फ़क़ीर अन्दर गये, उनकी राह एक है, चाहे वे किसी भी क़ौम के क्यों न हों। वह कुल-मालिक, वाहिद-हू ला-शरीक इसके अन्दर है। बाहर न किसी को मिला है, न किसी को मिलेगा। हमारी किताबें कहती हैं, क़ुरान शरीफ़ कहता है कि ख़ुदा शाहरग से नज़दीक है।

हम उसे मन्दिरों, मस्जिदों और दूसरे धर्म-स्थानों में ढूँढ़ते हैं। अगर कोई सच्ची मस्जिद है तो यह हमारा शरीर है, जिसमें ख़ुदा मिलता है। वह हमारे अन्दर है। सच्चा गुरुद्वारा, सच्चा ठाकुरद्वारा हमारे अन्दर है। वहाँ हर वक़्त बाँग हो रही है, कभी बन्द नहीं होती। जब आप मर जाओगे, तब बन्द होगी।

सुखमन कै घरि रागु सुनि सुंनि मंडलि लिव लाइ॥
अकथ कथा बीचारीऐ मनसा मनहि समाइ॥

सतगुरु से राह लेकर, नौ द्वारों को छोड़कर दसवीं गली खोल लो। सुषुम्ना के रास्ते से होते हुए तारा-मण्डल, सूरज, चन्द्रमा को लाँघ जाओ। जब सुषुम्ना में प्रवेश करोगे, तब राग सुनायी देगा। बाहर के बाजे तो दो घण्टे,

चार घण्टे बजकर बन्द हो जाते हैं, मगर जो बाजे तुम्हारे अन्दर हैं, वे कभी बन्द नहीं होते। जब मौत आयेगी, तब बन्द होंगे। फिर कहते हैं कि जब वह राग सुनेगा तो काम, क्रोध, आशा, मनसा सभी मर जायेंगे। उन रागों का नमूना बाहर है नहीं। वे अकथ हैं। उनको सुनने से इन्द्रियाँ भी अपने भोगों को छोड़ देती हैं। यह कैफ़ीयत (हालत) कब पैदा होगी? जब तू सुषुम्ना से होकर पारब्रह्म में पहुँच जायेगा। यहाँ पहुँचकर इसकी आत्मा के ऊपर से स्थूल, सूक्ष्म और कारण तीनों शरीर उतर जायेंगे; मन, माया, काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार और तीनों गुण दूर हो जायेंगे। जब सारे परदे उतर गये, आत्मा नंगी हो गयी। उस वक़्त यह कहती है कि मैं आत्मा हूँ। यह हालत गुरु की कृपा से ही मिलती है।

उलटि कमलु अंम्रिति भरिआ इहु मनु कतहु न जाइ॥
अजपा जापु न वीसरै आदि जुगादि समाइ॥

हरएक आत्मा का रुझान (झुकाव) नीचे की ओर है। इनसान का हृदय-कमल उलटा हुआ है। हरएक आदमी के अन्दर आबे-हयात यानी अमृत बरस रहा है जिसे माया पी जाती है, काम, क्रोध पी जाते हैं, यह ख़ाली का ख़ाली रह जाता है। अगर किसी गिलास को उलटा रख दो, चाहे सारा साल बारिश होती रहे, उसके अन्दर पानी की एक बूँद भी नहीं जायेगी। अगर उसे सीधा कर दो तो पहली नहीं तो दूसरी बारिश में ज़रूर भर जायेगा। जब कामिल मुर्शिद मिला, उसने राह बता दी, यह उलटकर आसमानी मंज़िलों पर चढ़ा तो हृदय-कमल सीधा हो गया। अमृत बरसा और वह अमृत से भर गया। इसने अमृत पिया, शान्ति आ गयी। यह तो अभी पहली मंज़िल का हाल है।

मन लज़्ज़त का आशिक़ है। दुनिया की करोड़ों लज़्ज़तें दे दो, यह तृप्त ही नहीं होता। इसे वश में करने की एक ही दवा है। अगर ऋषि-मुनियों ने वश में किया है तो इसी दवा से, अगर सन्तों ने वश में किया है तो इसी दवा से। वह दवा क्या है? 'नाम', 'अमृत'। जब मन को अमृत की

लज़्ज़त मिली, दुनिया की लज़्ज़तों को इस्तीफ़ा दे दिया। मन क़ैद हो गया, इन्द्रियाँ वश में आ गयीं। आत्मा अकर्ता और अभोक्ता है, यह ख़ुद न कर्म करती है, न भोग भोगती है। इसका एजेण्ट कौन है? मन। जब मन क़ाबू में आ गया, आत्मा आज़ाद हो गयी। कहते हैं, सतयुग में भी यही दवा थी, त्रेता में भी यही, द्वापर में भी यही और कलियुग में भी यही है। गुरु नानक साहिब कहते हैं:

आदि सचु जुगादि सचु॥ है भी सचु नानक होसी भी सचु॥[8]

हमारे और परमात्मा के बीच में अगर कोई परदा है तो मन का है। जो 'हाय-हाय' करते हैं कि मन नहीं लगता, वे मेहनत नहीं करते। अगर मेहनत करें, उलटकर ऊपर जायें तो अमृत मिले। इसकी मुहब्बत लगी हुई है दुनिया के साथ, फिर मिले क्या? गुरु तेग़ बहादुर साहिब कहते हैं:

मनु माइआ मै रमि रहिओ निकसत नाहिन मीत॥
नानक मूरति चित्र जिउ छाडित नाहिन भीति॥[9]

जिस तरह किसी दीवार पर तस्वीर बनी हुई है, अगर हम उससे कहें कि आ, हमारे साथ बातें कर तो वह दीवार को नहीं छोड़ती। इसी तरह हमारा मन दुनिया के पदार्थों में फँसा हुआ है। जब यह उलटकर अमृत पियेगा तो क़ैद हो जायेगा। जब मन क़ैद हुआ, आत्मा आज़ाद हो गयी, अन्दर मीठी से मीठी और प्यारी से प्यारी राग-रागनियाँ सुनने लग गयी, अमृत को पीने लग गयी। यह राग कब से शुरू हुआ? जब से दुनिया बनी है। कब ख़त्म होगा? जब दुनिया ख़त्म हो जायेगी। इन रागों के ज़रिये रूह को ऊपर चढ़ना है।

सभि सखीआ पंचे मिले गुरमुखि निज घरि वासु॥

कहते हैं कि पाँचों धुनें, पाँच शब्द हैं। जब ये पाँचों एक हो गये, हम अपने घर पहुँच गये। हमें सिमरन करके नौ द्वारों को ख़ाली करना है। जब

नौ द्वारों को ख़ाली करके सूरज, चन्द्रमा और तारा-मण्डल को लाँघकर हम तुरिया पद में पहुँचेंगे तो वहाँ पहला शब्द सुनायी देगा। दूसरे देश में दूसरा शब्द, तीसरे देश में तीसरा वग़ैरह-वग़ैरह। हमें पहले शब्द को पकड़कर दूसरे देश में पहुँचना है, दूसरे शब्द को पकड़कर तीसरे देश में, तीसरे शब्द को पकड़कर चौथे देश में और चौथे शब्द को पकड़कर पाँचवें देश में। पाँचवें देश यानी सचखण्ड में जाकर पाँचों शब्द एक हो जायेंगे। वह हमारा घर है। हम वहाँ से आये हैं और हमें वहीं जाना है। वहाँ कैसे पहुँचा जा सकता है? पाँच शब्द के द्वारा। अब गुरु नानक साहिब कहते हैं कि जो वहाँ पहुँचता है, वह सतगुरु है।

सबदु खोजि इहु घरु लहै नानकु ता का दासु॥

जो महात्मा शब्द की कमाई करके सचखण्ड, सतनाम में पहुँच जाये, हम उसके दास हैं, वह हमारा गुरु है। गुरु नानक साहिब को दास तो क्या बनना था, वे तो मालिक में मिलकर ख़ुद मालिक बन चुके थे, फिर भी कहते हैं कि मैं उसका दास हूँ। मगर हम खोज तो करते नहीं, बल्कि हमने उनकी तालीम को मज़हब बना लिया और लड़ने लग गये। मैंने जहाँ भी जाकर सत्संग किया है, मेरे साथ किसी ने भी बहस नहीं की। मैं कहता हूँ कि जो बाणी कह रही है, वह आदमी के अन्दर है।

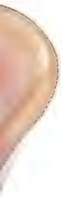

वाणी स्वामी जी महाराज

उपदेश सतगुरु भक्ति का

सतगुरु का नाम पुकारो। सतगुरु को हियरे धारो॥ 1॥
सतगुरु का करो भरोसा। फिर करो न कुछ अफ़सोसा॥ 2॥
सतगुरु तोहि छिन छिन पोसें। हँगता तेरी सब बिधि खोसें॥ 3॥
तू कर उन चरनन होशें। सतगुरु से मत कर रोसें॥ 4॥
सतगुरु गति अब सुन मो से। कहि जात न रंचक मुँह से॥ 5॥
दसवें में खैचें नौ से। फिर एक करें तोहि दो से॥ 6॥
शब्दारस तोहि पिलावें। जमपुर से फेर बचावें॥ 7॥
घर अगम तोहि दरसावें। मारग शब्द तोहि लखावें॥ 8॥
जो संगत उनकी करते। सो जग से कभी न डरते॥ 9॥
जो बेमुख गुरु से फिरते। सो भौ सागर में गिरते॥ 10॥
चौरासी चक्कर खावें। फिर जन्म जन्म दुख पावें॥ 11॥
तुम सोचो अपने मन में। कोइ नाहिं गुरू सम जग में॥ 12॥
जिन जिन गुरु भक्ति धारी। सो पहुंचे निज दरबारी॥ 13॥
गुरु भक्ति न जिन को प्यारी। तिन जीती बाज़ी हारी॥ 14॥
गुरु चरनन आशिक़ होना। यह बात बड़ी क्या कहना॥ 15॥
गुरु लगें जिसे अति प्यारे। तिन कुल कुटुम्ब सब तारे॥ 16॥
धन मात पिता उन जन के। जिन भक्ति करी कुल तज के॥ 17॥
जिन सही मलामत जग की। तिन मिली रास सुख घर की॥ 18॥
जो कुल लाज जगत से डरे। गुरु भक्ति से वह पुनि गिरे॥ 19॥

सूरा रण से कभी न टरे। सती सदा मुरदे संग जरे॥ 20॥
रण छोड़े कायर कहलाय। सती फिरे नीच घर जाय॥ 21॥
पपिहा अपना पन नहिं त्यागे। जले पतंगा जोती आगे॥ 22॥
मछली को जैसे जल धारा। गुरुमुख को सतगुरु अस प्यारा॥ 23॥
जिन पर बख़्शिश गुरु की होई। गुरुमुख ऐसा बिरला कोई॥ 24॥
राधास्वामी कही बनाय। सेवक को गुरु दिया जगाय॥ 25॥[1]

सत्संग के बचन

सतगुरु का नाम पुकारो। सतगुरु को हियरे धारो॥

जब वाहिगुरु, अकालपुरुष ख़ुद ख़ुदा दुनिया को रोशनी देता है यानी किसी जीव को मुक्ति देकर अपने साथ मिलाना चाहता है, वह किसी महात्मा, ऋषि, मुनि, वली, अवतार या पैग़म्बर के ज़रिये अपना भेद ज़ाहिर करता है। यही इसलाम मज़हब के फ़क़ीर कहते हैं, यही गुरु नानक साहिब कहते हैं, यही कबीर साहिब कहते हैं, यही वेद-शास्त्र कहते हैं और यही ऋषि-मुनि पुकारते हैं कि वह मालिक जब किसी मनुष्य को तारना चाहता है तो आदमी बनकर आता है क्योंकि हम आदमी हैं, वह मालिक जब तक हमारे जैसा आदमी बनकर न आये, अपने घर जाने की राह न बताये, हम घर जा ही नहीं सकते।

मिसाल के तौर पर जेलख़ाने में कुछ क़ैदी हैं। उनकी दुःखी हालत देखकर कोई परोपकारी आता है और यह सोचकर कि इनको ठण्डा पानी नहीं मिलता, दस-बीस बोरियाँ शक्कर की और कुछ बर्फ़ मिलाकर ठण्डा पानी पिलाकर उन्हें ख़ुश कर जाता है। एक दूसरा आता है और वह यह देखकर कि इन्हें अच्छे गेहूँ की रोटी नहीं मिलती, बाजरा खाते हैं, हज़ार-दो हज़ार मन मिठाई मँगवाकर उन्हें खिला देता है, क़ैदी ख़ुश हो जाते हैं। इसी तरह तीसरा आता है और वह यह देखकर कि इन्हें अच्छे कपड़े नहीं मिलते, बल्कि मोटे मिलते हैं, जिनमें जुएँ पड़ जाती हैं, अच्छे

कपड़े की नयी पोशाकें सिलवाकर पहना देता है, क़ैदी ख़ुश हो जाते हैं। उन सभी ने सेवा की, मगर क़ैदी जेलख़ाने के जेलख़ाने में ही रहे। सेवा करनी चाहिए, हमें भी परोपकार करना चाहिए, मगर हमारा परोपकार किसी को चौरासी के जेलख़ाने से नहीं निकाल सकता। अब फिर उसी जेलख़ाने की मिसाल लो। एक आदमी के पास जेलख़ाने की कुंजी है, उसने आकर जेलख़ाने के सारे दरवाज़े खोल दिये और क़ैदियों से कहा कि जाओ अपने-अपने घरों को! सबसे अच्छा कौन है? आप ख़ुद ही बताओ। 'जिसने आज़ाद कर दिया।' इसी तरह दुनिया के जेलख़ाने से आज़ाद होने की युक्ति 'नाम' है और नाम पूरे गुरु से मिलता है। जो इस जेलख़ाने से आज़ाद होना चाहे, उसके लिए ज़रूरी है कि सत्संग सुने। सत्संग में तहक़ीक़ात होती है और हमारे मन के सारे भ्रम, शक वग़ैरह दूर होते हैं। दूसरा सतगुरु है और तीसरा नाम—ये तीन चीज़ें हैं जिन्हें पाकर हम इस जेलख़ाने से आज़ाद हो सकते हैं।

वाणी का एक-एक लफ़्ज़ करोड़-करोड़ रुपये का है और विचार करने योग्य है। अगर कोई सोच-विचार कर हृदय में बिठा ले तो किताबें पढ़ने की ज़रूरत नहीं। यह धुर-धाम पहुँचे हुए महात्मा की वाणी है। वे क्या उपदेश देते हैं? कि प्यारों, तुम जन्मों-जन्मों से दुनिया का सिमरन करते चले आ रहे हो। हरएक आदमी अपने-अपने काम का सिमरन करता है। ज़मींदार अपने काम का सिमरन करता है कि कल किस खेत में बीज बोना है, किसमें हल जोतना है। दुकानदार अपने काम का सिमरन करता है कि कौन-सा सौदा ख़त्म है ताकि और लाया जाये। क्लर्क अपने काम का सिमरन करता है कि कौन-से काग़ज़ बन चुके हैं और कौन-से नहीं बने। जज अपने काम का सिमरन करता है कि कल कौन-सा फ़ैसला करना है। औरतें अपने काम का सिमरन करती हैं कि कौन-सी चीज़ है, कौन-सी नहीं। आटा-दाल है, नमक-मिर्च है। मतलब कि हरएक व्यक्ति अपने-अपने काम का सिमरन करता है। अब क़ायदा है कि जिस चीज़ का सिमरन करो, उसी का ध्यान आता है और जिसका ध्यान होता है, मरकर आदमी वहीं जाता है या जन्म लेता है। जब हम दुनिया के कामों का

सिमरन करते हैं तो सारी उम्र हमें दुनिया का ही ध्यान आता है। जब हमने सारी उम्र दुनिया के काम किये, दुनिया ही खायी, दुनिया ही पी तो मौत के वक़्त हम किधर जायेंगे? उसूल है कि जो कर्म हम सारी उम्र करते हैं, मौत के वक़्त उनका अर्क निकलकर बुद्धि बनती है और उसमें जो संकल्प या ख़याल पैदा होते हैं, उनके मुताबिक़ अगला जन्म होता है। सो, हम ऐसी हालत में मरकर दुनिया में जन्म लेंगे, घोड़ा, गधा, कुत्ता, सूअर बनेंगे।

जब मैं दुनिया की पहली बड़ी लड़ाई* में गया तो एक बाबू मेरे साथ था, उसका मैं नाम नहीं लेना चाहता। जब वह लड़ाई से वापस आया, अपने साथ कोई डेढ़ लाख रुपया ले आया। वह एक कमिस्सरियत (सेना रसद विभाग) का एजेण्ट था। उसने कुछ रिश्वतें लीं, कुछ गायों के चारे में से रखा यानी ग़बन किया। घर पहुँचकर उसने उन रुपयों से कई मकान बनवाये और अन्य आराम के सामान इकट्ठे किये। जिस वक़्त मौत आयी तो सारी उम्र के किये हुए कर्मों के ख़याल सामने आ गये। तब कहने लगा कि हाय! वह गाय सींग मारती है, यह गाय सींग मारती है! इसी तरह ली हुई रिश्वतों के सिलसिले में बोलता और रोता रहा।

इसी तरह एक पुलिस इंसपेक्टर का ज़िक्र है। उसकी पत्नी सत्संगिन थी। वह चाहती थी कि उसको नाम मिल जाये। जब वह कहती है कि चलो, डेरा चलें तो वह कहता कि अभी मेरा कोट नहीं बना, जब कोट बन जायेगा, तब चलेंगे। जब दूसरा महीना आता तो पत्नी फिर डेरा जाने के लिए कहती तो वह कोई न कोई बहाना बनाकर टाल देता। ख़ैर! इसी तरह करते-कराते उसकी मौत आ गयी। क्योंकि सारी उम्र बेईमानियाँ, ऐब, पाप किये थे, मौत के वक़्त सामने आ गये। कहता है, ''मुझे न मारो! बच्चों की माँ! मुझे बचा! देख! ये मेरे हाथ जलाते हैं, और-और दुःख देते हैं।'' अब सतगुरु क्या उपदेश देता है? वह कहता है कि तू दुनिया में रह, गृहस्थी बना रह, न काम-काज छोड़, न घर-बार छोड़, जो तुझे मिलना है, अवश्य मिलेगा। जब हम पैदा होते हैं यानी माँ के पेट से बाहर आते हैं, अपना प्रारब्ध साथ लेकर आते हैं। जब तेरा प्रारब्ध ही तुझे

* यहाँ इशारा प्रथम विश्व युद्ध (1914-18) की ओर है।

मिलना है तो तू पाप की कमाई न कर, बल्कि नाम का सिमरन कर। जब तू नाम का सिमरन करेगा, तेरा ख़याल इकट्ठा होकर अन्दर आ जायेगा।

जिस तरह पानी की मारी हुई खेती पानी से ही हरी होती है या जिस तरह लोहे को लोहा काटता है, इसी तरह दुनिया के सिमरन को नाम का सिमरन काटता है। यह नहीं कि नाम लेकर रख छोड़, बल्कि दुनिया का सिमरन छोड़कर नाम का सिमरन कर। ज्यों-ज्यों तू सिमरन करेगा, तेरा मन जो तुझे बाहर लिये फिरता है, आहिस्ता-आहिस्ता अन्दर आ जायेगा और दोनों आँखों के बीच में खड़ा होना शुरू हो जायेगा। जो लोग सिमरन करते हैं उन्हें पता है कि सिमरन में कैसी लज़्ज़त है, उनसे पूछ लो। सभी सन्त-महात्मा कहते हैं कि नाम का सिमरन करो। अब सवाल पैदा होता है कि कौन-से नाम का? क्योंकि मालिक के बहुत सारे नाम हैं, तो सन्त जवाब देते हैं कि नाम दो क़िस्म का है—एक ज़ाती और दूसरा सिफ़ाती। सिफ़ाती नाम वे हैं जिनके ज़रिये महात्माओं ने परमात्मा का वर्णन किया है। हर जगह उसे रमा हुआ देखकर 'सर्वव्यापक', गिरि (पर्वत) को उठानेवाला 'गिरधारी' या मुर नामक राक्षस को मारनेवाला 'मुरारी' कह दिया। सिफ़ाती नाम वे हैं जो उसकी सिफ़त तक सीमित हों। इसके विपरीत, जो ज़ाती नाम है, वह किसी भाषा में नहीं। जो तुम्हारे अन्दर इन्तज़ाम करता है, वह ज़ाती नाम है। सतगुरु कहते हैं, वह नाम तेरे अन्दर है, तू अन्दर जा और अपनी रूह को उसके साथ जोड़ दे। अन्दर जाने के लिए जो सिफ़ाती नाम वह हमें बताता है, वह उसका अपना कमाया हुआ है। अब हमें उस नाम का सिमरन करना है। किस तरह? मन और प्यार के साथ। सो, जब आप इस तरह सिमरन करोगे और तीसरे तिल को अपना आसन बनाओगे तो हाथ-पैर सुन्न होने शुरू हो जायेंगे। यहाँ तक कि सारा शरीर सो जायेगा, तब आप महसूस करोगे कि यह शरीर मेरा नहीं बल्कि पराया मुर्दा है। जब अन्दर जाओगे तो पहले देवों और पितरों का मार्ग आयेगा, फिर तारा-मण्डल आयेगा, फिर सूरज का मण्डल और फिर चन्द्रमा का मण्डल आयेगा। मगर ये चीज़ें उस वक़्त आयेंगी जब आप आँखों से ऊपर जाओगे, पहले नहीं।

आप शरीर नहीं और न ही सतगुरु शरीर है। शरीर जड़ है। अब आपको बड़ा सुन्दर और लतीफ़ (सूक्ष्म) शरीर मिल गया। यह स्थूल शरीर तो जड़ है, मगर वह सूक्ष्म से सूक्ष्म है। अगर आपको इंग्लैंड जाना हो तो इस स्थूल शरीर को कई मुश्किलें पेश आती हैं, मगर उस सूक्ष्म शरीर को नहीं। जब ख़याल किया, इंग्लैंड पहुँच गये, ख़याल किया, आ गये। जब अन्दर गुरु का स्वरूप प्रत्यक्ष कर लोगे तब वह नूरी स्वरूप हमेशा साथ रहेगा और सँभाल करेगा।

भाई मोहन सिंह: हुज़ूर! नक़्श ऐसे ही हैं जैसा कि गुरु बाहर है?

महाराज जी: हाँ! नक़्श तो यही हैं, मगर वह स्वरूप सूक्ष्म है। अब सिमरन में क्या होता है? रूह जाती है, लौट आती है क्योंकि रूह को वहाँ ठहरने का कोई आसरा नहीं। जब आप वहाँ पहुँच गये, आपका सिमरन का कोर्स पूरा हो गया। अब वहाँ जाकर नया कोर्स पूरा करना है। वह क्या है? सतगुरु का ध्यान! वहाँ पर सतगुरु के ध्यान की ज़रूरत है।

ये जो ऋषि-मुनियों ने मूर्तियाँ बनायी हैं और ठाकुरद्वारों, मन्दिरों आदि में रखी हुई हैं, ये सिर्फ़ ध्यान के लिए ही हैं, वरना पत्थर तो कुछ बोलनेवाले हैं नहीं। ये जो मूर्तियाँ हैं, चाहे अवतारों की हों, वलियों की हों या किसी और की, ये बेजान हैं। बेजान चीज़ जानदार को कैसे खींच सकती है? कभी नहीं! सो, कहते हैं कि हमारा सिवाय सतगुरु के और किसी के साथ प्यार नहीं। अगर कहीं जंगल में हमारा कोई रिश्तेदार मिल जाये तो हम उसे प्यार के साथ बाँहों में भर लेते हैं, इसी तरह जब अन्दर गुरु का स्वरूप प्रत्यक्ष हो जाये तो बड़ी ख़ुशी होती है। वह स्वरूप बड़ा ख़ूबसूरत और इतना प्यारा है कि उसे देखकर आँखें तृप्त ही नहीं होतीं। वह वहाँ खड़ा है। जिनका मन हिलता है, वे कहते हैं कि जी, स्वरूप आता है और चला जाता है। स्वरूप तो वहीं खड़ा है। उनका अपना मन आता और जाता है।

जिस तरह जब हम रेल में बैठे होते हैं और रेल चल रही होती है, तब पेड़ दौड़ते हुए नज़र आते हैं। यह नज़ारा हम सभी ने देखा होगा। अब कभी पेड़ भी दौड़ते हैं? कभी नहीं। वे तो ज़मीन में गड़े हुए हैं।

सो, आप ज्यों-ज्यों सिमरन और ध्यान करोगे, आपको वहाँ ठहरने की आदत होती जायेगी। इसका नाम है सतगुरु-भक्ति, सतगुरु-सेवा! सतगुरु और कोई सेवा नहीं लेता। आपकी धन की सेवा से या तो आपके लिए कोई मकान बना देगा या लंगर चला देगा, लेकिन अपने लिए नहीं। सो, गुरु-भक्ति बहुत ऊँची अवस्था है। जिस तरह छोटा बच्चा अपने आप को माँ की गोद में दे देता है, वह बच्चे का पूरा ज़िम्मा ले लेती है, उसे नहलाती है, धुलाती है, खिलाती है, मतलब कि उसका हर वक़्त ख़याल रखती है, इसी तरह अगर शिष्य सबकुछ सतगुरु पर छोड़कर अपने आप को उसके हवाले कर दे तो सतगुरु उसे सचखण्ड ले जाने का ज़िम्मेदार है। यही गुरु अमर दास जी कहते हैं:

तनु मनु धनु सभु सउपि गुर कउ हुकमि मंनिऐ पाईऐ॥[2]

अगर आप अपने आप को गुरु को सौंप दोगे तो जहाँ भी जाओगे, गुरु आपके साथ जायेगा। हर जगह सँभाल करेगा। जो सवाल पूछोगे, उसका जवाब देगा। फिर वह कहेगा कि आओ चलें! वह किस जहाज़ पर बिठायेगा? 'नाम के' और खण्डों-ब्रह्माण्डों की सैर करायेगा। उनकी क्या मिसाल दें? वे अपनी मिसाल आप हैं। हम पर जितने भी बन्धन पड़े हुए होंगे, वे उनसे आज़ाद करते जायेंगे। पहले वे हमें सहँस-दल-कँवल में ले जायेंगे, फिर ब्रह्म में, फिर पारब्रह्म में और फिर सचखण्ड में। अगर ऋषि, मुनि, वली, पैग़म्बर अन्दर गये हैं तो इसी तरीक़े से, अगर सन्त-महात्मा गये हैं तो इसी तरीक़े से। अनन्त काल से, जब से दुनिया बनी है, यह तरीक़ा चला आ रहा है। यह किसी का बनाया हुआ नहीं, बल्कि कुल-मालिक का बनाया हुआ है।

एक सत्संगी: हुज़ूर! जो सिफ़ाती नाम हैं, क्या वे मौसूफ़ (जिसकी सिफ़त की जाये) यानी नामी के साथ जुड़े हुए हैं?

महाराज जी: नहीं! बल्कि जब तक मौसूफ़ (नामी) न मिले, सिफ़ाती नाम काफ़ी नहीं। जब ज़ाती नाम मिल गया तो सिफ़त या गुण साथ ही आ गये।

सो, जो सिफ़ाती नाम सतगुरु बताता है, उसका सिमरन करो और नौ दरवाज़ों को ख़ाली करके तारा-मण्डल, सूरज और चन्द्रमा-मण्डल को पार करके सतगुरु को प्रत्यक्ष कर लो।

द्रोणाचार्य पाण्डवों का गुरु था, वह उन्हें तीरन्दाज़ी की शिक्षा दे रहा था कि एक भील का लड़का आया, देखकर उसको भी शौक़ पैदा हुआ। उसने प्रार्थना की कि मुझे भी तीरन्दाज़ी सिखाओ। द्रोणाचार्य ने जवाब दिया, "ये शहज़ादे, तू एक ग़रीब भील का लड़का!" अब प्रेम, प्रेम ही होता है। उसने क्या किया, द्रोणाचार्य के स्वरूप का ध्यान करना शुरू कर दिया। ध्यान कर-कर के उसे अपने अन्दर प्रकट कर लिया। अगर द्रोणाचार्य अन्दर जाता होता तो वहाँ भी इनकार कर देता। अब द्रोणाचार्य की उस प्रत्यक्ष मूर्ति ने उसे तीर चलाना सिखा दिया।

द्रोणाचार्य शहज़ादों का इम्तिहान ले रहा था। उसने हुक्म दिया कि वह जो कुत्ता भौंक रहा है, उसके मुँह में तीर मारो। सभी ने बारी-बारी से तीर मारे, पर सभी चूक गये। उस भील के लड़के ने भी तीर मारा जो कुत्ते के मुँह में जा लगा। अब द्रोणाचार्य हैरान कि एक भील का लड़का शहज़ादों से भी आगे बढ़ गया। उसको बुलाकर पूछा, "तेरा गुरु कौन है? तूने यह तीरन्दाज़ी किससे सीखी है?" कहता है, "आपसे।" "वह किस तरह?" कहता है कि जब आपने मुझे तीरन्दाज़ी सिखाने से इनकार कर दिया तो मैंने आपका ध्यान करके आपका स्वरूप प्रकट कर लिया और उससे सीख ली।

अब सिमरन क्यों किया जाता है? ताकि अन्दर सतगुरु के दर्शन हों। जब यहाँ (दोनों आँखों) तक शरीर सो जायेगा तो ऐसा मालूम होगा कि यह शरीर मेरा नहीं यानी अष्ट-दल-कँवल तक आत्मा ख़ाली सिमरन के द्वारा चली जाती है। कहते हैं, जिस वक़्त यह जीते-जी मर गया, आगे गुरु इसके अन्दर बैठा हुआ है। जब सतगुरु को प्रत्यक्ष कर लिया तो सतगुरु इसे लेकर अपने घर की ओर चल पड़ेगा। प्रत्यक्ष सतगुरु का ध्यान फ़ायदा करता है। सतगुरु मालिक होता है। गुरु नानक साहिब कहते हैं:

सतिगुर की मूरति हिरदै वसाए॥ जो इछै सोई फलु पाए॥[3]

जब आप सतगुरु को प्रत्यक्ष कर लोगे, वह आपके साथ-साथ चलेगा। आप कहीं भी जाओ, सतगुरु सामने है।

सतगुरु का करो भरोसा। फिर करो न कुछ अफ़सोसा॥

जब हम रेल्वे स्टेशन पर पहुँचकर टिकट लेकर गाड़ी में बैठ जाते हैं, चाहे गाड़ी लेट हो जाये, पर हमें यक़ीन होता है कि हम ज़रूर पहुँच जायेंगे। इसी तरह जब सतगुरु ने हमें नाम यानी धुर-धाम का टिकट दे दिया तो हम ज़रूर सचखण्ड पहुँचेंगे। ब्रह्माण्ड पलट जाये, सन्तों का वचन नहीं पलटता। नाम का बीज कभी नाश नहीं होता, वह ज़रूर उगेगा और पेड़ बनेगा। अगर कोई सतगुरु से नाम लेकर उसका दुश्मन भी बन जाये, तो भी सतगुरु उसे नहीं छोड़ता। सन्त दया लेकर आते हैं। अगर कोई उन्हें तकलीफ़ें भी दे, वे श्राप नहीं देंगे, वर चाहे दे दें, लेकिन जो निचले दर्जे के हैं, वे झट श्राप देने को तैयार हो जाते हैं। जब सतगुरु ने नाम दे दिया तो आपका फ़र्ज़ है कि उसकी कमाई करके सतगुरु को सामने खड़ा कर लो, लेकिन अगर कोई बीमार किसी डॉक्टर से दवाई लाकर आले में रख छोड़े और कहे कि बीमारी नहीं गयी तो डॉक्टर का क़ुसूर नहीं। इसी तरह अगर हम सतगुरु से नाम लेकर रख छोड़ें तो कुछ फ़ायदा नहीं, अगर कमाई करें तो ज़रूर फ़ायदा होगा।

फिर भी, जिन्होंने नाम लेकर रख छोड़ा है, सतगुरु उन्हें एक जन्म और देगा। अगर फिर भी भजन नहीं करेंगे तो एक और जन्म। आख़िर सतगुरु को लेकर ही जाना है। नाम वाला मनुष्य-जन्म से नीचे नहीं गिरता और न ही सतगुरु उसे छोड़ता है। जिस तरह जब रेल विभाग ने हमें टिकट देकर गाड़ी में बिठा दिया तो पहुँचाना उनका फ़र्ज़ हो गया। इसी तरह जब सतगुरु ने नाम दे दिया तो वह सचखण्ड पहुँचायेगा ही। सतगुरु तो हर वक़्त हमारे साथ है, मगर हमें यक़ीन तब आता है जब हम अन्दर जाकर देखें। अन्दर जाकर सतगुरु की हस्ती, सतगुरु की क़द्र,

क़ीमत मालूम होती है। इससे पहले तो अगर किसी ने यह कह दिया कि यह सिलसिला ठीक नहीं, पाखण्ड है तो यक़ीन उठ गया। अगर किसी ने कह दिया कि यह सिलसिला ठीक है, महात्मा पूरे हैं तो विश्वास बँध गया। अगर अन्दर प्रत्यक्ष कर लिया जाये तो पक्का यक़ीन हो जायेगा। जिस तरह अगर आपके सामने एक भैंस बँधी हो, चाहे लाख आदमी कहें कि यह घोड़ा है, आप नहीं मान सकते। इसी तरह अगर सतगुरु अन्दर प्रत्यक्ष हो जाये तब अगर सारी दुनिया एक तरफ़ हो जाये और सतगुरु को बुरा-भला कहे, आप नहीं मानेंगे। आपका यक़ीन नहीं टूटता, क्योंकि आपने अन्दर सतगुरु की पोज़ीशन को देख लिया है। सो, सन्त कहते हैं कि जब आपने अपने आप को सतगुरु के हवाले कर दिया, फिर आपको कोई अफ़सोस नहीं, कोई दुःख नहीं। यही गुरु राम दास जी कहते हैं:

जिउ जननी सुतु जणि पालती राखै नदरि मझारि॥
अंतरि बाहरि मुखि दे गिरासु खिनु खिनु पोचारि॥
तिउ सतिगुरु गुरसिख राखता हरि प्रीति पिआरि॥[4]

जिस तरह औरत पहले गर्भ में बच्चे की रक्षा करती है, फिर जन्म देकर उसे खिलाती है, पिलाती है, नहलाती-धुलाती है, कहीं आग में हाथ न डाल दे, नाली में न गिर पड़े, मतलब कि हर वक़्त उसका ख़याल रखती है। इसी तरह सतगुरु शिष्य की सँभाल करता है। जब यह हालत हो जाती है तो फिर गुरु अमर दास जी कहते हैं:

नानक जिन्ह कउ सतिगुरु मिलिआ तिन्ह का लेखा निबड़िआ॥[5]

यह सतगुरु के मिलने का फ़ायदा है। इसके विपरीत, अगर नाम लेकर रख छोड़ा, जपा नहीं तो कोई फ़ायदा नहीं। वैसा ही काम, वैसा ही क्रोध और वैसे ही अन्य विषय-विकार। अब कहते हैं कि जिस तरह बच्चा माँ की गोद में आ गया तो उसे कोई फ़िक्र नहीं, इसी तरह सतगुरु की शरण में आकर इसके सारे फ़िक्र दूर हो गये।

सतगुरु तोहि छिन छिन पोसें। हँगता तेरी सब बिधि खोसें॥

बच्चे ने अपना फ़र्ज़ अदा कर दिया। क्या? अपने आप को माँ की गोद में दे दिया। इस तरह शिष्य ने अपने आप को सतगुरु के हवाले कर दिया। अब सतगुरु को ही उसके काम, क्रोध, लोभ, मोह और अहंकार को दूर करना है। इसी तरह मन और इन्द्रियों वग़ैरह की जितनी बीमारियाँ इसके साथ लगी हुई हैं, सतगुरु को ही दूर करनी हैं। सतगुरु वह चीज़ देता है जिसे पाकर इसके सारे दुःख दूर हो जाते हैं। उसने उसका इलाज क्या रखा हुआ है, 'भजन और सिमरन'। वह कहता है कि तेरे अन्दर अमृत है, क्या कर? सिमरन करके नाम की धुन को पकड़। जो अन्दर सीधी सड़क है, उस पर चल। जिस वक़्त नाम जपकर अन्दर अमृत पियोगे, काम, क्रोध आदि जितने दुश्मन हैं, सारे भाग जायेंगे। वह आपकी जायदाद है। यह मन जो अभी बाहर जाता है, वह उस लज़्ज़त को पाकर दुनिया की लज़्ज़तों को छोड़ देगा। जिस तरह माँ कहती है, बच्चा आग में हाथ न डाल दे, नाली में न गिर पड़े, मतलब कि हर वक़्त उसका ख़याल रखती है, इसी तरह सतगुरु शिष्य की सँभाल करता है कि कहीं यह दुनिया में प्रवृत्त न हो जाये, काम-क्रोध में न चला जाये, कोई और खोटा कर्म न करे। यों तो सतगुरु जिस दिन नाम देता है, उसी दिन से शिष्य को अपना बना लेता है और इसके हर काम में मदद करता है, लेकिन शिष्य को ख़बर नहीं। सतगुरु एहसान करके बताता नहीं, यह उसका उसूल है। इसका यह मतलब नहीं कि वह मदद नहीं करता। नहीं! वह ज़रूर मदद करता है, मगर शिष्य को ख़बर नहीं होती।

जिस तरह कि बच्चा सोया हुआ हो, उसके मुँह पर मक्खियाँ बैठी हुई हों तो माँ उन्हें उड़ाकर ऊपर कपड़ा डाल देती है, पर बच्चे को इसकी कोई ख़बर नहीं। इसी तरह सतगुरु शिष्य को अनेक आफ़तों से बचाता है। यहाँ तक कि कई जीवों के तो ऐसे कर्म होते हैं कि वह सतगुरु को अपने ऊपर लेने पड़ते हैं। पराई आग में कौन जलता है? 'गुरु'। गुरु के सिवाय और कोई नहीं जो पराई विपदा अपने गले में डाले।

तीस-चालीस साल पहले का वाक़िआ है। महाराज बाबा जैमल सिंह जी अम्बाला गये और सत्संग किया। सिंह सभा के मेम्बर और कई और लोग आये। क्योंकि ग्रन्थ साहिब में से सत्संग था और महाराज जी ने बड़े प्रेम के साथ किया था, वह उनके मन में बैठ गया। उनमें एक सिक्ख था, मैं उसका नाम नहीं लेना चाहता, भाई मोतीराम के घर ठहरा हुआ था। भाई मोतीराम ने कहा कि हुज़ूर! इनको नाम दे दो। महाराज जी ने कहा, ''इसको नाम न दिलवाओ।'' मगर मोतीराम का ख़याल था कि उसे नाम मिल जाये और वह सत्संग के दायरे में शामिल हो जाये और हमारे सत्संग की रौनक बढ़ जाये। उस वक़्त तो महाराज जी के मना करने पर मोतीराम चुप हो गया, मगर दो दिन बाद उस सिक्ख ने मोतीराम से फिर कहा, इस पर मोतीराम ने महाराज जी से फिर अर्ज़ की कि इसे नाम दे दो। महाराज जी ने फिर कहा कि इसे नाम न दिलवाओ।

महाराज जी का वहाँ कुछ दिन रहने और सत्संग करने का ख़याल था, मगर जब मोतीराम न माना तो आपने कहा, ''नाम तो हम दे देंगे, मगर फिर हमें रोकना मत। हम नाम देते ही वापस चले जायेंगे।'' मोतीराम ने सोचा कि महाराज जी को तो मैं फिर कभी बुला लूँगा, मगर इस सिक्ख को तो नाम मिल जायेगा। यह सोचकर कहता है, ''अच्छा! मैं ब्यास जाकर सत्संग सुन लूँगा मगर आप इसे नाम दे दो।'' महाराज जी कहने लगे, ''अच्छा! लाओ ताँगा और बुलाओ सरदार साहिब को।''

सरदार साहिब आ गये, महाराज जी ने नाम दे दिया और ताँगे में सवार होकर रेल में आ बैठे। मैं नौकरी से छुट्टी पर आया हुआ था, महाराज जी मुझे लुधियाना स्टेशन पर मिल गये। मैंने अर्ज़ की कि मेरा गाँव पास ही है, वहाँ चलो। मैंने घर में सत्संग करवाने की तैयारी की हुई थी और इतवार को ब्यास जाकर ले जाने के लिए अर्ज़ करनी थी। महाराज जी ने गाँव जाना मंजूर नहीं किया, बल्कि यह भी कहा कि इस इतवार डेरा न आना।

मुझे क्या पता था कि इसमें क्या रम्ज़ है! यहाँ आकर इतने बीमार हुए कि मैं कह नहीं सकता। यहाँ तक कि शरीर के रहने की भी कोई आशा

न रही। अमृतसर के हकीम आये, उन्होंने कहा कि दवाई खाओ। महाराज जी ने कहा, ''बारह दिन के बाद जो दवाई दोगे, मैं खा लूँगा, मगर अभी दवाई न दो।'' हकीम चले गये। बीबी रुक्को पास रहती थी, रोने लगी। महाराज जी कहने लगे, ''रो मत, हम अभी नहीं जाते।'' इसी तरह कई दिन गुज़र गये। दूसरे इतवार को मैं चला गया। महाराज जी मुझे अपने पास ठहराते थे, और किसी को नहीं ठहराते थे। मुझे बीबी रुक्को से पता लगा कि महाराज जी बहुत बीमार रहे थे। मैंने महाराज जी से पूछा कि कोई दवाई भी खायी है? कहने लगे, ''नहीं, क्योंकि दवाई का असर नहीं होना था।'' मैंने पूछा, ''कारण?'' कहने लगे, ''पूछो ना!'' मैंने अर्ज़ की कि क्यों? कहने लगे, ''तुझे हज़म नहीं होगा।'' फिर कहा कि अच्छा! जब तक मेरा शरीर है, किसी को भी न बताना। मैंने कहा, ''जो हुज़ूर का हुक्म।''

यहाँ तक सतगुरु हमारी मदद करते हैं, मगर वे जताते नहीं। जब शिष्य की आँखें खुल जाती हैं तो वह ख़ुद देखता है। सतगुरु कहते हैं कि हे शिष्य, तू एक बार आँखों से ऊपर आ जा, फिर तू जो कहेगा, हम करेंगे। सतगुरु पल-पल शिष्य के अन्दर बैठकर उसकी सँभाल करता है। शिष्य यह ख़याल करे या न करे, पर सतगुरु सँभाल करता है। लेकिन बच्चे में जो बुरी आदतें हैं, उन्हें छोड़ने के लिये माँ उसे समझाती है। इसी तरह सतगुरु शिष्य को चोरी, ठगी और दुराचार से बचाता है। यह उसका काम है। न माने तो इसकी मर्ज़ी है। कबीर साहिब कहते हैं:

कबीर साचा सतिगुरु किआ करै जउ सिखा महि चूक॥
अंधे एक न लागई जिउ बांसु बजाईऐ फूक॥[6]

अगर कामिल मुर्शिद मिल गया, वह इसको हिदायत देता है। अगर यह न माने तो इसका अपना क़ुसूर है। स्वामी जी कहते हैं कि तू कामिल मुर्शिद से प्यार कर, उससे रूठ मत। अगर मुर्शिद से रूठ गया तो काम नहीं बनेगा।

ख़्वाजा हाफ़िज़ ने क्या कलाम कहा था:

ब-मै सज्जादा रंगीं कुन गरत पीरे-मुग़ां गोयद।[7]

अगर मुर्शिद कहता है तो मुसल्ला* शराब में रँग ले। जब यह कलाम, यह बात ईरान में सुनी गयी तो शोर मच गया कि इतना बुज़ुर्ग! इतने कुफ़्र† का कलाम कह दिया है! उस वक़्त न्याय का काम क़ाज़ियों के हाथ में होता था। लोगों ने जाकर काज़ी से कहा। शहर का बड़ा क़ाज़ी ख़्वाजा हाफ़िज़ के पास आया और कहा कि तूने कुफ़्र का कलाम कहा है, इस कलाम को वापस ले, नहीं तो इसका मतलब समझा। ख़्वाजा हाफ़िज़ ने कहा कि फ़क़ीर अपने कलाम को वापस नहीं लेते। क्यों? क्योंकि जो मालिक ने अन्दर से हुक्म दिया है, मैंने बाहर कह दिया। गुरु नानक साहिब कहते हैं:

जैसी मै आवै खसम की बाणी तैसड़ा करी गिआनु वे लालो॥[8]

गुरु अर्जुन साहिब भी यही फ़रमाते हैं:

जिउ बुलावहु तिउ नानक दास बोलै॥[9]

क़ाजी ने कहा कि इस बात को खोलकर समझा। हाफ़िज़ साहिब ने कहा कि सामने जो पहाड़ है, उस पर एक फ़क़ीर है, वह इस बात को समझायेगा। ख़ैर, वहाँ पहुँचा और जब उस फ़क़ीर से मतलब पूछा तो उसने कहा कि इसका मतलब मैं फिर समझाऊँगा, इसके पहले तू उस सामने के शहर में, फ़लाने मकान में एक वेश्या रहती है, वहाँ जा। वह तुझे इस सवाल का जवाब देगी।

कहता है कि ये कैसे फ़क़ीर हैं। एक कहता है कि मुसल्ला शराब में रँग ले और दूसरा कहता है कि वेश्या के यहाँ जा। ख़ैर, तहक़ीक़ात ज़रूरी थी, कहता है कि चलो, देखें तो सही कि क्या मामला है। आख़िर

---

* वह दरी जिस पर बैठकर नमाज़ पढ़ी जाती है।

† धर्म के विरुद्ध।

क़ाज़ी वहाँ पहुँचा और उस वेश्या का पता पूछकर उसके मकान पर चला गया। वेश्या तो कहीं गयी हुई थी, लेकिन घर की मुखिया मौजूद थी। पूछा कि बीबी है? मुखिया ने कहा कि हाँ, है। बैठक में चौकी डाल दी।

उन्होंने कुछ वक़्त से एक लड़की को पाला हुआ था। वह अब जवान हो गयी थी। उसने क्या किया, लड़की से कहा कि देख! हम वेश्याएँ हैं, यह हमारा पेशा है। तू अब इस क़ाबिल हो गयी है, इसलिए तू बीबी के कपड़े पहन ले, हमारा आया हुआ ग्राहक ख़ाली न जाये। लेकिन वह नेक-पाक थी, वह हैरान थी कि मेरे ऊपर क्या मुसीबत आने लगी है, थी तो ख़रीदी हुई, क्या जवाब देती? आख़िर मुखिया उसे ज़बरदस्ती बीबी के कपड़े पहनाकर क़ाज़ी के कमरे में छोड़ आयी। क़ाज़ी ने सोचा कि अगर यह वेश्या होती तो हँसती, बोलती लेकिन यह वेश्या नहीं। यह कोई और है। यह सोचकर क़ाज़ी ने कहा कि तू बीबी है? लड़की चुप। क़ाज़ी ने दोबारा कहा कि तू कौन है? लड़की फिर चुप। आख़िर क़ाज़ी ने कहा, ''बेटी! मैं तुझे कुछ नहीं कहूँगा, बता तू है कौन?'' लड़की ने रोते हुए आहिस्ता-आहिस्ता कहा, ''मैं एक मुसीबत की मारी हुई हूँ। आज तक मैं नेक-पाक रही हूँ, लेकिन आज पहली दफ़ा मैं इस बुरे मार्ग पर जा रही हूँ, पता नहीं क्या हाल होगा।'' क़ाज़ी ने कहा, ''तू डर मत! मैं तुझे कुछ नहीं कहूँगा। तू सच-सच बता, तू है कौन? तू इनके घर किस तरह आ गयी?''

लड़की कहने लगी, ''मुझे थोड़ा-थोड़ा याद है, मैं जब छोटी-सी थी, हमारे गाँव में डाका पड़ा। सब लोग भाग गये, मैं भी भागी, पर मुझे डाकुओं ने पकड़ लिया और इनके घर बेच गये।'' क़ाज़ी ने कहा, ''तुझे याद है कि तेरा गाँव कौन-सा था?'' लड़की ने कहा, ''मुझे थोड़ा-थोड़ा याद है, मेरा फ़लाना गाँव था।'' वही क़ाज़ी का गाँव था। क़ाज़ी को ख़याल आया कि यह तो अपने ही गाँव की लड़की है। दिल में जोश आया और कहने लगा, ''तुझे याद है कि तेरे मुहल्ले का क्या नाम था?''

लड़की ने कहा, ''मुझे थोड़ा-थोड़ा याद है, हमारे मुहल्ले का यह नाम था।'' वह क़ाज़ी का ख़ुद अपना मुहल्ला था। अब मुहल्ले की

लड़की! और तहक़ीक़ात करने का ख़याल पैदा हुआ। उसने कहा, ''तेरे बाप का क्या नाम था?'' लड़की ने कहा, ''मैं बहुत छोटी-सी थी, पर मुझे थोड़ा-थोड़ा याद है कि मेरे बाप का यह नाम था।'' वह क़ाज़ी साहिब ख़ुद सामने बैठे हुए थे। रोकर उन्होंने लड़की को गले से लगा लिया। लड़की की बाँह पकड़कर उस फ़क़ीर के पास ले आया और कहा कि ज़ाहिरी तौर पर तूने मुझे दुराचार के लिए भेजा था; मगर अन्दर से तेरी रम्ज़ कुछ और ही थी। दरअसल अन्दर से तेरा मतलब मुझे अपनी बेटी से मिलाने का था। तब उस फ़क़ीर ने कहा कि ख़्वाजा हाफ़िज़ से कहो कि वे शेर का अगला मिसरा भी कह दें। जब उसके पास आया और कहने लगा कि इसका अगला मिसरा भी कह दो तो हाफ़िज़ साहिब ने कहा:

किह् सालिक बेख़बर न बवद ज़ राहो-रस्मे मंज़िल हा।[10]

वह इस राज़ का वाक़िफ़कार है। फ़क़ीरों की रम्ज़ को हम मनमुख क्या समझ सकते हैं? अगर मुर्शिद कोई हुक्म देता है, वह ज़िम्मेदार है। वह नाजायज़ हुक्म देता ही नहीं। गुरु नानक साहिब ने मुर्दा खाने का हुक्म दिया। एक गुरु अंगद देव जी ही निकले जिन्होंने कहा कि पैरों की तरफ़ से खाऊँ या सिर की तरफ़ से। चाहे उसको हलवा ही बना दिया यानी मुर्शिद का जो हुक्म है, तालिब के लिए वही हदीस* है, वही वेद है, वही सबकुछ है। गुरु नानक साहिब कहते हैं:

सभि नाद बेद गुरबाणी॥[11]

जो कुछ भी है, तालिब के लिए वही है।

तू कर उन चरनन होशें। सतगुरु से मत कर रोसें॥

अब सतगुरु के भाणे में रहना शिष्य का धर्म है। ग्रन्थ साहिब में जगह-जगह बड़े ज़ोर के साथ कहा है कि हे शिष्य, सतगुरु के भाणे में रह। अगर हम

---

* पैग़म्बर साहिब के फ़रमाये हुए वचनों का संग्रह जिन्हें प्रामाणिक माना जाता है।

सतगुरु का भाणा मानें तो हमें कोई दुःख नहीं होता। अगर परिवार ख़त्म हो जाये, सतगुरु का भाणा। अगर धन जाता रहे तो सतगुरु का भाणा। मतलब कि बीमार रखें, सतगुरु की मर्ज़ी, राज़ी रखें, उनकी मर्ज़ी। यही शेख़ सादी कहते हैं:

चु रद्द मी नगरदद ख़दंगे-क़ज़ा,
सिपर नीस्त मर बन्दा रा जुज़ रज़ा।[12]

जब, जो कुछ उसकी रज़ा में है, वही होनेवाला है और वह मिट नहीं सकता तो फिर हम उसे प्यार के साथ क्यों न भोगें? अगर उसका भाणा मानो तो कोई चिन्ता बाक़ी नहीं रहती, क्योंकि जब से हम पैदा हुए हैं, तब से जो अमीरी, ग़रीबी, बीमारी, तन्दुरुस्ती, दुःख, सुख लिखाकर लाये हैं, वह हमें ज़रूर भोगना है, फिर हाय-हाय क्यों? स्वामी जी कहते हैं कि सतगुरु से प्रेम और प्यार बढ़ाओ, इसके विपरीत, रूठो मत। कई दफ़ा देखा है कि अगर मुक़द्दमे में जीत नहीं हुई तो कहा कि छोड़ो गुरु को। अगर लड़का बीमार हुआ, आराम नहीं आया, बल्कि मर गया तो कहा कि छोड़ो सतगुरु को या कोई और काम पूरा नहीं हुआ तो कहा कि छोड़ो सतगुरु को। हमारा और सतगुरु का ताल्लुक़ लड़के-लड़कियों को सेहतमन्द करना, मुक़द्दमे जिताना या और ज़रूरतें पूरी करने का नहीं, बल्कि शिष्य और सतगुरु का जो ताल्लुक़ है, वह कुछ और ही है। अब हुज़ूर स्वामी जी महाराज समझाते हैं कि ऐ शिष्य, तेरा धर्म है, तू सतगुरु के साथ प्यार कर। तू उससे कभी रूठ मत और न कभी अभाव ला। तू जितना सतगुरु के साथ प्यार करेगा, तेरा फ़ायदा होगा। सतगुरु बेग़रज़ होता है, वह हमसे कोई इनाम नहीं माँगता। हमें मुक्ति देने के लिए मालिक ने उसे भेजा है। सतगुरु तो शीशा है। शीशे को कोई दुःख नहीं, चाहे कोई देखे या न देखे। हाँ, शीशा देखनेवाले को सुख-दुःख है, अगर हँसते हुए देखेगा तो हँसता नज़र आयेगा, अगर रोते हुए देखेगा तो रोता नज़र आयेगा। इसी तरह जब शिष्य गुरु को परमेश्वर समझते हुए प्रेम-प्यार लेकर उसके पास जाता है तो सतगुरु का दर्शन करके उसका हृदय शीतल

होता है, पर इसके विपरीत, अगर शिष्य, सतगुरु को अपने जैसा आदमी समझकर जाता है तो क्योंकि उसका अपना हृदय मैला होता है, इसलिए सतगुरु के दर्शन से उसे शान्ति और ख़ुशी नहीं मिलती। सो, अगर शिष्य मैले हृदय से सतगुरु को देखता है, गुरु की निन्दा करता है या निन्दा सुनता है तो इसमें उसका अपना नुक़सान होता है। यही गुरु नानक साहिब कहते हैं, 'गुरु की निन्दा सूणै न कानु॥' यह परहेज़ बड़ा ज़रूरी है, लेकिन हम बाहर बैठे हुए हैं। हमें नाम की क़द्र नहीं, नाम मुफ़्त में मिल गया, मुफ़्त के सत्संगी हो गये। घरों में जितनी लड़ाइयाँ होती हैं, पिचहत्तर फ़ीसदी दुनिया के ख़याल, दुनिया के झगड़े। यह शिष्य अपना काम नहीं करता। अगर विद्यार्थी अपना काम ही न करे तो उस्ताद क्या करे? इसी तरह अगर शिष्य अपना फ़र्ज़ अदा नहीं करे तो गुरु का क़ुसूर नहीं, शिष्य का क़ुसूर है, मगर हम क़ुसूर अपने ऊपर नहीं लेते बल्कि गुरु पर डालते हैं, यह ठीक नहीं।

सन् 1872 ई. का ज़िक्र है। सतगुरु बाबा राम सिंह का सत्संग हो रहा था। जिस तरह ज़िद्द करके मेला देखने जाते हैं, इसी तरह मैं भी अपने बाबा के साथ सत्संग में गया। बाबा साहिब उनके सेवक थे। वे (बाबा राम सिंह जी) रात-दिन सिमरन में रहते थे। उनका दर्शन बड़ा पवित्र था। शाम को वे दीवान में आते और सत्संग करते थे। एक सिक्ख उनके पास रहता था, उसे यह हिदायत थी कि दूर होकर बैठा रह, जब मैं पानी माँगूँ, लाकर दे दे और फिर परे हटकर बैठ जा। अब ख़ाली बैठा जाता नहीं, मन तरह-तरह की तरंगें उठाता है। जब शिष्यों को ख़ाली बैठे-बैठे हलवा-पूरी खाने को मिलती रही तो मस्ती आ गयी। कोई कहता, फ़लाने को काट देना चाहिए, कोई कहता, फ़लाने को मारो और कोई कहता उसे निकाल दो। जब शाम को बाबा राम सिंह जी सत्संग में बैठे तो कहने लगे कि मैंने तुम्हें नाम जपना बताया है, क़त्ल करना नहीं। सो, जो शिष्य सतगुरु से इस तरह की ख़्वाहिश रखते हैं, उन्हें सत्संग से क्या लेना है? अब कहते हैं कि सतगुरु से न रूठ, बल्कि उनसे प्यार करके फ़ायदा उठा ले, उसके शीशे में हँसकर देख ले, तेरा हृदय शीतल हो जायेगा।

सतगुरु गति अब सुन मो से। कहि जात न रंचक मुँह से॥

जो सतगुरु का और हमारा नाता है, वह बड़ा ऊँचा है। सतगुरु जो हम पर बख़्शिश करते हैं, हमारी ज़बान उसका बयान नहीं कर सकती। सतगुरु हम पर जो दया करना चाहते हैं, ज़बान उसके बयान के क़ाबिल नहीं। वह बड़ी ऊँची से ऊँची नेकी है। वे क्या एहसान करते हैं? आगे कहते हैं:

दसवें में खैचें नौ से। फिर एक करें तोहि दो से॥

कहते हैं, नौ द्वारों में अज्ञान है, द्वैत है, हम अज्ञानता और द्वैत में फँसे हुए हैं। सतगुरु की ड्यूटी है हमें नौ द्वारों से निकालकर दसवीं गली में ले जाना। सतगुरु का हमारे साथ नाता बेटे-बेटियाँ देने का नहीं। जो इनसान आप अन्दर नहीं गया, वह दूसरे को कैसे अन्दर ले जा सकता है? सतगुरु अन्दर जाता है और हमें भी ले जा सकता है।

राम सिंह डोगरा: हुज़ूर! बाणी कहती है,

'आपे करे कराए आपे॥'[13]

महाराज जी: जब आप अन्दर जायें तब।

राम सिंह डोगरा: सच्चे पातशाह! हम कोशिश तो बड़ी करते हैं।

महाराज जी: कोशिश ही तो नहीं करते, अगर कोशिश करें तो वह शब्द-स्वरूपी गुरु अभी अन्दर ले जाने को तैयार है।

राम सिंह डोगरा: हुज़ूर! बाणी में लिखा है:

यह करनी मैं आप कराऊँ। और पहुँचाऊँ धुर दरबारा॥[14]

महाराज जी: वह करा तो रहा है, और क्या कर रहा है। अगर तालिब इल्म (विद्यार्थी) से कहें कि स्कूल न जा तो क्या वह ख़ुद पढ़ लेगा? कभी नहीं। सतगुरु के चरणों तक पहुँचना शिष्य का काम है, अपनी मेहनत है। ग्रन्थ साहिब की बाणी किस बात पर ज़ोर दे रही

है? गुरु अमर दास जी को सत्तर साल की उम्र में परमार्थ में आने का मौक़ा मिला, इसलिए वे कीले से केश बाँधकर सारी-सारी रात अभ्यास करते रहे।

राम सिंह डोगरा: हुज़ूर! उन्हें तो दुनिया को तारना था, हमें तो दुनिया को नहीं तारना।

महाराज जी: यह तो ठीक है, मगर कमाई ज़रूरी है। बिना कमाई के अन्दर नहीं जा सकता। जो कमाई करके सचखण्ड पहुँच गया, वह मुक्त हो गया, वही सन्त है।

राम सिंह डोगरा: हुज़ूर भी तो वही हैं।

महाराज जी: अब यह झूठा विश्वास है, हमारे मन का धोखा है।

राम सिंह डोगरा: सच्चे पातशाह! बाणी में कहा गया है,

> 'बाहरि भीतरि एको जानहु ... ॥'[15]

महाराज जी: हाँ ठीक है, अगर अन्दर-बाहर एक नहीं हुआ तो फिर अन्धा आया और अन्धा चला गया। तभी तो मैं कहता हूँ, सत्संग में ज़्यादा सवाल-जवाब न करो।

सो, जब सतगुरु कहता है कि ढाई घण्टे रोज़ बैठो, मन को खड़ा करो, शरीर को सुन्न करो, कोई करता है? अगर करे तो काम न बन जाये! बाक़ी रही सतगुरु की ड्यूटी! वह अपना फ़र्ज़ अदा कर रहा है, वह ग़ाफ़िल नहीं। उस्ताद तालिब इल्म को पढ़ा तो रहा है, और क्या करे?

सतगुरु की सबसे पहली तालीम क्या है? कि आप करोड़ों जन्मों से इस चौरासी के चक्र में ठोकरें खाते रहे हो। कभी आदमी, कभी कुत्ता, कभी बिल्ला, कभी गधा, कभी साँप, कभी कुछ, कभी कुछ बनते आये हो। अब आपको मनुष्य-जन्म मिला है। मनुष्य-जन्म चौरासी के जेलख़ाने से निकलने का दरवाज़ा है। मानो, आप दरवाज़े तक आ गये हो। अब क्या करो? नौ द्वारों को ख़ाली करो, दसवीं गली में चढ़ो। दोनों आँखों तक पिण्ड है और यहाँ तक ही छः चक्र हैं। जो नाम मुक्ति देता है, वह इनमें नहीं, इनमें तो देवी-देवता हैं।

पहले गुदा-चक्र यानी मूल चक्र में गणेश या गणपति बैठा है। यह सबसे नीचे का देवता है, लेकिन कई स्थानों पर इसकी पूजा होती है। इससे आगे इन्द्रिय-चक्र में ब्रह्मा है, नाभि-चक्र में विष्णु है, हृदय-चक्र में शिव है और कण्ठ-चक्र में शक्ति है। हम दोनों आँखों के पीछे बैठे हैं, ये सब देवी-देवता पहले रूहानी मण्डल से ताकत लेते हैं।

कुछ लोग कहते हैं कि विष्णु पालता है, ठीक है। नाभि-चक्र यानी मेदा (आमाशय) में विष्णु है। मेदे में बहुत-सी रगें (नाड़ियाँ) लगी हुई हैं। कोई रग आँखों की ओर जाती है, कोई मुँह की ओर, कोई दिमाग़ की ओर, कोई कानों की तरफ़, कोई किधर, कोई किधर। जो खाना पेट में जाता है, इन रगों के ज़रिये शरीर के हरएक हिस्से में पहुँचता है। इस तरह विष्णु हमारी परवरिश करता है। जो उसकी पूजा नहीं करेगा, क्या वह उसकी सेवा नहीं करेगा? ईसाई उसको नहीं पूजते, मुसलमान नहीं पूजते, कई और क़ौमें नहीं पूजतीं, क्या विष्णु उनकी सेवा नहीं करता? ज़रूर करता है।

जब आप आँखों से ऊपर चढ़ोगे, नाम जपोगे, अन्दर शान्ति आ जायेगी। सतगुरु कहता है, इन छः चक्रों को ख़ाली करो। जब आप इन्हें ख़ाली करके ऊपर गये, एकता में आ गये। वहाँ जरनैली सड़क है, जो हर मज़हब के लिए साँझी है और सीधी सचखण्ड को जाती है। जब तक हम आँखों से बाहर बैठे हैं, हमारे रस्मो-रिवाज अलग-अलग हैं, क़ौम और मज़हब अलग-अलग हैं, जब ऊपर जायेंगे तो वहाँ कोई रस्मो-रिवाज नहीं, कोई क़ौम, मज़हब नहीं। वहाँ पर नाम है, जो सबके लिए एक है। वह मालिक एक है, उसकी बख़्शिश भी सबके लिए एक जैसी है।

अब हुजूर स्वामी जी महाराज कह रहे हैं कि आप नौ द्वार छोड़कर ऊपर आ जाओ। नौ द्वारों से निकालकर दसवीं गली में ले जाना, फिर द्वैत से एकता में ले आना, यह गुरु का काम है। जब आप नौ दरवाज़े छोड़कर ऊपर चले जाओगे तो आपके लिए यह दुनिया नाश हो जायेगी और ज्यों-ज्यों ऊपर जाओगे, ख़ुशी और शान्ति बढ़ती जायेगी।

शब्दारस तोहि पिलावें। जमपुर से फेर बचावें॥

जब आप छः चक्रों से ऊपर चढ़ो, आपके अन्दर अमृत बरसता है, उसे पियो। फिर अन्दर नाम हो रहा है। उसे 'बाँगे-आसमानी' कहो या 'इस्मे-आज़म'। वेद उसे 'नाद' कहते हैं, ऋषि-मुनि 'आकाशवाणी' और गुरु नानक साहिब 'शब्द' और 'गुरुबाणी' कहते हैं। वह शक्ति है, सारे खण्डों-ब्रह्माण्डों के जानों की जान है। जब आत्मा उसके साथ जुड़ गयी तो शान्ति आ गयी, प्रेम और प्यार आ गया। यह दौलत सतगुरु के मिलने से हासिल हुई। जब मौत आती है तो यमदूत प्राण निकालें या सतगुरु निकाले, मगर जब किसी प्रेमी सत्संगी की मौत होती है तो सतगुरु आता है, यमदूत नहीं आते और न उसे धर्मराय के दरबार में जाकर हिसाब देना पड़ता है। पापों को उतारने की दो ही तरक़ीबें हैं, या कमाई करनी, या सतगुरु की दया।

मैंने ऐसे बहुत-से वाक़िआत देखे और सुने हैं कि प्रेमी सत्संगियों की मौत के वक़्त सतगुरु आता है और साथ ले जाता है। यहाँ तक रिपोर्ट मिली है कि कई औरतों के साल-साल भर के बच्चे हैं, जब मौत का पैग़ाम आया तो उन्होंने दूध पिलाना बन्द कर दिया। सास कहती है कि बच्चे को दूध पिला और सतगुरु के आगे अर्ज़ कर कि तुझे एक साल के लिए छोड़ जायें, तेरा बच्चा सयाना हो जाये, मगर वे नहीं मानतीं। उनका प्यार सतगुरु के साथ जुड़ा होता है।

एक दफ़ा जब मैं गाँव गया, भाई भान सिंह और भाई करतार सिंह, दोनों पाठी साथ थे। वहाँ एक सत्संगी शरीर छोड़ने लगा। मैंने पाठियों से कहा कि आप जाओ और जाकर देखो कि सतगुरु आता है या नहीं। वह नाम ही है जो मोह को काटता है, वह नाम ही है जिसे पाकर न काम रहता है, न क्रोध, न लोभ, न मोह और न अहंकार। नाम ऐसी दवाई है जो सभी बीमारियों को दूर करती है। नाम वाले को धर्मराय के दरबार में नहीं जाना पड़ता, सतगुरु उसे जाने नहीं देता।

यही तुलसी साहिब कहते हैं:

> सोना काई नहिं लगै, लोहा घुन नहिं खाय।
> बुरा भला जो गुर-भगत, कबहूँ नरक न जाय॥[16]

सतगुरु मदद करता है, बशर्ते कि शिष्य कुछ कमाई करे और मन-इन्द्रियों के अधीन न हो। हाँ! वे पाठी गये और जब उस सत्संगी की मौत का समय आया तो उसने कहा कि सतगुरु आ गये हैं और कहते हैं कि हम तुझे इतने बजे ले जायेंगे।

एक सत्संगी: हुज़ूर! जब मेरी स्त्री मरने लगी तो पास में ग़ैर-सत्संगी थे। हमने उन्हें बाहर निकाल दिया और वह बड़ी ख़ुशी के साथ सतगुरु के आने की बातें करती गयी।

महाराज जी: जब सत्संगी मरने लगे, किसी ग़ैर-सत्संगी को अन्दर न आने दो। नहीं तो वह चुपचाप चला जायेगा, बताकर कुछ नहीं जायेगा।

मेरा अपना तजुरबा है। मेरे पास सैकड़ों, हज़ारों चिट्ठियाँ आ चुकी हैं और आती रहती हैं। जो शिष्य नाम नहीं जपते, सतगुरु उन्हें भी यमदूतों के हवाले नहीं करता। अगर यमदूतों के साथ ही जाना है तो हम ऐसे सतगुरु को दूर से ही सलाम करते हैं। बाक़ी जो नाम से ख़ाली हैं, उन्हें लेने के लिए यमदूत आते हैं और धर्मराय के दरबार में ले जाते हैं। वहाँ पर उनका हिसाब होता है और कर्मों के मुताबिक़ उन्हें नरकों या योनियों में डाला जाता है, मगर जिस तरह करोड़ों मन लकड़ियों को जलाने के लिए आग की एक चिनगारी ही काफ़ी है, इसी तरह नाम का एक कण करोड़ों पापों का नाश करता है।

राम सिंह डोगरा: हुज़ूर! ताज़ा वाक़िआ है। चलेट की एक बीबी को नाम नहीं मिला था, उसने सिर्फ़ दर्शन ही किये थे। उसने मरने से पहले बता दिया कि सतगुरु आ गये हैं और मैं जाती हूँ।

महाराज जी: यह अब पहाड़ का ज़िक्र है। सतगुरु अपने शिष्यों को क्या, प्रेमियों को भी यमदूतों के हवाले नहीं करता।

घर अगम तोहि दरसावें। मारग शब्द तोहि लखावें॥

मरने के बाद कहाँ ले जाते हैं? अगम लोक में और फिर वे यह तो नहीं कहते कि अकेला जा, बल्कि हर मंज़िल पर हमारे साथ होते हैं। वरना अन्दर ऐसी-ऐसी रुकावटें हैं जिनके कारण बड़े-बड़े ऋषि-मुनि रुके बैठे हैं। ऋद्धियाँ-सिद्धियाँ, शक्तियाँ हैं जो कि अन्दर नहीं जाने देतीं, फिर नूरी औरतें हैं जिनका नमूना इस दुनिया में है ही नहीं। जिनका यहाँ चाल-चलन अच्छा नहीं, वे आगे नहीं जा सकते। वे नूरी औरतें कहती हैं कि आगे न जा, हमें क़बूल कर ले, हम तुझे स्वर्ग की अप्सराएँ दिखायेंगे, यह देंगे, वह देंगे। राह तो महात्मा देते हैं, आगे जो-जो कमाई करता है, वह फ़ायदा उठा जाता है, बाक़ी ख़ाली के ख़ाली रह जाते हैं। जिस-जिस मुक़ाम तक का गुरु किसी को मिला, वह कमाई करके उस मुक़ाम तक पहुँच गया। जो अभ्यास करते हैं, वे देखते हैं। वे पिछले महात्मा और उनके सेवक सारे राह में मिलते हैं और बातचीत करते हैं। अन्दर सतगुरु साथ होकर हमें नूरी देशों से पार लँघाता है। अगर सतगुरु साथ न हों तो हम जा ही नहीं सकते। बड़े-बड़े ऋषि-मुनि, जिनकी किताबें दुनिया में मशहूर हैं, रास्ते में रुके बैठे हैं।

सन्त कहते हैं, अन्दर चलो और ख़ुद जाकर देखो। सतगुरु हर मंज़िल पर शिष्य के साथ हैं। पर कब? जब यह अपने आप को उनके हवाले कर दे, मगर मन हमें उनके हवाले होने नहीं देता। हमारा दुश्मन कौन है? 'मन'! जन्मों-जन्मों से मन का दीन-ईमान दुनिया है। सारा झगड़ा इसी का है। घाटी मुश्किल है, मन अन्दर जाने नहीं देता। बड़ा भारी दुःख है।

जो संगत उनकी करते। सो जग से कभी न डरते॥

जब यह परदा खोलकर, सतगुरु को प्रत्यक्ष करके रूहानी मंज़िलों पर जाता है तो उसे प्रतीत होता है कि अन्दर जो कुछ है, वह सच है और बाहर सबकुछ फ़ना है। ऐसे लोगों को बाहर की दुनिया का क्या डर है?

कोई नहीं। वे देखते हैं कि दुनिया जो कुछ कहती है, बिल्कुल ग़लत है। अक्सर महात्माओं के साथ ऐसे वाक़िआत हुए हैं।

राजा पीपा क्षत्रिय राजपूत था। उसे शौक़ पैदा हुआ कि किसी कमाई वाले महात्मा से मिलकर अपना जन्म सफल कर ले। उसने अमीरों, वज़ीरों से पूछा कि क्या कोई ऐसा महात्मा है? वे कहने लगे कि कबीर साहिब को तो चोला छोड़े काफ़ी समय हो गया है, उनके शिष्य रविदास जी हैं और कमाई वाले महात्मा हैं। राजा सोचता है कि अगर उसके पास जाता हूँ तो प्रजा बिगड़ जायेगी। वह कहेगी कि राजा जूते गाँठनेवाले के पास गया है, पर जाना भी ज़रूरी है। आख़िर यह फ़ैसला किया कि उस वक़्त जाया जाये, जिस वक़्त कोई न देखे। इत्तफ़ाक़ से ऐसा मौक़ा मिल गया। कोई मेला था, सभी लोग गंगा-स्नान को चले गये। राजा न गया। उधर गुरु रविदास जी अपने घर में अकेले थे। राजा डरता-डरता उनके पास गया और कहा कि गुरु जी! नाम दे दो। उस वक़्त गुरु रविदास जी चमड़ा भिगोने के कुण्ड में पानी भर रहे थे। उनके हाथ में मिट्टी का सकोरा था। उन्होंने राजा से कहा कि ले अमृत! अब महात्मा का रोब होता है, राजा इनकार कैसे करता। कहता है, ''लाओ।'' जब गुरु रविदास जी ने उसकी अंजलि या ओक में अमृत डाल दिया तो उसने पानी पीने के बजाय दूसरी तरफ़ मुँह करके उसे कुर्ते की बाँहों के रास्ते बहा दिया और सोचने लगा कि इसने तो मेरा क्षत्रिय धर्म ही भ्रष्ट कर दिया। गुरु रविदास जी जानते थे कि उसने नहीं पिया, मगर चुप रहे। राजा ने वापस आकर जल्दी-जल्दी कपड़े उतारे और धोबी को बुलाकर कहा कि ये कपड़े ले जा और यह दाग़ फ़ौरन साफ़ करके ले आ और ख़याल रख कि किसी को इसकी कानों-कान ख़बर न हो। धोबी ने कहा कि बहुत अच्छा और वह कपड़े ले गया। अब जो दाग़ नहीं उतरता था, उसे धोबी मुँह में डालकर चूसते थे। धोबी ने अपनी लड़की को साथ ले लिया। ख़ुद मसाला तैयार करने लग गया और लड़की से कहा कि तू इन दाग़ों को मुँह से चूस। लड़की नाबालिग थी, वह कुर्ते की बाँह को चूस-चूस

कर बाहर थूकने की बजाय अन्दर पीती गयी। ज्यों-ज्यों वह चूसती गयी, अन्दर परदे खुलते गये और रोशनी होती गयी। मशहूर हो गया कि फ़लाने धोबी की लड़की बड़ी महात्मा है। होते-होते राजा तक ख़बर जा पहुँची। राजा को महात्मा से मिलने का शौक़ तो था ही। फिर गुरु रविदास जी के घर जाना मुश्किल था, न कि धोबी के घर जाना। रात का वक़्त था, धोबी के घर चला गया। वह लड़की उठकर खड़ी हो गयी। लड़की से बोला, ''बेटी! मैं तेरे पास राजा बनकर नहीं आया हूँ, बल्कि भिखारी बनकर आया हूँ।'' लड़की ने कहा, ''मैं आपको राजा समझकर आगे नहीं आयी, बल्कि इसलिए कि मुझ पर जो कृपा हुई है, वह आपकी ज़ात (हस्ती) से हुई है।'' राजा ने हैरान होकर कहा कि मेरी हस्ती से? उसने कहा, ''हाँ! जो राज़ था वह आपके कुर्ते में था! मैंने उसे चूस लिया।'' अब राजा को ख़याल आया कि यह तो वह अमृत था जो गुरु रविदास जी ने दिया था। कहाँ तो उसे गँवाकर कहता था कि शुक्र है कि मैं बच गया, गुरु रविदास जी ने तो मेरा धर्म भ्रष्ट करने में कोई कसर नहीं छोड़ी थी, कहाँ अब कहता है कि धिक्कार है मुझे, धिक्कार है मेरे कुल को और धिक्कार है मेरे राज को! अब उसने लोक-लाज की परवाह नहीं की, सीधा गुरु रविदास जी के पास चला गया और अर्ज़ की कि फिर से उसी कुण्ड का पानी दे दो। गुरु रविदास जी ने कहा, ''अब वह नहीं मिल सकता, वह तो उसी समय के लिए था। वह कुण्ड का पानी नहीं था, वह सचखण्ड से लाया हुआ अमृत था। जब तू मेरे पास आया, मैंने सोचा कि यह क्षत्रिय राजा है, राज छोड़कर आया है, मैं इसे कुछ ख़ास चीज़ दूँ। अब नाम ले और उसकी कमाई कर।'' गुरु रविदास जी ने राजा पीपा को नाम दे दिया और उसने अच्छी कमाई की। राजा पीपा की बाणी ग्रन्थ साहिब में दर्ज है।

जिसे अन्दर लज़्ज़त आ जाये, चाहे दुनिया उसकी निन्दा करे, सभी अन्धा-अन्धा कहें, पर वह परवाह नहीं करता। वह कहता है कि ये ख़ुद अन्धे हैं, चाहे जितनी निन्दा कर लें।

ऋषियों में एक महात्मा स्त्री गार्गी हुई है। वह नग्न रहती थी। किसी ने उससे कहा कि माता! अगर तू कपड़े पहन ले तो अच्छा है, दुनिया में बदनामी होती है, लोग बुरा समझते हैं। कहती है कि जो ज्ञानी हैं, जो अन्दर रूहानी मण्डलों में जाते हैं, वे मेरे जिस्म को नहीं देखते। इसके विपरीत, जो अज्ञानी हैं, वे मेरे चमड़े को देखते हैं, मैं उन्हें पशु समझती हूँ। सन्तों का ख़याल परमार्थ की ओर है। दुनिया के लोग बाहरमुखी हैं, इसलिए आपस में मेल कहाँ, व्यवहार कहाँ?

सो, जब-जब वली, पैग़म्बर आये, दुनिया ने उन्हें तकलीफ़ें दीं—शम्स तब्रेज़ की खाल उतार दी, मंसूर को सूली पर चढ़ा दिया, हज़रत मुहम्मद साहिब को मक्का से निकालकर मदीना भेज दिया, कई बार ऐसे मौक़े भी आये कि वे पहाड़ की गुफा में भूखे रहे। गुरु नानक साहिब से चक्की पिसवाई, क़ैद में रखा। कबीर साहिब को भी चैन से बैठने नहीं दिया। उन्हें हाथी के सामने डाला गया, ज़मीन में दबाया गया, देगों में बन्द किया गया, लेकिन जिनको लज़्ज़त आयी, उन्होंने परवाह नहीं की। जिसे अन्दर नाम की लज़्ज़त आ जाती है, वह लोक-लाज की परवाह नहीं करता। वह दुनिया की परवाह करे भी तो क्यों?

जो बेमुख गुरु से फिरते। सो भौ सागर में गिरते॥

जिन्होंने गुरु को मनुष्य समझा कि यह बेटे-बेटियों वाला है, खाने-पीने वाला है, इसने हमारे समान ही देह धारण की हुई है, वे ख़ाली आये और ख़ाली ही चले गये। जिन्होंने मनुष्य न समझा, बल्कि कमाई वाला समझा, मगर यह देखकर कि गुरु धारण किया, फिर भी हमारी दुनियावी ख़्वाहिशें पूरी न हुईं, गुरु को छोड़ गये, गुरु के दिये हुए नाम को भी छोड़ गये, वे मौत के वक़्त धर्मराय के दरबार में जायेंगे और वही उन्हें सँभालेगा। वे चौरासी में जायेंगे, नरकों में जायेंगे।

ज़िक्र है कि गुरु तेग़ बहादुर साहिब का दरबार लगा हुआ था। एक क़लन्दर रीछ को लेकर आया। गुरु साहिब ने उसे देखकर ग्रन्थी से कहा

कि यह रीछ तेरा पिता है। ग्रन्थी ने हैरान होकर कहा कि महाराज! यह मेरा पिता है? गुरु साहिब कहने लगे कि हाँ, तेरा पिता है। ग्रन्थी ने कहा कि मेरे पिता ने सारी उम्र आपके पिता जी की सेवा की और वह मरकर रीछ बना तो मुझे फिर आपसे क्या लेना है? गुरु साहिब ने हँसकर कहा कि उसकी करतूत ही ऐसी थी। फिर कहने लगे कि अगर शिष्य नाम लेकर खोटे कर्म करता है तो गुरु उसे क्या फल देगा, क्या मज़दूरी देगा? ग्रन्थी ने पूछा कि इसने क्या क़ुसूर किया था? गुरु साहिब ने फ़रमाया कि इसके अन्दर ईर्ष्या थी।

एक बार का ज़िक्र है कि गुरु हर गोबिन्द साहिब जी का दरबार लगा हुआ था और यह सत्संग समाप्त होने के बाद प्रसाद बाँट रहा था। उधर मालवा के कुछ सत्संगी माल से भरी गाड़ियाँ लेकर जा रहे थे। जब गुरुद्वारे के पास आये तो ख़याल आया कि चलो, प्रसाद ले चलें। इसलिए उन्होंने ग्रन्थी के पास आकर कहा कि हमें प्रसाद दे दो, हमारी गाड़ियाँ सूनी जा रही हैं, कहीं ऊँची-नीची जगह लुढ़क न जायें। ग्रन्थी ने कहा कि ठहरो! उन्होंने दूसरी बार फिर कहा तो ग्रन्थी ने उन्हें जवाब में कहा कि जल्दबाज़ी न करो। फिर जब शिष्यों ने तीसरी बार कहा कि हमें प्रसाद दे दो तो ग्रन्थी ने उनके हाथ-मुँह मिट्टी में सने हुए देखकर कहा, ''बको मत, रीछो!'' इत्तफ़ाक से ग्रन्थी के हाथ से, प्रसाद का एक कण ज़मीन पर गिर गया। उन्होंने उसे ही उठाकर आपस में बाँट लिया और कहा कि हम रीछ नहीं हैं, हाँ, तू रीछ बनेगा! यह कहकर गुरु तेग़ बहादुर साहिब ने कहा कि यह उन शिष्यों का श्राप है, हम क्या कर सकते हैं? ग्रन्थी ने कहा कि फिर अब? तो गुरु साहिब ने कहा कि प्रसाद लाओ। जब गुरु साहिब ने उसको प्रसाद खिलाया तो उसी वक़्त उस रीछ की देह छूट गयी। सो, सतगुरु इस तरह जीव को बचाते हैं।

अब कहते हैं कि अगर परमेश्वर रूठ जाये तो गुरु मना लेता है, लेकिन अगर गुरु रूठ जाये तो कौन मनायेगा? कोई नहीं। गुरु के दुत्कारे हुए को तो परमेश्वर भी क़बूल नहीं करता।

चौरासी चक्कर खावें। फिर जन्म जन्म दुख पावें॥

यह चौरासी लाख क़िस्म के जीव-जन्तुओं का जेलख़ाना है। सभी ऋषि-मुनि कहते हैं कि कई लाख क़िस्म के वृक्ष हैं, कई लाख क़िस्म के कीड़े-पंतगे हैं, कई लाख क़िस्म के पक्षी, कई लाख क़िस्म के पानी के जीव और कई लाख क़िस्म के देवी-देवता, भूत-प्रेत, यक्ष, किन्नर, गन्धर्व, इनसान, हैवान वग़ैरह हैं। जीव अपने कर्मों के अनुसार इन योनियों में भटकता फिरता है। कृष्ण भगवान जी भागवत् में ऊधो से कहते हैं कि यह जो सामने कीड़ा जा रहा है, यह कई दफ़ा ब्रह्मा और कई दफ़ा स्वर्गों का राजा इन्द्र बन चुका है यानी अवतार भी कर्मों के दायरे से बाहर नहीं जा सकते।

बाली ने तपस्या करके वर लिया हुआ था कि जो भी लड़ने के लिए मेरे सामने आये, उसका आधा बल मुझमें आ जाये। यही कारण था कि सुग्रीव जब भी उससे लड़ने जाता, हारकर आता। रामचन्द्र जी इस राज़ से वाक़िफ़ थे। जब सुग्रीव उनके पास मदद के लिए आया तो उन्होंने (अपना बल सुरक्षित रखने के लिए) पेड़ की ओट में खड़े होकर बाली को तीर मारा और उसको ख़त्म कर दिया। बाली ने मरते-मरते कहा कि मैं बेगुनाह था, मैंने तुम्हारा कुछ नहीं बिगाड़ा था, अब इसका बदला तुम्हें अगले जन्म में देना पड़ेगा। सो, अगले जन्म में रामचन्द्र जी कृष्ण महाराज बने और बाली भील बना। महाभारत के युद्ध के बाद जब कृष्ण भगवान् जंगल में पैर पर पैर रखकर सो रहे थे, तो भील ने दूर से समझा कि कोई हिरन है, क्योंकि उनके पैर में पद्म था, जो धूप में चमककर हिरन की आँख के समान दिखायी दे रहा था। भील ने दूर से ही निशाना साधकर तीर मारा और काम तमाम कर दिया। सो, अवतार भी कर्मों के जाल में हैं। नाम की कमाई के बग़ैर कोई भी अपने घर नहीं जा सकता। न तीर्थ-यात्रा, न मूर्ति-पूजा, न पढ़ना, न पढ़ाना, मतलब कि ऐसा कोई भी कर्म नहीं जो चौरासी के चक्र से छुटकारा दिला दे।

सन्त कहते हैं कि जब तुम अन्दर जाओगे तो तुम्हें गंगा, यमुना और सरस्वती, ये तीन धाराएँ मिलेंगी। ये जो बाहर नदियाँ हैं, ऋषियों-मुनियों ने अन्दर देखकर, बाहर इनके नाम रख दिये। इसी तरह अन्दर अमृतसर भी है। यह जो बाहर का अमृतसर है, यह पहले एक तालाब था। गुरु राम दास जी ने अन्दर देखकर, बाहर इसका नाम अमृतसर रख दिया। सो, जो अन्दर का अमृतसर है, उसमें नहाने से जन्मों-जन्मों के पाप उतर जाते हैं। उस वक़्त उसकाअपना नूर बारह सूरज का हो जाता है। आदमी कोई छोटी चीज़ नहीं। जो नाम की कमाई नहीं करते, सन्तों की शरण में नहीं आते, वे अपने-अपने कर्मों के अनुसार जन्म-मरण में आयेंगे।

एक ऐसे कुत्ते हैं जो अंग्रेज़ महिलाओं की गोद में बैठते हैं, एक ऐसे हैं जिन्हें खाने को गन्दगी भी नहीं मिलती। इसी तरह एक ऐसे घोड़े हैं जिनकी सेवा के लिए कई-कई नौकर होते हैं और एक ऐसे हैं जिन्हें खाने को भी नहीं मिलता। मतलब कि अच्छे और बुरे दोनों क़िस्म के कर्मों का फल मिलता है।

तुम सोचो अपने मन में। कोइ नाहिं गुरू सम जग में ॥

अब पूर्ण गुरु कहते हैं कि प्यारे, सोचकर देख, इस दुनिया में तेरा सच्चा रिश्तेदार कौन है—'एक तो पूर्ण गुरु है और एक शब्द'। न बेटे, न बेटी, न माता, न पिता, कोई साथ नहीं जाता। साथ जानेवाला केवल वह पूर्ण गुरु है जो हमें वहाँ पहुँचाता है। हमारे दो ही रिश्तेदार दुनिया में हैं, एक तो कामिल मुर्शिद और दूसरा माबूदे-हक़ीक़ी, ख़ुद ख़ुदा। गुरु अंगद देव जी कहते है:

> जे सउ चंदा उगवहि सूरज चड़हि हजार ॥
> एते चानण होदिआं गुर बिनु घोर अंधार ॥[17]

अगर इस दुनिया में लाखों सूरज और चन्द्रमा चढ़ जायें तो यहाँ रोशनी हो जायेगी, अगर आँखें बन्द करो तो अन्दर अँधेरा है। अन्दर जो

प्रकाश है, यह प्रकाश उसके एक रोम का भी मुक़ाबला नहीं कर सकता। मौलाना रूम कहते हैं कि अन्दर जो रास्ता है वह आफ़तों, ख़तरों से इस तरह भरा हुआ है कि उस पर बग़ैर मुर्शिद के कोई नहीं जा सकता:

> पीर रा बगुज़ीं किह् बे पीर ईं सफ़र,
> हस्त बस पुर आफ़तो-खौफ़ो-ख़तर।[18]

इस दुनिया में गुरु के बराबर हमारा और कोई रिश्तेदार नहीं, क्योंकि वह हमारी बेग़रज़ सेवा करता है। वह अन्दर भी हमारे साथ है और बाहर भी साथ है। वह हमें यमदूतों से बचाता है। फिर वह अपना बोझ किसी पर भी नहीं डालता। ऐसे गुरु को हम कौन-सी चीज़ भेंट करें ताकि वह हमसे ख़ुश हो जाये? यह दुनिया फ़ना है, इसकी हरएक चीज़ फ़ना है, फ़ना चीज़ वह लेता ही नहीं तो क्या दें? यही कबीर साहिब कहते हैं:

> सत्त नाम के पटतरें, देवे को कछु नाहिं।
> क्या लै गुरु संतोषिये, हवस रही मन माहिं॥[19]

कि मेरा यह चाव ही रहा कि मैं गुरु को कोई चीज़ देकर प्रसन्न करूँ, मगर मैं कुछ न दे सका। हाय! हाय! सतनाम उसका अपना है,इससे नीचे सारी चीज़ें नाशवान् हैं। नाशवान् चीज़ें गुरु लेता नहीं, फिर वह नम्र से नम्र और आजिज़ होकर रहता है और यह भी नहीं कहता कि मुझे गुरु कहो, बल्कि कहता है कि भाई, अभी तो मैं शिष्य भी नहीं बना। अगर कहीं नम्रता और दीनता है तो सन्तों में ही है।

जिन जिन गुरु भक्ति धारी। सो पहुंचे निज दरबारी॥

जिन्होंने नाम लेकर गुरु-भक्ति पूर्ण कर ली, वे परमात्मा की दरगाह में पहुँच गये। चाहे कोई क़ौम, कोई मज़हब क्यों न हो, क़ानून सबके लिए एक ही है। सन्तों का उपदेश सबके लिए है। हज़रत मुहम्मद साहिब ने क़ुरान शरीफ़ में फ़रमाया है, 'रब्बुल आलमीन'। उन्होंने यह तो

नहीं कहा, 'रब्बुल हिन्दू' या 'रब्बुल मुसलमीन'। गुरु अमर दास जी ने फ़रमाया है:

परथाइ साखी महा पुरख बोलदे साझी सगल जहानै ॥[20]

मालिक से मिलने का क़ानून एक ही है। युग बदल जाते हैं, वह नहीं बदलता। वह क़ानून न अंग्रेज़ी है, न अरबी, न तुर्की, न फ़ारसी, न कोई और भाषा है। अगर वह किसी एक भाषा में होता तो यह एक क़ौम के साथ रियायत और दूसरी के साथ ज़ुल्म होता। अगर कोई एतराज़ हो तो बड़े शौक़ के साथ कह लो। सो, कहते हैं कि जिन्होंने गुरु के साथ इश्क़, मुहब्बत और भक्ति कर ली, उन्होंने अपना जन्म सफल कर लिया। क्यों? क्योंकि बिना गुरु-भक्ति के नाम-भक्ति कभी भी नहीं होती। जब गुरु-भक्ति पूर्ण हो जाती है, तब ही नाम-भक्ति पूर्ण होती है।

अब गुरु शिष्य की कौड़ी भी नहीं लेता। इसका मतलब है कि शिष्य का धन किसी अच्छी जगह ख़र्च हो जाये। गुरु चाहता है कि इसका तन, मन, धन के साथ प्यार न रहे, बल्कि इसका नाम के साथ प्यार हो जाये। अब कहते हैं कि अगर तू परमेश्वर को पाना चाहता है तो तन, मन, धन की मुहब्बत छोड़ दे। जब शिष्य तन, मन, धन की मुहब्बत छोड़कर उसके पास आता है और पूछता है कि बताओ, मैं क्या करूँ, तो गुरु कहता है कि अपनी सुरत को शब्द के साथ जोड़ दे। गुरु को इस दुनिया का कुछ भी लेना नहीं है, बल्कि वह तो चाहता है कि इसके हृदय पर दुनिया और दुनिया की चीज़ों का ज़रा भी असर न हो।

जब मेरा अपना लड़का* गुज़रा तब बन्ता सिंह साथ था। अन्त समय में जब मैंने उससे पूछा तो कहने लगा कि महाराज जी आ गये हैं। मैंने कहा कि जा! मैं तुझे बड़ी ख़ुशी के साथ भेजता हूँ। बत्तीस साल का लड़का, ओवरसीयर हो, जुदा हो और दिल पर रंज न आये! उस वक़्त मैंने अपने मन की जाँच की। न रंज था, न ख़ुशी थी। यह मेरी ताकत

* हुज़ूर महाराज सावन सिंह जी अपने तीसरे पुत्र के अकस्मात् निधन के बारे में बता रहे हैं।

नहीं थी। यह बाबा जैमल सिंह जी महाराज की ताकत थी। शेख़ फ़रीद का कथन है:

दरवेसां नो लोड़ीऐ रुखां दी जीरांदि॥[21]

आम लोगों का क्या हाल है? अगर कोई मुक़द्दमा आ गया तो चित्त घबरा गया, बच्चा या औरत बीमार हो गयी तो हाय-हाय करने लग गये। सत्संगी को मज़बूत हृदय रखना चाहिए।

गुरु भक्ति न जिन को प्यारी। तिन जीती बाज़ी हारी॥

जीवन-मुक्त की अवस्था को हासिल करने के लिये मनुष्य-जन्म ही मौक़ा है, और कोई मौक़ा है नहीं। गायों, भैंसों, घोड़ों को ज्ञान नहीं, पक्षियों को ज्ञान नहीं। सो, जो कुछ करना है, मनुष्य-जन्म में करना है। अगर इस जन्म में परदा न खोला तो यह उत्तम जन्म खो दिया, क्योंकि यह मनुष्य-जन्म सबसे उत्तम योनि है। सबसे निचली योनि वृक्ष की है, इससे तरक़्क़ी करके जीव कीड़ों-मकोड़ों की योनि में आता है।

एक प्रेमी ग़ैर-सत्संगी: पेड़ के जन्म में गयी हुई आत्मा किसी ऊँचे कर्म से ही मनुष्य-जन्म में आयेगी।

महाराज जी: बेशक! उसूल तो यही है कि सारा चौरासी लाख योनियों का चक्र भोगकर, करोड़ों सालों के बाद जीव मनुष्य-जन्म में आये, मगर जो पूरे महात्मा होते हैं, उनके पास नाम की बड़ी भारी शक्ति होती है। अगर वे किसी पेड़ का फल खा लें या उसकी छाया में बैठ जायें तो उसे मनुष्य-जन्म दे सकते हैं। अगर किसी जानवर पर सवार हो जायें, उसे मनुष्य-जन्म दे सकते हैं।

क़रीब चालीस साल पहले का वाक़िआ है, एक पिता-पुत्र आगरा में स्वामी जी महाराज के सत्संगी थे। वहाँ प्लेग फैल गया। पुत्र को प्लेग हो गया और जब उसका अन्त समय आया तो पिता रोने लगा। पुत्र ने पूछा कि आप क्यों रोते हो? पिता ने कहा, "तू मर रहा है, इसलिए मैं रोता

हूँ।'' पुत्र ने कहा, ''नहीं! मैं मर नहीं रहा हूँ, जीने लगा हूँ। मेरा परदा खुल गया है और मुझे पिछले जन्म की ख़बर हो गयी है, तब मैं बबूल का पेड़ था। किसी सत्संगी ने मेरा दातुन लाकर स्वामी जी महाराज की सेवा में दिया। मुझे मनुष्य-जन्म तो मिला, मगर मेरी बुद्धि जड़ रही। अब मैं फिर से मनुष्य-जन्म में आऊँगा और कमाई करूँगा।'' ऐसी घटना कभी-कभी ही होती है।

वही प्रेमी ग़ैर-सत्संगी: जो पीपल का पेड़ है, उसे महात्माओं ने अति उत्तम समझा है, क्योंकि इसके नीचे ही महात्मा बुद्ध को ज्ञान हुआ था, मगर आप कहते हैं कि पेड़ों की योनि सबसे नीची है।

महाराज जी: इसमें शक नहीं कि जिस पेड़ के नीचे सन्तों ने आराम किया है, वह धन्य है, मगर पेड़ों में बावना* चन्दन का पेड़ भी तो है, उसकी पूजा क्यों नहीं होती? मैं कहता हूँ, पेड़, पेड़ ही है चाहे कैसा भी हो।

वही प्रेमी ग़ैर-सत्संगी: अच्छा, पहले आत्मा पेड़ों में आती है, फिर कीड़ों में और फिर?

महाराज जी: फिर पक्षियों में, इसके बाद पशुओं में और सबसे आख़िर में मनुष्य-जन्म मिलता है, मगर यह उसूल आम जीवों के लिए है।

मैं ज़िक्र कर रहा था उन जीवों का जिनका सन्तों के साथ कुछ ताल्लुक़ हुआ है। वे चाहे किसी योनि में हों, उन्हें एकदम मनुष्य-जन्म दिया जा सकता है। चाहे उनके कर्मों का चक्र ख़त्म न हुआ हो, मगर आसानी तो हो गयी। मुक्ति नाम में है, नाम के बिना जीव ऊपर सचखण्ड में नहीं जा सकता और नाम की कमाई केवल इनसानी देह में ही हो सकती है। इसलिए सन्त, पहले इसको इनसानी देह में लाते हैं। अगर आप कहो कि पेड़ों, पक्षियों और पशुओं को ले जायें तो यह नहीं हो सकता, क्योंकि बग़ैर इनसानी देह के नाम नहीं जपा जा सकता और बग़ैर नाम की कमाई के ज्ञान नहीं हो सकता और ज्ञान के बग़ैर मुक्ति नहीं है।

---

* उत्तम श्रेणी का चन्दन विशेष।

जो पत्थर-पूजा है, वह भी एक तरह की भक्ति है, लेकिन सोचो! जीवात्मा होकर, निर्जीव (बेजान) से परमात्मा को हासिल करना! जो पत्थर-पूजा करते हैं, उन्होंने सारी कहानियाँ अपने मतलब के अनुसार जोड़ रखी हैं, किसी ने कहा है, 'पीरां नमे परन्द मुरीदां में परानन्द' कि पीर नहीं उड़ते, उन्हें मुरीद उड़ाते हैं। जो कुनैन बुख़ार को दूर नहीं करती, उसे कुनैन नहीं कहेंगे। मैं कहता हूँ कि अगर धन्ना को पत्थर में से परमात्मा मिला तो और किसी को भी मिलना चाहिए।

असल में धन्ना था गुरु और त्रिलोचन था शिष्य! चूँकि त्रिलोचन ब्राह्मण था और धन्ना जाटों के खानदान में से आया था, इसलिए उसने सोचा कि त्रिलोचन को जाति का अहंकार है, (पर) इसे निकालना यानी तारना भी ज़रूर है। आओ, इसके आगे मूर्ख बन जायें। यह सोचकर एक दिन जब त्रिलोचन ठाकुरों की पूजा कर रहा था, धन्ना थोड़ी दूर हटकर बैठ गया। जब वह पूजा कर चुका तो उससे कहता है कि दादा, पूजा है तो बड़ी अच्छी, क्या एक ठाकुर मुझे भी दे सकते हो? त्रिलोचन ने कहा, "हाँ! एक दुधारु गाय ला दे।" धन्ना ने कहा कि दादा, बहुत अच्छा। घर जाकर गाय ले आया। त्रिलोचन ने यह सोचकर कि यह मूर्ख है, इसे क्या पता कि ठाकुर क्या होता है, एक दुसेरी यानी दो सेर का बाट लाकर उसके आगे पटक दिया और कहा कि जा ले जा!

धन्ना को बाट का क्या करना था, लाकर रख दिया। एक दिन त्रिलोचन मूर्ति के मुँह में भोग लगाकर ख़ुद खाने लगा तो धन्ना ने कहा, "दादा! ठाकुर के साथ ठगी?" त्रिलोचन ने कहा, "मैं तेरा मतलब नहीं समझा।" कहता है, "तू ठाकुर को कुछ खिलाता नहीं, विपरीत इसके, मेरा ठाकुर तो खाता, पीता, हल जोतता, रहट चलाता, मतलब कि मेरे सारे काम करता है।" त्रिलोचन ने मज़ाक़ समझा। कहता है, "मुझे दिखायेगा?" धन्ना ने कहा, "मेरे साथ चल, तुझे अभी दिखाता हूँ।" यह कहकर त्रिलोचन को कुएँ पर ले गया। कुएँ की रहट चल रही थी। धन्ना ने कहा, "देख, वह मेरी गादी* पर बैठा हुआ है।" त्रिलोचन ने

---

* गद्दी

कहा, ''मुझे तो नहीं दिखता।'' अब जब डॉक्टर फोड़े को चीरता है तो उसकी कोशिश होती है कि ज़रा-सा भी मवाद बाक़ी न रह जाये। ठीक इसी तरह धन्ना ने त्रिलोचन को झिड़कना शुरू कर दिया कि तुझमें यह नुक़्स है! यह नुक़्स है!! यह नुक़्स है!!! उसके बाद उपदेश देना शुरू कर दिया, जैसा कि राजा जनक ने सुखदेव के साथ सलूक़ किया था। आख़िर जब वह निर्मल हो गया तो उसे दिखा दिया।

अगर पाँच तत्त्वों वाला आदमी होकर एक तत्त्व वाले पत्थर को पूजे तो कितना अफ़सोस है। एक तत्त्व वाला तो कुछ बोलेगा ही नहीं! सोचो! जिस कारीगर ने छाती पर पैर रखकर छेनियाँ मारीं, पैरों के नीचे लताड़ा, उसने उसको नहीं मारा। इसके विपरीत, अगर आदमी (शिष्य), आदमी (गुरु) को पूजता है तो आप पढ़े-लिखे लोग कहते हो कि यह आदम-परस्ती है।

वही प्रेमी ग़ैर-सत्संगी: आदमी में भी परमात्मा है, लकड़ी और पत्थर में भी परमात्मा है।

महाराज जी: मैं यह नहीं कहता कि आदमी के सिवाय लकड़ी, पत्थर वग़ैरह दूसरी चीज़ों में परमात्मा नहीं है। मेरा मतलब सिर्फ़ यह है कि जिस तरह लकड़ी में आग है, मगर वह जलाती तो नहीं। हाँ, अगर लकड़ी पर लकड़ी रखकर रगड़ें तो आग ज़रूर निकलती है। इस तरह बिना नाम की कमाई के मालिक नहीं मिलता और पूरे गुरु के बग़ैर नाम नहीं मिलता। दूसरे, नाम की कमाई सिर्फ़ मनुष्य-जन्म में ही हो सकती है, किसी और योनि में नहीं।

जिस तरह धर्मदास और कबीर साहिब का वाक़िआ है। धर्मदास चौदह करोड़ रुपयों का मालिक था, धनी धर्मदास कहलाता था, जाति का बनिया था और ठाकुरों की पूजा करता था। एक दफ़ा का ज़िक्र है, वह गंगा के किनारे पूजा कर रहा था कि कबीर साहिब वहाँ आये। जब वह पूजा कर चुका तो पास जाकर ठाकुरों की ओर इशारा करके कहते हैं, ''ये जो बड़े-बड़े हैं, ये तो हुए दो सेर और ये छोटे-छोटे क्या हैं, क्या छटाँक के बाट? साथ ही यह भी बता कि यह कभी बोले भी हैं?'' यह कहकर आप गुप्त हो गये। अब धर्मदास सोचने लगा कि यह बोले तो कभी नहीं,

बात तो ठीक है, मुझे पूजा करते हुए कितना समय हो गया। दूसरी दफ़ा कबीर साहिब साधु के लिबास में धर्मदास के घर गये। धर्मदास चूल्हे में आग जला रहा था और बीबी आमना पास बैठी थी। कबीर साहिब ने कहा, ''धर्मदास! तुम बड़े पापी हो।'' अब स्त्री अपने पति की निन्दा नहीं सुन सकती। उसने कहा, ''तुम पापी हो, मेरा पति किस तरह पापी है? तुमने उसका कौन-सा पाप देखा है?'' कबीर साहिब ने कहा, ''धर्मदास! जो लकड़ी तुम जला रहे हो, उसके अन्दर कितने ही कीड़े हैं, इसे चीरकर देखो।'' उस ज़माने में लकड़ी को धोकर आग जलाते थे। जब लकड़ी को चीरा तो उसके बीच में से ज़िन्दा और मरे हुए सैकड़ों कीड़े निकले। कबीर साहिब ने कहा, ''देखो! तुमने कितनों को जला दिया है, यह पाप नहीं तो और क्या है?'' यह कहकर वे गुप्त हो गये। धर्मदास कहता है कि बात तो सच्ची कही थी। पहले भी एक दिन यह साधु मिला था, अगर मेरी स्त्री ख़फ़ा न होती तो मैं इससे मालिक के घर की ख़बर पूछता। अफ़सोस! धर्मदास की स्त्री अपने पति से बोली, ''आपके पास चौदह करोड़ रुपया है। आप यज्ञ करें, यज्ञ में वह ख़ुद ही आ जायेगा, नहीं तो साधुओं का कोई घाटा है? 'गुड़ पर मक्खियाँ बहुत'।''

सो, धर्मदास ने काशी में कई यज्ञ किये, मगर कबीर साहिब नहीं आये। कई जगहों पर यज्ञ किये, कबीर साहिब न आये। गंगा के किनारे यज्ञ किये, मगर कबीर साहिब को न तो आना था और न आये। ज्यों-ज्यों धर्मदास यज्ञों पर रुपया ख़र्च करता गया, उसके दिल में कबीर साहिब की प्रीत बढ़ती गयी, मगर कबीर साहिब नहीं आये। आख़िरी यज्ञ मथुरा में किया, फिर भी कबीर साहिब नहीं आये। जब सारा रुपया ख़र्च हो गया और कबीर साहिब नहीं आये तो बड़ा मायूस हो गया। हारकर बोला कि रुपया भी गया और साधु भी नहीं मिला। अब घर क्या जाऊँ, सुबह यमुना नदी में डूबकर मर जाऊँगा। फिर सोचता है कि अगर आबादी के पास डूबूँगा तो लोग पकड़कर निकाल लेंगे, चलो, दूर जाकर डूब मरूँ। जब दूर गया तो आगे कबीर साहिब बैठे हुए थे। चरणों पर गिर पड़ा और

कहने लगा कि मैंने आपके लिये यह किया, वह किया ...। कबीर साहिब ने कहा, ''देख धर्मदास! अगर मैं पहले आता तो तू कहता कि लालची है और तेरी स्त्री ने भी कहा था कि 'गुड़ पर मक्खियाँ बहुत'। अब मैं तुझे वह चीज़ दूँगा जो कभी नाश न हो।'' आख़िर भरपूर कर दिया। फिर वही धर्मदास, कबीर साहिब की गद्दी पर बैठा।

एक बार का ज़िक्र है, जब मैं एस. डी. ओ. था, मैं बीमार हो गया। मैंने बीमारी की छुट्टी के लिए लिखा, छुट्टी मंज़ूर हो गयी। इसलिए एक एस. डी. ओ. मेरी जगह काम करने के लिए आया। उसका नाम बाबू कैथल राम था। खन्ना के नज़दीक उसका गाँव है। वह ढाई घण्टे रात में और ढाई घण्टे दिन में ठाकुरों की पूजा किया करता था। वह मेरी कोठी में ठहरा हुआ था, एक नौकर भी साथ था। मैंने उनके ठाकुरों के आराम के लिए पास का छोटा कमरा दे दिया था। जब वह रात को सोने लगा तो नौकर से कहा, ''अरे आत्मा! मेरी रात वाली टोपी लाओ।'' उसे पता नहीं था कि कौन-सी टोपी चाहिए। ठाकुरों के बक्स में एक टोपी थी, उसने वह लाकर आगे रख दी। देखकर वह बोला, ''कहाँ से लाया है?'' नौकर ने कहा, ''जी, बक्स में से।'' कहने लगा, ''उल्लू! बदमाश! तू ऐसा है, तू वैसा है।'' दो-चार गालियाँ दे दीं, फिर ठाकुरों को सम्बोधित करते हुए कहता है, ''उस बालक नौकर ने आकर आपको जगा दिया है, क्षमा करो! क्षमा करो!!'' मेरे पास मोहन सिंह नाम का एक बड़ा मखौलिया क्लर्क था। वह बाहर कान लगाकर सुनता रहा कि वह क्या कह रहा है। जब उसने कहा कि इस बालक ने आकर आपको जगा दिया, क्षमा करो, क्षमा करो, तो मोहन सिंह कहने लगा, ''ये कभी जागे ही नहीं, हमेशा सोते रहते हैं।'' अगले दिन उसने मुझसे कहा कि आपका क्लर्क बड़ा शैतान है, तो मैंने उसे समझाया कि यह कैसी भक्ति है? इसको छोड़ दो। आख़िर जब समझ आ गयी तो छोड़ दी।

सो, बड़े-बड़े पढ़े-लिखे मनुष्य-जन्म में आकर परमार्थ से ख़ाली रह जाते हैं। अगर मनुष्य-जन्म मिल जाये, पहले तो गुरु नहीं मिलता, अगर

गुरु मिल जाये तो उस पर ऐतबार नहीं होता, क्योंकि रूहानी मंज़िलों पर जानेवाले पूरे गुरु कहीं-कहीं ही हैं, दुकानें बेशुमार हैं। मैं ख़ुद बीस साल गुरु की तलाश में भटका हूँ। सो, कहते हैं कि जिन्हें मनुष्य-जन्म पाकर गुरु नहीं मिला, वे जीती हुई बाज़ी हार गये।

गुरु चरनन आशिक़ होना। यह बात बड़ी क्या कहना॥

कहते हैं कि अगर शिष्य जीते-जी गुरु-भक्ति करके अपने आप को अन्दर गुरु के चरणों में पहुँचा दे, तो फिर वह जन्म-मरण में नहीं आता। अब जब तक हम सिमरन के ज़रिये नौ दरवाज़ों को ख़ाली करके, सूरज, चन्द्रमा, तारों को पार करके अन्दर गुरु को प्रत्यक्ष नहीं कर लेते, हम गुरु-भक्त नहीं कहला सकते। वहाँ पर जो प्रकाश है, वह सतगुरु के चरणों की धूलि है। यही तुलसीदास जी कहते हैं:

श्रीगुर पद नख मनि गन जोती। सुमिरत दिब्य दृष्टि हियँ होती॥[22]

कि अन्दर जो सतगुरु के चरण हैं, उनका एक नाख़ून करोड़ों मणियों से ज़्यादा प्रकाशवान है। अब सवाल पैदा होता है कि उन चरणों तक किस तरह पहुँचा जाये? तुलसी साहिब कहते हैं:

छिन छिन सुरति सँवार लार दृग के रहौ।

कि अगर गुरु के चरणों तक पहुँचना है तो पल-पल दोनों आँखों के बीच में तवज्जुह को रखो। फिर कहते हैं:

तन मन दर्पन माँज साज स्रुति से गहौ॥

कि नेक चाल-चलन हो तो आत्मा यहाँ खड़ी होगी, यों ही नहीं। फिर कहते हैं:

लगन लगै लख पार सार तब पाइया।

कि जब लगन लगेगी, सतगुरु के साथ प्यार होगा, तब मन और आत्मा वहाँ खड़े होंगे। आख़िर में कहते हैं:

अरे हाँ रे तुलसी संत चरन की धूर नूर दर्साइया ॥[23]

कि वहाँ जो नूर है वह सन्तों के चरणों की धूलि है। इसी तरह जिस नूर के बारे में ग्रन्थ साहिब में इशारा किया गया है, वह आदमी के अन्दर है। क्या? गुरु-भक्ति करके, नौ दरवाज़े लाँघकर, सतगुरु के चरणों तक पहुँचकर उस नूर को देखना है। यह बड़ा ऊँचा पद है, कोई छोटी चीज़ नहीं। स्वामी जी महाराज का कथन है:

चूँ गिरिफ़्तम क़दम व ख़ाके-क़दम।
जुलमते-दिल शुदा हमा ज़ाइल ॥[24]

जब मुर्शिद के क़दमों में पहुँचा तो दिल का अँधेरा नाश हो गया।

गुरु लगें जिसे अति प्यारे। तिन कुल कुटुम्ब सब तारे॥

कहते हैं कि जिसने गुरु के साथ प्यार कर लिया, अन्दर गुरु को प्रत्यक्ष कर लिया, वह खुद भी तर गया और अपने कुटुम्ब को भी तार लिया। भाव यह है कि प्रभु-भक्त की प्रेम-परिपूर्ण भक्ति घर में ऐसा आध्यात्मिक वातावरण पैदा कर देती है जो उसके परिवार के सब सदस्यों पर गहरा प्रभाव डालता है और वह प्रभाव पीढ़ियों तक चलता है। छीपों की जाति में एक सन्त नामदेव जी हुए हैं, सारी क़ौम को फ़ख़्र है। गुरु रविदास जी भक्त हुए हैं, हम उनका भी आदर करते हैं। बेदियों में एक गुरु नानक साहिब आये, हम उस कुल का आदर करते हैं। इसी तरह सोढियों में एक गुरु राम दास जी आये, हम सोढी कुल का कितना आदर करते हैं। मतलब कि जिस क़ौम या जाति में कोई महात्मा आये हैं, हम उस क़ौम का आदर करते हैं।

धन मात पिता उन जन के। जिन भक्ति करी कुल तज के॥

कहते हैं, जिसने क़ौम, जाति की परवाह नहीं की और जो इश्क़े-इलाही में लीन (मस्त) है, उसकी माता धन्य है और धन्य है उसका पिता। जिस-जिस क़ौम में कोई महात्मा पैदा हुआ है, उस-उस क़ौम का लिहाज़ है। हम गुरु नानक साहिब की क़ौम का लिहाज़ करते हैं क्योंकि उसमें कोई ऐसा महात्मा हुआ है जिसने क़ौम की, मज़हब की परवाह नहीं की और इश्क़े-इलाही में लीन होकर परदा खोल दिया।

जिन सही मलामत जग की। तिन मिली रास सुख घर की॥

मगर यह क़ायदा है कि जब-जब वे सच्चे और पूर्ण महात्मा आते हैं, हम उन्हें तकलीफ़ें देते हैं। कौन-सा वली या महात्मा है जिसे हमने दुःख नहीं दिया? ... पहले कृष्ण भगवान् को लो, उन्हें मथुरा छोड़कर द्वारका जाना पड़ा। हज़रत मुहम्मद साहिब को मक्का छोड़कर मदीना जाना पड़ा। गुरु तेग़ बहादुर साहिब का सिर काट दिया। गुरु अर्जुन साहिब को तपते हुए तवों पर बिठाया। गुरु गोबिन्द सिंह जी ने तीन महीने तक कमरबन्द नहीं खोला। इनसान एक सप्ताह तक इस तरह रहे तो उसका क्या हाल होगा, मगर वे दुनिया की निन्दा और तकलीफ़ें सहते हुए दुनिया का भला करते हैं। उन्होंने दुनिया की निन्दा-चुग़ली की परवाह नहीं की और अपने घर पहुँच गये। जन्म साखी में लिखा है कि एक बार गुरु नानक साहिब कसूर के इलाक़े में गये, लोगों ने यह कहकर कि यह कुमार्गी है, ग़लत राह पर चलाता है, गाँव में घुसने नहीं दिया। आख़िर गाँव के बाहर एक कोढ़ी की कुटिया में रात बितायी।

पाठी (समर्थन में):

कोई आखै भूतना को कहै बेताला॥
कोई आखै आदमी नानकु वेचारा॥[25]

इसके विपरीत, जहाँ वे बैठे थे, वहाँ अब गुरुद्वारे बन गये हैं और हम उन स्थानों को पूजते हैं।

जो कुल लाज जगत से डरे। गुरु भक्ति से वह पुनि गिरे॥

जो आदमी लोक-लाज से डरता है, दुनिया के तानों और निन्दा से डरता है, अपने कुल से डरता है, वह गुरु-भक्ति के क़ाबिल नहीं, क्योंकि वह दुनिया को बड़ा समझता है और सतगुरु को छोटा। दूसरे लफ़्ज़ों में यह कह दें कि वह विषय-विकारों को ऊँचा समझता है और सतगुरु को नीचा।

फ़र्रुख़सियर के वक़्त सिक्खों पर बहुत ज़्यादा ज़ुल्म होता था। सिक्ख डरते हुए उजाड़ों, पहाड़ों, जंगलों में छिपते फिरते थे। बादशाह कहता था कि मैं उन्हें जड़ से मिटा दूँगा। उसने हुक्म दे रखा था कि जो भी किसी सिक्ख का सिर काटकर लायेगा, उसे मैं दो सौ रुपये इनाम दूँगा। लोगों ने स्त्रियों के सिर काटकर ला-ला कर दिये और इनाम हासिल किया कि ये सिक्खों के बच्चों के सिर हैं।

सिक्ख पार्टियाँ बनाकर जंगलों में रहते थे। इत्तफ़ाक़ से एक पार्टी पकड़ी गयी। हाकिम ने उसे जेलख़ाने में डाल दिया। उस पार्टी में एक ऐसा लड़का था जो कई ख़ानदानों में अकेला था। जब उसकी माँ को पता लगा तो वह दिल्ली पहुँची, वज़ीर की औरत से मिली और कहा कि मेरा लड़का सिक्ख नहीं, बेहतर है कि बादशाह से कहकर आप उसे छुड़वा दें। बादशाह ने हुक्म दिया हुआ था कि या तो इसलाम स्वीकार करो या मौत के घाट उतर जाओ। वज़ीर की औरत ने वज़ीर से कहा, वज़ीर ने बादशाह से कहा कि बात इस तरह है। बादशाह ने कहा कि अगर लड़का कह दे कि मैं सिक्ख नहीं तो मैं छोड़ दूँगा। वज़ीर ने लड़के की माँ से कह दिया। उस दिन उस सिक्ख पार्टी की दोबारा पेशी थी। जब आये तो बादशाह ने कहा कि तुम मुसलमान हो जाओ, मैं तुम्हें छोड़ दूँगा। उन्होंने जवाब दिया, ''नहीं, हम सिक्ख हैं।'' उस लड़के से भी पूछा गया, उसने

भी वही उत्तर दिया जो औरों ने दिया था। लड़के की माँ ने कहा कि तू कह दे कि मैं सिक्ख नहीं। लड़के ने कहा, "मैं सिक्ख हूँ! मैं सिक्ख हूँ!! मैं सिक्ख हूँ!!! आ जल्लाद! पहले मुझे क़त्ल कर ताकि मेरी माँ का दुःख दूर हो जाये और उसे ज़्यादा इन्तज़ार न करना पड़े।" सो, जो शिष्य लोक-लाज से डरते हैं, वे बुज़दिल और कमज़ोर हैं, वे गुरु-भक्ति के क़ाबिल नहीं।

इसी तरह का ज़िक्र है, मुसलमानों की हुकूमत थी। गुरु गोबिन्द सिंह साहिब को उनके ज़ोर की वजह से आनन्दपुर छोड़ना पड़ा। एक डल्ला नाम का बराड़ क़ौम का सरदार था। गुरु साहिब से मिला और बोला कि महाराज! अगर आप हमें ख़बर करते तो हम मालवा आकर मुसलमानों का मुक़ाबला करते ... हमें आनन्दपुर को नहीं छोड़ना था। गुरु साहिब ने कहा कि जो मालिक का हुक्म। डल्ला ने कहा, "नहीं जी ...।"

उन दिनों में तोड़ेदार बन्दूक़ें होती थीं। इसी तरह पत्थर-कला बन्दूक़ें भी होती थीं जो कि सबसे अच्छी समझी जाती थीं। वह घोड़ा पहले पत्थर पर गिरता और फिर चलता था। एक बार एक शिष्य गुरु साहिब के पास एक बड़ी सुन्दर पत्थर-कला बन्दूक़ लेकर लाया। गुरु साहिब ने कहा "इसे किस पर आज़माएँ?" फिर कहने लगे, "इसे आज़माने के लिए आदमी ही ठीक रहेगा।" फिर कहा कि देखना चाहिए! आख़िर कहते हैं, "डल्ला! कोई आदमी खड़ा कर, जिस पर आज़माया जाये।" उसने अपने आदमियों से कहा, पर अब आगे कौन आये? वही आये जिसे मरना हो! चाहे गुरु साहिब को किसी को मारना नहीं था, सिर्फ़ आज़माना ही था। जब कोई न आया तो गुरु साहिब ने कहा, "डल्ला! तू ही आ।" डल्ला कहने लगा, "जी! मेरे छोटे-छोटे बच्चे हैं, मेरे बाद वे क्या करेंगे?" गुरु साहिब ने कहा, "बस! यों ही कहता था कि मुझे ख़बर करते।" डल्ला शर्मिन्दा हो गया। फिर हुक्म दिया, "मेरे घोड़ों के तबेले में जाओ और वहाँ जो भी आदमी मिलें उनसे कह दो कि गुरु साहिब के पास एक बन्दूक़ आयी है, उसके निशाने के लिए कोई आदमी चाहिए।" जब डल्ला ने जाकर कहा तो जो जिस हालत में था, उसी में उठकर दौड़ पड़ा। कोई

केश सँवारते दौड़ पड़ा, कोई पगड़ी बाँधते, कोई कपड़े पहनते। हरएक आदमी औरों की कारगुज़ारी बताकर—कि यह घोड़ों की बड़ी सेवा करता है, इसने चमकौर की लड़ाई में बड़ी मदद की थी, इसने फ़लाना काम किया था, यह फ़लाने ज़रूरी काम में माहिर है—यही कहता था कि इसे न मारो, बल्कि मुझे निशाना बनाओ। इसलिए गुरु साहिब ने सबको एक लाइन में एक-दूसरे के पीछे खड़ा करके बन्दूक़ की गोली ऊपर से निकाल दी। मारना तो किसी को था नहीं, सिर्फ़ इम्तिहान लेना था। डल्ला बराड़ पछताया, कहता है, अगर मुझे पता होता कि गुरु साहिब को आज़माना ही है, मारना नहीं तो मैं अपने आप को पेश कर देता। मगर इम्तिहान में कोई-कोई ही पास होता है। मालिक कभी किसी का इम्तिहान न ले।

सूरा रण से कभी न टरे। सती सदा मुरदे संग जरे॥

जो सच्चे भक्त हैं, वे परमार्थ से हटते नहीं। जिस तरह सूरमा हथियार लेकर लड़ाई के मैदान में जाता है, वह ज़िन्दगी की आस नहीं रखता। उसका काम है मरना या मारना। पुराने ज़माने में प्रथा थी कि जब स्त्री सती होने के लिए चिता पर बैठती थी, तब उसका काम था जल जाना। तब उसे दुनिया का कोई लालच मोड़ नहीं सकता था। इसी तरह शिष्य को चाहिए कि नाम लेकर उसकी कमाई में लग जाये और जीते-जी मरे। अगर वह एक बार जीते-जी मर जाये तो फिर वह कभी नहीं मरता, जन्म-मरण में नहीं आता। बार-बार मौत तो उनको आती है जो जीते-जी अभ्यास में नहीं मरते।

रण छोड़े कायर कहलाय। सती फिरे नीच घर जाय॥

अगर सूरमा मैदान से भागता है तो वह बुज़दिल और कायर कहलाता है, ऐसे नालायक़ का मांस कौए भी नहीं खाते। अगर सती आग से डरकर भागती है तो हिन्दू उसे घर में नहीं रखते थे। इसी तरह जब शिष्य गुरु

की शरण में आता है, फिर कमाई दिल लगाकर करे। अगर लड़ना है तो आगे को ही गिरे। गुरु अर्जुन देव जी कहते हैं:

आगाहा कू त्राघि पिछा फेरि न मुहडड़ा॥
नानक सिझि इवेहा वार बहुड़ि न होवी जनमड़ा॥[26]

ऐसी लड़ाई लड़ कि तेरे आगे कोई न आये। यहाँ पर लड़ाई नफ़्स यानी मन से है, काम-क्रोध के साथ लड़ाई है। अगर लड़ाई लड़नी है तो इनसे लड़ो।

पपिहा अपना पन नहिं त्यागे। जले पतंगा जोती आगे॥

कहते हैं, पपीहा अपने प्रण पर क़ायम रहता है, वह बारिश का पानी पीता है। कुएँ, बावड़ी, दरिया, नहरें, तालाब भरे हों, वह प्यासा मर जायेगा, मगर उनका पानी नहीं पियेगा।

एक दफ़ा कबीर साहिब गंगा के किनारे जा रहे थे। एक पपीहा प्यास के मारे गंगा में गिरा और मर गया, मगर उसने मरते-मरते भी अपनी चोंच पानी में नहीं डूबने दी, अपने प्रण को न तोड़ा। इस घटना को देखकर कबीर साहिब ने कहा:

पपिहा का पन देखि करि, धीरज रहै न रंच।
मरते दम जल में पड़ा, तऊ ना बोरी चंच॥[27]

उसका इतना प्यार है, मगर हमारा तो इससे आधा भी नहीं। पतंगा दीपक का आशिक़ है। वह यह नहीं देखता कि दीपक किसके घर का है, वह जान दे देता है। परम सन्त तुलसी साहिब जी कहते हैं:

उत्तम और चंडाल घर, जहँ दीपक उजियार।
तुलसी मते पतंग के, सभी जोत इकसार॥[28]

मछली को जैसे जल धारा। गुरुमुख को सतगुरु अस प्यारा॥

जिस तरह मछली की जल के साथ प्रीत है, जल से बाहर निकली नहीं कि तड़पकर मरी नहीं! इसी तरह शिष्य का सतगुरु के साथ प्यार होना चाहिए। अगर ज़रा भी अन्दर परदा नहीं खुले तो तड़पकर मर जाये। क्या कहते हैं फ़रीद साहिब:

> अजु न सुती कंत सिउ अंगु मुड़े मुड़ि जाइ॥
> जाइ पुछहु डोहागणी तुम किउ रैणि विहाइ॥[29]

रूह कहती है, आज मुझे अन्दर अकालपुरुष के दर्शन नहीं हुए, मेरे लिए तो क़यामत आ गयी है। उन रूहों का, जिन बेचारियों का परदा ही नहीं खुला, उनका क्या हाल होगा? शिष्य और गुरु का प्यार, आशिक़ और माशूक़ का प्यार है।

गुरु अर्जुन साहिब कहते हैं:

> लख खुसीआ पातिसाहीआ जे सतिगुरु नदरि करेइ॥
> निमख एक हरि नामु देइ मेरा मनु तनु सीतलु होइ॥[30]

जिन पर बख़्शिश गुरु की होई। गुरुमुख ऐसा बिरला कोई॥

कहते हैं, स्कूल में सैकड़ों तालिब-इल्म (विद्यार्थी) होते हैं, मगर एम. ए., बी. ए. तक थोड़े ही तालीम पाते हैं। इसी तरह सचखण्ड पहुँचना तो सभी को है, मगर जो जीते-जी परदा खोले, बहादुरी उसकी है। अब हमारी क्या हालत है?

जिस तरह कोई बड़ा अच्छा गैस लैम्प हो, उसके ऊपर दस-बीस टाट के परदे चढ़ा दें तो उसकी रोशनी गुम हो जायेगी। जिस कमरे में ले जाकर रखोगे, वहाँ अँधेरे का अँधेरा ही रहेगा। ज्यों-ज्यों परदे उतारते चले जाओ, रोशनी की किरणें छन-छन कर बाहर निकलेंगी। जब सब परदे उतार दोगे तो लैम्प पूरी रोशनी में ज़ाहिर हो जायेगा। इसी तरह हमारी

आत्मा पर बहुत-से ग़िलाफ़ चढ़े हुए हैं। जो स्थूल शरीर है, यह पहला ग़िलाफ़ है। इसके अन्दर सूक्ष्म शरीर है, जो दूसरा ग़िलाफ़ है। इसके आगे कारण शरीर है, यह तीसरा ग़िलाफ़ है। इसके अलावा पाँच तत्त्वों, तीन गुणों, मन, माया, पच्चीस प्रकृतियों वग़ैरह के ग़िलाफ़ हैं। जब हम आँखों से ऊपर आ जायेंगे तो यह स्थूल ग़िलाफ़ उतर जायेगा। जब हम तुरिया पद या सहँस-दल-कँवल में पहुँचेंगे तो सूक्ष्म ग़िलाफ़ उतर जायेगा। जब ब्रह्म में आ जायेंगे, वहाँ कारण ग़िलाफ़ उतर जायेगा। पारब्रह्म में जाकर कोई ग़िलाफ़ नहीं रहता। वहाँ जाकर आत्मा निर्मल हो जाती है, उस वक़्त इसकी अपनी रोशनी बारह सूरज की होती है।

यहाँ स्थूल माया है। तुरिया पद या सहँस-दल-कँवल में सूक्ष्म माया है और ब्रह्म में कारण माया है। जब हम पारब्रह्म में जायेंगे तो वहाँ एक तीर्थ है, जिसे प्रयाग या त्रिवेणी कहा है, मानसरोवर और अमृतसर कहा गया है। उस तीर्थ में नहाकर इसके जन्मों-जन्मों के पाप नाश हो जाते हैं और तब यह गुरुमुख बनता है और मालिक से मिलने के क़ाबिल होता है। सच्ची त्रिवेणी, जहाँ गंगा, जमुना, सरस्वती मिलती हैं, आदमी के अन्दर है। इसी तरह सच्चा अमृतसर भी अन्दर है, महात्माओं ने अन्दर देखा है और बयान किया है, लोगों ने बाहर नाम रख लिये हैं। अब कहते हैं कि यों तो हरएक के अन्दर यह जौहर मौजूद है, लेकिन कोई विरले आशिक़ ही परदा खोलते हैं।

सहारनपुर के इलाक़े में पीरांने कलीयर नामक एक जगह है। वहाँ एक साईं भीख रहते थे। उनका एक शिष्य एक दिन बाज़ार से निकल रहा था और कहता जाता था—या भीख! या भीख!! उसके पास से एक क़ाज़ी निकला, उसने पूछा कि तू कौन है? कहने लगा कि भीख! "तेरा मुर्शिद कौन है?" "भीख!", "तेरा रसूल कौन है?" "भीख!", "तेरा ख़ुदा कौन है?" "भीख!"; क़ाज़ी उसे पकड़कर मस्जिद में ले गया कि तौबा कर। कहता है कि मेरा रब, रसूल भीख ही है। उसने नाराज़ होकर फ़तवा लगा दिया कि यह काफ़िर है, इसे फाँसी दे दो। पकड़कर अकबर बादशाह के पास ले गये। अकबर ने वही सवाल किये। उसने कहा कि

मेरा जो कुछ भी है, भीख ही है! अकबर समझ गया कि यह मुर्शिद के रंग में रँगा हुआ है।

उस समय बारिश की बड़ी ज़रूरत थी, कहा कि भीख से कह दो कि वह बारिश करा दे। कहता है, "पूछूँगा।" अकबर ने कहा कि जा, पूछकर जल्दी आ। लोगों ने कहा कि हुज़ूर! यह भाग जायेगा। बादशाह ने कहा, "कोई फ़िक्र नहीं।" दो दिन बड़े ज़ोर की बारिश हुई, हर जगह पानी ही पानी हो गया। वायदे के अनुसार वह तीसरे दिन आकर हाज़िर हो गया। अकबर ने कहा कि बारिश हो गयी। कहता है, "हाँ, भीख ने बरसा दिया।" पूछा कि भीख कौन है? कहता है कि मेरा मुर्शिद है। बादशाह ने इक्कीस गाँवों का पट्टा लिख दिया कि यह अपने मुर्शिद को दे देना। शिष्य ने कहा कि फ़ना चीज़ मैं अपने मुर्शिद के पास नहीं ले जाता। ख़ैर! बादशाह ने पट्टा किसी और के हाथ लिखकर भेज दिया।

वह शिष्य घूमता-फिरता जब अपने पीर भीख के पास गया तो भीख ने कहा कि जब तू मेरा ख़याल कर रहा था, तेरा ख़याल था मुझमें, मेरा अपने मुर्शिद में था और उसका दरगाह में। उस वक़्त अगर तू कहता कि मुझे वली बना दे या कुछ और बना दे, मैं सबकुछ कर सकता था।

यह जो दुनिया है, कौड़ियों के समान है। जो मनुष्य कौड़ियों से राज़ी हो जाये, उसे हीरे-जवाहरात कौन दे? उसे वह दौलत कहाँ से मिले? जिस तरह मछली की प्रीत पानी के साथ होती है, ऐसी ही सतगुरु और शिष्य की प्रीत है। कहते हैं कि जिनका परदा खुल जाये; जो जीते-जी ऊपर चढ़ जायें, आत्मा का परमात्मा से मिलाप हो जाये, ऐसे आदमी दुनिया में थोड़े हैं, कोई विरले ही हैं।

राधास्वामी कही बनाय। सेवक को गुरु दिया जगाय॥

अब हुज़ूर स्वामी जी महाराज कहते हैं कि मैंने गुरु और शिष्य के प्यार का इशारा दे दिया, जो खोजी हैं, वे खोज लेंगे।

एक बीबी: महाराज जी! मुझे मोह बड़ा सताता है।

महाराज जी: जहाँ (जिस जीव से) मोह करोगी, वहीं (उसके घर) आना पड़ेगा। ज़िक्र है कि कबीर साहिब एक गाँव में गये। वहाँ एक बूढ़े को कहा कि नाम जपा कर। कहता है कि जी, मेरे छोटे-छोटे बच्चे हैं, इनकी शादियाँ हो जायें। कबीर साहिब चले गये। एक मुद्दत के बाद फिर आये और कहा कि अब तो नाम जप। वह कहने लगा कि इन बच्चों के भी छोटे-छोटे बच्चे हैं, उनकी शादियाँ हो जायें, फिर जपूँगा। कबीर साहिब चले गये। जब फिर आये तो वह बूढ़ा मर चुका था। तब उन्होंने उसके घर वालों से पूछा कि यहाँ एक बाबा रहता था? उन्होंने कहा कि जी, उसे मरे काफ़ी समय हो गया। कबीर साहिब जानते थे कि उसका बेटों, पोतों और अन्य चीज़ों से अत्यन्त मोह था और ऐसा आदमी मरकर कहीं जाता नहीं, बल्कि वहीं जन्म लेता है। उसका एक गाय के साथ बहुत ज़्यादा प्यार था। जब कबीर साहिब ने अन्तर्ध्यान होकर देखा तो पता लगा कि वह मरकर उसी गाय का बछड़ा बना। जब वह तीन साल का हुआ तो अच्छा बैल बन गया। घर वालों ने उसे हल में ख़ूब जोता और जब उनके काम का न रहा तो उन्होंने उसे गाड़ीवान को दे दिया। उसने भी उसे ख़ूब जोता, जब उसके भी काम का न रहा तो उसने तेली को दे दिया। तेली ने भी उसे बहुत चलाया और जब उसके भी काम का न रहा तो उसने क़साई को दे दिया। क़साई ने क्या किया? उसे काटकर उसका मांस बेच दिया, बाक़ी जो चमड़ा था नगाड़े वाले ले गये। उन्होंने चमड़ा नगाड़े पर मढ़कर ख़ूब पीटा, जब तक कि वह फट नहीं गया। कबीर साहिब ने तब कहा है:

बैल बने हल में जुते, ले गाड़ी में दीन।
तेली के कोल्हू रहे, पुनि घेर कसाई लीन॥
मास कटा बोटी बिकी, चमड़न मढ़ी नक्कार।
कछुक करम बाकी रहे, तिस पर पड़ती मार॥[31]

रागु सूही महला 3 घरु 1 असटपदीआ

1 ओ सतिगुर प्रसादि

नामै ही ते सभु किछु होआ बिनु सतिगुर नामु न जापै ॥
गुर का सबदु महा रसु मीठा बिनु चाखे सादु न जापै ॥
कउडी बदलै जनमु गवाइआ चीनसि नाही आपै ॥
गुरमुखि होवै ता एको जाणै हउमै दुखु न संतापै ॥ 1 ॥
बलिहारी गुर अपणे विटहु जिनि साचे सिउ लिव लाई ॥
सबदु चीन्हि आतमु परगासिआ सहजे रहिआ समाई ॥ 1 ॥ रहाउ ॥
गुरमुखि गावै गुरमुखि बूझै गुरमुखि सबदु बीचारे ॥
जीउ पिंडु सभु गुर ते उपजै गुरमुखि कारज सवारे ॥
मनमुखि अंधा अंधु कमावै बिखु खटे संसारे ॥
माइआ मोहि सदा दुखु पाए बिनु गुर अति पिआरे ॥ 2 ॥
सोई सेवकु जे सतिगुर सेवे चालै सतिगुर भाए ॥
साचा सबदु सिफति है साची साचा मंनि वसाए ॥
सची बाणी गुरमुखि आखै हउमै विचहु जाए ॥
आपे दाता करमु है साचा साचा सबदु सुणाए ॥ 3 ॥
गुरमुखि घाले गुरमुखि खटे गुरमुखि नामु जपाए ॥
सदा अलिपतु साचै रंगि राता गुर कै सहजि सुभाए ॥
मनमुखु सद ही कूड़ो बोलै बिखु बीजै बिखु खाए ॥
जमकालि बाधा त्रिसना दाधा बिनु गुर कवणु छडाए ॥ 4 ॥

सचा तीरथु जितु सत सरि नावणु गुरमुखि आपि बुझाए॥
अठसठि तीरथ गुर सबदि दिखाए तितु नातै मलु जाए॥
सचा सबदु सचा है निरमलु ना मलु लगै न लाए॥
सची सिफति सची सालाह पूरे गुर ते पाए॥ 5॥
तनु मनु सभु किछु हरि तिसु केरा दुरमति कहणु न जाए॥
हुकमु होवै ता निरमलु होवै हउमै विचहु जाए॥
गुर की साखी सहजे चाखी त्रिसना अगनि बुझाए॥
गुर कै सबदि राता सहजे माता सहजे रहिआ समाए॥ 6॥
हरि का नामु सति करि जाणै गुर कै भाइ पिआरे॥
सची वडिआई गुर ते पाई सचै नाइ पिआरे॥
एको सचा सभ महि वरतै विरला को वीचारे॥
आपे मेलि लए ता बखसे सची भगति सवारे॥ 7॥
सभो सचु सचु सचु वरतै गुरमुखि कोई जाणै॥
जंमण मरणा हुकमो वरतै गुरमुखि आपु पछाणै॥
नामु धिआए ता सतिगुरु भाए जो इछै सो फलु पाए॥
नानक तिस दा सभु किछु होवै जि विचहु आपु गवाए॥ 8॥[1]

सत्संग के बचन

नामै ही ते सभु किछु होआ बिनु सतिगुर नामु न जापै॥

सारी दुनिया के मज़हब उस परमात्मा की तरफ़ ले जाते हैं। सारी दुनिया का परमात्मा एक ही है। यह नहीं कि हिन्दुओं का और, मुसलमानों का और, ईसाइयों का और, सिक्खों का कोई और है। सबके लिए उस परमात्मा की इबादत एक ही है। हमारे मज़हब अलग-अलग हैं, पर वह सबके लिए एक है। अगर किसी एक क़ौम का हो तो बाक़ी के साथ ज़ुल्म है, पर वह नाम एक है, वह सबके अन्दर है। इनसान चाहे किसी भी मज़हब का हो, पर हम जब तक बाहर हैं, वह नहीं मिलता। बाहर

केवल माया या मादा (स्थूल जगत्) है। वह आज का नहीं, बल्कि जब से सृष्टि बनी है, तब से ही है। सारी दुनिया की किताबें बताती हैं कि वह आदमी के अन्दर है, पर यह अन्दर नहीं जाता। जब तक अन्दर नहीं जाता, नाम नहीं मिलता। राम, रहीम, राधास्वामी और अन्य लफ़्ज़ नाम नहीं। ये नाम तो लोगों को समझाने के लिए रखे गये हैं। परदा खोलने के लिए महात्माओं ने अपनी-अपनी भाषा में नाम रखे हुए हैं। हिन्दुओं ने सस्कृत में, यूरोप, अरब वालों ने अपनी-अपनी भाषा में लफ़्ज़ घड़ लिये, पर जो नाम है, वह अलिखित क़ानून और अनबोली भाषा है। वह कुल जानों की जान है, सबके अन्दर है। तीसरी पातशाही गुरु अमर दास जी इस शब्द में नाम की महिमा करते हैं कि नाम क्या चीज़ है। वह कुल आलम को पैदा करनेवाला है, इस्मे-आज़म है, सबके अन्दर है, मगर जब तक पूरा टीचर, पूरा गुरु या कामिल मुर्शिद नहीं मिलता, रूह अन्दर नहीं जाती, नाम के साथ नहीं जुड़ती। दरवाज़ा बन्द है, चाबी गुरु के पास है। जिस तरह आदमी के दिमाग़ में इल्म की ताकत है, जब वह स्कूल जाता है तो वह जागती है; इसी तरह ख़ुद-शनासी इबादत (अपने आप की पहचान), नाम, भजन की ताकत अन्दर है, मगर बिना कामिल उस्ताद के प्रकट नहीं होती। यही मौलाना रूम कहते हैं:

> चूँ किह् करदी ज़ाते-मुर्शिद रा क़बूल,
> हम ख़ुदा दर ज़ातश आमद हम रसूल।[2]

जब मुर्शिद मिल गया तो उसके ज़रिये ख़ुदा भी मिल गया और रसूल भी मिल गया। अगर मुर्शिद न मिला तो न ख़ुदा मिला और न रसूल मिला, ख़ाली आया और ख़ाली चला गया। अब कहते हैं कि बग़ैर कामिल मुर्शिद, बग़ैर सतगुरु के नाम नहीं मिलता और बिना नाम मुक्ति नहीं होती। जो ताकत सारी दुनिया को पैदा करती है, वह नाम है। मुसलमान फ़क़ीर उसे कलमा, बाँगे-आसमानी कहते हैं, गुरु नानक साहिब उसे शब्द या बाणी कहते हैं, एक ही चीज़ है। चाहे करोड़ों साल लगे रहो, जब तक आप अन्दर जाकर नाम की लज़्ज़त नहीं लेते, मुक्ति नहीं

होती। यह दौलत सबके अन्दर है, मगर बिना सतगुरु के नहीं मिलती। जब वह राह बतायेगा, आप मेहनत करके अन्दर जाकर परदा खोलोगे, तब वह मिलेगी।

गुर का सबदु महा रसु मीठा बिनु चाखे सादु न जापै॥

वह न सस्कृत भाषा में है, न अरबी में, न फ़ारसी में। उस ताकत का नाम शब्द है। अरबी भाषा में उसे बाँगे-आसमानी या कलामे-इलाही और फ़ारसी में इस्मे-आज़म कहा है। उपनिषद् उसे आकाशवाणी कहकर बयान करते हैं। वह अति मीठा और अति प्यारा है। यही मौलाना रूम भी कहते हैं:

औलिया रा दर दरूं हम नग़महास्त,
आशकां रा जां हयाते बेबहास्त।

कि वह नग़मा या राग औलिया-अल्लाह के अन्दर हो रहा है और वे ही उसे सुनते हैं, उन्हीं के लिए वह क़ीमती चीज़ है। फिर कहते हैं:

नशनवद आं नग़महा रा गोशे-हिस्स,
कज़ सितमहा गोशे-हिस्स बाशद नजस्स।[3]

कि दुनिया के लोगों के कान बन्द हैं, इसलिए वे उस राग को नहीं सुनते, मगर जब वे किसी कामिल मुर्शिद के पास जायेंगे तो उनके कान खुल जायेंगे और वे उस राग को सुनेंगे, नहीं तो सारे बहरे आये और बहरे ही चले गये। अब सन्त कहते हैं कि तेरे अन्दर भी वह राग है, शब्द है, जो अति मीठा और अति प्यारा है। जिन्हें स्वाद आता है, उसकी लज़्ज़त को वे ही जानते हैं। वह इनसान का निजात-दहिंदा यानी मुक्तिदाता है, मगर जब तक आत्मा अन्दर नहीं जाती, नाम की लज़्ज़त नहीं आती। न काम मरता है, न क्रोध, न ईर्ष्या, न चुग़ली, न दुनिया के पक्षपात जाते हैं और न ही विषयों का प्यार घटता है। अगर कोई लज़्ज़त है तो वह नाम की लज़्ज़त है, जिसे पाकर मन वश में हो जाता है।

दुनिया की लज़्ज़तें फ़ना (नाशवान्) हैं, वह बका (अविनाशी) है। वह किसी ख़ास क़ौम की जायदाद नहीं। मालिक सबका एक ही है। हरएक क़ौम और मज़हब के बुज़ुर्ग, कामिल फ़क़ीर, जो ऊँचे दर्जों तक गये, उसकी महिमा करते हैं। गुरु अर्जुन साहिब फ़रमाते हैं:

> नाम के धारे सगले जंत॥ नाम के धारे खंड ब्रहमंड॥
> नाम के धारे सिम्रिति बेद पुरान॥ नाम के धारे सुनन गिआन धिआन॥
> नाम के धारे आगास पाताल॥ नाम के धारे सगल आकार॥
> नाम के धारे पुरीआ सभ भवन॥ नाम कै संगि उधरे सुनि स्रवन॥
> करि किरपा जिसु आपनै नामि लाए॥
> नानक चउथे पद महि सो जनु गति पाए॥[1]

कुल लौलाक (खण्ड-ब्रह्माण्ड) और चौदह तबक़ (मण्डल) को बनानेवाला कौन है? नाम। लफ़्ज़ खण्ड-ब्रह्माण्ड नहीं बना सकते। नाम ताकत है, जो अति मीठी और प्यारी है और सबके अन्दर है, मगर गुरु के बग़ैर नहीं मिलती। वह लज़्ज़त लेने योग्य चीज़ है। जब तक लज़्ज़त न ली जाये, इल्म नहीं होता कि नाम क्या चीज़ है! दुनिया लफ़्ज़ों के झगड़ों में मर गयी। जब नाम का पता लग जाये, फिर किसी के साथ द्वैत नहीं रहता, क्योंकि फिर समझ आती है कि जो मेरे अन्दर है, वह सभी के अन्दर है। फिर किसी के साथ पक्षपात नहीं रहता।

कउडी बदलै जनमु गवाइआ चीनसि नाही आपै॥

यह दुनिया फ़ना है, कौड़ी के समान है। नाम मोती है। अब गुरु साहिब अफ़सोस करते हैं कि दुनिया बाहर माया में यानी दुनिया के सामानों में फँसी रही। जिस मतलब के लिए इनसानी जामा पहना था, वह मतलब हासिल नहीं हुआ, इनसान बनने का इसने फ़ायदा हासिल नहीं किया। ऋषि-मुनि चौरासी लाख योनियों का बयान करते हैं। उन सबमें उत्तम और श्रेष्ठ योनि इनसान की है। यहूदी कहते हैं कि ख़ुदा ने इनसान को अपनी शक्ल पर बनाया है। हिन्दू नर-नारायणी देह कहते हैं। मुसलमान

अशरफ़ुल-मख़लूक़ात कहते हैं। जो कुछ भी कहा जाता है, सच है, इसमें ज़रा भी शक नहीं। मगर जो सामान उस वाहिद-हू ला-शरीक ने इसके अन्दर रखा है, उसका इसे कुछ इल्म नहीं। यह अन्दर जाता नहीं, इसे इल्म होता नहीं। इसे अपनी हैसियत की ख़बर नहीं। यह आत्मा है, रूह है, इसकी पूजा के योग्य केवल परमात्मा ही है, और कोई चीज़ इसकी पूजा के क़ाबिल नहीं है।

देवी-देवता, फ़रिश्ते, ब्रह्मा, विष्णु, शिव, ज़िब्राईल, मैकाईल, इज़राईल, सभी इसकी सेवा के लिए हैं। दस इन्द्रियाँ, चार अन्तःकरण—चौदह के चौदह देवता, इसकी सेवा के लिए मौजूद हैं। जिस तरह विष्णु सृष्टि में है, हमारे अन्दर भी है। जो खाना हमारे आमाशय या मेदा (पेट) में जाता है, जो ताकत उसे हज़म करके सारी रगों या नाड़ियों में पहुँचाती है, उसे विष्णु कहते हैं। वह शरीर को पालता है। हिन्दू उसकी पूजा करते हैं, मुसलमान नहीं करते तो क्या वह हिन्दुओं को पालता है और मुसलमानों को नहीं पालता? नहीं! यह उसका धर्म है कि पालन करे। हृदय के अन्दर जो ताकत काम कर रही है, उसे शिव कहते हैं। यह प्राणों के भण्डार का मालिक है। प्राणों के ज़रिये मनुष्य बोलता है, प्राणों के ज़रिये खाना-पीना, चलना-फिरना सब होता है, प्राणों के आसरे मल-मूत्र बाहर आता है। प्राणों या हवा के ज़रिये ही ख़ून का दौरा होता है। उस ताकत को शिव कहते हैं, और यह काम करना इसका धर्म है, फिर कोई उसकी पूजा करे या न करे। बेशुमार ताकतें आत्मा की सेवा के लिए हमारे अन्दर हैं, पूजा के लिए सिर्फ़ परमात्मा है और वह हमारे अन्दर है, बाहर नहीं। यहीं पर इनसान ग़लती कर बैठता है। सोचो!

सारी दुनिया ठाकुरद्वारों, मस्जिदों, मन्दिरों में जाती है। कोई गंगा, कोई जमुना, कोई मक्का, कोई मदीना, कोई कहाँ तो कोई कहाँ। दुनिया की सारी किताबें छान मारीं, मगर बाहर कभी मिला नहीं। जिसे मिला है, अन्दर ही मिला है। यह अन्दर जाता नहीं, इसे अपनी हैसियत की ख़बर ही नहीं! अगर इसे ख़बर हो जाये तो यह सारी दुनिया का बादशाह है। दुनिया के विषय-विकारों में पड़कर इसने अपना जीवन गँवा दिया।

गुरमुखि होवै ता एको जाणै हउमै दुखु न संतापै॥

अगर यह कामिल मुर्शिद से राह लेकर नौ दरवाज़े तय करके दसवीं गली में आ जाये, नाम ले ले तो यह गुरुमुख बन जाये। सभी मज़हबों के कामिल फ़क़ीर यही कहते हैं। हिन्दू कहते हैं कि जब तक जीते-जी नहीं मरता, परमेश्वर नहीं मिलता। मुसलमान कहते हैं: 'मूतू-क़बलंत-मूतू' (मौत से पहले मरो)। लताइफ़े-सित्ता यानी छ: चक्रों में रब नहीं; देवी-देवता हैं। आँखे बन्द करके आसमानी मंज़िलों पर जा, आँखों तक चढ़कर फिर आसमान पर आ। मौलाना रूम कहते हैं:

बाँगे-अजब अज़ आसमाँ दर मी रसद हर साअते,
मी नशनवद आँ बाँगे-रा इल्ला किह् साहिब दौलते।

वह बाँग, जिसे आकाशवाणी या नाम कहते हैं, हरएक के अन्दर है। अन्दर हर वक़्त धुन हो रही है। उसे कौन सुनता है? कोई-कोई कामिल फ़क़ीर या पूर्ण महात्मा।

ऐ सर फ़रो बुरदह चो ख़र ज़ीं आबो सबज़ह पस मचर,
यक लहज़ा दर वाला नगर बाशद कि बीनी आयते।

ऐ इनसान, तू गधे की तरह खाकर, पेट भरकर सोया रहता है। क्या ही अच्छा हो अगर तू रात को जागे, रूहानी मंज़िलों पर चढ़े। देख! ऊपर आसमान से आयत आ रही है।

बे चारह गोशे मुश्तरक ग़र नशनवद बाँगे-फ़लक,
बे चारह जाने बेमज़ा कज़ हक नयाबद राहते।

वे कान बहरे हैं जो शब्द-धुन को नहीं सुनते। वह जान, जान कहलाने की हक़दार नहीं, जिसने मालिक से सुख हासिल नहीं किया।

आख़िर चिह् बाशद गर शबे अज़ जां बरआरी या रबे,
बेरूंजही अज़ गोरे-तन आंदर रवी दर साख़्ते।

क्या ही अच्छा हो कि तू तवज्जुह दे, क़ब्र में से निकलकर ऊपर आये यानी पिण्ड को छोड़कर अण्ड में आ जाये। आगे कहते हैं:

अज़ पाकशाई रीसमाँ ता बर परी बर आसमाँ,
चूँ आसमाँ ऐमन शवी अज़ हर शिकस्तो आफ़ते।[5]

तू अपने पैरों से आशा-तृष्णा की रस्सियाँ खोल, ताकि तू आसमान पर पहुँचे। सभी मज़हबों की बुनियाद एक ही उसूल पर है, मगर दुनिया बेख़बर है। जब तक रूह मन-इन्द्रियों की ग़ुलाम है, गुरुमुख नहीं बनती। नाम की कमाई करके वह गुरुमुख बनती है, परदा खुल जाता है। जब परदा खुल जाये, न दुःख है, न सुख। नाम की लज़्ज़त पाकर कुल दुनिया से ला-तअल्लुक़ हो जाते हैं।

बलिहारी गुर अपणे विटहु जिनि साचे सिउ लिव लाई॥

महात्मा हमें इतना उत्तम पदार्थ देता है, उसका शुक्राना करना ज़रूरी है। मुर्शिद वह दात देता है जो फ़ना नहीं होती। गुरु अमर दास जी कहते हैं कि हम बार-बार क़ुर्बान जाते हैं गुरु अंगद साहिब पर, जिन्होंने यह दौलत बख़्शी, जिसके ज़रिये हमारी मालिक से लिव लग गयी।

सबदु चीन्हि आतमु परगासिआ सहजे रहिआ समाई॥

इस्मे-आज़म यानी शब्द को पकड़कर रूह बाग़-बाग़ हो गयी। आसमानी मंज़िल, मक़ामे-हक़्क़, सतलोक में पहुँचकर सहज-समाधि में लिव लग गयी। इसकी आत्मा के ऊपर से सारे ग़िलाफ़ उतर गये। गुरु अमर दास जी कहते हैं:

त्रिहु गुणा विचि सहजु न पाईऐ त्रै गुण भरमि भुलाइ॥
. . . . . .
चउथे पद महि सहजु है गुरमुखि पलै पाइ॥[6]

जब चौथे लोक में पहुँचेगा तो वहाँ शान्ति आयेगी, उससे पहले नहीं।

गुरमुखि गावै गुरमुखि बूझै गुरमुखि सबदु बीचारे॥

कहते हैं, उस लज़्ज़त को कौन लेता है? फिर आप ही जवाब देते हैं कि गुरुमुख! है तो सबके अन्दर, मगर गुरुमुख या साधु के बिना नहीं मिलती। अब सवाल पैदा होता है कि यह गुरुमुख कब बनता है? कहते हैं कि हमारी आत्मा पर पहले तो यह मिट्टी का शरीर यानी स्थूल शरीर है। जब हम अभ्यास के ज़रिये इसे छोड़कर तुरिया पद या मक़ामे-अल्लाह में पहुँचेंगे तो वहाँ सूक्ष्म शरीर है। यह स्थूल शरीर पीछे रह गया। फिर जब ब्रह्म में जायेंगे, वहाँ कारण शरीर है, वहाँ सूक्ष्म शरीर का अभाव हो गया। जब पारब्रह्म में स्नान करेंगे तो कारण शरीर भी उतर जायेगा और हम गुरुमुख बन जायेंगे। सो, यह गुरुमुख की गति है। वहाँ पहुँचकर यह गुरुमुख बनता है। गुरुमुख अभ्यासी है, उसे रब से इश्क़ और प्रेम है। दुनिया के लोगों का प्रेम बाहर बेटे-बेटियों, विषय-विकारों में है। सन्तों का प्रेम शब्द के साथ है। स्वामी जी महाराज कहते हैं:

रूबरू आमिलाने-बातिन-फ़हम।
आलिमाँ इल्मे-ज़ाहिरी जाहिल॥[7]

जो अन्दर जानेवाले हैं, उनके लिए यह ज़ाहिरी आलिम यानी दुनिया के विद्वान, तिफ़्ले-मक्तब यानी प्राइमरी स्कूल के विद्यार्थी हैं। इनको यह पता नहीं कि वे क्या कहते हैं। यह मज़मून कामिल फ़क़ीरों का है, है सबके अन्दर। जिसने मनुष्य-जन्म पाकर परमात्मा से विसाल नहीं किया, उसने अपना जन्म व्यर्थ गँवा दिया। जिस तरह कुत्ते-बिल्ले खा-पी कर और सोकर जन्म गुज़ार देते हैं, इसी तरह इसने भी इनसानी-जन्म बरबाद कर दिया। इससे कोई फ़ायदा नहीं उठाया, व्यर्थ खो दिया।

जीउ पिंडु सभु गुर ते उपजै गुरमुखि कारज सवारे॥

कहते हैं, जितने अन्दर के अनुभव हैं, वे सतगुरु के ज़रिये ही मिलते हैं। जब तक अन्दर जानेवाला महात्मा नहीं मिलता, हमें ख़बर नहीं होती।

उस मालिक को ब्रह्म कहें, प्रभु कहें, चाहे रब कहें, हमने सुना है कि परमात्मा है, देखा नहीं है। हमें लज़्ज़त नहीं मिली। जो कुछ मिलता है, वह पूर्ण गुरु के ज़रिये मिलता है। कुल आलम उससे फ़ायदा उठाता है। रूह उसके ज़रिये रूहानी मण्डलों की सैर करती है। सतगुरु धारण करने में हिन्दू, मुसलमान या अन्य मज़हबों का सवाल नहीं होना चाहिए। जिस तरह जब हम स्कूलों, कॉलेजों में तालीम हासिल करने के लिए जाते हैं, हमारे उस्ताद, प्रोफ़ेसर हिन्दू भी होते हैं, मुसलमान, ईसाई भी होते हैं, मगर हमने कभी उनसे पढ़ने से एतराज़ नहीं किया।

इसी तरह रूहानियत में है, कबीर साहिब कपड़ा बुनकर गुज़ारा करते थे, राजा बीर सिंह, बघेल सिंह उनके सेवक थे। गुरु रविदास जी जूते गाँठकर गुज़ारा करते थे, मेवाड़ के राजघराने की मीरा बाई उनकी तालिब (शिष्या) थी। सो, हमें क़ौम-मज़हब देखने की ज़रूरत नहीं, बल्कि हमें यह देखना चाहिए कि रास्ता पूरा है या नहीं। किसी पूरे महात्मा से राह लेकर अन्दर जाओ। चाहे किसी मज़हब के होकर जाओ, आपकी मुक्ति हो जायेगी। अगर कोई पूरा गुरु मिल जाये और आदमी उसके दिये हुए नाम की कमाई करके गुरुमुख बन जाये तो उसका जन्म-मरण ख़त्म हो जाता है।

मनमुखि अंधा अंधु कमावै बिखु खटे संसारे॥

अब कहते हैं कि जिसकी रूह नफ़्स* के ताबे† है, जो मन-इन्द्रियों का ग़ुलाम है, उसका परदा नहीं खुलता। लज़्ज़तों में अपनी स्वास रूपी पूँजी खोकर चला गया। परमात्मा को देख सकनेवाली आन्तरिक आँख न खुली, वह मन के ताबे ही रहा। मन, इन्द्रियों के ताबे है। जो इन्द्रिय चाहती है, उसको लिये फिरती है। आँखें सुन्दर रूप की तरफ़ खींचकर ले जाती हैं, ज़बान लज़्ज़त की तरफ़। यह आज़ाद नहीं है, अपनी मर्ज़ी नहीं कर

---

* मन।

† अधीन, ग़ुलाम।

सकता, ग़ुलाम ही आया और ग़ुलाम ही चला गया। मनमुख इनसानी शरीर से फ़ायदा नहीं उठा सका। एक कहानी है, है तो कहानी मगर उसमें रम्ज़ (भेद) है:

कोई कामिल महात्मा एक बनिये के घर गया। बनिया बड़ा कंगाल था। उसने रो-रो कर महात्मा से कहा कि मैं ग़रीब कंगाल हूँ। महात्मा को रहम आ गया, बोला, ''मेरे पास पारस है, तीन महीने के लिए यह मैं देता हूँ। जितना सोना चाहिए, बना लेना।'' पारस की यह ख़ासियत है कि लोहे से लगकर उसको सोना बना देता है। फ़क़ीर चला गया।

बनिये ने पहले महीने बाज़ार जाकर लोहे का भाव पूछा। दुकानदार ने कहा कि लाला जी! लोहे का भाव बढ़ गया है। पहले पाँच रुपये मन* था, अब सात हो गया है। बनिये ने कहा कि घाटे का सौदा नहीं करना। अक़्ल नहीं थी कि एक मन सोने से हज़ारों रुपये आ जायेंगे। वह महीना गुज़र गया। लोहे का भाव दो रुपये और चढ़ गया। बनिये ने कहा, ''अभी नहीं ख़रीदना।'' तीसरे महीने पूछा तो पता लगा कि अब भाव पन्द्रह रुपये मन हो गया है, उसने फिर भी नहीं ख़रीदा। इतने वक़्त में महात्मा आ गया, उसने पत्थर वापस ले लिया और बनिया ग़रीब का ग़रीब ही रहा।

यह कहानी है, असली बात क्या है? मनुष्य-देह पारस है, इसमें परदा खोलना है और परमात्मा से मिलना है। अगर यह मौक़ा हाथ से निकल गया तो करोड़ों जन्म फ़ुज़ूल गये। जो कुछ करना है, मनुष्य-जन्म में ही करना है। गायों, भैंसों, घोड़ों के जन्म में नहीं करना, उनमें अक़्ल नहीं, तमीज़ नहीं, ज्ञान नहीं। अब मनमुख, मन-इन्द्रियों के अधीन है। अन्धा आया और अन्धा चला गया। न रूह का रब से विसाल हुआ, न जन्म-मरण ख़त्म हुआ।

माइआ मोहि सदा दुखु पाए बिनु गुर अति पिआरे॥

दुनिया के पदार्थों, दुनिया के प्यार में ही गिरफ़्तार रहा, अन्दर परदा नहीं खोला, आत्मा पिण्ड को छोड़कर ब्रह्माण्ड पर नहीं गयी। न नाम की

* 40 किलोग्राम।

लज़्ज़त ली, न पता लगा, न मालिक को देखा, न आँख खुली। ख़ाली आया और ख़ाली चला गया।

सोई सेवकु जे सतिगुर सेवे चालै सतिगुर भाए॥

भाटों ने, रागियों ने गुरु अर्जुन साहिब से प्रार्थना की कि हमें एक टका प्रति सिख (शिष्य) के हिसाब से चन्दा उगाह दो। हमें कुछ माया की ज़रूरत है। गुरु साहिब ने कहा कि हाँ! उगाह देंगे। बड़े ख़ुश हुए, कहने लगे कि काबुल, कन्धार तक, पेशावर तक सिख ही सिख हैं, बहुत माया हो जायेगी, हमारे पास बड़ी दौलत हो जायेगी। महीने भर बाद फिर अर्ज़ की कि आपने फ़रमाया था कि एक टका प्रति सिख उगाह देंगे, हमें पैसों की ज़रूरत है। आपने फ़रमाया कि हाँ! उगाह देंगे। दो महीने गुज़र गये। भाटों ने फिर अर्ज़ की कि जी, आपने फ़रमाया था कि एक टका सिख उगाह देंगे, हमें माया की बहुत ज़रूरत है। कहने लगे कि कल देंगे। अब उन्होंने कहा कि दरबार में तो जितने पैसे आते हैं, ख़र्च हो जाते हैं, जमा तो कभी होते ही नहीं, फ़क़ीरों के पास तो आना-जाना लगा रहता है। कहाँ से क़र्ज़ लेंगे, कहाँ से देंगे? अगला दिन आया, महाराज ने साढ़े चार टके गिनकर भाटों के हवाले कर दिए। भाटों ने पूछा, "जी, यह क्या?" फ़रमाया, "पहले सिख गुरु नानक साहिब, दूसरे सिख गुरु अंगद साहिब, तीसरे गुरु अमर दास जी, चौथे गुरु राम दास जी और आधा सिख मैं हूँ। अभी मैं पूरा सिख नहीं बना, आधा सिख हूँ। सो साढ़े चार टके तुम्हारे हवाले हैं।"

सिखी (शिष्यत्व) तलवार की धार है, सिखी जीते-जी मरना है। यह जीते-जी मरता नहीं, शिष्य कैसे बन सकता है। कहते हैं कि वही सेवक, वही शिष्य इनसानी जन्म से फ़ायदा उठा सकता है जो गुरु की हिदायत के मुताबिक़ परदा खोलकर जीते-जी परमात्मा से मिले, नहीं तो मनुष्य-देह का कोई फ़ायदा नहीं।

मैंने कई दफ़ा सत्संग में कहा है, अब फिर दोहराता हूँ कि हम सभी 'रब, रब' कहते हैं, पर देखा किसी ने नहीं, मिला किसी को नहीं, बल्कि बहुत-से पढ़े-लिखे लोग कहने लग गये हैं कि खाओ, पियो और मौज उड़ाओ, परमात्मा की कोई ज़रूरत ही नहीं। इसकी वजह क्या है? कि उनका परदा नहीं खुला। अगर वे परदा खोल लें तो उन्हें अपनी हैसियत मालूम हो जाये और परमात्मा भी मिल जाये। जब तक परमात्मा न मिले, दुनिया और दुनिया की सारी चीज़ों को अपने सामने रख लो। अब सवाल पैदा होता है कि इस हालत में इनसान की पूजा के योग्य कौन-सी चीज़ है? सोचो! सारी दुनिया आकाश, हवा, आग, पानी और मिट्टी, इन पाँच तत्त्वों या पाँच अनासर की बनी हुई है और तत्त्वों के अनुसार पाँच जमातों में बँटी हुई है। पहली वह है जिसमें एक तत्त्व ज़िन्दा, चार तत्त्व मुर्दा यानी नाममात्र हैं, जैसे सब्ज़ियाँ। इनमें ज़िन्दा तत्त्व पानी है। डॉक्टरों ने साबित कर दिया है कि कई सब्ज़ियों में 95 फ़ीसदी पानी है। इनसान में पाँच तत्त्व हैं, सब्ज़ियों में एक। अगर यह पीपल, तुलसी आदि की पूजा करे तो अफ़सोस है। क्यों? इसलिए कि पाँच तत्त्व वाला एक तत्त्व वाले की पूजा करे!

अगली जमात है कीड़े-मकोड़ों की। इनमें दो तत्त्व ज़िन्दा हैं, हवा और आग। इनमें छिपकलियाँ, बिच्छू, साँप आदि शामिल हैं। जब मैं सरगोधा की नई आबादी में सब-डिवीज़नल ऑफ़िसर होकर गया, वहाँ बीस-बीस कोस तक पानी नहीं मिलता था, लेकिन साँप, बिच्छू आदि आम थे। इन्हें पानी की ज़रूरत नहीं, ये अपने लिए पानी सब्ज़ियों में से निकाल लेते हैं। अब अगर पाँच तत्त्व वाला दो तत्व वाले साँपों की पूजा करता है तो अफ़सोस नहीं तो और क्या है?

तीसरी जमात पक्षियों की है। इनमें आग, हवा, पानी, ये तीन तत्त्व प्रबल हैं, मिट्टी और आकाश कम हैं। जो गरुड़ आदि की पूजा करते हैं, वे सख़्त ग़लती करते हैं। चौथी जमात पशुओं की है, जिनमें आग, हवा, पानी और मिट्टी, यह चार तत्त्व मुकम्मल हैं और आकाश कम है। इनमें विवेक नहीं, ज्ञान नहीं। पाँचवीं जमात इनसान है। इसमें पाँचों तत्त्व

मुकम्मल हैं। इनसान से बढ़कर और कोई जन्म है ही नहीं, यह सबसे उत्तम है। निचले तत्त्वों वाले प्राणी पूजा करने योग्य नहीं।

परमात्मा को देखा नहीं, अब पूजा करें तो किसकी? राह दिखायी नहीं देती, जायें तो किधर जायें? दुनिया गुमराह हो गयी। लेकिन नहीं, आगे राह है।

जिस तरह एक कमरे में बैट्री और रेडियो दोनों मौजूद हैं, मगर वे आपस में जुड़े हुए नहीं, क्या वे ख़बरें लेंगे? कभी नहीं। हाँ, अगर उन्हें जोड़ दिया जाये तो ख़बरें देने लग जायेंगे। इसी तरह वे महात्मा जिन्होंने परदा खोलकर अपनी सुरत को शब्द के साथ जोड़ लिया है, उनकी बातचीत जारी हो गयी है। अगर प्यार के क़ाबिल हैं तो वे महात्मा हैं। वे सबसे श्रेष्ठ हैं, क्योंकि बैट्री का तार (शब्द) सबके अन्दर है, मगर सुरत से जुड़ा हुआ नहीं है, इसी लिए हम उस महात्मा की सोहबत में जाते हैं कि वे हमारी बैट्री भी जोड़ दें ताकि हम भी परमात्मा के साथ बातें करें। इसी लिए प्यार के क़ाबिल वे कामिल फ़क़ीर हैं, जिन्होंने परदा खोलकर नाम की लज़्ज़त ले ली, वे ही पूजा के योग्य हैं। इसलिए हम कामिल मुर्शिद की तारीफ़ करते हैं।

सेवक को जो हिदायत सतगुरु दें, वह उस पर बग़ैर किसी एतराज़ के अमल करे तो वह जल्दी अन्दर चला जायेगा, मगर मुश्किल यह है कि हमारे अन्दर विरोध करनेवाली ताकत मन है, वह अन्दर जाने नहीं देता। मन बाहर की तरफ़ भागता है, पर शब्द अन्दर की तरफ़ खींचता है।

साचा सबदु सिफति है साची साचा मंनि वसाए॥

जिस मालिक की सिफ़त, तारीफ़ किताबें, वेद, ग्रन्थ और दुनिया करती है, वह आपके अन्दर है। जब यह सच्चा होकर अन्दर जायेगा तो वह परदा खोलेगा, ज़रूर खोलेगा, मगर इसके लिए सब्र, दृढ़ता, प्यार और मेहनत चाहिए। जब स्कूलों, कॉलेजों में 24-25 साल लगाकर डॉक्टरी, इंजीनियरिंग सीखी जाती है, तो क्या नाम ही ऐसी मामूली चीज़ है कि

जल्दी आ जाये? बिना क़िस्मत के कोई चीज़ नहीं मिलती। क़िस्मत नाम है भाग्य का, हिस्से का। आदमी तीस दिन मज़दूरी करे, तब तनख़्वाह का मुँह देखता है, पर यह मेहनत और प्यार के ज़रिये हासिल होता है। कबीर साहिब फ़रमाते हैं :

> सुखिया सब संसार है, खावै औ सोवै।
> दुखिया दास कबीर है, जागै औ रोवै॥[8]

दुनिया सोती है, खाती है। मैं रोता हूँ कि ऐ मालिक! रहम कर। वह मालिक अन्दर है, बाहर नहीं। अगर किसी के घर में लाख रुपया दबा हुआ है, उसे पता नहीं, मिला नहीं, वह बाहर ही ढूँढ़ता हुआ मर गया तो किसी का क्या दोष? परमात्मा को ढूँढ़ना इसका काम है। अन्दर से उस दौलत को पाना और फ़ायदा उठाना इसका काम है। इसके अन्दर परमात्मा है, परमात्मा बाहर से मिलनेवाला नहीं है। शायद कुछ लोग वेदों, किताबों का हवाला देकर कहें कि वह सर्वशक्तिमान है, हर जगह मौजूद है। बेशक है ज़रूर, मगर किस तरह? जिस तरह दूध में घी! जिसने घी निकलते हुए नहीं देखा हो, उससे अगर कहें कि दूध में घी है तो वह नहीं मानेगा। वह कहता है कि घी में पूरियाँ पकती हैं, दूध में पूरियाँ नहीं पक सकतीं। घी में हलवा बनता है, दूध में हलवा नहीं बनता। जब उसके सामने दूध को जमाकर दही बनाकर, मथकर मक्खन, फिर मक्खन से घी बनाकर दिखा दें, फिर वह कहेगा कि हाँ, दूध में घी मौजूद है। बेशक वह ज़र्रे-ज़र्रे में मौजूद है, लेकिन वह हमें इस दुःखी हालत से नहीं बचा सकता, हिफ़ाज़त नहीं कर सकता। लैम्प की रोशनी में चोर चोरी करता है, भक्त भजन करता है, लैम्प चोर को बुरा नहीं कहता, भक्त को शाबासी नहीं देता। उसे रोशनी देनी है, वह दे रहा है। इसी तरह ख़ुदा हर जगह मौजूद है, मगर फ़ायदा आपको तभी होगा, जब आप परदा खोलकर अन्दर जाओगे। फिर वह आपकी सारी बात सुनेगा, प्रेम, प्यार व शान्ति देगा, जन्म-मरण ख़त्म करेगा, शब्द के साथ मिला देगा। वह आकाशवाणी है, जिसे नाम कहते हैं। वह सारे संसार के लिए है, किसी ख़ास क़ौम,

मज़हब की जायदाद नहीं। वह सबके अन्दर है, उसके साथ रूह को जोड़ना है।

सची बाणी गुरमुखि आखै हउमै विचहु जाए॥

गुरुमुख कहते हैं, तेरे अन्दर गुरुबाणी है। कौन-सी बाणी? गुरु अमर दास जी फ़रमाते हैं:

बाणी वजी चहु जुगी सचो सचु सुणाइ॥[9]

यह बाणी तो अब बनी है, पर जिस बाणी की तरफ़ ग्रन्थ साहिब इशारा करता है, वह युगों-युगों से चली आ रही है। जब हमें कोई महात्मा मिलता है तो वह कहता है, अपनी आत्मा को बाणी के साथ जोड़ दे। उसमें कशिश है। वह बाणी कब मिलती है? जब यह सुषुम्ना में जाता है। मुसलमान महात्मा भी यही कहते हैं कि जब तक यह शाहरग में नहीं जाता, नाम नहीं मिलता। लोग गले की घुण्डी (नाड़ी) को शाहरग कहते हैं, पर यह शाहरग नहीं। शाहरग तो बाल के दसवें हिस्से से भी बारीक है। कबीर साहिब कहते हैं:

कबीर मुकति दुआरा संकुरा राई दसएं भाइ॥
मनु तउ मैगलु होइ रहिओ निकसो किउ कै जाइ॥[10]

यही रुकनुद्दीन ने गुरु नानक साहिब से सवाल किया था:

॥ स्वाल काजी रुकनदीन सूरा॥
रुकनल आखे नानका दरगह दी खबर सुणाइ।
केहा रंग महल दा जिथे रहे खुदाइ।
केहे बुरज महल दे छजे ते चौकाठ।
कहीआं डिठियां बैठकां किस नाल कीत रास।
केहा गारा चूनड़ा कौन बनावन हार।

सूरत कौन महल दी क्या फेर होइ दीदार।
दर ते लिखिआ के कुझ एह भी देह बताइ।
केहड़ा यार खुदाइ दा जिसनो ठाक न पाइ।
पहुंचे केहड़ी बंदगी करके कौण नमाज़।
सचो सच बताइ तूं सचा केहड़ा साज।
केहड़ी सुन्नंत पाईऐ जाइ दीदार खुदाई।
कौन रसूल पहुंचांवदा दरगाह सकी जाइ।
सभ निशानियां देह खान अव्वल फकीर।
पीरां अंदर पीर तूं मीरां अंदर मीर।

॥ जवाब श्री गुरु नानक देव जी ॥
नानक आखे रुकनदीन दरगाह दी सुध लेइ।
रंग अजाइब महल दा हीरे लाल जड़ेइ।
मोती त याकूतीआं मणी जमुरदां नाल।
लख आफ़ताब महताब लख रोशन बलन मशाल।
रंग महल है कुदरती जिस तखत सुबहान।
बैठा सचा पातशाह सुलताना सुलतान।
बारां बुरज महल दे नौं दरवाजे नाल।
पज खवास हैं पाहरू चौकी देन संभाल।
बुरज सवारे जरी के मीना कारी रास।
बने चौकाठां छजरे चौकी देन संभाल।
बुरज सवारे जरी के मीना कारी रास।
बने चौकाठां छजरे बाधन चंदन काठ।
पत्थर पारस लाईऐ पारस जात संग बार।
कामधेन लख लछमीयां होई गोली करन अरदास।
लेपन मेद कसतूरीआं चोए बहु प्रकार।

रंग अजाइब बैठकां गोर मुशक अपार।
नौ दरवाजे कोट दे दसवां नूर महल।
हौज हयाती पर भरे तिस कौल अचल।
गिरद महल दे कोट है बावन किंगरे तिस।
किंगरे किंगरे तोपची फड़न न देंदे किस।
सत समुन्द्र खाईयां नदीयां अंत न पार।
कई रखवाले सूरमे पिआदे ते अवतार।
ईक महल दुई बारीयां शिव शक्ति सलतान।
खिरकी खोल दीदार देन बहुत वधाइन मान।
गैबी वज्जन नौबतां संख नगारे भेर।
शहनाईयां ते मुरलियां नाल अलांदे फेर।
बांगां बुरगू सिंडीआं सारंगीयां रबाब।
वज्जन छैणे कैंसीआं तेरे रागां साज।
गावहि छतीस रागनी संग षष्ट अलापै।
संग अलापहि नायका वारो वारी जाग।
पहिले भैरो गावै पंच रागनी संग।
भैरव ते विलावली नाल बंगाली चंग।
पुन्या की असलेखी शाह पांचो नार संग विचार।
माल कौंस फुनि गावहे पंज संग ले वार।
गौड करी अलापहे देवगंधारी नाल।
सोरठ गंधारी कद्दे धनासरी संग भाल।
गाव फुन हिंडोल राग पांच रागनी साथ।
तलंगी देवकरी कहु बसंता सिंधूर।
सहस अहोरी भारजा गावहि राग चंडूर।
गावहि दीपक राग पुन पांच रागनी साथ।
काछेली पट मंजरी टोडी गाव अलाप।
कामोदी अर गूजरी संग दीपक के लाइ।

गावन उची सुर लिये बैठा सुने खुदाइ।
पंचम गावहि सिरी राग पंच रागनी कोल।
वैरारी करनाटकी गौड़ी सुनाई बोल।
पंचम गावै सिंधवी सिरी राग की नार।
वारी आपो आपनी सभो राग उचार।
मेघ राग संग पंच है गावै गुन वीचार।
तीस रागनी गाव है खट ही राग।
जो जागे सोई सणे जागत तिसके भाग।
रागां विच कई राग है काढ़े सुघड़ वसाई।
तीस रागणी षट राग सद सरब दा आइ।
गावहि ताल मिलाइ के समें समें कर राग।
साज खाज सभ संग वजहि होवै नाद अनाद।
ऊपर खास महल पर देवै बांग खुदाए।
सुते बांग न सुन सकन रिहा खुदाइ जगाइ।
सुती पई निभाग बस सुने न बांगां कोइ।
जो जागे सेइ सुने साईं संदी सोइ।[11]

वह बाणी वहाँ से आ रही है। दुनिया के खोटे भाग्य हैं जो अन्दर जाकर उसे नहीं सुनती। जो कोई सुनता है, उसकी मुक्ति हो जाती है। फिर कहते हैं:

राह खुदाई भीहावना वालहु दसवें भाई।
हाथी जाइ न सकनी हौमे रख अड़ाई।[12]

राह बाल से भी बारीक है, मन हाथी है, अड़कर बैठा हुआ है। आप सोचो! कौन-सी क़ौम है, कौन-सा मज़हब है जो परमात्मा की तलाश नहीं करता। लोगों ने कोई कसर छोड़ी है? कहाँ अमरनाथ, कहाँ द्वारका, कहाँ काबा, अगर किताबों को पढ़ें तो वे कहती हैं कि तेरे अन्दर है। जब कहो कि लाओ तो कुछ भी जवाब नहीं मिलता। वह मालिक इसके अन्दर

है। जब तक यह अन्दर नहीं जाता, ख़ाक भी नहीं मिलती। जब गुरु मिले, यह उस बाणी के साथ लिव लगाये, जिसमें शान्ति है, तब लज़्ज़त आती है।

आपे दाता करमु है साचा साचा सबदु सुणाए॥

जब अकालपुरुष अति प्रसन्न होता है, तब इसे गुरु मिलता है। गुरु राम दास जी कहते हैं:

बिनु भागा सतिगुरु ना मिलै घरि बैठिआ निकटि नित पासि॥[13]

अगर गुरु पड़ोस में भी रहता है तो उस पर यक़ीन नहीं आता, ऐतबार नहीं आता। जब परमात्मा बख़्शना चाहता है, तभी कोई महात्मा मिलता है और तभी इसकी आत्मा शब्द के साथ जुड़ती है।

गुरमुखि घाले गुरमुखि खटे गुरमुखि नामु जपाए॥

अगर मनुष्य-जन्म से कोई फ़ायदा उठा गये, वे गुरुमुख हैं। गुरुमुख, नाम की कमाई करके मालिक के साथ मिल गये। वे आप तर गये, अपने पितरों को तार गये, अपनी संगत को तार गये। गुरु अर्जुन देव जी कहते हैं:

गुरमुखि कोटि उधारदा भाई दे नावै एक कणी॥[14]

अपने कमाये हुए नाम का एक कण देकर गुरुमुख करोड़ों जीवों को सचखण्ड ले जाने की ताकत रखता है।

सदा अलिपतु साचै रंगि राता गुर कै सहजि सुभाए॥

अगर इनसान अपने अन्दर जाकर परदा खोल ले तो नाम की लज़्ज़त ले सकता है। इसके लिए न तो क़ौम छोड़नी पड़ती है, न मज़हब और न ही काम छोड़ने पड़ते हैं। दुनिया का काम करते हुए उस दौलत को परदा

खोलकर हासिल करना है। वह आपकी अपनी चीज़ है। अगर आपने फ़ायदा नहीं उठाया तो यह आपकी अपनी ग़फ़लत है। पैसा ख़र्च नहीं होगा, बाहर से ढूँढ़ना नहीं पड़ता, है आपके अन्दर। जब लज़्ज़त पा लेगा तो रहेगा दुनियादार ही, मगर दुनिया के साथ उसका प्यार नहीं रहेगा। दुनिया आपकी सेवा के लिए है, इससे काम लो। अब दुनिया के साथ प्यार नहीं करता, उसका प्यार मालिक के साथ है।

मनमुखु सद ही कूड़ो बोलै बिखु बीजै बिखु खाए॥

जो आदमी मन और इन्द्रियों के ताबे हैं, वे भोगों के कीड़े हैं। वे भोगों को छोड़ते नहीं, अन्दर जाते नहीं। वे दुनिया के मुरीद (शिष्य) हैं। उनके ख़याल से दुनिया भोगने के लिए है, मगर दुनिया ने उन्हें भोग लिया, अल्लाह-अल्लाह, ख़ैर सल्ला। अफ़सोस! वे दुनिया को खाने चले पर दुनिया ने उन्हें खा लिया। लोग अमृत की तलाश दुनिया के भोगों में करते हैं। अमृत हरएक इनसान के अन्दर है। मुसलमान उसे आबे-हयात कहते हैं जिसे पीकर यह अमर हो जायेगा।

जमकालि बाधा त्रिसना दाधा बिनु गुर कवणु छडाए॥

जब मौत का वक़्त आया-जो चोरियाँ, ठगियाँ, बेशुमार पाप किये थे, उन सब बुरे कर्मों का निचोड़ निकलकर बुद्धि बनी, बुद्धि के अनुसार प्रारब्ध बनकर अगला जन्म हुआ। मौत आयी, यमदूत पकड़कर ले गये। रिश्तेदार पास बैठे रह गये, उन्हें इतना भी पता नहीं लगा कि कौन रूह को पकड़कर ले गया और किस राह ले गया? यह शरीर इसके साथ नहीं जाता। अब विचार करनेवाली बात है कि जब शरीर, जिसके लिए हम इतने झगड़े करते हैं, साथ नहीं जाता तो फिर इतने झगड़े क्यों? इसके साथ जानेवाली चीज़ सिर्फ़ 'पूर्ण सतगुरु' और 'नाम' है। इसके सच्चे रिश्तेदार सतगुरु और नाम हैं।

अभ्यासी की मौत के वक़्त यमदूत नहीं आते। अगर यमदूतों के साथ ही जाना है तो नाम को दूर से ही सलाम! अगर सतगुरु शिष्य की मौत के वक़्त सँभाल नहीं करेगा तो ऐसे मुर्शिद की ज़रूरत नहीं। दुनिया में ऐसा कोई नहीं जो मौत के वक़्त काम आये। अगर कोई है तो नाम और मुर्शिद। नाम अन्दर है और उसका भेद कामिल मुर्शिद से मिलता है।

सचा तीरथु जितु सत सरि नावणु गुरमुखि आपि बुझाए॥

बाहर के तीर्थों में नहाने से शरीर की मैल उतरती है, पापों की मैल नहीं उतरती। कहते हैं, जिस तीर्थ पर नहाने से मुक्ति होती है, वह इसके अन्दर है। उसे मानसरोवर कहते हैं, सच्चा तीर्थ कहते हैं। जब तक उसमें जाकर स्नान नहीं करता, कर्म नाश नहीं होते। जो असली राज़ है, वह आदमी के अन्दर है। जिस तीर्थ में नहाने से जन्मों-जन्मों के पाप उतर जाते हैं, वह इनसान के अन्दर है, मगर आँखों के पीछे परदा लगाकर इसे बाहर निकाला हुआ है। यह सारी उम्र बाहर ही बाहर रहा। जब तक कोई रूहानी मण्डलों पर जानेवाला पूर्ण महात्मा, कामिल मुर्शिद इसे रास्ता नहीं बताता, यह मेहनत करके नौ दरवाज़े ख़ाली करके सूरज-मण्डल, तारा-मण्डल और चन्द्रमा-मण्डल पार करके ऊपर नहीं चला जाता, मुक्ति नहीं होती।

यही मौलाना रूम साहिब कहते हैं:

> पाए-हिम्मत बर ख़ुरो-बर माह निह,
> सर बराँ ऐवानो-आं दरगाह निह।[15]

कि तू हिम्मत कर और सूरज, चन्द्रमा और तारा-मण्डल पर पैर रखकर आगे बढ़। जब तू आगे जायेगा तो वहाँ सतगुरु खड़ा है। यही गुरु नानक साहिब कहते हैं:

> पूरब होइ पच्छम को धावे। रवि ससि दोहाँ इकतर मिलावे॥

कि पूरब से होकर पश्चिम को जाना है और सूरज-चन्द्रमा को लाँघना है। आगे कहते हैं:

पच्छम से जो चढ़े सुमेर। आवे परदक्खण के फेर॥
पुरीआँ सात ऊपर कँवल आसन। तिथे पारब्रह्म का आसन॥
जिन हीरे रतने लाल परोई। नानक कहे उदासी सोई॥[16]

सो, जब चढ़ना है, अन्दर चढ़ना है और यह रास्ता मालिक के हाथ में है, हमारे हाथ में नहीं। जब तक हम किसी महात्मा से रास्ता लेकर अन्दर नहीं चढ़ते, तब तक वह नहीं मिलता।

अठसठि तीरथ गुर सबदि दिखाए तितु नातै मलु जाए॥

सारे हिन्दुस्तान में, सारे ऋषियों-मुनियों ने अड़सठ तीर्थ बताये हैं। कहते हैं कि अगर यह अपनी रूह को नाम के साथ जोड़ दे तो इसे किसी तीर्थ की ज़रूरत नहीं। बाहर के तीर्थों पर शरीर की मैल उतरती है, मन की मैल नहीं उतरती। मन की मैल तो तभी उतरती है, जब यह अन्दर जाकर उस सच्चे तीर्थ में, सच्चे अमृतसर में जाकर स्नान करे।

सचा सबदु सचा है निरमलु ना मलु लगै न लाए॥

वह सच्चा तीर्थ नाम है, इस्मे-आज़म है, कलामे-इलाही है और इसके अन्दर है। उसके साथ रूह को स्पर्श करने से रूह को लज़्ज़त आती है और तसल्ली हो जाती है। मौलाना रूम साहिब कहते हैं:

हमनशीनी साअते बा औलिया,
बिहतर अज़ सद साला ताअत बे रिया।[17]

औलिया-अल्लाह की एक घड़ी की सोहबत, प्रेम से की गयी सौ वर्षों की मनमर्ज़ी की बन्दगी से बेहतर है, क्योंकि रास्ता है पूरब की तरफ़, आप दौड़ते हो पश्चिम की तरफ़ या किसी और दिशा में,

जितना दौड़े उतने ही दूर हो गये। अगर सीधा रास्ता मिल गया फिर चाहे क़दम-क़दम भी चलो, एक दिन मंज़िल पर पहुँच जाओगे। जो महात्मा अन्दर जाते हैं, उनकी सोहबत करो, ताकि आपको समझ आ जाये।

सची सिफति सची सालाह पूरे गुर ते पाए॥

जिस तरह विद्या की ताकत हम सबके दिमाग़ के अन्दर है, मगर जब तक हम स्कूल नहीं जाते, हम विद्वान नहीं बन सकते। इसी तरह चाहे रूहानियत सबके अन्दर है, मगर जब तक हम किसी गुरु के पास न जायें, उससे नाम लेकर उसकी कमाई न करें, परदा नहीं खुलता, मुक्ति नहीं होती। गुरु अमर दास जी कहते हैं:

नउ दर ठाके धावतु रहाए॥ दसवै निज घरि वासा पाए॥
ओथै अनहद सबद वजहि दिनु राती गुरमती सबदु सुणावणिआ॥[18]

जब तक कोई रूहानी मण्डलों पर जानेवाला पूर्ण गुरु नहीं मिलता और यह मेहनत करके अपना परदा नहीं खोलता, मनुष्य-देह का फ़ायदा नहीं उठा सकता, चाहे यह दौलत सबके अन्दर है।

तनु मनु सभु किछु हरि तिसु केरा दुरमति कहणु न जाए॥

जो अन्दर जाकर, परदा खोलकर रूहानी मंज़िलों पर चढ़ गया, वह क्या कहता है? कि ऐ मालिक! मेरा तन, मन, धन, परिवार, सब तेरा है। जो मनमुख है, 'मेरा, मेरा' करता है। जो दावा करता है उसके लिये सज़ा जज़ा (कर्मों का फल) है। जो दावा ही नहीं करता, उसे ख़ौफ़ किस बात का? महात्मा दावा नहीं करते। जो अन्दर नहीं गये, रूहानी दौलत से फ़ायदा हासिल नहीं कर सकते।

हज़रत मुहम्मद साहिब अपने साथियों और इमामों को मस्जिद में ले गये और उन्हें धूप में खड़ा करके पूछा कि तुम्हारा क्या-क्या है? हज़रत उमर ने कहा, "मेरी औरत है, लड़के-लड़कियाँ हैं, ऊँट वग़ैरह

हैं।'' उसको कहते-कहते आधा घण्टा लग गया। इसी तरह दूसरों ने भी बताया। जब हज़रत अली की बारी आयी तो वे अपनी जगह से उठे और बोले, ''एक परमात्मा और एक तू!'' हज़रत मुहम्मद साहिब का मतलब तो उन्हें समझाने का था, सो, इसी तरह समझा दिया। जो दुनिया के ताल्लुक़ात में ज़्यादा डूबा हुआ है, वह दुनिया में बार-बार जन्म लेता है। जो परमात्मा से प्यार करता है, वह क्यों दुनिया में भटकेगा? यह दो लफ़्ज़ों की बात है। दादू साहिब कहते हैं:

दादू दावा दूर कर, निरदावे दिन काट।
केते सौदा करि गये, पंसारी के हाट॥[19]

कि बे-दावा हो जा। अगर यह बे-दावा हो जाये यानी किसी चीज़ पर अपना हक़ न समझे, फिर इसे पकड़ भी कोई नहीं सकता।

हुकमु होवै ता निरमलु होवै हउमै विचहु जाए॥

इसके अन्दर हुकम या शब्द है, अमर है, ताकत है जो कुल दुनिया को पैदा करती है। उसके साथ प्यार करने से मन और इन्द्रियाँ क़ाबू में आ जाती हैं, काम-क्रोध मर जाते हैं और आत्मा पिण्ड को छोड़कर ब्रह्माण्ड पर चढ़ जाती है। आप जपुजी में रोज़ पढ़ते हो:

हुकमी होवनि आकार हुकमु न कहिआ जाई॥
हुकमी होवनि जीअ हुकमि मिलै वडिआई॥[20]

वह हुकम क्या है जो खण्डों-ब्रह्माण्डों को पैदा करता है? हज़रत बू अली शाह क़लंदर कहते हैं:

हैफ़ दर बंदे-जिस्मे-दरमानी, नशनवी सौते-पाके-रहमानी।[21]

अफ़सोस है कि तू पाक बाँग को नहीं सुनता। फिर कहते हैं कि वह ताकत बात करती है, मगर अफ़सोस! तू उस पर तवज्जुह नहीं

करता। सभी महात्मा होका देते हुए चले गये, पर हमारे कानों पर जूँ भी नहीं रेंगती।

गुर की साखी सहजे चाखी त्रिसना अगनि बुझाए॥

कहते हैं कि अगर तुम गुरु की दी हुई दवाई खाओगे यानी इस शब्द की लज़्ज़त लोगे, तुम्हारी सारी बीमारियाँ दूर हो जायेंगी। काम-क्रोध और कई अग्नियाँ बुझ जायेंगी, शान्ति आ जायेगी। फिर तुम वहाँ चले जाओगे जहाँ से कभी आना ही नहीं।

गुर कै सबदि राता सहजे माता सहजे रहिआ समाए॥

जब गुरु ने शब्द दिया, यह शब्द की कमाई करके शब्द में रँगा गया, आत्मा अन्दर शब्द के साथ जुड़कर सहज-समाधि में चली गयी।

हरि का नामु सति करि जाणै गुर कै भाइ पिआरे॥

अगर इसको कोई पूर्ण गुरु मिल जाये और रूहानी मण्डलों का पता दे दे, यह कमाई करके परदा खोल ले तो फिर कौन जन्म ले और कौन मरे, कौन आये और कौन जाये! यह दौलत जीते-जी हासिल करनी है, मौत के बाद क्या यक़ीन है? इसलिए सन्त कहते हैं कि जीते-जी मरो। जब पूर्ण गुरु के साथ प्यार हो जायेगा और मेहनत करोगे तो अन्दर परदा खुल जायेगा।

सची वडिआई गुर ते पाई सचै नाइ पिआरे॥

सच्ची बड़ाई क्या है? आत्मा का परमात्मा से मिलाप। कहाँ से मिलती है? गुरु से। अब पूर्ण गुरु या कामिल मुर्शिद शिष्य से कौड़ी भी नहीं लेता। वह शीशे की मिसाल होता है। शीशे को हमारे देखने का न दुःख है, न सुख। जब हम शीशे की तरफ़ देखते हैं तो हमारे हृदय की किरणें

उससे टकराकर हमारा मुँह दिखलाती हैं। अगर हँसते हुए देखें तो हँसता नज़र आता है, अगर रोते हुए देखें तो रोता हुआ नज़र आता है। अगर शान्त होकर देखते हैं तो शान्त नज़र आता है। इसी तरह जब हम गुरु को प्यार के साथ देखेंगे तो प्यार आयेगा और अगर मैली नज़र से देखेंगे तो मैले ख़याल आयेंगे। जिसने मैली नज़र से देखा, उसे क्या मिलेगा!

एको सचा सभ महि वरतै विरला को वीचारे॥

कहते हैं, कुल आलम में वह वाहिद-हू ला-शरीक रब है, मगर दुनिया आँखों से बाहर ही बाहर रही, अन्दर नहीं गयी। जो दौलत ख़ुदा ने अन्दर रखी है, उसे हाथ भी न लगाया। जिस तरह किसी के घर में करोड़ रुपया दबा हुआ है, उसने न उसे निकाला, न फ़ायदा उठाया। इसी तरह कुल लौलाक, खण्ड-ब्रह्माण्ड इसके अन्दर हैं, मगर शैतान (मन) इसे अन्दर जाने नहीं देता। यह कहता है, 'एह जग मिट्ठा, अगला किन डिट्ठा' यानी 'खाओ, पियो और मौज करो'।

आपे मेलि लए ता बखसे सची भगति सवारे॥

जब परमात्मा की अति दया, अति मेहरबानी हो तो इसको पूर्ण सन्त की संगति मिलती है और यह परदा खोलकर अन्दर रूहानी मण्डलों पर चढ़ता है।

सभो सचु सचु सचु वरतै गुरमुखि कोई जाणै॥

हरएक इनसान के अन्दर वह सच है, लेकिन आँखों के पीछे परदा लगाकर सबको बाहर निकाला हुआ है। यह सच के अन्दर होते हुए भी करोड़ों गुनाह करता है और आख़िर नरकों में चला जाता है। हीरा पहाड़ में है, उसकी क़ीमत कौड़ी नहीं, मगर जब जौहरियों की दुकान पर गया तो सही क़ीमत लग गयी। जिस तरह विद्या की ताकत सबके अन्दर है, मगर जो

स्कूल-कॉलेज नहीं गये, वे ला-इल्म (अनपढ़) चले गये। इसी तरह नाम सभी के अन्दर है, जब अन्दर गये तो उसकी लज़्ज़त का पता लगा। इसके विपरीत, जो अन्दर नहीं गये, उन्हें क्या पता कि नाम क्या दौलत है!

जंमण मरणा हुकमो वरतै गुरमुखि आपु पछाणै॥
नामु धिआए ता सतिगुरु भाए जो इछै सो फलु पाए॥

अगर इसका कामिल मुर्शिद, पूरे सतगुरु के साथ प्यार है और अन्दर परदा खोलकर नाम की कमाई करता है तो जिस तरह माता अपने पुत्र की सँभाल करती है, इसी तरह वह परमात्मा इसे सबकुछ देता है और इसकी रक्षा करता है।

नानक तिस दा सभु किछु होवै जि विचहु आपु गवाए॥

अब सबकुछ कहकर गुरु अमर दास जी फ़रमाते हैं कि अगर यह अपने अन्दर से हौंमैं यानी अहंकार को निकाल दे तो इसका परमात्मा से मिलाप हो जाये, यह अपने घर चला जाये।

वाणी स्वामी जी महाराज

उपदेश गुरू और शब्द अथवा नाम-भक्ति का

गुरु कहें जगत सब अंधा। कोइ गहै न घट की संधा॥ 1॥
बाहरमुख भरमें सारे। अंतरमुख शब्द न धारे॥ 2॥
मन जगत भोग रस बंधा। नित करे कर्म बस धंधा॥ 3॥
फँस मरे काल के फंदा। अब हुआ जीव अति गंदा॥ 4॥
गुरु कहैं नित्त समझाई। कर खोज शब्द घट जाई॥ 5॥
यह सुने न गुरु के बैना। कस खुलैं हिये के नैना॥ 6॥
बिरला कोइ जिव अधिकारी। गुरु बचन करे आधारी॥ 7॥
जो बचन सम्हारे गुरु के। मन फंद लगावे छल के॥ 8॥
ज्यों त्यों कर जीव भुलावे। काल अपने खेल खिलावे॥ 9॥
गुरु भक्ति न करने पावे। बहु भाँति उपाधि लगावे॥ 10॥
कभी मित्र होय भरमावे। कभी बैरी बन धमकावे॥ 11॥
कभी रोगन माहिं झुमावे। नाना बिधि जाल बिछावे॥ 12॥
शब्दारस लेन न पावे। यों जीव सदा दुख पावे॥ 13॥
गुरु मेहर करें जिस जन पर। सो बचे शब्द धुन सुन कर॥ 14॥
तब गहे शब्द रस जाँची। फिर जले न जग की आँची॥ 15॥
सब बात लगी अब काँची। गुरु भक्ति मिली अब साँची॥ 16॥
राधास्वामी की लीन्ही सरनी। सो जीव लगे भौ तरनी॥ 17॥[1]

सत्संग के बचन

मैं अर्ज़ करता हूँ कि हम सत्संग में क्यों आते हैं और इसका मक़सद क्या है? हम रोज़-रोज़ गुरुबाणी को सुनकर मालिक के साथ अपना प्रेम-प्यार बढ़ायें और हमारे में जो-जो दोष हैं, उन्हें छोड़ दें। मन 'मजिस्ट्रेट' है, वह बता देता है कि तुझमें ये दोष हैं। मैं देखता हूँ कि सत्संगियों में कमाई वाली स्त्रियाँ ज़्यादा हैं, मर्द थोड़े हैं। इसका कारण क्या है? इस कहानी से पता लगेगा, सुनो।

एक महाजन सत्संग सुनने जाया करता था। एक दिन उसके पुत्र ने कहा कि आप रोज़ सत्संग में जाते हो, आज मैं जाऊँगा। पिता ने कहा कि अच्छा, जा। ख़ैर! पुत्र सत्संग में गया। बड़े प्रेम के साथ वचन सुनता रहा। वहाँ यह मज़मून (विषय) आया कि किसी का नुक़सान नहीं करना चाहिए, किसी का दिल नहीं दुखाना चाहिए। जब सत्संग से आकर वह दुकान पर बैठा तो इत्तफ़ाक़ से एक गाय आकर आटा खाने लग गयी, जैसे कि गायें बाज़ारों में फिरती रहती हैं। मन में कहता है कि कितना आटा खा जायेगी, दो सेर न सही चार सेर खा जायेगी। पिता देख रहा था। पुत्र को कहता है, "ओ आँखों के अन्धे! तुझे दिखता नहीं कि गाय आटा खा रही है।" पुत्र ने कहा, "हमारे इतने मकान हैं, इतना किराया आता है, इतना ब्याज आता है, अगर यह दो-चार सेर आटा खा जायेगी तो क्या हो जायेगा?" पिता ने पूछा, "यह विचार तू कहाँ से लाया है?" पुत्र ने कहा, "सत्संग से।" पिता बोला, "फिर न जाना। मुझे तीस साल हो गये जाते हुए। मैं वहीं धोती झाड़कर आ जाता हूँ।" सो, हमारा भी धोती झाड़नेवाला हिसाब है—गये, सत्संग सुना, घर लौट आये यानी हम कमाई पर ज़ोर नहीं देते। चाहे दुनिया में कुछ भी हो जाये लेकिन नित-नेम यानी सुरत-शब्द की कमाई का अभ्यास ज़रूर करना चाहिए।

जितने महात्मा सचखण्ड से आये, हम पर रहम करते हुए कहते हैं कि तुम चौरासी लाख योनियों के जेलख़ाने में फँसे हुए हो। चलो, तुम्हें

सचखण्ड ले चलें। वे निकालने के लिए आते हैं, मगर हम सुनते नहीं। गुरु नानक साहिब कहते हैं कि इबादत न छोड़ो, शम्स तब्रेज़ कहते हैं कि इबादत न छोड़ो, मौलाना रूम साहिब कहते हैं कि इबादत न छोड़ो, मगर हमारे कानों पर जूँ भी नहीं रेंगती। सो, हमें चाहिए कि दुनिया के काम रह जायें तो रह जायें, मगर गुरु की भक्ति न रह जाये।

गुरु कहें जगत सब अंधा। कोइ गहै न घट की संधा॥

सभी वेद-शास्त्र और अन्य धर्म-पुस्तकें कहती हैं कि सन्त-महात्मा इस दुनिया के लोगों को हिदायत देने के लिए परमात्मा के भेजे हुए आते हैं। गुरु अर्जुन साहिब ने कहा है:

जनम मरण दुहहू महि नाही जन परउपकारी आए॥
जीअ दानु दे भगती लाइनि हरि सिउ लैनि मिलाए॥[2]

वे सन्त हमारी तरह माया के क़ैदी नहीं होते और न जन्म-मरण के चक्र में आते हैं, बल्कि वे हमें चौरासी के जेलख़ाने से निकालने के लिए आते हैं। जिस वक़्त वे आकर दुनिया को देखते हैं तो कहते हैं कि अफ़सोस! सारा जहान अन्धा है। आप कहेंगे कि यहाँ सूरज है, चन्द्रमा है, सितारे हैं, रोशनी के और कई साधन हैं, जिनकी मदद से हम सबकुछ देखते हैं, फिर अन्धे क्यों? इसका जवाब यह है कि ये जो हमारी आँखें हैं, ये फ़ना को देखती हैं। दूसरे, जिस जगह सूरज, चन्द्रमा, सितारे, बिजली और लैम्प, ये पाँच चीज़ें न हों, वहाँ ये आँखें काम नहीं कर सकतीं। जो आँख परमात्मा को देखनेवाली है, वह अन्दर है। असल में आदमी को आँखों के पीछे परदा लगाकर बाहर निकाला हुआ है। उसने न परदा खोला, न वह आँख हासिल की, न परमात्मा से मिला और न चौरासी के चक्र से निकला। इसलिए स्वामी जी महाराज कहते हैं कि सारा जहान अन्धा है। यह अन्धा क्यों है? इसलिए कि अन्दर नहीं चढ़ता। अगर अन्दर चढ़े तो सुजाखा हो जाये और जो सामान मालिक

ने इसके अन्दर रखा हुआ है उससे वाक़िफ़ हो जाये। गुरु अमर दास जी कहते हैं:

इसु काइआ अंदरि नउ खंड प्रिथमी हाट पटण बाजारा॥
. . . .
काइआ अंदरि ब्रहमा बिसनु महेसा सभ ओपति जितु संसारा॥[3]

फिर कहा है:

अंदरि महल अनेक हहि जीउ करे वसेरा॥
मन चिंदिआ फलु पाइसी फिरि होइ न फेरा॥[4]

अगर यह परदा खोलकर अन्दर रूहानी मण्डलों पर चला जाये, फिर दुनिया के जन्म-मरण में नहीं आये, चौरासी में धक्के नहीं खाये। अब सारे महात्मा होका देकर गये, लेकिन कोई सुनता है? कोई नहीं। जब-जब महात्मा होका देकर कहते हैं कि तुम सारे अन्धे हो तो जिनके खोटे भाग्य हैं वे कहते हैं कि आप ये लफ़्ज़ बोलते ही क्यों हो? मगर महात्मा कहते हैं कि आप अन्दर नहीं जाते, अन्दर का द्वार नहीं खोलते। सो, तमाम दुनिया अन्धी आयी और अन्धी ही चली गयी।

बाहरमुख भरमें सारे। अंतरमुख शब्द न धारे॥

वह शब्द या आकाशवाणी जिसे 'आदि सचु जुगादि सचु'[5] भी कहते हैं, नाम है। नाम लफ़्ज़ नहीं है। नाम न अरबी है, न तुर्की, न फ़ारसी, न अंग्रेज़ी, न कोई और ज़बान। उसी ताकत को मुसलमान कलमा, कलामे-इलाही या बाँगे-आसमानी कहते हैं। ऋषि-मुनि नाद और गुरु नानक साहिब गुरुबाणी कहते हैं। मुक्ति देनेवाली चीज़ अन्दर है, मगर सारी दुनिया उसे बाहर तलाश करती है।

कोई उजाड़ों-पहाड़ों में ढूँढ़ता है, कोई पत्थरों, पानी और काग़ज़ों में। वह बाहर नहीं, अन्दर है। फिर बाहर किस तरह मिल सकता है? इसी

तरह देवी-देवता भी, जिन्हें दुनिया बाहर ढूँढ़ती है और जिनकी मूर्तियाँ बनाती फिरती है, वे भी अन्दर हैं। लेकिन, क्योंकि वे आँखों यानी आत्मा की बैठक से नीचे बैठे हुए हैं, इसलिए हमें उनकी ज़रूरत नहीं है। फिर भी, जो उनसे मिलना चाहते हैं, वे अन्दर जाकर मिल सकते हैं। अगर पत्थरों यानी मूर्तियों में उन्हें ढूँढ़ो, वे बेजान हैं। बेजान चीज़ जानदार को खींच नहीं सकती। इसलिए इनसे कुछ प्राप्त नहीं होता। सो, सारी दुनिया बाहर ही बाहर तलाश कर रही है। क्या ही अच्छा होता कि अन्दर जाती और उस लज़्ज़त को ले लेती।

अब सवाल पैदा होता है कि अगर हम अन्दर जायें तो अपनी आत्मा को किसके साथ जोड़ें? कहते हैं, 'शब्द' के साथ। क्या गाने-बजाने वाला, लिखने-पढ़ने वाला शब्द? नहीं। वह लिखने, पढ़ने, बोलने में नहीं आता। वह अलिखित क़ानून और अनबोली भाषा है। वह अन्दर है। जो बाहर विषय-विकारों और अन्य पदार्थों में उलझे हुए हैं, वे इसे नहीं समझ सकते। यही गुरु अमर दास जी कहते हैं:

माइआधारी अति अंना बोला॥ सबदु न सुणई बहु रोल घचोला॥[6]

यह बाहर बैठा माया के जाल में फँसा हुआ अन्धा हो रहा है और फिर अन्धा ही नहीं, बहरा भी है। क्यों? क्योंकि अन्दर के कान नहीं खुले। क्या कहते हैं गुरु अर्जुन साहिब:

नैण न देखहि साध सि नैण बिहालिआ॥

जो आँखें अन्दर सतगुरु के स्वरूप को नहीं देखतीं, उन्हें निकाल दो।

करन न सुनही नादु करन मुंदि घालिआ॥

जो कान अन्दर शब्द को नहीं सुनते, उन्हें काट दो।

रसना जपै न नामु तिलु तिलु करि कटीऐ॥[7]

जो ज़बान नाम नहीं जपती, उसे ज़र्रा-ज़र्रा करके काट दो। हम क्यों नाम नहीं जपते? हम पर अपने गुनाहों का नशा चढ़ा हुआ है, हमारे पाप हमें इधर आने ही नहीं देते। बड़े ही ऊँचे भाग्य हों तो आदमी इधर आये।

मन जगत भोग रस बंधा। नित करे कर्म बस धंधा॥

अब बताते हैं कि मालिक से मिलने में रुकावट क्या है? हमारा मन विषय-विकारों में, बेटे-बेटियों की मुहब्बत में, दुनिया के स्वादों में क़ैद है। आत्मा मन के अधीन हो रही है। जिस तरह किसी राजा की लड़की को किसी महाराजा के साथ ब्याह करके महारानी बनना था, मगर उसने गन्दगी साफ़ करनेवाले नौकर को अपना पति बना लिया, अब उसके साथ गन्दगी साफ़ कर रही है। फिर यह भी नहीं कि मन इतने पर ही सब्र करता है, वह बेबस होकर इन्द्रियों के वश में हो रहा है। जो इन्द्रिय चाहती है उसे खींचकर ले जाती है, साथ ही मन खिंचा फिरता है और उसके साथ आत्मा भी खिंची हुई फिरती है।

सारे खण्डों-ब्रह्माण्डों के मालिक सतपुरुष की अंश—'आत्मा', मन के क़ाबू में आ गयी, आगे मन इन्द्रियों के वश में है, जो इन्द्रिय चाहती है खींचकर ले जाती है। कान की इन्द्रिय सुनकर क्या नहीं करती? आँख की इन्द्रिय देखकर क्या-क्या पाप नहीं करवाती? मन जड़ है, इन्द्रियाँ भी जड़ हैं, मगर आत्मा चेतन है। कहते हैं, यह कमीना और कंगाल, वह राजा की लड़की! फिर यह अन्दर क्यों नहीं जाती? मन इसे अन्दर जाने ही नहीं देता। मन, आत्मा का दुश्मन है और उसे दुनिया के भोगों, रसों के वश में किये बैठा है। फिर यह दुश्मन आज का नहीं बल्कि करोड़ों जन्मों से हमारे साथ है।

बहुत समय पहले, काल भगवान् ने एक बार सत्तर चौकड़ी युग और एक बार चौंसठ चौकड़ी युग एक टाँग पर खड़े होकर भक्ति करके मालिक से रूहें ली थीं। उस दिन से रूह मन की क़ैद में है। काल

भगवान् की पूरी कोशिश है कि एक भी रूह सचखण्ड यानी मालिक के देश में न चली जाये। इसलिए रूहें प्राप्त करते ही उन्हें तन-मन के पिंजरे में क़ैद कर दिया। जिस योनि में भी जाओ, तन-मन का पिंजरा साथ है। नरकों में जाओ, तन-मन साथ है, स्वर्गों में जाओ, तन-मन साथ है। कीड़े-पतंगे हैं, तन-मन साथ है। जब तक हम अन्दर पारब्रह्म में नहीं जाते, यह तन-मन का पिंजरा छूटता नहीं। अब हुज़ूर स्वामी जी महाराज कहते हैं कि जब आत्मा, मन के वश में आ गयी तो उसने भोगों और सांसारिक रसों में फँसा दिया। मन खोटी-खोटी लज़्ज़तों के ज़रिये कर्म करता और भोगता है। जिस तरह कि ज़मींदार के घर में जो अन्न के दाने हैं उसे वे ही खाने हैं, जो बोयेगा, वही खायेगा। इसी तरह आदमी जो कर्म करता है, अगले जन्म के लिए वे ही प्रारब्ध बन जाते हैं। उन्हें भोगेगा, फिर कर्म करेगा और वे फिर प्रारब्ध बन जायेंगे। कहते हैं, यह सारी उम्र बाहर ही बाहर रहा, अन्दर नहीं गया। हमने ख़ुद ही कर्म किये और ख़ुद ही उन कर्मों का जाल तानकर फँस गये। हमें यह भी पता नहीं कि वह कौन-सा जाल है। सन्त बताते हैं कि आप बेटे-बेटियों, क़ौमों-मज़हबों, विषय-विकारों और अन्य सांसारिक व्यवहारों के जाल में फँसे हुए हो। ज्यों-ज्यों हम इस जाल में अधिक फँसते गये, हमारी बुद्धि जवाब देती गयी। यहाँ तक कि अगर कोई महात्मा हम पर तरस खाकर, इस महाजाल को तोड़कर हमें आज़ाद करना चाहता है तो हम उसके ख़िलाफ़ हो जाते हैं।

तुम देखो, गुरु नानक साहिब के साथ कैसा सलूक किया? जिधर जाते थे, दुनिया उन्हें कुमार्गी कहती थी। एक गाँव में तो लोगों ने उन्हें एक रात भी रहने नहीं दिया। आख़िर गाँव के बाहर एक कोढ़ी की कुटिया में रहे। कबीर साहिब के साथ जो कुछ हुआ वह आप जानते ही हो। हज़रत मुहम्मद साहिब के दाँत तोड़ दिये, फिर एक बार उन्हें तीन दिन तक ग़ार (गुफा) में भूखे-प्यासे रहना पड़ा। शम्स तब्रेज़ की खाल खींच ली, मंसूर को सूली पर चढ़ा दिया। ऐसा ही व्यवहार कई फ़क़ीरों के साथ किया।

वे महात्मा हमें हिदायत देने के लिए आते हैं, मगर हम मैले हृदय वाले उनकी हिदायत की परवाह नहीं करते। यही कबीर साहिब कहते हैं:

कबीर पापी भगति न भावई हरि पूजा न सुहाइ॥

पापी पुरुषों को हरि की पूजा अच्छी ही नहीं लगती। आगे कहते हैं:

माखी चंदनु परहरै जह बिगंध तह जाइ॥[8]

जिस तरह मक्खी कस्तूरी, चन्दन वग़ैरह ख़ुशबूदार चीज़ों पर नहीं बैठती, गन्दगी पर सारा दिन भिन-भिन करती रहती है, इसी तरह हमने विषय-विकारों में फँसकर उम्र बरबाद कर दी। वे हमें निकालने के लिए आते हैं, हम उनके साथ दुश्मनी करते हैं। फिर वे क्या करें?

फँस मरे काल के फंदा। अब हुआ जीव अति गंदा॥

जो दुनिया का परमेश्वर है, वह काल है। जिसको दुनिया पूजती है, वह इनको खाता है। इस परदे को सन्तों ने आकर उठाया है। सारा संसार काल के जाल में है। सन्त, जीवों को काल के जाल में से निकालने यानी बचाने के लिए आते हैं। आप देख लो, आजकल ज़माने की हवा कैसी बिगड़ी हुई है। एक ही देश के रहनेवाले, एक ही परमात्मा के पुत्र, पर आपस में करोड़ों बेईमानियाँ, बुराइयाँ कर रहे हैं। यह किसकी बेईमानी है? मन की। अगर परमात्मा को अन्दर देखें तो क्या लोग ख़ून करें? इसलाम कहता है कि दाइमुल-ख़म्र*, कातेउल-शजर† और ज़ाबिह-उल-बकर‡, ये तीनों बख़्शे नहीं जाते। एक राह चलते आदमी के पेट में छुरा भोंकना! यह सब काल का जाल है। ये क़ौमें क्यों लड़ती हैं? ये मुल्क क्यों लड़ते हैं? इनके खोटे कर्म, काल इन्हें बरबाद कर रहा है। न मुल्क उनका है, न

---

* सदा शराब के नशे में रहनेवाला।

† वृक्ष काटनेवाला।

‡ पशुओं को मारनेवाला।

इनका है। न उन्हें रहना है, न इन्हें रहना है। जिस तरह मीठे पर मक्खियाँ आपस में लड़ती हैं, इसी तरह ये आपस में लड़ते हैं।

गुरु कहैं नित्त समझाई। कर खोज शब्द घट जाई॥

अब सारे सन्त-महात्मा, कामिल फ़क़ीर, चाहे वे हिन्दू हैं, चाहे मुसलमान, जो सचखण्ड पहुँच गये, इसको आकर समझाते हैं कि प्यारे, यह देश तेरा देश नहीं, यह क़ौम तेरी क़ौम नहीं, यह मज़हब तेरा मज़हब नहीं। तेरा देश सचखण्ड, तेरी क़ौम सतनाम और तेरा मज़हब तजल्लियाते-हक़्क़ यानी परमात्मा का नूर है। अगर तुझे उस देश में जाना है तो राह तेरे अन्दर है, क्या कर? किसी महात्मा से नाम लेकर उसकी कमाई करता हुआ सूरज, चन्द्रमा और सितारे लाँघकर ऊपर आ जा, आगे तुझे उस महात्मा का नूरी स्वरूप मिलेगा, जो हर मंज़िल पर तेरे साथ जायेगा। महात्मा वे नहीं जो दो लफ़्ज़ बताकर अलग हो जायें, बल्कि जब तू उनके पास जायेगा, वे कहेंगे कि हम हर मंज़िल पर तेरे साथ हैं, तुझे धुर-धाम पहुँचाकर ही दम लेंगे। फिर वे यह नहीं कहते कि तू क़ौम छोड़, मज़हब छोड़, बाल-बच्चे छोड़। उनका उपदेश तो यह है कि अपने-अपने मज़हब में रहो, अपनी-अपनी क़ौम में रहो, अपने-अपने कुटुम्ब में रहो और नाम जपकर परदा खोल लो, जीते-जी मुक्ति हासिल कर लो और परमात्मा से मिल जाओ। फिर वे अपना बोझ किसी पर नहीं डालते, बल्कि अपना बोझ आप उठाते हैं। फिर भी हमें उन पर यक़ीन नहीं आता। सो, कहते हैं कि प्यारे, तेरे अन्दर गुरुबाणी, कलामे-इलाही हो रही है। तेरे अन्दर वह गीत हो रहा है जिसे गुरु नानक साहिब 'आदि सचु जुगादि सचु'[9] कहते हैं। अन्दर चढ़ और उसे सुन, मगर हम इतना भी नहीं कर सकते।

यह सुने न गुरु के बैना। कस खुलैं हिये के नैना॥

कहते हैं कि यह गुरु की तालीम को सुनता ही नहीं। जो महात्मा सचखण्ड से आते हैं, वे मुक्ति हासिल करने की तालीम देते हैं,

जन्म-मरण ख़त्म करने की दवा देते हैं, मगर यह उनकी तालीम को क़बूल नहीं करता, इसके अन्दर धँसती ही नहीं। अगर दवाई लाकर रख छोड़ो तो कोई फ़ायदा नहीं। अगर यह दवाई खाता तो असर होता और बीमारी चली जाती। फिर अन्दर का परदा खुले तो किस तरह?

बिरला कोइ जिव अधिकारी। गुरु बचन करे आधारी॥

कहते हैं कि कोई विरला ही भाग्यशाली जीव होता है जो सन्तों की संगति में आता है और उनका कहा मानता है। जिस पर मालिक की अति दया होती है, वही सन्तों की संगति में आता है और नाम लेकर उसकी कमाई करता है। नहीं तो क़ौमों की क़ौमें, मज़हबों के मज़हब नाम को छोड़कर लफ़्ज़ों में उलझे हुए हैं, लेकिन लफ़्ज़ नाम नहीं। यही गुरु तेग़ बहादुर साहिब कहते हैं:

जन नानक कोटन मै कोऊ भजनु राम को पावै॥[10]

गुरु अर्जुन साहिब भी कहते हैं:

जग महि उतम काढीअहि विरले केई केइ॥[11]

एक और जगह भी कहा है:

कोटि मधे को विरला सेवकु होरि सगले बिउहारी॥[12]

जो बचन सम्हारे गुरु के। मन फंद लगावे छल के॥

अब हम सन्तों का कहना क्यों नहीं मानते? हमारे अन्दर दो ताकतें हैं, एक काल और दूसरी दयाल। जो काल की ताकतें हैं, उन्होंने हमारे मन और आत्मा पर ऐसा परदा डाला हुआ है कि हमें होश ही नहीं रहा। इस दुनिया में हमारा बड़े से बड़ा दुश्मन कौन है? मन। हमारे और गुरु के बीच में परदा किसका है? मन का। जब आप मन को खड़ा कर लोगे, आत्मा अन्दर चल पड़ेगी।

यहाँ स्थूल देह में स्थूल मन है, सहँस-दल-कँवल में सूक्ष्म मन है और ब्रह्म में कारण मन है। जब कोई महात्मा हमें पारब्रह्म के देश में ले जायेगा तो हमें होश आयेगा और हम कहेंगे कि ओहो! हम कैसे जाल में फँसे हुए थे। जब कोई जीव सन्तों के सत्संग में आता है और उनके वचनों पर विश्वास करता है तो मन के घर स्यापा (रोना-पीटना) पड़ जाता है। जिस तरह अमर बेल, पेड़ पर पैदा होती है, उसी से ताकत लेकर फैलती है और आख़िर उसे ही सुखा देती है, इसी तरह मन, आत्मा से ताकत लेकर उसी की मिट्टी पलीत करता है। दूसरे लफ़्ज़ों में कह दें कि मन आत्मा से सत्ता लेता है और आत्मा को ही क़ैद किये बैठा है। मन नहीं चाहता कि आत्मा अन्दर जाये, इसका परदा खुल जाये और यह चौरासी के जेलख़ाने से निकल जाये। मन क़ैद होना नहीं चाहता, मगर अभ्यास में इसे क़ैद होना पड़ता है। इसलिए अगर कोई अभ्यास करता है तो मन छल करके उसे गिरा देता है। पुराण पढ़कर देखो, एक ऋषि ने इतनी तपस्या की कि स्वर्गों के राजा इन्द्र को ख़ौफ़ हुआ कि यह तपस्वी उसकी गद्दी छीन लेगा तो उसने क्या किया? हाथ में तीर-कमान लेकर, शिकारी का रूप धारण करके ऋषि की कुटिया पर आया और अर्ज़ की कि मैं काम से जा रहा हूँ, मेरा यह तीर-कमान रख लो, थोड़ी देर में आकर ले जाऊँगा। ऋषि ने कहा कि मैं इसका ख़याल क्यों रखूँ? इस पर इन्द्र ने उसकी बड़ाई करनी शुरू की कि तू ऐसा है, वैसा है, मुझ पर दया कर। जब इन्द्र ने बहुत बार कहा तो ऋषि मान गया और कहा कि अच्छा, उस कोने में रख दे। इन्द्र तो तीर-कमान रखकर चल दिया, अब वापस किसे आना था। ऋषि पहले राजा था और तीरंदाज़ी में माहिर था। सो, जब भजन से उठे, तीर-कमान सामने दिखायी दे। रोज़-रोज़ देखने से तीर-कमान का ध्यान मन में पक्का होता गया। एक दिन सोचता है कि कभी हम भी तीर चलाया करते थे, ज़रा चलाकर तो देखें, किसी को मारेंगे नहीं। यह सोचकर तीर-कमान हाथ में लेकर तीर जो चलाया, सीधा निशाने पर जाकर लगा। और शौक़ बढ़ा, आख़िर पूरा शिकारी

बन गया। भजन-बन्दगी छूट गयी और लगा शिकार के पीछे-पीछे फिरने। सो, ऐसे मन के धोखे हैं। रात को रोटी बहुत खा ली, नींद ज़्यादा आ गयी। जब भजन का वक़्त हुआ, मन कहता है कि ज़रा और सो ले, अभी रात काफ़ी है। ज़रा सोया, जैसे ही आँख लगी, दिन चढ़ गया। इसी तरह मन का एक और धोखा भी है, वह कहता है कि बच्चे छोटे-छोटे हैं, ज़रा बड़े हो जायें, फिर भजन ही करना है।

ज़िक्र है, कबीर साहिब बाहर जाया करते थे। एक बूढ़ा खेत में बैठा हुआ मिलता था। एक दिन कबीर साहिब ने उससे कहा कि भजन किया कर। कहता है, ''छोटे-छोटे बच्चे हैं, जवान हो जायें, फिर करूँगा।'' जब बच्चे जवान हो गये तो कबीर साहिब फिर मिले और कहा कि भजन कर। वह कहने लगा, ''इनकी शादियाँ हो जायें फिर भजन करूँगा।'' जब शादियाँ हो गयीं तो कबीर साहिब ने कहा कि अब बता! कहता है, ''पोतों का मुँह देखने की इच्छा पूरी कर लूँ।'' जब पोते हो गये तो कबीर साहिब फिर मिले और कहा कि अब तो भजन कर। कहता है कि पोते छोटे-छोटे हैं, ज़रा जवान हो जायें फिर भजन करूँगा। जब पोते जवान हो गये तो कबीर साहिब ने फिर पूछा। कहता है, ''ये लापरवाह हैं, रात को सो जाते हैं, अगर मैं न जागूँ तो चोरी हो जाये।'' कुछ समय बाद कबीर साहिब फिर गये तो वह बाबा न मिला। पूछा कि बाबा कहाँ है? पुत्र-पौत्रों ने कहा कि जी, वह तो गुज़र गया।

उस बूढ़े का घर की दुधारु गाय से बड़ा प्यार था। गाय-भैंसें पालता था। एक गाय से उसे बड़ा प्यार था। जब मरा तो गाय के पेट में आया और बछड़ा बना। कबीर साहिब ने अन्तर्ध्यान होकर देखा तो पता लगा कि वह बछड़े का जन्म पाकर जवान हुआ, उसे ख़ूब हल में जोता, बहुत चलाया, आख़िर वह बूढ़ा हो गया। जब उनके काम का न रहा तो उन्होंने उसे गाड़ीवान को बेच दिया। उसने भी उसे दस-बारह साल चलाया। जब उसके भी काम का न रहा तो उसने उसे तेली के हवाले कर दिया, जिसने उसे कई साल कोल्हू में जोता। जब वहाँ भी निकम्मा हो गया तो उसने क़साई को दे दिया। क़साई ने मारकर उसका मांस बेच दिया और जो

चमड़ा था वह नगाड़े वाले ले गये, उन्होंने उसका नगाड़ा बना लिया। अब उस पर ख़ूब डण्डे पड़ते हैं। यह देखकर कबीर साहिब ने कहा:

> बैल बने हल में जुते, ले गाड़ी में दीन।
> तेली के कोल्हू रहे, पुनि घेर कसाई लीन॥
> मास कटा बोटी बिकी, चमड़न मढ़ी नक्कार।
> कछुक करम बाकी रहे, तिस पर पड़ती मार॥[13]

सो, बात तो यह है कि मन अन्दर नहीं जाने देता। यह हज़ारों छल करता है। आप रोज़ सुनते हैं कि मन नहीं मानता। अगर आप उसका मुक़ाबला नहीं करते तो आपका क़ुसूर है। मन रोये-पीटे, मगर भजन मत छोड़ो। इसका इलाज ही डण्डा है यानी सख़्ती है। आप साखियाँ पढ़कर देख लो।

मैं आपको एक मुसलमान फ़क़ीर की साखी सुनाता हूँ। वह बाज़ार से जा रहा था। एक हलवाई ने बहुत बढ़िया जलेबियाँ बनायी हुई थीं। मन ने कहा कि जलेबियाँ खानी हैं। पास में पैसे नहीं थे, मन को मोड़ा, पर मन अड़ियल घोड़ा है, इसे जिधर से हटाओ, उधर ही जाता है। जो भजन पर बैठते हैं उन्हें तो बताने की ज़रूरत नहीं, वे ख़ुद ही जानते हैं। जब रात को भजन में बैठा तो जलेबियाँ सामने। उठकर फिर बैठा, फिर जलेबियाँ सामने। घण्टा भर सोकर फिर बैठा, वही ख़याल सामने। सारी रात आँख न लगी।

फ़क़ीर सवेरे जंगल में गया, लकड़ियाँ काटीं। अच्छा बड़ा गट्ठर बाँधा। अब उठाया नहीं जाता, पसीने-पसीने होता है। मन से कहता है कि तुझे जलेबियाँ खानी हैं। आख़िर किसी आदमी ने लकड़ियाँ उठवा दीं। बाज़ार में ले आया। किसी ने पूछा कि क्या क़ीमत लेनी है? कहता है, ''जो दोगे।'' उसने एक रुपया दिया। पुराने ज़माने में रुपये की तीन सेर जलेबियाँ आती थीं। मैंने ख़ुद आगरा में रुपये की तीन सेर के भाव से ख़रीदी हैं। सो, वह जलेबियाँ ख़रीदकर जंगल में ले गया। अब भूख पाव, डेढ़ पाव की और जलेबियाँ तीन सेर! खायीं, मन से कहा, ''और

खा'' और खायीं। अब और अन्दर न जायें। शरीर ने क़बूल न किया, कै (उल्टी) हो गयी। मन से कहा कि इस कै को खा। कै को खाया, फिर कै हो गयी। दो-चार थप्पड़ मुँह पर मारे और कहा कि इसे फिर खा। फिर खाया। फिर कै हो गयी। एक आदमी उधर से चला जा रहा था। उसे कहता है कि भाई, ये जलेबियाँ ले जा। सो, फ़क़ीर ऐसी सज़ा मन को देते हैं। महात्माओं ने इस तरह के उपाय किये हैं। मन के साथ बेशुमार झगड़े किये हैं। गुरु अमर दास जी कहते हैं:

मन ही नालि झगड़ा मन ही नालि सथ मन ही मंझि समाइ ॥[14]

ज्यों त्यों कर जीव भुलावे। काल अपने खेल खिलावे॥

पहले तो हम प्रेम के साथ भजन में बैठते ही नहीं और पूरा वक़्त नहीं देते, अगर देते भी हैं तो मन भुलावे में डालता है कि अभी रात बहुत बाक़ी है, ज़रा और सो लो। ज़रा सोये कि दिन चढ़ आया। ये सारे मन के धोखे हैं। मैंने एक मुसलमान फ़क़ीर की कहानी पढ़ी है। एक दिन, रात को उसकी नींद न खुली, मन से बोला कि मैं तुझे सारा साल गर्म पानी पिलाऊँगा। मन को पूरा साल गर्म पानी पिलाया। इसका नाम लड़ाई है। सो, हमें चाहिए कि मन के साथ लड़ें, हमारा और कोई दुश्मन नहीं, मन ही हमारा दुश्मन है।

गुरु भक्ति न करने पावे। बहु भाँति उपाधि लगावे॥

मन शुतुर बेमुहार यानी बे-नक़ेल का ऊँट है, अपना शासन या हुकूमत चाहता है और गुरु-भक्ति की तरफ़ तो आने ही नहीं देता। जब तक गुरु-भक्ति नहीं, नाम-भक्ति कहाँ? जो पानी आँखों, नाक, कान, मुँह और अलग-अलग नलों के ज़रिये बहता है उसे एक नल में ले आओ तो देखो कितने ज़ोर से पानी बहता है और उसमें कितनी ताकत आ जाती है। जिस तरह एक 'कमाण्डर-इन-चीफ़' है, सारी फ़ौज के सिपाही

उसके पीछे हैं। अगर उसका हुक्म मानकर सभी सिपाही दुश्मन के साथ लड़ें तो कामयाब हो जायेंगे। अगर हरएक सिपाही अलग-अलग लड़े तो सभी नाकामयाब होंगे। इसी तरह दुनिया में कई क़िस्म की भक्ति है, जैसे क़ौम-भक्ति, देश-भक्ति, पितृ-भक्ति। अगर हम इन सारी भक्तियों को छोड़कर एक गुरु-भक्ति को अपना लें यानी किसी महात्मा से राह लेकर अन्दर चढ़ चलें तो हमारी मुक्ति हो जाये, जन्म-मरण ख़त्म हो जाये। गुरु अर्जुन साहिब कहते हैं :

गुरदेव माता गुरदेव पिता गुरदेव सुआमी परमेसुरा॥[15]

गुरु ही हमारी माता है, गुरु ही हमारा पिता है और गुरु ही हमारा परमेश्वर है, क्योंकि गुरु के सिवाय, मौत के बाद हमारे साथ और कोई नहीं जाता। अगर दुनिया में भी हमारा कोई रिश्तेदार है तो वह है 'गुरु'। बिना नाम मुक्ति नहीं और नाम गुरु से ही मिलता है। जब हम गुरु के सत्संग में बैठते हैं या नाम का सिमरन करते हैं या भजन पर बैठकर धुन को सुनते हैं तो मन कोई न कोई रुकावट खड़ी कर देता है। जब रात को भजन के लिए जागते हैं तो कहता है कि अभी रात बहुत बाक़ी है, थोड़ा और सो लो, फिर बैठ जायेंगे। ज़रा लेटे नहीं कि दिन चढ़ आया।

कभी मित्र होय भरमावे। कभी बैरी बन धमकावे॥

पहले तो मन विषय-विकारों, राग-रंग की चाटों और इन्द्रियों के भोगों के स्वाद चखाता है, जो इनके क़ाबू में आ गया, वह तो गया। जो न फँसा, उसके साथ दुश्मनी करके, लड़ाई करके या कुछ और करके भजन छुड़वा देगा।

एक महात्मा एक दुकान पर खड़े थे। कुछ ख़याल आया, मन से कहने लगे, "तेरी बड़ी तारीफ़ सुनी है, कुछ अपनी करतूत तो दिखा।" मन कहता है, "देखनी है?" एक आदमी वहाँ पर शहद बेच रहा था, उसकी मटकी में से अँगुली भरकर एक दीवार पर लगा दी। शहद लगाने

की देर थी कि उसकी ख़ुशबू पाकर एक मक्खी आ बैठी और लगी आँखें बन्द करके शहद चाटने। अभी शहद खा ही रही थी कि एक छिपकली ने देखा कि यह तो मेरा शिकार है, जैसे ही छलाँग मारी, मक्खी को शहद समेत खा गयी। उस दुकानदार ने बड़े प्यार से एक बिल्ली पाल रखी थी। बिल्ली छिपकली पर झपटी और उसे एक बार में ही खा गयी। पास ही एक ग्राहक का कुत्ता खड़ा था, उसने बिल्ली पर हमला करके उसे चीर-फाड़ डाला। दुकानदार को ग़ुस्सा आया, उसने अपने नौकरों से कहा, ''मारो कुत्ते को।'' उन्होंने डण्डे मार-मार कर कुत्ते को मार डाला। ग्राहक को बड़ा दुःख हुआ, उसने दुकानदार को गालियाँ दी। गाली देने की देर थी कि दोनों गुत्थम-गुत्था हो गये। दुकानदार के साथ उसके नौकर थे और ग्राहक के साथ आम लोग; ख़ूब लड़ाई हुई। तब मन ने उस महात्मा से कहा कि ये मेरे खेल हैं, ये मेरे धोखे हैं।

कभी रोगन माहिं झुमावे। नाना बिधि जाल बिछावे॥

मन कभी बीमारियों में, कभी अलग-अलग विषय-विकारों में ले चलता है। मतलब कि इसका मक़सद है कि आदमी नाम की तरफ़ न आये, अन्दर न जाये। वसिष्ठ जी रामचन्द्र जी के गुरु थे। वे कहते हैं कि मन की ताकत का अन्दाज़ा महात्मा को होता है। जो मूर्ख हैं, उन्हें क्या पता कि मन की क्या ताकत है और महात्मा क्या कह रहे हैं? वसिष्ठ जी कहते हैं कि हे राम! अगर कोई कहे कि मैंने दो हज़ार मील लम्बा और कई हज़ार फीट ऊँचा हिमालय पहाड़ उठा लिया है, हालाँकि यह मानने में नहीं आता, फिर भी हम मान लेते हैं कि शायद परमात्मा ने दुनिया में कोई ऐसा आदमी भेजा हो जिसने कि उठा लिया हो। फिर कहते हैं कि अगर कोई कहे कि मैंने समुद्र को पी लिया है, मानने में तो नहीं आता, मगर मान लेते हैं कि शायद कोई ऐसा आदमी पैदा हो गया हो जिसने कि समुद्र को पी लिया हो। लेकिन अगर कोई कहे कि मैंने मन को वश में कर लिया है तो कहते हैं कि मैं नहीं मानता। मन ऐसा ज़बरदस्त है कि

बड़े-बड़े महात्माओं से भी वश में न हुआ। मगर आप इससे यह न समझो कि मन को वश में करने की कोई दवा है ही नहीं! दवा है! अगर कोई गुरु मिल जाये, वह इसे नाम दे दे, यह कमाई करके अन्दर जाये तो आगे तुरिया पद में सतगुरु खड़ा है। तुरिया पद कहो या सहँस-दल-कँवल कह दो, वहाँ नाम का अमृत है। जिस वक़्त मन उस अमृत को पीता है तो क़ाबू में आ जाता है। आत्मा आज़ाद हो जाती है यानी इस जन्मों-जन्मों की क़ैदी आत्मा को थोड़ी-सी आज़ादी मिल जाती है।

शब्दारस लेन न पावे। यों जीव सदा दुख पावे॥

हाय अफ़सोस! करोड़ों वर्षों तक चौरासी लाख योनियों का जेलख़ाना भोग-भोग कर मनुष्य का जन्म मिला, फिर भी मन नाम की तरफ़ नहीं आने देता यानी भजन नहीं करने देता। मैं देखता हूँ, अक्सर सत्संगी मिलते हैं, मगर दुनिया में रहकर शायद ही कोई सुखी हो। एक न एक दुःख तो सबको ही है। यही फ़रीद साहिब कहते हैं:

> फरीदा मै जानिआ दुखु मुझ कू दुखु सबाइऐ जगि॥
> ऊचे चड़ि कै देखिआ तां घरि घरि एहा अगि॥[16]

मन ने किसी को सुखी रहने दिया ही नहीं।

गुरु मेहर करें जिस जन पर। सो बचे शब्द धुन सुन कर॥

कहते हैं कि गुरु मेहर करता है, ये मेहर लेते नहीं। वह दोनों हाथ फैलाकर कहता है कि आओ! मैं तुम्हें ले जाने को तैयार हूँ, मगर ये अन्दर नहीं जाते। बेशुमार मिसालें हैं। कबीर साहिब कहते हैं:

> कबीर साचा सतिगुरु किआ करै जउ सिखा महि चूक॥
> अंधे एक न लागई जिउ बांसु बजाईऐ फूक॥[17]

सतगुरु तो हमें दोनों हाथों से अन्दर ले जाने को तैयार है, मगर हम अन्दर नहीं जाते। शब्द के सिवाय दुनिया में और कोई दवा नहीं है। जब हम अन्दर शब्द सुनेंगे तो शान्ति आ जायेगी, तब प्रेम-प्यार आयेगा। सभी महात्मा होका देते हैं कि शब्द को सुनो। जिस-जिस ने उस कलामे-इलाही, कीर्तन या अनहद बाजे को सुना, उसका मन क़ाबू आ गया। काम, क्रोध आदि और इन्द्रियाँ क़ाबू आ गयीं। अन्दर रोशनी, नूर और तजल्ली पैदा हो गयी। केवल वे ही बचे, बाक़ी सब मारे गये।

तब गहे शब्द रस जाँची। फिर जले न जग की आँची॥

अगर यह एक बार परदा खोलकर अन्दर चला जाये और उस अमृत यानी नाम की लज़्ज़त को ले ले, फिर इसको पकड़नेवाला कौन है? कोई नहीं। फिर न मन पकड़ सकता है, न इन्द्रियाँ। एक कवि ने कहा है:

एक समे बन में बसते मृगराज की नार ने केहर जायो॥
कै कारन पाली के हाथ चढ़यो उन लेकर छेरी के संग रलायो॥

एक बार एक भेड़ें चरानेवाले को एक शेर का बच्चा मिल गया, उसने उसे भेड़ों का दूध पिला-पिला कर पाल लिया।

भूल गयो कुल के पराकरम, सो हंडु भयो हरी दूब चरायो॥
सुंदर ऐसे ही आत्मा संग शरीर के, आप भुलाइ के जीव कहायो॥[18]

शेर का काम है शिकार करना। मगर वह भेड़ों के साथ रहता, भेड़ों का दूध पीता और गन्दगी आदि खाता। संयोग से एक शेर आ गया। उसने देखा कि यह शेर का बच्चा है। सोचने लगा कि यह शेर होकर भेड़ों के साथ चरता है, बड़ी हैरानी की बात है। धीरे-धीरे वह उसके पास गया और कहा कि देख! तू शेर है। शेर का बच्चा कहता है, ''नहीं, मैं भेड़ हूँ।'' शेर उसे नदी के किनारे ले गया और कहा, ''पानी में देख, तेरी और मेरी शक्ल एक जैसी है कि नहीं?'' उसने कहा, ''शक्ल तो एक

जैसी ही है।'' शेर ने कहा, ''अच्छा! मैं गरजता हूँ, तू भी गरज।'' जब शेर गरजा तो साथ ही शेर का बच्चा भी गरजा, तब चरवाहा भी भाग गया और भेड़ें भी भाग गयीं। यह तो है कहानी। असली बात क्या है?

जब इसको कोई गुरु मिला, उसने कहा कि तू आत्मा है और परमात्मा की अंश है। तू अन्दर जाकर अपने आप को देख और परख। जब हम अन्दर जाते हैं तो रोशनी या प्रकाश हो जाता है, हमें समझ आ जाती है। असलियत प्रकट हो जाती है कि हम कौन हैं। सन्त जब-जब संसार में आये, यही होका देते रहे कि अगर तू जन्म-मरण के चक्र से बचना चाहता है तो क्या कर? तेरे अन्दर नाम है, नौ दरवाज़े छोड़कर अन्दर दसवीं गली खोल। जब तू परदा खोलकर ऊपर जाकर अमृत पी लेगा, फिर तू मन के वश में नहीं आयेगा, इन्द्रियों के वश में नहीं आयेगा, कई और भोगों के वश में नहीं आयेगा। मन जैसा हमारा और कोई दुश्मन नहीं, लेकिन अगर एक बार इसे वश में कर लें और यह अन्दर की लज़्ज़त ले ले तो इसके जैसा वफ़ादार नौकर भी और कोई नहीं। जिस तरह आत्मा सतपुरुष से बिछुड़ी हुई है, इसी तरह मन भी (ब्रह्म से) बिछुड़ा हुआ है। यह ब्रह्म का अंश है, कोई छोटी चीज़ नहीं। अगर इसे पता लग जाये तो यह कहेगा कि मैं ब्रह्म का कमाण्डर हूँ। जब दोनों अन्दर गये तो मन क्योंकि ब्रह्म का अंश था, वह ब्रह्म में ही रह गया, आत्मा आगे चली गयी, परदा खुल गया, फिर कौन जन्म ले और कौन मरे, तब इस देश में आने की कोई ज़रूरत नहीं।

सब बात लगी अब काँची। गुरु भक्ति मिली अब साँची॥

जब अन्दर शब्द की लज़्ज़त आ जाये तो यह दिन-रात गुरु-भक्ति में लगा रहता है। गुरु-भक्ति किसे कहते हैं? मैं रोज़ बताता हूँ कि जो बाहर सेवा की जाती है यह भी गुरु-भक्ति है, मगर असली गुरु-भक्ति कमाई करके नौ दरवाज़े ख़ाली करके, सूरज, चन्द्रमा व तारों को पार करके अन्दर गुरु को प्रत्यक्ष करना है। गुरु-भक्ति बड़ा उत्तम अभ्यास है। जब हम गुरु

को प्रत्यक्ष करके सामने उनसे बातें करेंगे तो समझो हमारा फ़र्ज़ पूरा हो गया। जब बच्चा अपने आप को माँ की गोद में डाल दे, फिर उसको कोई फ़िक्र नहीं। नहलाना, धुलाना, खिलाना, मतलब कि सारी फ़िक्र माँ को है। इसी तरह जब शिष्य सतगुरु की गोद में जा बैठा तो फिर सतगुरु का फ़र्ज़ है कि उसे धुर-धाम पहुँचाये, मगर हम कहते हैं कि हमें कोई बग़ैर मेहनत के ले जाये। बिना मेहनत के कोई नहीं ले जाता। जब आपने मेहनत की, अन्दर परदा खुल गया, आत्मा ने शब्द की लज़्ज़त ले ली, गुरु सामने आ गया। गुरु अमर दास जी कहते हैं:

नानक जिन्ह कउ सतिगुरु मिलिआ तिन्ह का लेखा निबड़िआ॥[19]

अगर सतगुरु अन्दर प्रकट हो गया, फिर वह हमारा सबकुछ करेगा।

राम सिंह डोगरा: हुज़ूर! क्या अन्दर और बाहर एक ही जैसा है?

महाराज जी: पीहर में लड़की बेटी होती है और बाहर यानी ससुराल में बहू होती है। यह शरीर तो शिष्य को भी छोड़ देना है और गुरु को भी छोड़ देना है। जो हमेशा रहनेवाला है, वह अन्दर है। लड़की का पीहर में और फ़र्ज़ है और ससुराल में और।

राधास्वामी की लीन्ही सरनी। सो जीव लगे भौ तरनी॥

जब इसने सतगुरु की शरण ले ली, अपने आप को सतगुरु के हवाले कर दिया तो समझ लो कि इसने अपना फ़र्ज़ पूरा कर दिया। आगे सतगुरु का फ़र्ज़ है, वह अपने देश ले जायेगा।

रामकली महला 5 असटपदी

1 ओ सतिगुर प्रसादि

दरसनु भेटत पाप सभि नासहि हरि सिउ देइ मिलाई ॥ 1 ॥
मेरा गुरु परमेसरु सुखदाई ॥
पारब्रहम का नामु द्रिड़ाए अंते होइ सखाई ॥ 1 ॥ रहाउ ॥
सगल दूख का डेरा भंना संत धूरि मुखि लाई ॥ 2 ॥
पतित पुनीत कीए खिन भीतरि अगिआनु अंधेरु वंञाई ॥ 3 ॥
करण कारण समरथु सुआमी नानक तिसु सरणाई ॥ 4 ॥
बंधन तोड़ि चरन कमल द्रिड़ाए एक सबदि लिव लाई ॥ 5 ॥
अंध कूप बिखिआ ते काढिओ साच सबदि बणि आई ॥ 6 ॥
जनम मरण का सहसा चूका बाहुड़ि कतहु न धाई ॥ 7 ॥
नाम रसाइणि इहु मनु राता अंम्रितु पी त्रिपताई ॥ 8 ॥
संतसंगि मिलि कीरतनु गाइआ निहचल वसिआ जाई ॥ 9 ॥
पूरै गुरि पूरी मति दीनी हरि बिनु आन न भाई ॥ 10 ॥
नामु निधानु पाइआ वडभागी नानक नरकि न जाई ॥ 11 ॥
घाल सिआणप उकति न मेरी पूरै गुरू कमाई ॥ 12 ॥
जप तप संजम सुचि है सोई आपे करे कराई ॥ 13 ॥
पुत्र कलत्र महा बिखिआ महि गुरि साचै लाइ तराई ॥ 14 ॥
अपणे जीअ तै आपि सम्हाले आपि लीए लड़ि लाई ॥ 15 ॥
साच धरम का बेड़ा बांधिआ भवजलु पारि पवाई ॥ 16 ॥
बेसुमार बेअंत सुआमी नानक बलि बलि जाई ॥ 17 ॥

अकाल मूरति अजूनी संभउ कलि अंधकार दीपाई ॥ 18 ॥
अंतरजामी जीअन का दाता देखत त्रिपति अघाई ॥ 19 ॥
एकंकारु निरंजनु निरभउ सभ जलि थलि रहिआ समाई ॥ 20 ॥
भगति दानु भगता कउ दीना हरि नानकु जाचै माई ॥ 21 ॥[1]

सत्संग के बचन

दरसनु भेटत पाप सभि नासहि हरि सिउ देइ मिलाई ॥

श्री गुरु अर्जुन साहिब फ़रमाते हैं कि गुरु के मिलने के क्या फ़ायदे हैं और गुरु क्या देता है? जब हम गुरु के दर्शन करते हैं तो हमारा हृदय शीतल होता है और हमारे पाप नाश हो जाते हैं। वह अपने सत्संग के ज़रिये चोरी, ठगी, शराब, कबाब की आदतों को छुड़वाता है। वह कहता है कि आप प्रेम और प्यार के साथ नाम जपो। फिर नाम जपवाकर परमेश्वर के साथ मिलाप करा देता है। वह कहता है कि मालिक तुम्हारे अन्दर बैठा हुआ है। अगर तुम उससे मिलना चाहते हो तो आओ, चलो मेरे साथ, मैं तुम्हें ले चलता हूँ। यह गुरु के मिलने का पहला फ़ायदा है। अब जो प्रेम के साथ दर्शन करते हैं उनके पाप नाश हो जाते हैं, मगर गुरु चाहे कितने ही पहुँचे हुए हों, उनके अपने रिश्तेदारों को उन पर यक़ीन ही नहीं आता और जब तक यक़ीन नहीं आता, तब तक कुछ भी नहीं बनता। कहते हैं, मेरा सतगुरु पिता है जिसके दर्शन करने से सारे पापों का नाश हो जाता है। देखो, कितना प्रेम और प्यार है! फिर कहते हैं कि गुरु राम दास जी के दर्शन करने से सारे पाप नाश हो गये और उन्होंने मुझे परमात्मा से मिला दिया। पिता को परमात्मा समझना बड़ी ऊँची बात है।

मेरा गुरु परमेसरु सुखदाई ॥

आप फ़रमाते हैं कि कुल ब्रह्माण्ड यानी सारी दुनिया दु:खी है। अब सवाल पैदा हुआ कि सुख कहाँ मिलता है? तो गुरु साहिब जवाब देते

हैं कि सुख गुरु और परमेश्वर के मिलाप से मिलता है। गुरु के ज़रिये परमेश्वर मिलता है और परमेश्वर के ज़रिये मुक्ति प्राप्त होती है। फिर कहते हैं कि हम गुरु को परमेश्वर-रूप समझते हैं। परमेश्वर को तो जब देखेंगे तब ही देखेंगे, मगर गुरु को तो प्रत्यक्ष देखते हैं। फिर इसी गुरु के स्वरूप में परमेश्वर को मौजूद समझना है, लेकिन सन्त जब भी इस देह में बैठे होते हैं, वे यह नहीं कहते कि हम सन्त हैं।

एक सत्संगी: जी! बाणी कहती है, 'बाहरि भीतरि एको जानहु ... ॥'[2]

महाराज जी: मैं कहता हूँ कि जब आप नौ दरवाज़ों को छोड़कर ब्रह्म, पारब्रह्म में जायेंगे तो आपको पता लग जायेगा कि गुरु क्या है और क्या देता है। नहीं तो, अगर किसी ने कह दिया कि गुरु झूठा है तो यक़ीन टूट गया। अगर किसी ने कह दिया कि सच्चा है तो यक़ीन बँध गया, लेकिन अगर अन्दर जाकर देख लो तो यक़ीन पुख़्ता हो जायेगा। जिस तरह अगर कोई आपके पास घोड़ा ले आये, लोग चाहे कितना ही कहें कि यह भैंस है, मगर आप घोड़ा ही कहेंगे। सो, जब आप वहाँ पहुँचो तब जो मर्ज़ी हो कह दो, लेकिन यों (पहले) नहीं। गुरु साहिब कहते हैं कि हम गुरु को परमेश्वर समझते हैं, क्योंकि उनसे मिलकर हमारे मन में प्रेम, प्यार और शान्ति पैदा हो गई।

पारब्रहम का नामु द्रिड़ाए अंते होइ सखाई॥

अब कहते हैं कि गुरु क्या बताता है? क्या उपदेश देता है? फिर आप ही जवाब देते हैं कि वह कहता है, पहले तुम नौ द्वारों को छोड़ दो ताकि तुम्हारा स्थूल शरीर से नाता टूट जाये। इसके बाद जब तुम सूरज, चन्द्रमा और तारा-मण्डल को पार करोगे तो आगे सतगुरु सूक्ष्म शरीर में खड़ा है।

सेवा कई क़िस्म की होती है, कोई तन की सेवा करता है, कोई धन की सेवा यानी लंगर में पैसे देता है, लेकिन जो असली सेवा है वह और ही है। वह क्या है? अन्दर गुरु को प्रकट करना। जब गुरु अन्दर प्रकट हो जाये तो फिर जो भी सवाल करोगे, वह जवाब देगा। अगर आपको

एक चौकी बनवानी हो तो कितनी दिक़्क़त होती है, फिर घर में किसी न किसी चीज़ की ज़रूरत हमेशा रहती है। इसके विपरीत, अगर आप बढ़ई को ही घर में ले आओ तो जितनी चौकियाँ चाहो, बनवा लो और दूसरी चीज़ें भी बनवा लो। इसी तरह सबसे बड़ी सेवा यह है कि सतगुरु को अन्दर प्रत्यक्ष कर लो, उसके साथ बातें करो और उससे कह दो कि हमें अपने साथ ले चल। वह आपको लेकर अन्दर चल पड़ेगा। फिर गुरु अपने लिये कुछ नहीं लेता, बल्कि जो कुछ आता है उसे वह साध-संगत की सेवा में लगा देता है, पराये कामों में ख़र्च कर देता है।

सत्संग में बहुत-से ऐसे आदमी आते हैं जो कहते हैं कि हम मेहनत न करें, बिना मेहनत के मालिक अन्दर आ जाये। यह कभी नहीं हो सकता। आपका काम आपको ही करना है, फिर ढील क्यों? पता नहीं फिर मनुष्य-जन्म मिले या न मिले और फिर भजन दुनिया के कामों का नुक़सान नहीं करता। दुकानदार दुकान पर बैठकर सिमरन कर सकता है, औरत घर का काम-काज करती, रोटी पकाती हुई सिमरन कर सकती है, किसान हल चलाते हुए सिमरन कर सकता है, क्लर्क दफ़्तर से आते-जाते सिमरन कर सकता है। मतलब कि अपना-अपना काम करते हुए भजन-सिमरन कर सकते हैं। मैं कहता हूँ कि आदमी पाखाने में बैठे हुए भी सिमरन कर सकता है। जब तक अन्दर प्रेम न हो, कशिश न हो, तब तक अन्दर परदा नहीं खुलता। जब भी परदा खुलता है, आपके प्रेम के द्वारा खुलता है। जब लड़का स्कूल में जाता है तो उस्ताद कहता है कि पहले तू बी. ए. कर ले, फिर दुनिया के कामों में तवज्जुह देना। इसी तरह सतगुरु कहता है कि तू पहले भजन कर, गुरुमुख बन, फिर दुनिया के और दूसरे काम भी कर लेना।

इसकी आत्मा के ऊपर तीन शरीर हैं। पहले यह स्थूल शरीर है, इसके अन्दर सूक्ष्म शरीर है और उसके अन्दर कारण शरीर। गुरुमुख बनने के लिये यह ज़रूरी है कि पहले तू भजन-सिमरन करके स्थूल शरीर को उतार दे, फिर तुरिया पद में जाकर सूक्ष्म शरीर को उतार दे और फिर

ब्रह्म में जाकर कारण शरीर को उतार दे और इसके बाद पारब्रह्म में चल। वहाँ जाकर तेरा अपना प्रकाश बारह सूरज का हो जायेगा। तू आत्मा है, परमात्मा की अंश है, मगर यहाँ परदों में ढकी हुई है।

एक सत्संगी: हुज़ूर! कई कहते हैं कि अन्दर अभ्यास में डर लगता है।

महाराज जी: इसके जो पाप हैं, वे इसे डराते हैं। जब कि इसे ऋद्धियाँ, सिद्धियाँ, शक्तियाँ हाथ नहीं लगा सकतीं, काल हाथ नहीं लगा सकता, यमदूत हाथ नहीं लगा सकते, तो फिर इसके पाप ही हैं जो इसे डराते हैं।

अब कहते हैं कि सतगुरु इसको सन्तमत की तालीम देकर, पारब्रह्म में ले जाकर गुरुमुख बनाता है। अब सवाल पैदा हुआ कि गुरु क्या करता है? तो गुरु अर्जुन साहिब कहते हैं कि जब इसकी मौत आती है तो वह आकर अपने साथ ले जाता है। जिसे नाम मिल चुका है उसकी मौत के वक़्त यमदूत नहीं आते, सतगुरु आयेगा और अपने साथ ले जायेगा। ब्रह्माण्ड पलट जाये लेकिन गुरु का वचन नहीं पलटता। बेशक गुरु ले जायेगा। मैंने हज़ारों केस देखे हैं; छोटे-छोटे बच्चे हैं, उनकी माताओं ने बच्चों को देखने की भी इच्छा ज़ाहिर नहीं की। ढिलवाँ का ज़िक्र है, एक स्त्री शरीर छोड़ने लगी तो उसके पुत्र कहने लगे कि हम किधर जायेंगे? कहती है कि तुम जहाँ मर्ज़ी जाओ! जब मौत के वक़्त गुरु सामने आ जाये तो और क्या चाहिये? इसके विपरीत, जिन्हें नाम नहीं मिला, उनकी मौत के वक़्त यमदूत आते हैं, यहाँ तक कि जब वे आते हैं तो कइयों का डर के मारे पाखाना निकल जाता है। मगर जब नाम वाले की मौत होती है तो गुरु आता है और कहता है कि चल! मैं तुझे अपने साथ ले जाता हूँ। उसे उस वक़्त इतनी ख़ुशी होती है जितनी कि अपने ब्याह की भी नहीं होती। जहाँ नाम है वहाँ काम, क्रोध वग़ैरह कोई विरोधी ताकतें नहीं आ सकतीं। जिस तरह जहाँ बाज़ आ जाये वहाँ चिड़ियाँ वग़ैरह नहीं रह सकतीं, अन्य पक्षी नहीं रहते। सतगुरु के साथ हमारा यह नाता है, बाक़ी जो सुख-दुःख हम लिखाकर लाये हैं उन्हें हमें अवश्य भोगना है। हम पर

मुक़द्दमे भी आयेंगे, बीमारियाँ भी आयेंगी और कई तकलीफ़ें भी आयेंगी। सतगुरु का उनके साथ कोई ताल्लुक़ नहीं, उसका ताल्लुक़ नाम के साथ है या हमारी आत्मा के साथ है।

सगल दूख का डेरा भंना संत धूरि मुखि लाई ॥

जब हम भजन करके दोनों आँखों के बीच तक शरीर को ख़ाली करें, दसवीं गली खोलें, ऊपर ब्रह्म के देश में जायें और फिर ब्रह्म से पारब्रह्म के देश में पहुँचें तो वहाँ सन्तों की मण्डलियाँ हैं। हरएक आदमी के अन्दर करोड़ों देश, करोड़ों खण्ड-ब्रह्माण्ड हैं, ईश्वर, परमेश्वर है। सो, पारब्रह्म के देश में सन्तों के चरणों की धूलि है, जब हम उसमें स्नान करेंगे तो हमारे जन्मों-जन्मों के जितने पाप हैं, सारे नाश हो जायेंगे। यह सन्त-सतगुरु से मिलने का फ़ायदा है। दुनिया में दो हस्तियाँ ही परोपकारी और पूजा के क़ाबिल हैं—एक सन्त और एक राम। एक जगह कबीर साहिब कहते हैं:

कबीर सेवा कउ दुइ भले एकु संतु इकु रामु ॥
रामु जु दाता मुकति को संतु जपावै नामु ॥[3]

पतित पुनीत कीए खिन भीतरि अगिआनु अंधेरु वंञाई ॥

जिस तरह आग की एक चिंगारी करोड़ों मन लकड़ी को जला देती है, इसी तरह से नाम की थोड़ी-सी कमाई भी करोड़ों पापों को जला देती है। वेद-शास्त्रों, ग्रन्थ-पोथियों को पढ़ने से मुक्ति नहीं, मुक्ति नाम में है। कहते हैं, जिस वक़्त नाम की कमाई की, अन्दर परदा खुल गया, सारे पाप नाश हो गये। सारी दुनिया आँखों के बाहर बैठी हुई है, अन्दर नहीं गयी। जिस तरह कुत्ते-बिल्ले पेट भरकर चले गये, वैसे ही यह चली गयी। हमारा खाना, पीना, सोना, मतलब कि सबकुछ पशुओं जैसा है। बाहर अज्ञान है, जब गुरु से नाम लेकर ऊपर चढ़े, ज्ञान हो गया, अज्ञान जाता

रहा। सो, गुरु से मिलने का एक तो यह फ़ायदा हुआ, दूसरे वह जो युक्ति देता है यानी नाम देता है, उसके ज़रिये सारे पाप नाश हो जाते हैं।

करण कारण समरथु सुआमी नानक तिसु सरणाई॥

श्री गुरु अर्जुन साहिब कहते हैं कि गुरु करण, कारण और समर्थ होता है, हम उसकी शरण लेते हैं। अब अगर कोई न पहचाने तो उसकी ग़लती है। छोटे बच्चों की किताबों में एक कहानी आती है। एक बार रूस का बादशाह पीटर, जहाज़ों का काम सीखने के लिये मज़दूरों में भर्ती होकर हॉलैंड चला गया। वहाँ पर उसे बहुत सारे रूसी मिले जिनको उसने किसी जुर्म की सज़ा में देश-निकाला दिया हुआ था। उन्होंने पूछा कि तू कहाँ से आया है? पीटर ने कहा कि मैं रूसी हूँ। फिर उसने उन लोगों से पूछा कि तुम कहाँ के हो? उन्होंने कहा कि हम भी रूसी हैं। पीटर ने कहा मैं भी रूसी हूँ और तुम भी रूस के रहनेवाले हो, इकट्ठे काम करेंगे। उन्होंने कहा, "अच्छा!" जब बादशाह ने काम सीख लिया तो साथियों से कहने लगा कि चलो रूस चलें। उन्होंने कहा कि बादशाह ने हमें देश-निकाला दे रखा है। हम नहीं जा सकते। पीटर बोला कि मैं बादशाह से बख़्शवा दूँगा। उन्होंने कहा कि जैसे हम मज़दूर हैं, वैसे ही तू है, तुझमें और हममें फ़र्क़ क्या है? तू हमें किस तरह बख़्शवा लेगा? कहता है कि तुम आ तो जाओ। मेरी बादशाह के साथ जान-पहचान है, वह तुम्हें कुछ भी नहीं कहेगा। मज़दूर राज़ी हो गये। जब वहाँ पहुँचे तो क्या देखा, कि वही शाही तख़्त पर बैठा हुआ है। सो, सन्त इस देश में हमारे जैसे मनुष्य बनकर आते हैं और उपदेश करते हैं, लेकिन जब-जब वे आते हैं, हम उनके साथ अच्छा सलूक तो नहीं करते। इसके विपरीत, वे दुःख भी सहते हैं और हमारा भला भी करते हैं। पिछले महात्माओं के साथ क्या-क्या नहीं किया गया! शम्स तब्रेज़ की खाल खींच ली, मंसूर को सूली पर चढ़ा दिया, गुरु तेग़ बहादुर का दिल्ली के बाज़ार में शीश काट दिया। गुरु नानक साहिब से बोझे उठवाये। वे हमें इस मुसीबत से निकालने के लिये आते हैं, मगर

हम उनके साथ यह सलूक करते हैं यानी हमें उनकी हस्ती की ख़बर नहीं कि वे कौन हैं, कहाँ से आते हैं और क्या करने के लिये आते हैं।

बंधन तोड़ि चरन कमल द्रिड़ाए एक सबदि लिव लाई ॥

इसकी आत्मा बन्धनों में क़ैद है—पहले स्थूल शरीर का बन्धन है, इसमें लेना-देना, खाना-पीना, काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार हैं। इस तरह जब सूक्ष्म शरीर में जायें, वहाँ सूक्ष्म बन्धन हैं। जब कारण में जायें तो वहाँ कारण बन्धन हैं। जब पारब्रह्म में पहुँचोगे तो सारे बन्धन दूर हो जायेंगे। हम करोड़ों युगों से चौरासी लाख योनियों के जेलख़ाने में पड़े हुए हैं। हमें अभी तक रिहाई नहीं मिली। कभी कीड़े, कभी पतंगे, कभी पक्षी, कभी पशु, कभी घास, कभी फूस। अगर राह मिली होती तो आज यहाँ क्यों बैठे होते? जो सन्त हैं, वे आज़ाद होते हैं। वे सचखण्ड से आते हैं और आकर कहते हैं कि भाई, आ तुझे अपने देश ले चलें। फिर वे घर-बार नहीं छुड़वाते, बल्कि वे बताते हैं कि जब से दुनिया बनी है, तब से तुम्हारे अन्दर शब्द हो रहा है, वह किसी आदमी का बनाया हुआ नहीं, रब या परमात्मा का बनाया हुआ है। जिस तरह 'जी. टी. रोड' सीधी सड़क है, जैसे कलकत्ता से चलें, पेशावर पहुँच जायें, इसी तरह अन्दर शब्द की सीधी सड़क है। शब्द यहाँ दोनों आँखों के बीच से शुरू होकर सीधा सचखण्ड जाकर ख़त्म होता है। सो, तुम अपनी रूह को शब्द के साथ जोड़ दो, फिर देखो क्या होता है! ग्रन्थ साहिब में जिस शब्द की महिमा है वह लिखने, पढ़ने, बोलने में आनेवाला शब्द नहीं, गाने-बजाने वाला नहीं। वह शब्द या कीर्तन अन्दर हर वक़्त जारी है, कभी बन्द नहीं होता। आप सो जायें, वह नहीं सोता। जब मौत आयेगी, तब बन्द होगा। जब तक गुरु नहीं मिलता, शब्द अन्दर होते हुए भी सुनायी नहीं देता। फिर गुरु यह नहीं कहता कि अन्दर अकेला जा! बल्कि वह अन्दर हर मंज़िल पर साथ है। अन्दर तो अन्दर, अगर यह भजन करे, गुरु के साथ प्रेम-प्यार करे तो वह बाहर भी हर वक़्त साथ है। कलकत्ता जाओ, सामने

है, बम्बई जाओ, सामने है, इंग्लैंड जाओ, सामने है। मतलब कि हर जगह साथ है। जो महात्मा इतना उपकार करे, फिर हम उसका हुक्म न मानें यानी भजन न करें, कमाई न करें, तो बड़ा अफ़सोस है। हमारा हृदय मैला है। हम उन्हें मनुष्य समझते हैं, अपने जैसा आदमी समझते हैं।

अंध कूप बिखिआ ते काढिओ साच सबदि बणि आई॥

हरएक आदमी के अन्दर अमृत बरस रहा है। वह इसकी दौलत है। जब तक कोई पूरा गुरु नहीं मिलता, इसकी दौलत लुटी जा रही है। उसको काम-क्रोध और मन-माया पी रहे हैं। जब गुरु की कृपा से आत्मा अन्दर गयी, शब्द को सुना, अमृत पिया तो काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार निकल गये, शान्ति आ गयी। गुरु यह दात देता है। वह बेटे-बेटियाँ नहीं देता, तन्दुरुस्ती, बीमारी, ग़रीबी, अमीरी नहीं देता। जब से हम माँ के पेट से पैदा हुए हैं तभी से दुःख-सुख, जन्म-मरण, जितने ग्रास खाने हैं, जितने घूँट पानी के पीने हैं, लिखवाकर लाये हैं। वे बढ़ या घट नहीं सकते। सन्त कहते हैं कि बीमारी भी तुम्हारे अन्दर है, दवा भी अन्दर है। जब तुम अपनी रूह को शब्द के साथ जोड़ोगे, शब्द में कशिश है, वह खींचेगा। शब्द कुल-मालिक है। सारे खण्ड-ब्रह्माण्ड शब्द ने बनाये हैं। जब उसकी लज़्ज़त आयेगी, जन्म-मरण ख़त्म हो जायेगा, लेकिन यह दौलत गुरु के बग़ैर नहीं मिलती। गुरु अंगद देव जी कहते हैं:

गुरु कुंजी पाहू निवलु मनु कोठा तनु छति॥
नानक गुर बिनु मन का ताकु न उघड़ै अवर न कुंजी हथि॥[4]

कुंजी वाला गुरु बड़े भाग्य से मिलता है। कुंजी वाला गुरु कहीं-कहीं ही है, अधूरे गुरु बहुत हैं। सो, जब तक वह कुंजी नहीं लगाता, तब तक यह अन्दर नहीं जा सकता।

अब कहते हैं कि यह जीव करोड़ों जन्मों से अन्धा चला आ रहा है। ये जो हमारी आँखें हैं, वे बज़ाते-ख़ुद (अपने आप से) रोशन नहीं हैं। ये

या तो सूरज के आसरे देखती हैं या चन्द्रमा के या सितारों के या बिजली के या लैम्प के। जहाँ ये पाँच चीज़ें नहीं, वहाँ ये काम नहीं कर सकतीं। ये फ़ना हैं और फ़ना चीज़ों को देखती हैं। जो असली आँख है, वह इसके अन्दर है। जब वह आँख खुलेगी तब यह सुजाखा होगा। अगर नहीं खुली तो यह अन्धा आया और अन्धा ही चला गया। गुरु अमर दास जी कहते हैं:

माइआधारी अति अंना बोला॥ सबदु न सुणई बहु रोल घचोला॥[5]

यह अन्धा भी है और बहरा भी है। बहरा इसलिए कि इसके अन्दर वे प्यारी से प्यारी धुनें हैं, मगर यह नहीं सुनता। अन्धा क्यों? क्योंकि इसके अन्दर कुल-मालिक है, खण्ड-ब्रह्माण्ड हैं, मगर यह उन्हें नहीं देखता। उन धुनों को सुनने से प्रेम-प्यार पैदा होता है।

जनम मरण का सहसा चूका बाहुड़ि कतहु न धाई॥

अब कहते हैं कि हमारा जन्मों-जन्मों के पापों का डर मिट गया। किसकी कृपा से? सतगुरु की कृपा से। अब हमें जन्म-मरण में आना ही नहीं, हमारा जन्म-मरण का सिलसिला कट गया। किसके ज़रिये? नाम की कमाई के ज़रिये। अब कौन जन्म ले, कौन मरे? कौन आये, कौन जाये? कोई नहीं! यह पक्का भरोसा रखना चाहिये कि हमें फिर नहीं आना, बल्कि यह नहीं कि कमाई न करें और कहें कि नहीं आना। कहते हैं, जो दवाई गुरु देता है अगर उसे खायें तो जीते-जी परदा खुल जाये, रूह खण्डों-ब्रह्माण्डों पर चली जाये, मुक्ति हो जाये। फिर धर्मराय क्या करे? गुरु राम दास जी फ़रमाते हैं:

धरम राइ दरि कागद फारे जन नानक लेखा समझा॥[6]

कबीर साहिब भी यही फ़रमाते हैं:

धरम राइ का दफतरु सोधिआ बाकी रिजम न काई॥[7]

लेखे वाला काग़ज़ ही फट गया! जो नाम है वह किसी ज़बान या भाषा का नहीं है। अगर भाषा का हो तो एक भाषा वाले का भला हुआ और बाक़ी के साथ जुल्म। उस मालिक ने उसे उस भाषा में रखा है जो सबके लिये एक है। अब गुरु अर्जुन साहिब कहते हैं कि हमने अपना जन्म-मरण ख़त्म कर लिया है। अब कौन जन्म ले और कौन मरे!

नाम रसाइणि इहु मनु राता अंम्रितु पी त्रिपताई॥

रसायन उस धातु को कहते हैं जिसे अगर क़लई में डाल दें तो वह चाँदी हो जाती है और ताँबे में डाल दें तो वह सोना हो जाता है। मगर ये जो धातुएँ हैं, सब जड़ हैं। जैसे कि क़लई भी जड़ है, चाँदी भी जड़ है, ताँबा भी जड़ है, सोना भी जड़ है और जो रसायन है वह भी जड़ है। बाहर जितने रसायन हैं सब झूठे हैं। सच्चा रसायन कौन-सा है? 'नाम!' जब यह नाम की कमाई करके अन्दर जाता है, वह नाम प्रकट हो जाता है। अन्दर अमृत बरसने लग जाता है। गुरु अर्जुन साहिब कहते हैं कि वह सच्चा रसायन है। अब मन और आत्मा नाम के रंग में रँग गये। हरएक आदमी के अन्दर अमृत बरसता है, मगर यह इसकी बदनसीबी है कि यह अन्दर जाकर अमृत नहीं पीता। अगर यह एक बार अन्दर जाकर उस अमृत की लज़्ज़त ले ले तो इसकी मुक्ति हो जाये।

संतसंगि मिलि कीरतनु गाइआ निहचल वसिआ जाई॥

पारब्रह्म से ऊपर सूक्ष्म से सूक्ष्म देश हैं, सन्तों की मण्डलियाँ हैं। वहाँ पर मीठी से मीठी राग-रागनियाँ हो रही हैं। स्वामी जी महाराज कहते हैं:

नग़्महा नेक शुनीदम व निदाहा वाफ़िर।
काबा बुतख़ाना बनिज़्दम शुदा हर दो क़ाफ़िर॥[8]

उन अन्दरूनी राग-रागनियों को सुनने से इतनी ख़ुशी होती है कि उसके मुक़ाबले में धर्म-स्थान काफ़िर मालूम होते हैं। मौलाना रूम साहिब फ़रमाते हैं:

औलिया रा दर दरूं हम नग़्महास्त,
आशकां रा ज़ा हयाते बेबहास्त।[9]

औलिया-अल्लाह के अन्दर वे राग-रागनियाँ हैं, जिनको सुनने से रूह के ऊपर से जन्मों-जन्मों के परदे उतर जाते हैं। यह आशिक़ों की चीज़ है। इसे कीर्तन कहते हैं। मन्दिरों में जो आरती होती है, यह बाहरी है, घण्टे, दो घण्टे होकर बन्द हो जाती है। इसी तरह जो रागी हैं, वे भी घण्टे, दो घण्टे राग गाते हैं, आख़िर गला बैठ जाता है। इसके विपरीत, अन्दर जो राग हो रहे हैं, वे कभी बन्द नहीं होते। उसे कीर्तन भी कहते हैं। ऋषि-मुनि आकाशवाणी और गुरु साहिब गुरुबाणी कहते हैं, मुसलमान बाँगे-आसमानी और कलामे-इलाही कहते हैं। उसे कामिल फ़क़ीर और भाग्यशाली लोग सुनते हैं। इस कीर्तन, इस राग को सुनने से जन्मों-जन्मों की ख़बर हो जाती है। कीर्तन तो कीर्तन ही है, मगर जो पारब्रह्म का कीर्तन है वह बड़ा अद्‌भुत है। इसे हासिल करने के लिये गुरु अमर दास जी ने बारह साल पानी ढोया था। नाम की तारीफ़ में गुरु अंगद देव जी कहते हैं:

अखी बाझहु वेखणा विणु कंना सुनणा॥

वह नाम इन आँखों से नहीं देखा जा सकता, इन कानों से नहीं सुना जा सकता।

पैरा बाझहु चलणा विणु हथा करणा॥

हमें उस देश में जाना है, जहाँ यह शरीर नहीं जाता, यह तो मिट्टी है। जब शरीर नहीं जाता तो ये पैर भी नहीं जाते। वहाँ काम करना है, मगर ये हाथ काम नहीं करते।

जीभै बाझहु बोलणा इउ जीवत मरणा॥

वहाँ यह ज़बान नहीं जाती, वहाँ कोई ज़बान नहीं। जब ज़बान नहीं तो वेद-शास्त्र, ग्रन्थ-पोथी, किताब कोई नहीं।

नानक हुकमु पछाणि कै तउ खसमै मिलणा॥[10]

जब तक यह जीते-जी नहीं मरता, इसे परमात्मा नहीं मिलता। ग्रन्थ साहिब तो होका देता है, मगर हम पढ़कर भी विचार नहीं करते।

नरक निवारै दुख हरै तूटहि अनिक कलेस॥
मीचु हुटै जम ते छुटै हरि कीरतन परवेस॥[11]

यह तालीम गुरु अर्जुन साहिब की है। बताओ! कोई अन्दर जाता है? कोई नहीं! यों तो हम सभी शेख़ी मारते हैं कि गुरु नानक साहिब हमारे हैं, हमारे हैं, मगर जो कमाई करेगा, गुरु नानक साहिब उसी के हैं।

पूरै गुरि पूरी मति दीनी हरि बिनु आन न भाई॥

कहते हैं कि हमें पूरे गुरु ने पूरी मति दी है। क्या? कि सारे नाते तोड़कर एक परमेश्वर के प्यार का नाता रख ले, गुरु का नाता रख ले, वही तेरे काम आयेगा। जिस तरह स्त्रियाँ कहती हैं कि हमने सारे गहने तुड़वाकर एक ही हँसुली घड़वा ली है, इसी तरह गुरु अर्जुन साहिब कहते हैं कि हमें गुरु राम दास जी ने यही मति दी है कि सिवाय गुरु के और सारे नाते तोड़ दे।

नामु निधानु पाइआ वडभागी नानक नरकि न जाई॥

वे बड़े ऊँचे भाग्य वाले हैं जिन्हें मनुष्य-जन्म पाकर नाम मिल गया, नहीं तो करोड़ों मज़हब नाम से ख़ाली भटक रहे हैं। अब कहते हैं कि हमारे बड़े ऊँचे भाग्य हैं कि हमें सतगुरु मिल गया और उसने नाम दे दिया। अब नरकों में कौन जाये? कोई नहीं। जब नाम मिल गया, फिर नरक! हरगिज़ नहीं! गुरु अमर दास जी क्या कहते हैं:

नानक जिन्ह कउ सतिगुरु मिलिआ तिन्ह का लेखा निबड़िआ॥[12]

घाल सिआणप उकति न मेरी पूरै गुरू कमाई॥

जब तक सन्त देह में हैं, वे यह नहीं कहते कि हम गुरु हैं, बल्कि कहते हैं कि तेरा गुरु शब्द है। गुरु नानक साहिब ने अपने आप को कहीं पर भी नहीं कहा कि मैं गुरु हूँ। इसके विपरीत, अगर हम उन्हें परमात्मा भी कह दें तो कह सकते हैं, लेकिन वे अपने आप को ऐसा नहीं कहलवाते, वे ख़ुद को इस योग्य नहीं समझते। इसी तरह गुरु अर्जुन साहिब धुर-धाम पहुँचकर भी कहते हैं कि मेरा कोई सयानापन नहीं, मेरी कोई ताकत नहीं, मेरी कोई कमाई नहीं, मुझे तो मेरा गुरु यहाँ ले आया है।

जप तप संजम सुचि है सोई आपे करे कराई॥

कहते हैं कि सारे जपों का जप, सारे तपों का तप, सारे संयमों का संयम, सारे शौच या शुचिता का निचोड़, मतलब कि जो कुछ है वह नाम है। गुरु ने आप ही कृपा करके मुझे इधर लगा दिया। उन्होंने आप ही मुझसे नाम जपवा लिया और आप ही खण्डों-ब्रह्माण्डों पर चढ़ा दिया। आप ही मेरा जन्म-मरण ख़त्म कर दिया। मतलब कि जो कुछ किया है, सतगुरु ने आप ही किया है। गुरु की मेहर ही 'जप' है, गुरु की मेहर ही 'तप' है। मतलब कि गुरु की मेहर ही सबकुछ है। गुरु अंगद देव जी फ़रमाते हैं:

> जे सउ चंदा उगवहि सूरज चड़हि हजार॥
> एते चानण होदिआं गुर बिनु घोर अंधार॥[13]

इस दुनिया में लाखों सूरज, लाखों चन्द्रमा चढ़ जायें, बाहर प्रकाश हो जायेगा, मगर आँखें बन्द करो तो अन्दर अँधेरा है। कहते हैं, इतना प्रकाश हो जाने पर भी अगर गुरु नहीं मिले तो कुछ भी नहीं। उनमें ताकत है कि वे अपनी कमाई देकर लाखों-करोड़ों जीवों को सचखण्ड ले जायें, लेकिन जब तक वे देह में हैं वे यह नहीं कहते कि मैं गुरु हूँ, बल्कि हमेशा नम्रता व विनयशीलता रखते हैं। मैं कहता हूँ कि अगर नम्रता और विनय कहीं है तो सन्तों में है। हम अपनी निन्दा नहीं सह सकते, झट लाल हो

जाते हैं। निन्दा सुनना, कठोर वचनों को सहना, यह सन्तों का ही काम है। क्या कहते हैं बाबा फ़रीद जी:

ताण होदे होइ निताणा॥[14]

यह तालीम सन्तों की है।

पुत्र कलत्र महा बिखिआ महि गुरि साचै लाइ तराई॥

फिर कहते हैं कि हम करने लायक़ ही क्या हैं? रात-दिन तो बेटे-बेटियों के गधे बने हुए हैं और हमेशा खाने-पीने में ही लगे रहते हैं, मगर सतगुरु ने कृपा करके बेटे-बेटियों में रहते हुओं को भी नाम देकर पार कर लिया। जो सन्त-सतगुरु होते हैं, वे हमसे बाल-बच्चे नहीं छुड़वाते, मज़हब नहीं छुड़वाते, काम-काज नहीं छुड़वाते, बल्कि कहते हैं कि वह जो नाम है वह तुम्हारे अन्दर है। तुम अपनी रूह को उसके साथ जोड़ दो।

अपणे जीअ तै आपि सम्हाले आपि लीए लड़ि लाई॥

कहते हैं कि हम करोड़ों युगों से इस दुनिया में आकर चौरासी लाख योनियों में फँसे हुए थे और गन्दे-गन्दे कर्म कर रहे थे कि मालिक ने ख़ुद आकर हमें सँभाल लिया और अपने गले से लगा लिया।

एक सत्संगी: हुज़ूर! क्या रूह वहाँ बेगुनाह थी, जहाँ से इसे लाया गया है?

महाराज जी: बेशक! ये रूहें अचेत पड़ी हुई थीं, मालिक ने इन्हें इस सृष्टि में भेज दिया। वैसे सहँस-दल-कँवल में भी रूहें हैं और सचखण्ड में भी रूहें हैं, मगर वे तरक़्क़ी नहीं कर सकतीं। जो सहँस-दल-कँवल की रूहें हैं, वे सहँस-दल-कँवल के लिए ही हैं, आगे नहीं जा सकतीं। जो त्रिकुटी की रूहें हैं वे त्रिकुटी के लिए हैं। इस तरह जो पारब्रह्म की रूहें हैं वे पारब्रह्म के लिए हैं। जो सोहं देश की रूहें हैं वे सोहं देश के लिए हैं और जो सचखण्ड की रूहें हैं, वे सचखण्ड के लिए ही हैं,

लेकिन आपके लिए क्या रियायत है? कि आप सीधे अनामी लोक में जा सकते हैं। आपको खुली छूट है। यह देश सबसे नीचा और सबसे गन्दा है, मगर यहाँ की रूहों को तरक़्क़ी का मौक़ा है। अब जब बहुत सारे ग़ैर-सत्संगी और पढ़े-लिखे यह सवाल करते हैं तो मैं जवाब देता हूँ कि जिसने आपको भेजा है उसी से पूछो। लेकिन, क्योंकि आप सत्संगी हैं, इस भेद को समझते हैं, इसलिये मैंने आपको जवाब दे दिया है।

साच धरम का बेड़ा बांधिआ भवजलु पारि पवाई ॥

कहते हैं, अकालपुरुष ने हरएक आदमी के अन्दर शब्द रखा हुआ है। हिन्दू, मुसलमान, सिक्ख, ईसाई, खत्री हो या ब्राह्मण, स्त्री हो या पुरुष, जिसे भी गुरु ने नाम दे दिया, वह उस शब्द को सुन सकता है। शब्द न संस्कृत है, न अरबी, न तुर्की, न फ़ारसी, न कोई और भाषा। सारी दुनिया आँखों से बाहर बैठी हुई है। जब गुरु नाम देता है, कहता है, चढ़ ऊपर। जब नाम की कमाई की, परदा खुल गया, आत्मा खण्डों-ब्रह्माण्डों पर चली गयी, जन्म-मरण ख़त्म हो गया। बात आसान है, पर अगर समझ में आ जाये। वेद-शास्त्र, ग्रन्थ-पोथियाँ सभी नाम या शब्द की महिमा करते हैं मगर उनमें नाम नहीं है, नाम आपके अन्दर है। अब कहते हैं कि सतगुरु ने हमें 'सच' और 'धर्म' के बेड़े यानी नाम के जहाज़ में बिठाकर संसार-समुद्र से पार करा दिया, वरना हमारी आत्मा रूपी नाव को ग़ोते खाते हुए करोड़ों युग हो गये थे, क्योंकि जो नाव मल्लाह के बग़ैर है वह कभी पार नहीं लगती, बल्कि अगर इधर से हवा आयी तो उधर चली गयी और उधर से हवा आयी तो इधर चली गयी।

अब गुरु अर्जुन साहिब कहते हैं कि हमारा सच या नाम का जहाज़ है और गुरु उसका मल्लाह है। जो महात्मा कहता है कि मैं संसार-समुद्र से पार हो चुका हूँ, इससे बढ़कर आप और क्या सबूत माँगते हो? किसकी गवाही माँगते हो? अगर कोई आदमी कहे कि मैंने कलकत्ता देखा है और वह कलकत्ता पहुँचाने का ज़िम्मा लेता है तो इससे अधिक आप और क्या

चाहते हो? सो, गुरु अर्जुन साहिब कहते हैं कि हमने अपने गुरु के बताये हुए रास्ते पर चलकर मालिक के दर्शन किये हैं। अब हमें भी चाहिये कि हम भी उसी रास्ते पर चलें जिस रास्ते पर चलकर वे पहुँचे हैं।

बेसुमार बेअंत सुआमी नानक बलि बलि जाई॥

कहते हैं, वह मालिक बेशुमार है, बेअन्त है, ख़ुद ख़ुदा है, वाहिद-हू ला-शरीक है। हम उस पर बार-बार क़ुर्बान जाते हैं, क्योंकि उसने हमें गुरु के ज़रिये अपने पास बुला लिया है और अपने साथ मिला लिया है।

अकाल मूरति अजूनी संभउ कलि अंधकार दीपाई॥

अब उस मालिक की महिमा करते हुए कहते हैं कि वह अकाल है यानी उसको मौत नहीं आती। जो त्रिलोकी का मालिक काल भगवान् है, उसको बनानेवाला और मारनेवाला भी वह मालिक है। फिर कहते हैं, वह 'अजूनी' (अयोनि) है, वह जन्म-मरण में नहीं आता। 'संभउ' या स्वयम्भू है, ख़ुद-मुख़्तार है, जो उसकी मर्ज़ी होती है, करता है। कलियुग में अन्धों को रोशनी देनेवाला अगर कोई है तो सतगुरु और शब्द है, और कोई नहीं। अब कहते हैं, गुरु की कृपा से जिसके अन्दर रोशनी हो गयी, वह परमात्मा से जा मिला। गुरु अर्जुन साहिब कहते हैं कि हम उन पर बार-बार क़ुर्बान जाते हैं। क्यों? क्योंकि इस कलियुग में घोर अँधेरा है, सारा संसार विषय-विकारों में, बेटे-बेटियों में, काम-धन्धों में इतना फँसा हुआ है कि दो मिनिट भी मालिक के ध्यान में नहीं बैठ सकता, मगर उसने हमें यहाँ से निकाल लिया है।

अंतरजामी जीअन का दाता देखत त्रिपति अघाई॥

कहते हैं, वह मालिक चोरों, ठगों, दुराचारियों, मतलब कि सबके अन्दर है। कोई जीव उससे ख़ाली नहीं, मगर उनको ख़बर नहीं कि वह हमारे अन्दर ही है। जिन्होंने नाम की कमाई करके अन्दर परदा खोल लिया,

उनको शान्ति आ गयी। उन्होंने अपना जन्म-मरण ख़त्म कर लिया। अब कहते हैं कि पूर्ण शान्ति, ख़ुशियाँ देनेवाला नाम है और वह अपने अन्दर तलाश करने पर ही मिलता है।

एकंकारु निरंजनु निरभउ सभ जलि थलि रहिआ समाई॥

कहते हैं, वह ताकत जो मुक्ति प्रदान करती है, उजाड़ों, पहाड़ों, नदियों, जंगलों, मतलब कि ज़र्रे-ज़र्रे में मौजूद है। जब हम सतगुरु के पास जाते हैं तो वह कहता है कि वह तेरे अन्दर है, अन्दर चल। जब हम उनकी हिदायत के मुताबिक़ अभ्यास करके अन्दर जाते हैं तो वह हमारी आत्मा को उसके साथ जोड़ देता है। 'अंजन' कहते हैं माया को। वह मालिक 'निरंजन' यानी माया से रहित है, निर्भय है, उसे किसी का डर नहीं, वह ख़ुद-मुख़्तार है। वह ज़र्रे-ज़र्रे में भरपूर है, सतगुरु ने हमें उसके साथ मिला दिया।

भगति दानु भगता कउ दीना हरि नानकु जाचै माई॥

कहते हैं कि जो-जो उसकी भक्ति करता है, वही उसका भक्त है और उसके साथ मिला हुआ है। उसने अपने भक्तों को भक्ति का दान दिया है। अब गुरु अर्जुन साहिब कहते हैं कि मैं भी तेरा मँगता हूँ, तू मुझे भी वही दान दे जो तूने अपने भक्तों को दिया है। क्या? अपनी भक्ति, अपना प्यार।

वाणी स्वामी जी महाराज

उपदेश सुरत शब्द के अभ्यास का

गुरु कहें खोल कर भाई। लग शब्द अनाहद जाई॥ 1॥
बिन शब्द उपाव न दूजा। काया का छुटे न कूज़ा॥ 2॥
घर में घर गुरु दिखलावें। धुन शब्द पाँच बतलावें॥ 3॥
धुन में अब सुरत लगाओ। इस घर से उस घर जाओ॥ 4॥
वह घर है अगम अपारा। दसवें के पार निहारा॥ 5॥
दस द्वारा घट चढ़ खोलो। सत शब्द अधर पै तोलो॥ 6॥
बिन मेहर गुरू नहिं पावे। बिन शब्द हाथ नहिं आवे॥ 7॥
सुर्त खैंच चढ़ावो गगनी। धुन शब्द सुनो यह करनी॥ 8॥
मन चंचल थिर न रहावे। चित निर्मल कस होय आवे॥ 9॥
सुर्त शब्द कमाई करना। सब जतन दूर अब धरना॥ 10॥
निश्चय दृढ़ इस पर धरना। आलस कर कभी न फिरना॥ 11॥
यह सार सार सब गाया। संतन मत भाख सुनाया॥ 12॥
राधास्वामी भेद लखाया। सुन मान सार समझाया॥ 13॥[1]

सत्संग के बचन

गुरु कहें खोल कर भाई। लग शब्द अनाहद जाई॥

भेड़िए, गीदड़ों आदि से बचाने के लिए भेड़ों के बाड़े के इर्द-गिर्द काँटे होते हैं या और कई तरीक़े अपनाये जाते हैं। अगर भेड़ों के बाड़े को आग

लग जाये, लोग कोशिश करें कि ये जलने से बच जायें और अगर वे लौट-लौट कर जलती हैं तो फिर क़ुसूर किसका है? क़ुसूर उनका अपना है। इसी तरह सन्त, वली, महात्मा हमें पुकार-पुकार कर कहते हैं कि यह देश तुम्हारा देश नहीं, यह मन और माया का देश है। चौरासी लाख योनियों में अगर सुख है तो मनुष्य-जन्म में, बाक़ी सभी जन्मों में दुःख है। हज़ारों गायें रोज़ ज़िबह (मारी) होती हैं, लाखों बकरे रोज़ ज़िबह होते हैं, करोड़ों मुर्ग़ियाँ रोज़ ज़िबह होती हैं। वे भी किसी वक़्त हमारे जैसे आदमी थे, बल्कि हमसे भी अच्छे होंगे, सेठ-साहूकार रहे होंगे, पर खोटे कर्मों के कारण भेड़-बकरियाँ बने हुए हैं। सन्त कहते हैं कि तू सुखी होना चाहता है तो आ हमारे साथ, अन्दर चल! यह क़ौम तेरी क़ौम नहीं, यह मज़हब तेरा मज़हब नहीं, यह देश तेरा देश नहीं। तेरा देश सचखण्ड, मक़ामे-हक़्क़ है। तेरी क़ौम सतनाम, तेरा मज़हब सतपुरुष है, मगर जिस तरह मोरी के कीड़े बाग़ की हवा को पसन्द नहीं करते, इसी तरह हम भी लौट-लौट कर इस गन्दे देश में रहना चाहते हैं। सन्त कहते हैं कि आओ! तुम्हें सचखण्ड ले चलें, लेकिन हम जाने को तैयार नहीं। हाँ, अगर कोई यह कहे कि अमेरिका में ज़मीन मुफ़्त मिलती है तो हम फ़ौरन घर-बार छोड़कर जाने के लिये तैयार हो जायेंगे।

जो ताकत सारी दुनिया को पैदा करती है, पालती है, उसे शब्द कहते हैं। मैंने पहले भी कई सत्संगों में बयान किया है कि शब्द दो क़िस्म का है—एक वर्णात्मक और दूसरा धुनात्मक। जो लिखा जाये, पढ़ा जाये, बोला जाये, चाहे वह किसी भी भाषा का हो, अरबी हो, फ़ारसी हो या तुर्की, वह वर्णात्मक है। यह चार क़िस्म का है—परा, पश्यंती, मध्यमा, बैखरी। पहला वह जो मन की सूक्ष्म वृत्ति के ज़रिये योगी-जन नाभि में हिलोर उठाते हैं, दूसरा वह जो मन के ज़रिये हृदय में बोला जाता है, तीसरा वह जो मन के ज़रिये कण्ठ में धीरे-धीरे बोला जाता है और चौथा वह जो ज़बान से बोला जाता है। ये चारों क़िस्म के शब्द वर्णात्मक हैं। जिस शब्द की महिमा गुरु नानक साहिब, कबीर साहिब, स्वामी जी महाराज, कई और कामिल फ़क़ीर और इसलाम धर्म को माननेवाले करते हैं, वह

इन चारों से परे है। वह सारी दुनिया को पैदा करता है, वह सबकी जानों की जान है। वह हिन्दुओं, मुसलमानों और दूसरे धर्मों, सबके अन्दर है, लेकिन आँखों के पीछे परदा लगा हुआ है! यह सारी उम्र बाहर ही बाहर रहा, न परदा खोला, न अन्दर गया, न सुरत शब्द के साथ जुड़ी, न मुक्ति हुई। जो सन्तों की राह है, वह सभी के लिए एक है, हिन्दू होकर जाओ, मुसलमान होकर जाओ या ईसाई होकर जाओ। वह कब मिलता है? जब हम अपनी आत्मा को तन और मन से ऊपर ले जायें। गुरु राम दास जी कहते हैं:

नउ दरवाज नवे दर फीके रसु अंम्रितु दसवे चुईजै॥[2]

हमारे नौ दरवाज़े हैं—दो आँखें, दो कान, दो नाक के सूराख़, मुँह वग़ैरह। नौ दरवाज़े छोड़कर दसवें में जाओ। वहाँ जो शब्द है, वह धुनात्मक है। वह धुनात्मक यानी लिखने, पढ़ने, बोलने में आनेवाला नहीं है। जब हम किसी महात्मा से राह लेकर अन्दर चढ़ें तो आत्मा महसूस करती है। गुरु नानक साहिब कहते हैं:

सबदे धरती सबदे आगास।

शब्द ने धरती बनायी है, शब्द ने ही आकाश बनाया है।

सबदे सबद भया परगास॥

जो कुछ बना है, शब्द ने बनाया है, बल्कि यह प्रकाश भी उसी का है।

सगली सृष्टि सबद के पाछे।

सबकुछ उसके आसरे है। अब शिष्य पूछता है कि जिस शब्द की आप तारीफ़ कर रहे हो, वह कहाँ है? तो गुरु नानक साहिब कहते हैं:

नानक सबद घटे घटि आछे॥[3]

शब्द सबके अन्दर है, चोरों, ठगों, बदमाशों के भी अन्दर है, वे बाहर बैठे हुए हैं, उन्हें कोई फ़ायदा नहीं। सभी मज़हबी किताबों में शब्द की महिमा भरी पड़ी है, पर शब्द नहीं। शब्द आपके अन्दर है। अब स्वामी जी महाराज कहते हैं कि तू अपनी आत्मा को उस शब्द के साथ जोड़ दे। अगर तू उसके साथ आत्मा को जोड़ देगा तो तुझे सुख क्यों नहीं मिलेगा। जो बाहर के बाजे हैं, वे घण्टे दो घण्टे बजकर बन्द हो जाते हैं, जो आपके अन्दर है, वह कभी बन्द नहीं होता। अनाहद का अर्थ है जिसकी कोई हद न हो। वह शब्द, वह कलामे-इलाही है, वह अखण्ड है, सच्चा कीर्तन, सच्ची गुरुबाणी है, मगर, क्योंकि मोरी के कीड़ों को मोरी प्यारी है, इसी तरह हमारा मन भी, अन्दर कीर्तन होते हुए भी इस दुनिया में जज़्ब हो गया है। अब हम इस देश से निकलना पसन्द नहीं करते। हमारा बड़े से बड़ा कोई दुश्मन है तो मन है। क्या हिन्दू, क्या मुसलमान, क्या ईसाई, जितने महात्मा अन्दर गये, सभी होका देते हैं कि अन्दर चलो, मगर हमारा मन अन्दर नहीं जाने देता।

बिन शब्द उपाव न दूजा। काया का छुटे न कूज़ा॥

हम जब से दुनिया में आये हैं, हर जन्म में तन और मन का पिंजरा मिलता रहा है। आदमी हैं तन-मन साथ है, बैल हैं तन-मन साथ है, भूत-प्रेत हैं तन-मन साथ है। हुज़ूर स्वामी जी महाराज कहते हैं कि अगर तू नाम जपेगा, तेरा तन-मन का पिंजरा टूट जायेगा, नहीं तो हर जन्म में तन-मन के पिंजरे की क़ैद है। अब कहते हैं कि यह पिंजरा बिना शब्द के नाश नहीं होता। बिना नाम के इस दुनिया में मुक्ति का कोई वसीला या साधन नहीं। करोड़ों किताबें, करोड़ों ग्रन्थ, वेद-शास्त्र पढ़ लो, करोड़ों योग-अभ्यास कर लो, जब तक आत्मा अन्दर न जाये, परदा न खुले, मालिक नहीं मिलता। एक ही दवा है और कोई दवा सारे जहान में नहीं। अगर हिन्दुओं ने खायी है तो यही, अगर मुसलमानों ने खायी है तो भी यही। पैसा ख़र्च नहीं होता। अब सन्त कहते हैं कि अगर तू हमारे कहे

अनुसार अन्दर जाये, तेरे अन्दर खण्ड-ब्रह्माण्ड हैं, कुल-मालिक भी तेरे अन्दर है, तू उन्हें देख। सारे वेद-शास्त्र कहते हैं कि मालिक तेरे अन्दर है, लेकिन हमारे खोटे कर्मों के कारण मन मैला हो गया है। यह वेद-शास्त्रों, सन्तों, किसी पर यक़ीन ही नहीं करता, न ही अन्दर जाता है। कूज़ा कहते हैं बर्तन को। करोड़ों प्रलय-महाप्रलय हो गयीं, यह तन-मन का कूज़ा हमारे साथ है। चाहे किसी योनि में भी जाओ, स्वर्गों में या नरकों में जाओ, तन-मन साथ है। करोड़ों जन्म हो गये हमारी इस जेलख़ाने से रिहाई नहीं हुई। सन्त कहते हैं कि तुम्हारे अन्दर नाम है जो जन्म-मरण ख़त्म करवाता है। अब यह दवाई तुम्हारे अन्दर है, बाहर से कोई चीज़ नहीं लानी। हमारे वेद-शास्त्र कहते हैं कि वह हमारे अन्दर है। वेद-शास्त्रों में बज़ाते-ख़ुद वह चीज़ नहीं। जिस तरह साहूकार की बही में रुपये नहीं होते, बही तो केवल रुपयों का ब्योरा बताती है। सभी यही कहते हैं, पर नतीजा क्या है? वही ढाक के तीन पात। नतीजा कुछ नहीं निकलता! सारी उम्र धर्म-ग्रन्थ पढ़ते रहे मगर तोते के समान। 'राम-राम' कहते रहे, बना कुछ नहीं। सन्त कहते हैं कि आओ! अन्दर चलो। तुम्हारे अन्दर करोड़ों ख़ुशियाँ, करोड़ों शान्तियाँ हैं, मगर हम अन्दर नहीं जाते, फिर हमारा उपाय क्या है? जब तक नाम की कमाई न की जाये, हमारी आत्मा मन के पिंजरे से आज़ाद नहीं होती।

घर में घर गुरु दिखलावें। धुन शब्द पाँच बतलावें॥

जो यह शरीर है, तेरी आत्मा इसमें रहती है। यह हमेशा रहने की जगह नहीं। यह किराये का मकान है। तुझसे छीन लिया जायेगा। सब इसे छोड़ देते हैं, हमें भी छोड़ देना है। सन्त कहते हैं कि इस घर से होकर उस घर में चला जा। यह घर रहनेवाला नहीं। अगर इस घर को छोड़कर उस घर में चला जाये तो तुझे हमेशा के लिए सुख हो जाये। वह लाफ़ानी है। वहाँ पहुँचकर फिर न आना है, न जाना है। जब वे सन्त हमसे कोई तनख़्वाह नहीं लेते, मज़दूरी नहीं लेते, वे कहते हैं कि आओ! तुम्हें ले

चलें। फिर भी हम न जायें तो कितने अफ़सोस की बात है! वे कहते हैं कि ऐ पुरुष! तेरे अन्दर पाँच नौबतें, पाँच कलमे, पाँच शब्द हो रहे हैं। तू अपनी आत्मा को उन कलमों के साथ जोड़ दे। पाँच शब्द का भेद ही शम्स तब्रेज़, मौलाना रूम, मदन दास, ग़रीब दास, ख़्वाजा हाफ़िज़ का था। अन्य मुसलमान फ़क़ीर, जो भी मालिक से मिले हैं, पाँच शब्द के ज़रिये ही मिले हैं। आप अनंदु साहिब में रोज़ पढ़ते हो:

वाजे पंच सबद तितु घरि सभागै॥
घरि सभागै सबद वाजे कला जितु घरि धारीआ॥
पंच दूत तुधु वसि कीते कालु कंटकु मारिआ॥[4]

जब तू शब्द की लज़्ज़त लेगा तो पाँच दूत—काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार—क़ाबू में आ जायेंगे और जो काल की सीमा है, तू उससे पार हो जायेगा। बेणी जी कहते हैं:

पंच सबद निरमाइल बाजे॥ ढुलके चवर संख घन गाजे।॥[5]

कि पाँच शब्द इसके अन्दर हो रहे हैं। कबीर साहिब कहते हैं:

पंचे सबद अनाहद बाजे संगे सारिंगपानी॥
कबीर दास तेरी आरती कीनी निरंकार निरबानी॥[6]

इसके अन्दर पाँच शब्द बज रहे हैं। मौलाना रूम भी यही कहते हैं:

ब हफ़्तम चर्ख़ नौबत पंज दारी,
चूँ ख़ैमा ज़ि शश जिहत बरकंदा बाशी।[7]

जब तू यहाँ दोनों आँखों तक जायेगा, वहाँ पहली नौबत शुरू होगी। सचखण्ड तक पाँचों मुकम्मल (पूर्ण) हो जायेंगी। फिर कहते हैं:

आँ पादशाहे-आअज़म दर बस्ता बूद मुहकम।
पोशीदा दल्क़े-आदम यानी किह् बर दर आमद।[8]

उस ख़ुदा ने आँखों के पीछे परदा लगाकर हमें बाहर निकाल दिया है। कहते हैं, फिर वह दरवाज़ा किस तरह खोलता है? वह आदमी का चोला पहनकर, उपदेश देकर दरवाज़ा खोलता है। वह क्या दवा देता है?

> ख़ामोश ओ पंज नौबत बिशनौ ज़ि आसमाने,
> क-आँ आसमाने-बैरूँ ज़ां हफ़्त ओ ई शश आमद।[१]

तेरे अन्दर पाँच शब्द बज रहे हैं। यही कई मुसलमान फ़क़ीर कहते हैं। यह नहीं कि हिन्दू गये हैं, मुसलमान नहीं गये। नहीं, सब गये हैं। एक ही नियम है, जो युगों-युगों से चला आया है और चलता रहेगा। सभी गुरु, सभी कामिल फ़क़ीर, महात्मा कहते हैं कि तेरे घट में पाँच शब्द हैं, बाहर तलाश न कर, अन्दर जा, परदा खोल।

धुन में अब सुरत लगाओ। इस घर से उस घर जाओ॥

यह दुनिया हमारा घर नहीं, यह तो सारा मन-माया का देश है। हमारा घर सचखण्ड, सतनाम है। हम उस समुद्र की बूँद हैं।कहते हैं, इस वजूद में अभ्यास करके वहाँ पहुँच जा। वह न प्रलय में ढहता है, न महाप्रलय में। इसलिए उसका नाम सतनाम है। आसान से आसान रास्ता है। न काम-काज का हर्ज होता है, न क़ौम का, न मज़हब का! नाम में कशिश है, लज़्ज़त है, अगर आप अपनी आत्मा को उसके साथ जोड़ दो तो वह ख़ुद-बख़ुद खींच लेगा और आपको वहाँ ले जायेगा जो आपका असली घर है, और किसी साधन की ज़रूरत नहीं। अब सवाल पैदा हुआ कि वह घर कैसा है?

वह घर है अगम अपारा। दसवें के पार निहारा॥

कहते हैं कि वह घर अगम है, अपार है, बेअन्त है, ला-इन्तिहा है, लाफ़ानी है। न कभी जन्म लिया, न कभी मरा, न कभी आया, न कभी गया। है आपके अन्दर, लेकिन मिलता कब है? जब आप नौ दरवाज़े

छोड़कर दसवीं गली में चढ़ो। वह नाम वहाँ हो रहा है। सारी किताबें कहती हैं कि वह आपके अन्दर है, बाहर नहीं। आँखों तक कान वग़ैरह, शरीर के नौ दरवाज़े हैं। नौ दरवाज़ों को बन्द करके दसवीं गली खोलो, जहाँ आपको हमेशा रहना है। यहाँ हमेशा नहीं रहना। फिर भी हम ख़याल नहीं करते कि वह कैसा है। गुरु अर्जुन देव जी कहते हैं:

जो घरु छडि गवावणा सो लगा मन माहि ॥

जिस घर को छोड़ देना है, उस घर में तू बैठा हुआ है, उस घर के साथ प्रीत लगायी हुई है।

जिथै जाइ तुधु वरतणा तिस की चिंता नाहि ॥[10]

जिस घर में तुझे हमेशा रहना है, उसकी कोई फ़िक्र ही नहीं यानी तू अज्ञान के अन्धकार में पड़ा हुआ है।

दस द्वारा घट चढ़ खोलो। सत शब्द अधर पै तोलो ॥

कहते हैं कि जब दसवाँ द्वार खोलोगे, अन्दर प्यारी से प्यारी रागिनी, प्यारे से प्यारा शब्द हो रहा है। घट का अर्थ है घड़ा। यह जो हमारा सिर है, यह उलटा घड़ा है। जब ऊपर जाओ, शब्द धुनकारें दे रहा है, उसे सुनो। जितनी भाषाएँ हैं, सब फ़ना (नाशवान्) हैं। यह जो हम और आप बोलते हैं, यह भी फ़ना है। वह लाफ़ानी है, कभी फ़ना नहीं होता, कभी बन्द नहीं होता। हर वक़्त जारी है। उसे आकाशवाणी, कलामे-इलाही और नाद कहते हैं। वह लफ़्ज़ नहीं। अगर लफ़्ज़ नाम हों तो गुरु के पास जाने की क्या ज़रूरत है? कहते हैं नौ दरवाज़े ख़ाली करके, अन्दर चढ़कर दसवीं गली में से होकर दसवें द्वार यानी पारब्रह्म में आ जाओ। फिर तुम्हें पता लगेगा कि तुम कौन हो, तुम्हारा मालिक कौन है, मतलब कि तुम्हें जन्मों-जन्मों की ख़बर हो जायेगी।

बिन मेहर गुरू नहिं पावे। बिन शब्द हाथ नहिं आवे॥

वह शब्द हरएक आदमी के अन्दर है, चोरों, ठगों, बदमाशों, सभी के अन्दर है, मगर जब तक कोई रूहानी मंज़िलों पर जानेवाला गुरु नहीं मिलता, राह नहीं मिलती। ऋषियों-मुनियों ने लाखों वर्ष बाहर ठोकरें खायी हैं। क्या गुरु की ज़रूरत नहीं? गुरु के बिना राह नहीं मिलती। विश्वामित्र ने साठ हज़ार साल तपस्या की, मेनका अप्सरा ने आकर शकुन्तला पैदा कर दी, जो शकुन्तला नाटक आप देखते हो। पराशर जी पूर्ण योगी होकर घर लौट रहे थे, रास्ते में मछुआरे की लड़की पर मोहित हो गये। नारद सभी भक्तों में शिरोमणि भक्त थे। एक कन्या के स्वयंवर में गये, डोल गये और मन चलायमान हो गया। ऋषियों-मुनियों ने हज़ारों साल लगाये, मगर राह न मिली। बग़ैर गुरु के हज़ारों साल ठोकरें खाओ, वह नहीं मिलता। बिना शब्द मुक्ति नहीं, बिना शब्द रूह का मालिक से विसाल नहीं होता। गुरु अंगद देव जी कहते हैं:

> जे सउ चंदा उगवहि सूरज चड़हि हजार॥
> एते चानण होदिआं गुर बिनु घोर अंधार॥[11]

इस दुनिया में हज़ारों सूरज, चाँद चढ़ जायें, यहाँ रोशनी हो जायेगी, लेकिन आँखें बन्द करो तो अन्धे का अन्धा है।

सुर्त खैंच चढ़ावो गगनी। धुन शब्द सुनो यह करनी॥

जब हम किसी महात्मा के पास जाते हैं, उससे पूछते हैं कि किस राह से अन्दर जायें? वह कहता है कि दसवीं गली खोलकर अन्दर रूह को ले जाओ, वहाँ तुम्हें पाँच शब्द धुनकारें देते मिलेंगे। वह सीधी सड़क है, पूछने की ज़रूरत नहीं।

जिस तरह हम कहीं अँधेरी रात के समय उजाड़ जंगल में रास्ता भूल गये हों तो हम क्या करते हैं? चुपचाप सुनते हैं कि कहीं से आदमियों के बोलने की आवाज़ आती हो, कहीं कुत्तों के भौंकने की या मुर्ग़ों के बाँग

की या रेलगाड़ी की इंजन की सीटी की आवाज़ या कोई और आवाज़। हम उस आवाज़ को पकड़कर नज़दीक के किसी गाँव में पहुँच जाते हैं और वहाँ से रास्ता पूछकर अपने घर चले जाते हैं। इसी तरह सन्त कहते हैं कि तू अपनी रूह को उस शब्द के साथ जोड़ दे यानी जिधर से आवाज़ आती है, उसके पीछे-पीछे चला जा, पूछने की ज़रूरत नहीं। न घर-बार छोड़ने की ज़रूरत है, न मज़हब छोड़ने की ज़रूरत है। मैं कहता हूँ कि दुनिया को छोड़कर भजन करना बहादुरी नहीं। दुनिया में रहते हुए नाम जपना है, यह बहादुरी है। यही गुरु नानक साहिब ने योगियों को बताया:

> जैसे जल महि कमलु निरालमु मुरगाई नै साणे॥
> सुरति सबदि भव सागरु तरीऐ नानक नामु वखाणे॥[12]

हे योगियो! अगर संसार-समुद्र से तरना है तो अपनी सुरत को शब्द के साथ जोड़ दो।

मन चंचल थिर न रहावे। चित निर्मल कस होय आवे॥

जब तक प्रेम न हो, प्यार न हो, सत्संग न हो, आत्मा शब्द को पकड़ती ही नहीं। क्यों? क्योंकि इसके साथ मलिन मन है। इस दुनिया में हमारा कोई दुश्मन नहीं, अगर है तो मन है। गुरु अमर दास जी कहते हैं:

> मन ही नालि झगड़ा मन ही नालि सथ ...॥[13]

अगर हमें किसी ने मालिक से जुदा किया है तो मन ने। हमारा दुश्मन कौन है? मन! उसने हमसे हीरे-जवाहरात छिपाकर हमें विषय-विकारों में भुला दिया है। हम सन्तों के पास जाते हैं, कामिल फ़क़ीरों के वचन सुनते हैं, पर कभी मानते हैं? इस कान में पड़ा, उस कान से निकल गया। फिर शिकायत करते हैं कि रूह नहीं चढ़ती, मन नहीं लगता। हम मन का कहा मानते हैं, गुरु का कहा नहीं मानते। जो हमें दुनिया से निकालता है,

उसका कहा नहीं मानते। अगर मन झूठ भी कह दे तो भी उसका कहा मानते हैं। महात्माओं ने इसे बड़ी मुश्किल से वश में किया है। थोड़ी मेहनत से यह वश में नहीं आता। एक कहानी है कि एक मुसलमान फ़क़ीर था, एक दिन भजन में उसका मन न लगा, नाम की लज़्ज़त नहीं आयी। कहता है कि तुझे पूरा साल गर्म पानी पिलाऊँगा, फिर कहीं जाकर मुश्किल से लगा। हम थोड़ी देर बैठकर उदास हो जाते हैं, भजन छोड़कर उठ बैठते हैं।

एक सत्संगी: हुज़ूर! जब तक आप दया न करो, मन लगेगा ही नहीं।

महाराज जी: मैं तो कहता हूँ कि आप भजन करो। आप ख़ुद तवज्जुह नहीं देते। जो महात्मा हमसे कौड़ी नहीं लेता और हमारा बोझ भी उठाता है मगर ज़रा भी नहीं कहता कि मैंने तुम्हारे लिए क्या-क्या किया, उजाड़ों-पहाड़ों में साथ है, मौत के वक़्त सामने आ खड़ा होता है, इससे बड़ी दया क्या हो सकती है? अगर हम दाता के घर न पहुँचें तो मिलेगा क्या? कुछ नहीं! मैं कहता हूँ, करके देखो, अगर अन्दर न आये तो आकर मुझे पकड़ो। मैं ज़िम्मेदार हूँ। जब आप अन्दर जाओ, सतगुरु को प्रत्यक्ष करो, नौ दरवाज़े छोड़कर जीते-जी मरो, वह तो दोनों हाथों में लिये खड़ा है। सन्त-महात्मा दात देने के लिए आते हैं, मगर हमारे खोटे भाग्य कि हम लेते नहीं।

एक सत्संगी: महाराज जी! जो कुछ करना है, आपको ही करना है।

महाराज जी: आप अपने ऊपर बोझ नहीं लेते, गुरु पर डालते हो, यह ठीक नहीं। मैं कहता हूँ, जब वे समझाते हैं कि आ अन्दर चल! यह अन्दर न जाये, इसका अपना क़ुसूर है। एक महात्मा थे, एक आदमी उनके पास जाया करता था। एक दिन कहता है कि महात्मा जी! जब आप चढ़ाई करने लगें तो मेरे लिये भी दो गज़ जगह रख लेना यानी मुझे भी साथ ले जाना। जब महात्मा के चोला छोड़ने का वक़्त आया तो उन्होंने उसे बुलाकर कहा, "भाई, तू भी तैयार हो जा।" कहता है, "मेरे छोटे-छोटे बाल-बच्चे हैं, मैं अभी नहीं जाता।" दुनिया को छोड़कर

मालिक से मिलना बड़ा मुश्किल है। इसी तरह एक और कहानी है। एक बुढ़िया थी, उसकी इकलौती जवान लड़की थी। इत्तफ़ाक़ से वह लड़की सख़्त बीमार हो गयी। बहुतेरा इलाज किया मगर फ़ायदा न हुआ। बुढ़िया कहने लगी कि परमात्मा! इसकी जगह मैं मर जाऊँ, यह बच जाये। मैं बूढ़ी हूँ, दुनिया में बहुत कुछ देख चुकी हूँ, यह जवान है, यह न मरे। बार-बार वह यही कहती। एक बार कहीं बाहर का दरवाज़ा खुला रह गया। एक गाय कहीं से छूटकर अन्दर आ गयी, रास्ते में एक देग पड़ी हुई थी। गाय ने खाने के लिए उसमें मुँह डाला, उसके सींग फँस गये, लगी घबराकर इधर-उधर दौड़ने। अब देग का काला हिस्सा सामने था। जब उसने दो-चार चक्कर लगाये तो बुढ़िया डर गयी, समझा कि मौत का फ़रिश्ता आ गया। कहने लगी, ''मैं तो बूढ़ी हूँ, लड़की वह पड़ी है। उसे ले जा!''

यह बाहर से बातें करता है, अन्दर नहीं जाता। जब तक अन्दर न जाये, मिले क्या? कहते हैं, मन मैला है, बेईमान है, हमारा दुश्मन है, हमें अन्दर नहीं जाने देता। हम इसके साथ प्यार किये बैठे हैं। जो दुश्मन के साथ प्यार करे, वह सुखी कब हो सकता है? मन को वश में करने की अगर कोई दवा है तो एक ही है। चाहे दुनिया की करोड़ों लज़्ज़तें दे दो, मन क़ाबू में नहीं आता। मन लज़्ज़त का आशिक़ है। इसके अन्दर अमृत बरसता है। गुरु अर्जुन साहिब फ़रमाते हैं, 'झिंमि झिंमि अंम्रितु वरसदा॥'[14] जब अमृत पियेगा, क़ाबू में आ जायेगा। इसलाम धर्म को माननेवाले और अन्य कामिल फ़क़ीरों ने भी वश में किया है तो इसी दवा के ज़रिये। हम सभी मन का कहा मानते हैं, सारा जहान मन के अधीन है। मन ज़बरदस्ती अपना हुक्म मनवा लेता है। मन बड़े-बड़े महात्माओं को गिरा देता है। कुछ न पूछो! यह बड़े-बड़े योगी-योगीश्वरों को खा गया।

सुर्त शब्द कमाई करना। सब जतन दूर अब धरना॥

अब स्वामी जी महाराज कहते हैं कि और सभी उपायों को छोड़कर आत्मा को शब्द के साथ जोड़ दो। मगर लोगों का क्या हाल है? कि

हाथ माला फेरता है और मन बाहर दौड़ता फिरता है। यही कबीर साहिब कहते हैं:

> माला तौ कर में फिरै, जीभ फिरै मुख मांहि।
> मनुवा तौ चहुँ दिशि फिरै, यह तो सुमिरन नांहि॥[15]

कि हाथ तो माला फेरता है, मन बाहर भटकता फिरता है, यह सिमरन नहीं। जब शिकारी बन्दूक़ से निशाना साधता है तो पिछला दीदबान या 'बैकसाइट', 'फोरसाइट' (बन्दूक़ का निशाना साधने का हिस्सा) या अगली मक्खी और निशाना, सबको एक सीध में रखकर मारता है। कबीर साहिब फिर कहते हैं:

> तन थिर मन थिर बचन थिर, सुरत निरत थिर होय।
> कह कबीर इस पलक को, कलप न पावै कोय॥[16]

जब आत्मा और मन को अन्दर रोककर कमाई करोगे तो परदा खुल जायेगा। आत्मा को शब्द के साथ जोड़ दो, यह सब कमाइयों की कमाई है।

निश्चय दृढ़ इस पर धरना। आलस कर कभी न फिरना॥

अगर भजन भी करो तो दिल पर बोझ लेकर न करो। प्रेम, प्यार और ख़ुशी के साथ अन्दर जाना चाहिए, अगर फ़र्ज़ ही पूरा करते हैं तो कोई फ़ायदा नहीं। फिर कहते हैं कि आलस्य नहीं करना चाहिए। जो कहते हैं कि मन नहीं मानता, मन माने या न माने, उनको चाहिए कि बैठें। रावलपिण्डी में एक बंगाली बाबू था, अच्छा अभ्यासी था। उससे पूछा कि बाबू! मन वश में आया? कहता है, "आया तो है, पर बड़ी मुश्किल से!" मैंने कहा, "किस तरह?" कहता है, "मेरा नियम था कि जब मैं नौकरी से शाम को घर आता, भजन में बैठ जाता। मैंने नौकर से कह रखा था कि मेरी रोटी पकाकर रख दिया कर और अपनी रोटी खाकर सो जाया

कर। जब तक अन्दर नाम की लज़्ज़त न आती, उठता नहीं था।'' यह भजन है, कोई खीर तो नहीं! मन के साथ लड़ाई करनी पड़ती है। कहता है, ''अब मन मेरे क़ाबू में है। तीन-तीन बजे तक रोटी नहीं खाता था, जब तक कि नाम की लज़्ज़त नहीं आती थी।'' हमें ग़फ़लत या आलस्य नहीं करना चाहिए, बल्कि कमाई करनी चाहिए। क्या कहते हैं गुरु अर्जुन साहिब:

आगाहा कू त्राघि पिछा फेरि न मुहडड़ा॥
नानक सिझि इवेहा वार बहुड़ि न होवी जनमड़ा॥[17]

अगर मन के साथ लड़ाई करनी है तो आगे क़दम बढ़ा, पीछे न हट और ऐसी लड़ाई लड़ कि फिर तू जन्म-मरण में आये ही नहीं, बल्कि आत्मा का परमात्मा से मिलाप हो जाये। कहते हैं, ग़फ़लत नहीं करनी चाहिए। पूरा विश्वास, पूरा यक़ीन होना चाहिए। अगर सतगुरु पर पूरा एतक़ाद (भरोसा) हो जाये तो और क्या चाहिए? पाप करने में बेशक आलस्य करो, लेकिन भजन के वक़्त आलस्य नहीं करना चाहिए।

यह सार सार सब गाया। संतन मत भाख सुनाया॥

अब स्वामी जी महाराज फ़रमाते हैं कि सभी सन्तों के मत का जो तत्त्व है, सार है, हमने निचोड़कर आपके सामने रख दिया है। जो सचखण्ड पहुँचे, सभी का तत्त्व और मत एक ही है। सार वस्तु क्या है? शब्द की कमाई।

राधास्वामी भेद लखाया। सुन मान सार समझाया॥

अब स्वामी जी महाराज कहते हैं कि हमने मालिक के देश जाने का भेद आपके सामने बयान कर दिया है। यह सबसे ऊँचा है और सबका सार है। शिष्य का धर्म है कि इसे मानकर ख़ूब मेहनत के साथ कमाई करे। अगर मान लोगे तो तुम्हारी मुक्ति हो जायेगी।

माझ महला 3

इसु गुफा महि अखुट भंडारा॥ तिसु विचि वसै हरि अलख अपारा॥
आपे गुपतु परगटु है आपे गुर सबदी आपु वंञावणिआ॥ 1॥
हउ वारी जीउ वारी अंम्रित नामु मंनि वसावणिआ॥
अंम्रित नामु महा रसु मीठा गुरमती अंम्रितु पीआवणिआ॥ 1॥ रहाउ॥
हउमै मारि बजर कपाट खुलाइआ॥ नामु अमोलकु गुर परसादी पाइआ॥
बिनु सबदै नामु न पाए कोई गुर किरपा मंनि वसावणिआ॥ 2॥
गुर गिआन अंजनु सचु नेत्री पाइआ॥ अंतरि चानणु अगिआनु अंधेरु गवाइआ॥
जोती जोति मिली मनु मानिआ हरि दरि सोभा पावणिआ॥ 3॥
सरीरहु भालणि को बाहरि जाए॥ नामु न लहै बहुतु वेगारि दुखु पाए॥
मनमुख अंधे सूझै नाही फिरि घिरि आइ गुरमुखि वथु पावणिआ॥ 4॥
गुर परसादी सचा हरि पाए॥ मनि तनि वेखै हउमै मैलु जाए॥
बैसि सुथानि सद हरि गुण गावै सचै सबदि समावणिआ॥ 5॥
नउ दर ठाके धावतु रहाए॥ दसवै निज घरि वासा पाए॥
ओथै अनहद सबद वजहि दिनु राती गुरमती सबदु सुणावणिआ॥ 6॥
बिनु सबदै अंतरि आनेरा॥ न वसतु लहै न चूकै फेरा॥
सतिगुर हथि कुंजी होरतु दरु खुलै नाही गुरु पूरै भागि मिलावणिआ॥ 7॥
गुपतु परगटु तूं सभनी थाई॥ गुर परसादी मिलि सोझी पाई॥
नानक नामु सलाहि सदा तूं गुरमुखि मंनि वसावणिआ॥ 8॥[1]

सत्संग के बचन

इसु गुफा महि अखुट भंडारा ॥ तिसु विचि वसै हरि अलख अपारा ॥

यह तीसरी पातशाही, श्री गुरु अमर दास जी महाराज की बाणी है। चूँकि आपको रूहानी दुनिया का काफ़ी तजुरबा था, तीर्थ-यात्राएँ, मूर्ति-पूजा, व्रत करने के बाद नाम मिला था, सत्तर साल की उम्र थी, नाम की क़द्र की। जितना शब्द का भेद श्री गुरु अमर दास जी की बाणी में है इतना और किसी गुरु की बाणी में नहीं। यों तो सभी गुरुओं ने एक ही मज़मून (विषय) लिया है, मगर इन्होंने 'शब्द' को ज़्यादा लिया है। इस तरह गुरु राम दास जी ने गुरु के प्यार को लिया है। कहते हैं कि यह शरीर आत्मा की गुफा, रहने की जगह है। इसके अन्दर अखुट भण्डार है। फिर कहते हैं कि इस शरीर के अन्दर बेशुमार ख़ज़ाने हैं, सारा ब्रह्माण्ड इसके अन्दर है। गुरु अमर दास जी कहते हैं:

> इसु काइआ अंदरि नउ खंड प्रिथमी हाट पटण बाजारा ॥
> . . . .
> काइआ अंदरि ब्रहमा बिसनु महेसा सभ ओपति जितु संसारा ॥ 2 ॥[2]

यहूदी कहते हैं कि ख़ुदा ने इनसान को अपनी शक्ल पर बनाया है और मुसलमान भी कहते हैं कि जो कुछ है, वह इनसान के अन्दर है। आलमे-सग़ीर (पिण्ड) आलमे-कबीर (ब्रह्माण्ड) की नक़ल है। पीपा साहिब कहते हैं:

> जो ब्रहमंडे सोई पिंडे जो खोजै सो पावै ॥
> पीपा प्रणवै परम ततु है सतिगुरु होइ लखावै ॥[3]

जितने भी महात्मा अन्दर गये हैं वे सभी इस बात का हवाला देते हैं कि ख़ज़ाने ही नहीं बल्कि ख़ुद परमात्मा भी इसके अन्दर है। जिसे भी

वह मिला है, अन्दर ही मिला है। जिसे भी मिलेगा, अन्दर ही मिलेगा। बाहर न किसी को मिला है, न मिलेगा।

शायद कोई यह कहे कि वह मालिक ज़र्रे-ज़र्रे में मौजूद है। ज़रूर है, मगर इस तरह है जिस तरह दूध में घी! दूध दिखायी देता है, घी दिखायी नहीं देता। अगर किसी ने दूध में से घी न निकाला हो और न ही निकलते हुए देखा हो तो वह कहेगा कि घी में पूड़ियाँ पकती हैं, दूध में पूड़ियाँ नहीं पकतीं। घी से हलवा बनता है, दूध से हलवा नहीं बनता। घी में नमक नहीं घुलता, दूध में नमक घुल जाता है। जब दूध का दही बनायें, दही को मथकर मक्खन निकालें और मक्खन को तपाकर घी बनायें, फिर वह कहेगा कि दूध में घी है। जिस तरह दूध में घी है और नज़र नहीं आता, इसी तरह वह मालिक ज़र्रे-ज़र्रे में मौजूद है, मगर दिखायी नहीं देता। जिस तरह यत्न करने से दूध में से घी निकलता है, इसी तरह जिन्होंने मेहनत करके अन्दर परदा खोल लिया, उन्होंने मालिक को देखा है। गुरु अर्जुन साहिब कहते हैं:

नानक से अखड़ीआ बिअंनि जिनी डिसंदो मा पिरी॥[4]

वे आँखें और हैं जिनसे कि परमात्मा दिखायी देता है। ये आँखें फ़ना हैं। जिस जगह ये पाँच चीज़ें यानी बिजली, लैम्प, सूरज, चन्द्रमा और सितारे न हों, वहाँ हम काम नहीं कर सकते। जब तक यह नौ दरवाज़ों को ख़ाली करके आँखों से ऊपर नहीं चढ़ता, इसे कुछ नहीं मिलता। यह अन्धा आया और अन्धा ही चला गया। गुरु अमर दास जी कहते हैं:

माइआधारी अति अंना बोला॥ सबदु न सुणई बहु रोल घचोला॥[5]

मनुष्य माया के पदार्थों में फँसा रहा। इसे पता नहीं कि यह अन्धा है, इसने वे आँखें पैदा ही नहीं कीं। यह बहरा भी है, इसके अन्दर के कान बन्द हैं। अन्दर अखण्ड कीर्तन हो रहा है जो कभी बन्द नहीं होता। क्या कहते हैं गुरु अमर दास जी:

कलि कीरति सबदु पछानु॥ एहा भगति चूकै अभिमानु॥[6]

तेरे अन्दर अखण्ड कीर्तन हो रहा है, अगर सुनेगा, जन्म-मरण ख़त्म हो जायेगा। हिन्दू, मुसलमान और दूसरे सभी धर्मों के लोगों के अन्दर यह कीर्तन हो रहा है। अगर वह कीर्तन न सुना तो बहरा आया और बहरा ही चला गया। गुरु अर्जुन साहिब कहते हैं:

अखंड कीरतनु तिनि भोजनु चूरा॥ कहु नानक जिसु सतिगुरु पूरा॥[7]

वह जो अलख है, लखा नहीं जाता, अपार है, अगम है, इसके अन्दर है। बाहर लाखों ठोकरें खाओ, नहीं मिलता है। वह जब भी मिलेगा, अन्दर से मिलेगा।

आपे गुपतु परगटु है आपे गुर सबदी आपु वंञावणिआ॥

हमें आँखों के पीछे परदा लगाकर बाहर निकाला हुआ है। हम सारी उम्र बाहर ही बाहर रहे। अब सवाल पैदा हुआ कि अगर उसे प्रकट करना हो, देखना हो तो हमें क्या कुछ इन्तज़ाम करना चाहिये? तो गुरु अमर दास जी कहते हैं कि दो चीज़ों की ज़रूरत है—एक गुरु और दूसरा शब्द। गुरु के बिना शब्द नहीं मिलता और शब्द के बिना मुक्ति नहीं होती। गुरु अमर दास जी कहते हैं:

बिनु गुर दाते कोइ न पाए। लख कोटी जे करम कमाए॥[8]

लाखों-करोड़ों ग्रन्थ पढ़ लो, मन अन्दर जाने नहीं देता। गुरु अंगद साहिब कहते हैं:

गुरु कुंजी पाहू निवलु मनु कोठा तनु छति॥
नानक गुर बिनु मन का ताकु न उघड़ै अवर न कुंजी हथि॥[9]

कुंजी गुरु के हाथ में है। जब यह उससे राह लेकर अपनी सुरत को नाम में जज़्ब या लीन करता है, अन्दर परदा खुल जाता है।

दुनिया का बहुत बड़ा हिस्सा पुराने महात्माओं, जिन्हें गुज़रे हज़ारों साल हो गये, उनकी टेक लेता है। इसमें शक नहीं कि उन्होंने इबादत की, खण्डों-ब्रह्माण्डों पर चढ़े, मालिक से मिले और मालिक का रूप हो गये। अगर उनको यहाँ भूतों की तरह ही फिरना था तो वे भजन क्यों करते? धन्वन्तरी और हकीम लुक़मान मुर्दे को ज़िन्दा कर देते थे, लेकिन अगर अभी किसी का लड़का बीमार हो जाये तो वे आकर उसका इलाज नहीं करेंगे, कोई मौजूदा डॉक्टर या हकीम ही करेगा। अगर कोई यह कहे कि अकबर बादशाह ही मेरे मुक़द्दमे का फ़ैसला करे, वह गुज़र चुका है, अब वह (अकबर) इंसाफ़ करने नहीं आयेगा, अब तो कोई मौजूदा 'मजिस्ट्रेट' ही उसका फ़ैसला करेगा। इसी तरह अगर कोई स्त्री यह कहे कि मुझे राजा विक्रमादित्य के साथ ही शादी करनी है तो यह नामुमकिन है। अगर उसे सन्तान पैदा करने की ख़्वाहिश है तो कोई वक़्त का पति ही चुनना पड़ेगा।

यह ज़रा ग़ौर से समझनेवाली बात है। क्या! वक़्त का हाकिम, वक़्त का हकीम या डॉक्टर, वक़्त का पति, वक़्त का महात्मा होना चाहिए। चाहे वे जो गुज़र गये, पूर्ण महात्मा थे, मगर अब वे आपको कोई फ़ायदा नहीं पहुँचा सकते। यहीं पर दुनिया के बहुत-से लोग ग़लती कर बैठते हैं। जो महात्मा हमारे सामने नहीं आते, उनका आसरा लेना या ध्यान करना अन्ध-विश्वास करना है। बहुत-से लोग अपनी ज़िन्दगी बरबाद कर लेते हैं। हालाँकि उन महात्माओं की वाणियाँ हमारे पास मौजूद हैं, मगर सिर्फ़ वाणियों या किताबों को पढ़कर सुरत अन्दर नहीं जा सकती। अमली तौर पर काम करने के लिए हमें कई सालों तक स्कूलों-कॉलेजों में रहना पड़ता है। वे काम किताबों को पढ़ने से नहीं आते। इसी तरह हमारी मज़हबी किताबों में रूहानी नज़ारों का ज़िक्र है, परमात्मा से मिलने का, परमात्मा की पूजा का ज़िक्र है, लेकिन ख़ुद परमात्मा उन किताबों में नहीं। अगर कोई मुकम्मल से मुकम्मल वेद है, शास्त्र है तो आदमी का शरीर है। आदमी का धर्म है कि पहले ख़ुद की खोज करे, अपने आप

की तहक़ीक़ात करे, अन्दर जाये, परदा खोले, किसी महात्मा से राह लेकर ऊपर चढ़े। जब गुरु से राह ले ली, फिर गुरु की हिदायत के मुताबिक़ अपने आप को शब्द में लवलीन करे, तब परदा खुलता है।

आम लोग बोलने को शब्द कहते हैं। यहाँ आकर बहुत-से लोग भूल कर बैठते हैं। शब्द दो क़िस्म का है—एक वर्णात्मक, दूसरा धुनात्मक। जो लिखा जाये, पढ़ा जाये, बोला जाये, चाहे वह किसी भी भाषा का हो, वर्णात्मक है। लेकिन जिस शब्द की महिमा गुरु अमर दास जी करते हैं वह न लिखने में आता है, न पढ़ने में और न बोलने में। वह कुल खण्डों-ब्रह्माण्डों के जानों की जान है। वह धुनात्मक है। जब तक वह नहीं मिलता, चाहे करोड़ों तीर्थ कर लो, वेद-शास्त्र पढ़ लो, मुक्ति नहीं होती। शब्द कहो या नाम, मुक्ति जब भी होगी, शब्द के साथ आत्मा को जोड़ने से ही होगी। यही अन्य महात्मा व मुसलमान फ़क़ीर भी कहते हैं।

हउ वारी जीउ वारी अंम्रित नामु मंनि वसावणिआ॥

अब गुरु साहिब कहते हैं कि हम बार-बार उस महात्मा पर क़ुर्बान जाते हैं जिसने अमृत रूपी नाम हमारे हृदय में डाल दिया। कहते हैं, चाहे स्त्री हो या पुरुष, किसी देश, किसी क़ौम, मज़हब का क्यों न हो, हरएक के अन्दर वह अमृत बरस रहा है। उस अमृत को पीकर रूह आज़ाद हो जाती है। जो लज़्ज़त उस अमृत की है, उसको ज़बान बयान नहीं कर सकती। अगर इसको सात विलायतों की बादशाहत भी मिल जाये तो भी इसको वह ख़ुशी प्राप्त नहीं होती जितनी कि उस वक़्त होती है, जब इनसान परदा खोलकर पहली मंज़िल पर जाकर अमृत पीता है। यह बाणी गुरु अमर दास जी की है, जिन्होंने उनको नाम दिया, वे उन पर क़ुर्बान जाते हैं। कहते हैं, हम बार-बार क़ुर्बान जाते हैं अपने गुरु पर, जिन्होंने अमृत रूपी नाम हमारे हृदय में डाल दिया।

अंम्रित नामु महा रसु मीठा गुरमती अंम्रितु पीआवणिआ॥

कहते हैं, वह अमृत इनसान के अन्दर है, अति मीठा, अति प्यारा है, जिसे पीकर काम, क्रोध, इन्द्रियाँ, मन, माया सब सो जाते हैं। है सबके पास, मगर कुंजी किसी के पास नहीं। गुरु कुंजी लगाये तभी अन्दर जा सकता है। गुरु नानक साहिब कहते हैं:

> सतिगुर जेवडु दाता को नही सभि सुणिअहु लोक सबाइआ॥
> . . . .
> बिनु सतिगुर किनै न पाइओ बिनु सतिगुर किनै न पाइआ॥
> सतिगुर विचि आपु रखिओनु करि परगटु आखि सुणाइआ॥[10]

बाणी कह रही है, बिना गुरु के कोई अन्दर नहीं जा सकता। हम कहते हैं कि गुरु की ज़रूरत नहीं। लैम्प के ऊपर अगर चिमनी नहीं, तो रोशनी पूरी नहीं। ग्रन्थ-पोथियों में नाम की महिमा है, नाम नहीं। यह चीज़ उनकी है जिन्होंने कमाई की, अन्दर गये, जो देखा, काग़ज़ों, ग्रन्थ-पोथियों में ले आये। गुरु साहिबान ने जो नज़ारे देखे, ग्रन्थ साहिब में ले आये। मुहम्मद साहिब ने जो देखा, क़ुरान मजीद में ले आये। ऋषि-मुनियों ने जो अन्दर देखा, वेदों में ले आये। नाम आपके अन्दर है, जब आप गुरु की मत लेकर, जो गुरु बताता है, उस पर अमल करोगे, आप भी अन्दर जाओगे तो वही नज़ारे आपके अन्दर भी आ जायेंगे।

हउमै मारि बजर कपाट खुलाइआ॥ नामु अमोलकु गुर परसादी पाइआ॥

कहते हैं, जब गुरु की कृपा से नौ दरवाज़ों से एकाग्र होकर अन्दर परदा खोला तो नाम की लज़्ज़त आई। उसका नतीजा क्या हुआ? काम, क्रोध वग़ैरह मर गये और अन्दर प्रकाश हो गया। अज्ञानता का अँधेरा नाश हो गया। कहते हैं, यह नाम की कमाई का फ़ायदा है। अब गुरु अमर दास जी कहते हैं कि मुझे यह चीज़ गुरु अंगद साहिब की कृपा से मिली है। जब आप गुरु की कृपा से अन्दर जाओगे तो आपको भी मिलेगी। अब

यह तालीम गुरु अमर दास जी की है। मिठाई की बातों से स्वाद नहीं आता, मिठाई खाने से स्वाद आता है। बस! जो बाणी कहती है उसके मुताबिक़ करो तो वह दौलत मिलेगी। अगर कमाई नहीं की तो ख़ाली आया और ख़ाली ही चला गया। अगर कर ली तो अन्दर अनमोल नाम प्रकट हो गया, शान्ति आ गयी।

बिनु सबदै नामु न पाए कोई गुर किरपा मंनि वसावणिआ॥

वह जो ताकत है, जिसे नाम कहते हैं, शब्द कहते हैं, वह नाम हर वक़्त हो रहा है। नाम लफ़्ज़ नहीं, वह अनबोली भाषा और अलिखित क़ानून है। वह न गुरुमुखी है, न अरबी, न फ़ारसी, न तुर्की, न हिन्दी, न संस्कृत, न अंग्रेज़ी और न ही कोई और भाषा। वह लिखने और पढ़ने में नहीं आता। अगर भाषा हो तो फिर मालिक की एक क़ौम वालों पर मेहरबानी और दूसरी क़ौम वालों के साथ ज़ुल्म हुआ। नहीं, यह नहीं, बल्कि किसी क़ौम, किसी मुल्क, किसी मज़हब का आदमी हो, नाम उसके अन्दर है। वह इसके लिए है। वह 'रब, रब' कहने से नहीं मिलता। जो ताकत अन्दर है, उसे नाम कहते हैं। सुखमनी साहिब में आप रोज़ पढ़ते हो:

नाम के धारे सगले जंत॥ नाम के धारे खंड ब्रहमंड॥[11]

वह नाम है, लफ़्ज़ नाम नहीं। जब तक सुरत शब्द के साथ नहीं जुड़ती, यह ख़ाली आया और ख़ाली ही चला गया। सारी दुनिया नाम से ख़ाली आयी और ख़ाली ही चली गयी। शब्द, गुरु की कृपा से मन में प्रकट होता है। जब हमने कमाई की, परदा खुल गया, अन्दर नाम प्रकट हो गया। गुरु अंगद साहिब कहते हैं:

अखी बाझहु वेखणा विणु कंना सुनणा॥

वह नाम इन आँखों से नहीं देखा जा सकता और न ही ये कान उसे सुन सकते हैं।

पैरा बाझहु चलणा विणु हथा करणा॥

वहाँ जाना है, मगर ये पैर नहीं जाते। काम करना है, मगर ये हाथ नहीं कर सकते।

जीभै बाझहु बोलणा इउ जीवत मरणा॥
नानक हुकमु पछाणि कै तउ खसमै मिलणा॥[12]

वहाँ यह ज़बान काम नहीं देती, वहाँ भाषा है नहीं, बग़ैर ज़बान के बोलना है, जीते-जी मरना है। यह जीते-जी कब मरता है? जब यहाँ दोनों आँखों तक आ जाये। अब आप ऐसे कितने आदमी देखते हो जो यहाँ तक पहुँचे हैं? कोई-कोई! नहीं तो दुनिया ख़ाली आयी और ख़ाली ही चली गयी।

गुर गिआन अंजनु सचु नेत्री पाइआ॥ अंतरि चानणु अगिआनु अंधेरु गवाइआ॥

आम विद्वान, ग्रन्थ-पोथियों को पढ़ने और उन पर विचार करने को ज्ञान कहते हैं, सच और झूठ के निर्णय को ज्ञान कहते हैं, मगर गुरु नानक साहिब इसे ज्ञान नहीं कहते, बल्कि कहते हैं:

गिआनु धिआनु धुनि जाणीऐ अकथु कहावै सोइ॥[13]

कौन-सी धुन? जो कहने में नहीं आ सकती और जो खण्डों-ब्रह्माण्डों के जानों की जान है। उसका नाम ज्ञान है, वह नाम है, उसमें कशिश है। जब आप यहाँ दोनों आँखों के बीच में ख़याल रखकर कमाई करोगे, पहले हाथ-पैर सो जायेंगे, आहिस्ता-आहिस्ता सारा शरीर सुन्न हो जायेगा। इन नौ दरवाज़ों में नाम नहीं। जब ऊपर चढ़ोगे तो नाम मिलेगा। यह प्रेम और प्यार का मार्ग है, बातों का मज़मून नहीं। दुनिया लफ़्ज़ों को जप-जप कर मर गयी, नाम न मिला। सो, जब रूह अन्दर गयी, परदा खोला, प्रकाश हो गया, रोशनी हो गयी। कहते हैं कि गुरु के ज्ञान के सुरमे और गुरु की मुहब्बत से रूह आँखों के पीछे, अन्दर आ गयी। बाहर जो कुछ दिखायी

दे रहा है, सारा अज्ञान है। इस ताकत को गुरु नानक साहिब 'आदि सचु जुगादि सचु'[14] कहते हैं, न कि सच बोलने को। जब यह मर गया तो सच फ़ना हो गया। सच कहाँ है? यह आगे कहते हैं:

जोती जोति मिली मनु मानिआ हरि दरि सोभा पावणिआ॥

ज्योति जोत में मिल गयी यानी बूँद समुद्र में मिल गयी। सबकुछ प्रत्यक्ष हो गया, मन मान गया। क्या कहते हैं कबीर साहिब:

कहि कबीर मनु मानिआ॥ मनु मानिआ तउ हरि जानिआ॥[15]

जब मन मान गया, परदा खुल गया। जब आत्मा सूरज, चन्द्रमा, तारों को लाँघकर सतगुरु के पास गयी, तो वह क्या कहता है, चलो ऊपर! आगे सहँस-दल-कँवल या तुरिया पद का मुक़ाम आ गया, वहाँ एक हज़ार बत्ती की जोत है, अजीब कैफ़ीयत है, अजीब नज़ारा है। जिसके नूर से वह देश रोशन है, वह जोत आग की नहीं, उसका नमूना दुनिया में ऋषि-मुनियों ने मन्दिरों में आटे की जोत बनाकर बताया है। वह जोत बिना बत्ती, बिना तेल के हर देश के हरएक इनसान के अन्दर जल रही है, वहाँ अमृत बरस रहा है। वहाँ पहुँचकर आत्मा को जो ख़ुशी नसीब होती है, वह बयान से बाहर है। तुरिया पद सूक्ष्म देश का मरकज़ (केन्द्र) है। वहाँ पहुँचकर आदमी ऊपर जाने के क़ाबिल होता है। फिर दर्जा-ब-दर्जा ऊपर जाता है। कहते हैं, जिस तरह बूँद समुद्र में मिलती है, इसी तरह आत्मा वहाँ अपने मालिक से मिलती है। यह पहली मंज़िल है, आगे चार मंज़िलें और ऊपर जाना है। यहाँ से सन्तमत का क, ख, ग शुरू होता है। यहाँ पहुँचकर मन क़ाबू में आ गया, इन्द्रियाँ क़ाबू में आ गयीं, यहाँ पर आत्मा को जो ख़ुशी होती है, बयान नहीं हो सकती।

सरीरहु भालणि को बाहरि जाए॥ नामु न लहै बहुतु वेगारि दुखु पाए॥

आपके अन्दर आपकी चीज़ है। जिसके घर में करोड़ रुपया दबा हो, वह कौड़ी-कौड़ी माँगता हुआ मर जाये तो क्या आप उसे अक़्लमन्द कहोगे?

कहते हैं कि यह दौलत आपके अन्दर है, बाहर नहीं। नाम इसके अन्दर है। बाहर जितनी भी मेहनत करोगे, फ़ायदा कुछ नहीं। अगर आप उसे बाहर ढूँढ़ो, वह नहीं मिलता। बाहर तो मादा ही मादा (स्थूल ही स्थूल) है, बाहर तो पत्थर और पानी है। अगर यह बाहर ढूँढ़ता है तो समझो कि यह अपनी उम्र बेफ़ायदा गँवाता है। इन्सान की ज़िन्दगी का एक-एक मिनिट बड़ा क़ीमती है। जितना यह बाहर ढूँढ़ता है, उतना ही यह अपना वक़्त बरबाद करता है। जितने तीर्थ-व्रत, कर्मकाण्ड किये, किसी काम के नहीं। बाहर जितनी मेहनत करता है, सारी बेकार है।

मनमुख अंधे सूझै नाही फिरि घिरि आइ गुरमुखि वथु पावणिआ ॥

कहते हैं, जो मालिक को बाहर ढूँढ़ते हैं, वे मनमुख हैं। वह न पत्थरों में है, न पानी में, न उजाड़ों में, न पहाड़ों में, न वेदों में, न शास्त्रों में और न किसी और चीज़ में। वेद-शास्त्रों में उसकी महिमा है। वेद शास्त्र क्या हैं? जिस तरह पहले बयान किया गया है, जो महात्मा रूहानी मण्डलों पर गये, वे हमारी हिदायत के लिये अन्दर के नज़ारों का बयान और परमात्मा की महिमा को काग़ज़ों में ले आये। उनकी महिमा को पढ़ने से कोई फ़ायदा नहीं। अगर कमाई करके अन्दर जाओगे, वे नज़ारे भी मिलेंगे और परमात्मा भी मिलेगा। उन महात्माओं ने जो कुछ देखा, अपने अन्दर ही देखा, आप भी अपने अन्दर चढ़ो और देखो। गुरु अमर दास जी कहते हैं कि बाहर जितनी कोशिशें हैं, सभी फ़ुज़ूल हैं और जो उसे बाहर ढूँढ़ते हैं, वे अन्धे हैं। अब सवाल पैदा हुआ कि क्या उनका भी कभी उद्धार होगा? तो गुरु साहिब जवाब देते हैं कि जब कभी वे घूम-फिर कर सतगुरु की शरण में आयेंगे, नाम लेंगे और नाम की कमाई करेंगे तब चाहे परदा खुले और मालिक मिले। जो महात्मा अन्दर जाता है, वही हमें भी अन्दर ले जा सकता है। जिस तरह कोई बग़ैर स्कूल, कॉलेज गए, बिना उस्तादों की रहनुमाई के बी. ए., एम. ए. नहीं कर सकता, इसी तरह जो रूहानियत है वह भी बग़ैर टीचर या उस्ताद के आ ही नहीं सकती और कोई-कोई

महात्मा, जो ख़ुद-बख़ुद सिमरन करके अन्दर गये, उन्हें विरोधी ताक़तों ने धोखा दे दिया। वे विरोधी शक्तियाँ इसको ग़लत राह बताकर इसे उलटे रास्ते पर डाल देती हैं। कहते हैं कि जो लोग गुरुमुखों के पास आयेंगे, गुरुमुख उन्हें रास्ता बतायेंगे और वे अपने घर को जायेंगे।

गुर परसादी सचा हरि पाए॥ मनि तनि वेखै हउमै मैलु जाए॥

कहते हैं, वह सच्चा हरि, गुरु की कृपा से मिलता है। अगर अन्दर परदा खुल जाये तो वह प्रत्यक्ष हो जायेगा, मन को लज़्ज़त आयेगी, सबकुछ होगा। सारी मैल निकलकर बाहर हो जाती है। कबीर साहिब का एक शब्द है:

पांचउ लरिके मारि कै रहै राम लिउ लाइ॥[16]

मैंने कई महात्माओं से पूछा कि पाँचों लड़कों को मारकर राम के साथ लिव कैसे लग सकती है? तो वे कहने लगे कि काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार ये पाँच डाकू हैं। इनको मारकर राम के साथ लिव लगती है। जब आदमी ऊपर चढ़ता है, नाम की लज़्ज़त आती है, तब वे लड़के (विकार) बाहर निकल जाते हैं। कबीर साहिब कहते हैं, पाँचों लड़कों (विकारों) को बाहर निकालो, फिर देखो लज़्ज़त आती है। जब अन्दर परदा खुल गया, शान्ति पैदा हो गयी। सात विलायतों की बादशाहत मिल जाये तो भी इतनी ख़ुशी नहीं होती, जितनी कि नाम की।

बैसि सुथानि सद हरि गुण गावै सचै सबदि समावणिआ॥

कहते हैं कि इसको रोज़-रोज़ नौ दरवाज़ों से ऊपर जाना चाहिये। हरएक स्त्री, हरएक पुरुष का फ़र्ज़ होता है कि रोज़-रोज़ अन्दर चढ़े, सुरत को शब्द के साथ जोड़े, यह नित-नेम है। जब अन्दर चढ़ा, दसवीं गली में गया, वहाँ अमृत बरसता है जिसे पीकर शान्ति आ जाती है। इसके

अन्दर अमृतसर है, करोड़ों खण्ड-ब्रह्माण्ड इसके अन्दर हैं, वह बड़ा उत्तम देश है।

नउ दर ठाके धावतु रहाए॥ दसवै निज घरि वासा पाए॥

अब सवाल पैदा हुआ कि वह अमृत रूपी नाम, जो मुक्ति देता है, कब मिलता है? तो गुरु साहिब जवाब देते हैं कि वह इन छः चक्रों और नौ दरवाज़ों में नहीं है। जब तुम नौ दरवाज़े ख़ाली करके दसवीं गली खोलोगे और उस राह पर चढ़ोगे, जो परमात्मा के घर की तरफ़ जाती है, तब वह नाम मिलेगा, जो वहाँ दिन-रात जारी है। हरएक इनसान के अन्दर वह जोत जल रही है और वहाँ आरती हो रही है। वे राग-रागनियाँ अति मीठी, अति प्यारी हैं। यह (आदमी) सो जाता है, वे कभी नहीं सोतीं। वह मालिक इसके अन्दर है, लेकिन जब यह अपने मन की मति छोड़कर गुरु की मति ले, अन्दर चढ़े तब मिलता है, नहीं तो नहीं।

ओथै अनहद सबद वजहि दिनु राती गुरमती सबदु सुणावणिआ॥

जब आप ऊपर चढ़ोगे, आपको अनहद शब्द सुनायी देगा, जिसे गुरु नानक साहिब कीर्तन और मुसलमान फ़कीर कलामे-इलाही कहते हैं। कहते हैं कि आपके अन्दर बेशुमार राग-रागनियाँ हो रही हैं। हम न बाणी को पढ़ते हैं, न उस पर विचार करते हैं। सारी उम्र हम बाहर ही बाहर रहे, न अन्दर गये, न उनको सुना। क़ौमों की क़ौमें, मज़हबों के मज़हब, नाम से ख़ाली पड़े हैं। अब गुरु अमर दास जी कहते हैं कि अगर इस हालत को प्राप्त करना है तो नौ दरवाज़े बन्द करके दसवीं गली खोलो, वहाँ अनहद धुन हो रही है। कोई भी मनुष्य इससे ख़ाली नहीं है, मगर जिस तरह विद्या की ताकत हरएक आदमी के अन्दर है, लेकिन जब तक स्कूल नहीं जाये, जागती नहीं, इसी तरह जब तक यह गुरु के पास नहीं जाये, शब्द की लज़्ज़त नहीं मिलती।

बिनु सबदै अंतरि आनेरा॥ न वसतु लहै न चूकै फेरा॥

जब तक आत्मा इस पिण्ड में से निकलकर उस शब्द को नहीं पकड़ती, तब तक आदमी के अन्दर वह रोशनी पैदा नहीं होती और न मालिक मिलता है। यह अन्धा आया और अन्धा ही चला गया। दौलत इसके अन्दर है, न यह अन्दर गया, न उसे निकाला। घर में दौलत होते हुए भी भूखा मर गया। न शान्ति आयी, न जन्म-मरण ख़त्म हुआ, बार-बार जन्म-मरण में आना पड़ेगा।

सतिगुर हथि कुंजी होरतु दरु खुलै नाही गुरु पूरै भागि मिलावणिआ॥

जब तक कोई शब्द-स्वरूपी, शब्द-अभ्यासी महात्मा नहीं मिलता, अन्दर परदा नहीं खुलता। कुंजी सतगुरु के हाथ में है। गुणी भी हैं, ज्ञानी भी हैं, मगर कुंजी वाला महात्मा कहीं-कहीं मिलता है। मैंने सिक्खों के घर जन्म लेकर बाईस साल खोजा है—किसी सभा का सेक्रेटरी रहा, किसी का प्रेसीडेण्ट रहा। मैं कहता था, आदमी की पूजा करूँ? जब ग्रन्थ साहिब को पढ़ा तो वह कहता है कि जाओ सन्तों के पास, गुरुओं के पास, जो रूहानी मंज़िलों पर जाते हैं। मैंने सन्त-महात्माओं की खोज की, उनसे मिला, पूछा कि कुछ दो। सभी यही कहते कि मिलेगा, मगर अभी तुम्हारा समय नहीं आया। मैंने पूछा कि क्या आप दोगे? वे कहते कि नहीं। मैंने कहा कि कौन देगा? कहते कि कोई और देगा। जब समय आया, घर बैठे-बिठाये मिल गया। बाबा जी महाराज का सत्संग सुना, बाईस सालों के शक, सन्देह दूर हो गये। गुरु अर्जुन देव जी कहते हैं:

जिस का ग्रिहु तिनि दीआ ताला कुंजी गुर सउपाई॥
अनिक उपाव करे नही पावै बिनु सतिगुर सरणाई॥[17]

जब कुंजी वाला महात्मा मिले, वह राह दे, यह परदा खोले तो मुक्ति होती है, यों ही नहीं।

गुपतु परगटु तूं सभनी थाई ॥ गुर परसादी मिलि सोझी पाई ॥

जब गुरु की कृपा से अन्दर मालिक के दर्शन हो गये तो रूह कहती है कि हे परमात्मा! तू हर जगह मौजूद है, मगर बहुत लोगों के अन्दर गुप्त है, थोड़े लोगों के अन्दर प्रकट है। मिलता कब है? जब आदमी गुरु से नाम लेकर, परदा खोलकर ऊपर चढ़े। फिर कहते हैं कि तेरा मिलाप हमें गुरु की कृपा से हुआ है।

नानक नामु सलाहि सदा तूं गुरमुखि मंनि वसावणिआ ॥

अब गुरु साहिब कहते हैं कि उस नाम की कमाई करो जिसका इशारा गुरुमुख देता है। बाक़ी, लफ़्ज़ों को तो सारी दुनिया जपती है। बिना गुरु के न कोई अन्दर गया है, न जायेगा। अब यह पहली मंज़िल का हाल है। इसी तरह बाक़ी की मंज़िलें दर्जा-ब-दर्जा हैं, ऊपर जाना है।

वाणी स्वामी जी महाराज

निर्णय शब्द अथवा नाम का

॥ रेखता ॥

नाम निर्णय करूँ भाई। दुधा बिधि भेद बतलाई॥ 1॥
वर्ण धुनआत्मक गाऊँ। दोऊ का भेद दरसाऊँ॥ 2॥
वर्ण कहु चाहे कहु अक्षर। जो बोला जाय रसना कर॥ 3॥
लिखन और पढ़न में आया। उसे वर्णात्मक गाया॥ 4॥
लखायक है यही धुन का। बिना गुरु फल नहीं किनका॥ 5॥
मिलें गुरु नाम धुन भेदी। सुरत धुन धुनी संग बेधी॥ 6॥
एकता नाम और नामी। करावें जो मिलें स्वामी॥ 7॥
नाम वर्णात्मक गाया। नामी धुनआत्मक पाया॥ 8॥
वर्ण से सुरत मन माँजो। बहुरि चढ़ गगन धुन साधो॥ 9॥
धुनी धुन एक कर जानो। सुरत से शब्द पहिचानो॥ 10॥
शब्द और सुरत भये एका। नाम धुनआत्मक देखा॥ 11॥
गुरू बिन और बिना करनी। मिले कस कहो यह रहनी॥ 12॥
चाह अनुराग जिस होई। भाग बड़ गुरुमुखी सोई॥ 13॥
नाम नामी दोऊ गाया। अभेदी भेद समझाया॥ 14॥
गुरू की मौज में सब कुछ। जिसे चाहें करें गुरुमुख॥ 15॥
गुरुमुख होय तन धन से। करे फिर प्रीत निज मन से॥ 16॥
लगे तब जाय सुन धुन से। गये तब तीन गुन तन से॥ 17॥
वर्ण धुन भेद दोउ बरना। वाच और लक्ष इन कहना॥ 18॥

वाच वर्णात्मक जानो। लक्ष धुन धुनी पहिचानो॥ 19॥
वर्ण में भेष जग भूला। मर्म धुन संत कोइ तोला॥ 20॥
वर्ण जप जप पचें भेषी। मिले कुछ फल नहीं नेकी॥ 21॥
भेद धुन का नहीं पाया। नाम फल हाथ नहिं आया॥ 22॥
जपें नित सहस और लाखा। खुले नहिं नेक उन आँखा॥ 23॥
तिमर संसार नहिं जावे। मोह मद काम भरमावे॥ 24॥
धुनी धुन भेद नहिं चीन्हा। सुरत और शब्द नहिं लीन्हा॥ 25॥
मिला नहिं गुरू धुन भेदी। लखावे धुन मिटे खेदी॥ 26॥
काल ने बुद्धि उन छेदी। मुफ़्त नर देह उन दे दी॥ 27॥
दया कर संत गोहरावें। ज़रा नहिं चित्त में लावें॥ 28॥
पाँच धुन भेद बतलावें। सुरत की राह दिखलावें॥ 29॥
धुनों के नाम दरसावें। रूप अस्थान कह गावें॥ 30॥
सुरत का जोग लखवावें। जीव नहिं कहन उन मानें॥ 31॥
सुरत ले गगन चढ़वावें। पिंड में सार बतलावें॥ 32॥
चढ़े ब्रहमंड तब परखे। सहसदल मध्य कुछ निरखे॥ 33॥
बंक चढ़ तिरकुटी धावे। सुन्न दस द्वार गति पावे॥ 34॥
महासुन जाय हरखानी। भँवर में जा सुनी बानी॥ 35॥
अमर पद मूल जा देखा। बीन धुन का मिला लेखा॥ 36॥
अलख और अगम भी पेखा। नाम का मूल अब देखा॥ 37॥
कहूं क्या खोल राधास्वामी। सैन यह समझ परमानी॥ 38॥[1]

सत्संग के बचन

नाम निर्णय करूँ भाई। दुधा बिधि भेद बतलाई॥

वह ताकत जो सारी दुनिया को पैदा करती है, सारे संसार की रक्षा करती है, सन्त उसको नाम या शब्द कहते हैं। इस तरह वेद उसे 'नाद', ऋषि-मुनि 'आकाशवाणी', हज़रत ईसा 'वर्ड' और मुसलमान कामिल

फ़क़ीर 'बाँगे-आसमानी', 'कलामे-इलाही' या 'इस्मे-आज़म' कहते हैं। गुरु नानक साहिब उसी को 'गुरुबाणी' या 'नाम' कहते हैं। वह ज़बान (भाषा) नहीं। ज़बान में ताकत नहीं कि वह मुक्ति दे सके और वह हरएक क़ौम की अलग-अलग है, मगर जो ताकत मुक्ति देती है, वह सारी दुनिया की एक ही है। हिन्दुओं, मुसलमानों, यहूदियों, मतलब कि हर क़ौम, हर मज़हब के इनसान के अन्दर है। उसी की महिमा ग्रन्थ साहिब, उसी की महिमा वेद-शास्त्र और दूसरी मज़हबी किताबें करती हैं। इसी तरह गुरु नानक साहिब और अन्य सन्त करते हैं, मगर किताबों में उसकी तारीफ़ या महिमा है, वह बज़ाते-ख़ुद (स्वयं) नहीं। वह तुम्हारे अन्दर है। अब बात बारीक और ग़ौर से समझनेवाली है कि मुक्ति देनेवाला नाम, लिखने-पढ़ने में आनेवाला नहीं है। हमारी किताबें किसी न किसी भाषा में हैं, मगर वह ताकत तुर्की, फ़ारसी, अरबी भाषा वग़ैरह में नहीं, इसलिए वह लिखने में नहीं आ सकती।

इसी लिए आपको चाहिए कि जो महात्मा अन्दर जाता है, उसके पास जाओ। जब वह रास्ता दे, कमाई करके अन्दर चढ़ जाओ। सारी दुनिया के लिए एक ही क़ानून है, आज का नहीं, बल्कि जब से दुनिया बनी है तभी से चला आ रहा है। वह किसी आदमी का बनाया हुआ नहीं, बल्कि कुल-मालिक, ख़ुद ख़ुदा का बनाया हुआ है। हम उसमें न तब्दीली कर सकते हैं, न कुछ घटा या बढ़ा सकते हैं। हमें उसके ज़रिये जाना है। जो कुछ स्वामी जी महाराज बयान कर रहे हैं, वही गुरु नानक साहिब, मौलाना रूम साहिब और अन्य कामिल फ़क़ीर कह रहे हैं। मगर कौन-से? जो ऊँचे रूहानी मण्डलों पर गये। जो शरीअतों में रहे, मज़हबों की पार्टियों में रहे, मैं उनका ज़िक्र नहीं करता और जो गुरु नानक साहिब की फ़िलॉसफ़ी है, मैं यह कहूँगा कि हम अभी तक उसके दरवाज़े तक भी नहीं गये। जितने भी कामिल फ़क़ीर हुए हैं, उन सबका तरीक़ा एक ही है, वह रब्बी ज्ञान है, मनुष्य का बनाया हुआ नहीं। वह हरएक आदमी के अन्दर है। अगर इस फ़िलॉसफ़ी को सभी लोग अच्छी तरह समझ लें तो आज दुनिया में कोई झगड़ा न रहे, मगर अन्दर जो काल की शक्ति है

वह समझने नहीं देती। अब हुजूर स्वामी जी महाराज कहते हैं कि नाम क्या है? फिर आप ही जवाब देते हैं कि नाम दो क़िस्म का है।

वर्ण धुनआत्मक गाऊँ। दोऊ का भेद दरसाउँ॥
वर्ण कहु चाहे कहु अक्षर। जो बोला जाय रसना कर॥
लिखन और पढ़न में आया। उसे वर्णत्मक गया॥

नाम दो क़िस्म का है, वर्णात्मक और धुनात्मक। जो लिखा जाये, पढ़ा जाये, बोला जाये, वह वर्णात्मक है। आगे यह चार प्रकार का है—परा, पश्यंती, मध्यमा, बैखरी। पहला वह जो मन की सूक्ष्म वृत्ति के ज़रिये योगी-जन नाभि में हिलोर उठाते हैं। दूसरा वह जो मन के ज़रिये हृदय में बोला जाता है, इसकी न ज़बान को ख़बर, न गले को पता। तीसरा वह जो मन के ज़रिये कण्ठ में धीरे-धीरे बोला जाता है। चौथा वह जो ज़बान द्वारा बोला जाता है, जैसे हम बोलते हैं, चिड़ियाँ, कौए और अन्य जानवर बोलते हैं, हम और आप बातें करते हैं। लेकिन जो नाम मुक्ति देता है, वह इन चारों से परे है। जो दुनिया की किताबें हैं, वे उस धुनात्मक नाम की तारीफ़ करती हैं, मगर वह उन किताबों में नहीं, बल्कि आपके अन्दर है। जब आप अन्दर चढ़ोगे तो काम, क्रोध आदि मर जायेंगे, अन्दर रोशनी हो जायेगी, परदा खुल जायेगा, शान्ति आ जायेगी।

अगर कोई ऊँची से ऊँची रचना है तो आदमी है। सभी मज़हब इस बात को मानते हैं। मुसलमान कहते हैं कि यह अशरफ़ुल-मख़लूक़ात है। हिन्दू कहते हैं कि यह नर-नारायणी देह है। जो कुछ राज़ है, मालिक ने आदमी के अन्दर रखा हुआ है, और कहीं नहीं। गुरु नानक साहिब और अन्य सन्त कहते हैं कि आदमी के अन्दर करोड़ों दरिया और पहाड़ हैं। यही मौलाना रूम साहिब कहते हैं:

अंदर आँ बहिरो-बीयबानो-जिबाल,
मुनकतअ मी गरदद ओहामो-ख़याल।[2]

आँखों से नीचे-नीचे क़ब्र है, नाम नहीं। जब तक यह नौ दरवाज़ों से निकलकर शरीर से ऊपर नहीं आता, तब तक नाम नहीं मिलता। जब तक यह 'मूतू-क़बलंत-मूतू' की मौत नहीं मरता, तब तक नाम की लज़्ज़त नहीं मिलती, यह मन-इन्द्रियों की क़ैद से आज़ाद नहीं होता। नौ दरवाज़ों तक अलग-अलग मज़हब, अलग-अलग भाषाएँ और अलग-अलग तरीक़े हैं। नौ दरवाज़े ये हैं—दो आँखों के, दो कान के, दो नाक के, एक मुँह का और दो नीचे इन्द्रियों के। जिस वक़्त यह नौ दरवाज़ों को छोड़कर दसवीं गली में आता है, तब नाम मिलता है। दसवीं गली से मतलब सुषुम्ना नाड़ी से है। हदीस कहती है कि ख़ुदा शाहरग से नज़दीक है। हम सुषुम्ना कहते हैं, वे शाहरग कहते हैं, मतलब एक ही है। वह नाम न गुरुमुखी में है, न फ़ारसी में, न अरबी में, न संस्कृत में और न अंग्रेज़ी में। वहाँ कोई भाषा नहीं। अगर भाषा कोई नहीं तो किताब कोई नहीं।

जितने भी महात्मा, कामिल फ़क़ीर ऊँची मंज़िलों पर गये हैं, सभी इसी नाम को लेकर गये हैं। सभी की राह एक ही है। चाहे वे अलग-अलग देश और मज़हब के क्यों न हों, मगर रूहानी मंज़िलें एक ही हैं। जो राह गुरु नानक साहिब ने पकड़ी, वही कबीर साहिब, मौलाना रूम साहिब, शम्स तब्रेज़ और अन्य फ़क़ीरों ने पकड़ी है। एक ही राह, एक ही नाम है। सभी किताबें इसी नाम की महिमा करती हैं। गुरु अमर दास जी फ़रमाते हैं:

> नउ दर ठाके धावतु रहाए॥ दसवै निज घरि वासा पाए॥
> ओथै अनहद सबद वजहि दिनु राती गुरमती सबदु सुणावणिआ॥[3]

जब नौ दरवाज़ों को बन्द करो, दसवीं गली खोलो, शब्द मिलेगा। क्या स्त्री, क्या पुरुष, सबके अन्दर धुनकारें दे रहा है। गुरु नानक साहिब मक्का गये तो क़ाज़ी रुकनुद्दीन के पूछने पर फ़रमाया:

> उपर खास महल पर देवै बांग ख़ुदाए।
> सुते बांग न सुन सकन रिहा खुदाइ जगाइ।[4]

वह महल मनुष्य-देह है। मतलब कि मुक्ति का रास्ता सबके लिए एक है और वह अन्दर है, बाहर नहीं। महात्मा अपने पास से कुछ नहीं देता, बल्कि कहता है कि प्यारे! तेरे अन्दर नाम है, अन्दर जाओ और उसे हासिल करो। उसकी महिमा वेद-शास्त्र, ग्रन्थ-पोथियाँ करती हैं। जितने भी महात्मा सचखण्ड या मक़ामे-हक़्क़ गये, उनका इष्ट नाम ही था। 'सौ सिआणिआं इको मत'।

लखायक है यही धुन का। बिना गुरु फल नहीं किनका॥

अब दो बातें हैं—वर्णात्मक नाम या लिखने, पढ़ने, बोलने के ज़रिये कोई महात्मा, फ़क़ीर या गुरु अन्दर जाने की राह समझा देगा और कहेगा कि अभ्यास करो। फ़क़ीरों के मज़हब में जाति-पाँति नहीं होती। कबीर साहिब मुसलमान जुलाहे थे, बीर सिंह, बघेल सिंह राजपूत उनके शिष्य थे। मेवाड़ के राजपूत राजघराने की मीरा बाई शिष्या और गुरु रविदास जी उनके गुरु थे। स्कूलों-कॉलेजों में उस्ताद, प्रोफ़ेसर हिन्दू हों या मुसलमान, ईसाई हों या किसी और मज़हब के, विद्यार्थी को इससे कोई मतलब नहीं। उसे तो तालीम लेनी है, बी. ए., एम. ए. की डिग्री हासिल करनी है। उसे उनके साथ कोई रिश्ता-नाता नहीं करना। इसी तरह जब कोई पूर्ण सन्त मिल जाये, फिर जाति-पाँति का ख़याल नहीं करना चाहिए। हमें ऊँचे रूहानी मण्डलों पर चढ़ना है। सन्त भेद-भाव नहीं करते, बल्कि वे सारे मज़हबों को अपना समझते हैं। गुरु अमर दास साहिब फ़रमाते हैं:

परथाइ साखी महा पुरख बोलदे साझी सगल जहानै॥[5]

वर्णात्मक नाम पहली पौड़ी है, जब तक यह न हो तब तक समझ नहीं आती। मैं पहले अर्ज़ कर चुका हूँ कि एक आदमी अपने ख़याल को दूसरे आदमी तक ज़बान के ज़रिये ही ज़ाहिर कर सकता है। अगर पंजाबी है तो पंजाबी में, अगर अंग्रेज़ हैं तो अंग्रेज़ी में बोलकर समझा देगा। अगर वर्णात्मक न हो तो कोई सवाल-जवाब नहीं करे। आदमी ही

नहीं, बल्कि एक पशु भी अपने दिल का हाल दूसरे पशु के दिल तक ज़बान के ज़रिये ही पहुँचाता है। इसी तरह एक पक्षी भी अपने दिल का हाल दूसरे पक्षी के दिल तक ज़बान के ज़रिये ही पहुँचाता है। हम सभी अपने दिल का हाल एक-दूसरे के दिल तक अपनी-अपनी ज़बान के ज़रिये प्रकट करते हैं। अब यह जो चीज़ (सत्संग) है, ज़बान से ही बयान की जाती है। जो महात्मा अन्दर जाता है, वह अपनी बोली में उस कैफ़ीयत का बयान करता है। महात्मा वर्णात्मक नाम से ही समझा सकते हैं। वर्णात्मक नाम मुक्ति नहीं देता, बल्कि यह तो पहली हालत है। मुक्ति देने की ताकत धुनात्मक नाम में है। हरएक महात्मा जो ऊँची अवस्था में गया है, धुनात्मक नाम के ज़रिये ही गया है। वर्णात्मक नाम, ज़ाती नाम को हासिल करने का ज़रिया हो सकता है, इससे ज़्यादा नहीं। गुरु नानक साहिब फ़रमाते हैं:

> पड़ीअहि जेते बरस बरस पड़ीअहि जेते मास॥
> पड़ीऐ जेती आरजा पड़ीअहि जेते सास॥
> नानक लेखै इक गल होरु हउमै झखणा झाख॥[6]

चाहे उम्र भर पढ़ते रहो, जब तक धुनात्मक नाम को न पकड़ें, कोई फ़ायदा नहीं होता। फिर कहते हैं:

> नानक कागद लख मणा पड़ि पड़ि कीचै भाउ॥
> मसू तोटि न आवई लेखणि पउणु चलाउ॥
> भी तेरी कीमति ना पवै हउ केवडु आखा नाउ॥[7]

बेशुमार काग़ज़ लेकर स्याही से लिख-लिख कर रखते जाओ, कुछ नहीं बनता। गुरु नानक साहिब कहते हैं कि नाम और ही चीज़ है और वह लिखने, पढ़ने, बोलने से परे है। सभी वेद-शास्त्र उसकी महिमा करते हैं। क्या हिन्दू, क्या मुसलमान, क्या सिक्ख, क्या ईसाई, वह सभी के अन्दर है। दुनिया किताबें पढ़ती है, अन्दर नहीं जाती और परदा नहीं

खोलती। जब तक हम अन्दर नहीं जायेंगे, वह दौलत नहीं मिलेगी। अब हम सबकी आँखों के पीछे खिड़की लगी हुई है, मगर उसे हम ख़ुद नहीं खोल सकते। मौलाना रूम कहते हैं:

आँ पादशाहे-आअज़म दर बस्ता बूद मुहकम,

ख़ुदा ने आदमी की आँखों के पीछे वज्र-कपाट, मज़बूत परदा लगा दिया है, फिर खोलता किस तरह है?

पोशीदा दल्क़े-आदम यानी किह् बर दर आमद।[8]

ख़ुद ही मनुष्य का चोला पहनकर, हमारे जैसा बनकर, आकर दरवाज़ा खोलता है। वह क्या उपदेश देता है? आगे कहते हैं:

ख़ामोश ओ पंज नौबत बिशनौ ज़ि आसमाने,
क-आँ आसमाने-बैरूँ जां हफ़्त ईं शश आमद॥[9]

सो, जब तक आपको कोई अन्दर जानेवाला महात्मा नहीं मिलता, आप यह दौलत नहीं ले सकते, मगर जब ख़ुशक़िस्मती से कोई ऐसा महात्मा मिल जाये, उसे आप उस्ताद कह लो, मास्टर कह लो या उसका कोई और नाम रख लो, आप उसकी हिदायत के मुताबिक़ अन्दर जाओ तो आपको यह दौलत, यह ताकत मिलेगी।

मिलें गुरु नाम धुन भेदी। सुरत धुन धुनी संग बेधी॥

दौलत अन्दर है, मगर कुंजी हमारे पास नहीं। विद्या लड़के के दिमाग़ में है, मगर कुंजी स्कूल मास्टर के हाथ में है। इसी तरह ब्रह्माण्ड, लौलाक, सचखण्ड, मक़ामे-हक़्क़ हमारे अन्दर हैं, मगर महात्मा की ताकत या फ़क़ीरों की मेहरबानी के बग़ैर कोई अन्दर चढ़ नहीं सकता और उस दौलत को ले नहीं सकता। अगर कोई कामिल फ़क़ीर, अन्दरूनी वाक़िफ़कार मिल जाये तो वह क्या कहेगा? वह कहेगा कि भाई, तेरे

अन्दर नाम है, तू प्यार के साथ अपनी आत्मा को उसके साथ जोड़ दे, नाम की दौलत तेरे अन्दर है। अगर गुरु राह दे और यह मेहनत करे यानी जीते-जी मरे तो उसे पा ले। वह नाम है, लफ़्ज़ नाम नहीं, लेकिन वह लफ़्ज़ों के ज़रिये समझा जाता है। महात्मा कहते हैं कि अल्लाह, वाहिगुरु, राम, रहीम, गिरधारी, मुरारी, राधास्वामी आपके लफ़्ज़ हैं। जो अल्लाह, वाहिगुरु ताकत है, उसके साथ अपनी रूह को जोड़ दो। मौलाना रूम साहिब कहते हैं:

इस्म ख़्वांदी रौ मुसम्मा रा बिजू,
बे मुसम्मा इस्म कै बाशद निकू।[10]

जिसका तू नाम लेता है, उसको देख! जब तक मुसम्मा (नामी) न मिले, अल्लाह-अल्लाह, राम-राम करने से क्या बनता है, ये तो सिर्फ़ लफ़्ज़ ही लफ़्ज़ हैं। कबीर साहिब का कथन है:

बिन देखे बिन दरस परस बिन, नाम लिये का होई।
धन के कहे धनी जो होई, निरधन रहै न कोई॥[11]

जिसको देखा नहीं, छुआ नहीं, वह मिला ही नहीं। 'पौंड-पौंड' कहने से कोई साहूकार नहीं हो सकता, न ही 'रोटी-रोटी' और 'पानी-पानी' कहने से भूख-प्यास मिटती है। सो, जब तक मुसम्मा न मिले, इस्म का क्या फ़ायदा? जब तक नामी नहीं मिला, नाम का स्वाद नहीं आता। नामी मिल गया, जन्म सफल हो गया। जिन्होंने लफ़्ज़ों को पकड़ा, वे बाहर ही बाहर रहे, अन्दर नहीं गये। अगर कोई पूर्ण गुरु मिल गया तो वह आपकी आत्मा को अल्लाह, वाहिगुरु, ब्रह्म, मतलब कि उस ताकत के साथ जोड़ देगा।

एकता नाम और नामी। करावें जो मिलें स्वामी॥

यह ज़रूरी है कि महात्मा अन्दर रूहानी मण्डलों पर जानेवाला हो। ऐसे महात्मा दुनिया में हैं, हिन्दुओं में भी हैं और मुसलमानों में भी, मगर

विरले ही। मैंने बीस साल ठोकरें खायी हैं! ज्ञानी अनेक थे, तरह-तरह के भेषधारी सम्प्रदाय बहुत थे, लेकिन जब तक पूरा गुरु न मिले, काम नहीं बनता। पूरे गुरु का क्या काम है? नाम का भेद देकर तुम्हारी आत्मा को अन्दर शब्द के साथ जोड़ दे।

नाम वर्णात्मक गाया। नामी धुनआत्मक पाया॥

अब जो अल्लाह, ख़ुदा, वाहिगुरु, राम, रहीम, ईश्वर, परमेश्वर हैं, यह आपके लफ़्ज़ हैं, वर्णात्मक हैं, धुनात्मक नहीं। मुक्ति या शान्ति धुनात्मक नाम से मिलती है। सो कहते हैं, जो धुनात्मक नाम है, वह लिखने, पढ़ने व बोलने में नहीं आता। इसके विपरीत, जो लिखा, पढ़ा और बोला जाये वह वर्णात्मक है। नामी धुनात्मक है, नाम वर्णात्मक है। जब तक हमें नामी न मिले, तब तक नाम का कोई फ़ायदा नहीं। जिस तरह बिना खाये सारी उम्र 'मिश्री-मिश्री' करते जायें तो कुछ नहीं बनता। इसी तरह अगर सारी उम्र 'राम-राम', 'रहीम-रहीम' या किसी और नाम का जाप करते रहें तो बनता कुछ नहीं। दुनिया लफ़्ज़ों को पकड़े बैठी है और जो ताकत 'राम' है, उसे नहीं पकड़ती।

वर्ण से सुरत मन माँजो। बहुरि चढ़ गगन धुन साधो॥

अब दो बातें हैं कि वर्णात्मक के ज़रिये चेतन-सत्ता को छः चक्रों और नौ दरवाज़ों से ख़ाली करके दसवीं गली में ले आओ। जब हम सिमरन या ज़िक्र करते हैं तो रूह सिमटती है। सिमरन आत्मा को छः चक्रों और नौ द्वारों से निकालकर ऊपर ले जाने का ज़रिया है। जब सूरज, चन्द्रमा और सितारे पार कर लें, वर्णात्मक का कोर्स पूरा हो जाता है। ज़िक्र या सिमरन यहीं तक ले जाता है। आगे की रूहानी मंज़िलें धुनात्मक नाम या बाँगे-आसमानी के बग़ैर तय नहीं हो सकतीं। जब तक हम छः चक्रों में यानी शरीर में बैठे हैं, तब तक अलग-अलग तरीक़े हैं। कोई तपस्या के ज़रिये, कोई वेदान्त-विचार, ज्ञान, राज-योग, लय-योग और हठ-योग के

ज़रिये छः चक्रों को तय करते हैं। फ़क़ीरों को कोई एतराज़ नहीं। उनका मतलब तो आत्मा को शरीर से निकालकर आँखों के पीछे लाने से है, चाहे किसी तरीक़े से कर लो, मगर सभी तरीकों से गुरु नानक साहिब, कबीर साहिब, तुलसी साहिब और अन्य मुसलमान फ़क़ीरों का तरीक़ा आसान है, वह ज़िक्र या सिमरन है। जब हम आत्मा के मरकज़ (केन्द्र) यानी नुक़्ता-ए-सवैदा पर बैठकर, किसी महात्मा की बतायी हुई युक्ति के मुताबिक़ नाम का सिमरन करते हैं तो आत्मा इकट्ठी हो जाती है और सारा शरीर मुर्दा हो जाता है। इस वर्णात्मक नाम के ज़रिये, चाहे वह वाहिगुरु है, राम है या कोई और—अपनी आत्मा और मन को पिण्ड या शरीर से निकालना है। मतलब तो यह है कि दोनों आँखों के बीच तक चेतन-सत्ता को ले आओ, यहाँ तक वर्णात्मक नाम है। ऋद्धियाँ-सिद्धियाँ, करामातें, अन्तर्यामिता वर्णात्मक नाम से ही हासिल हो जाती हैं। अब कहते हैं कि लफ़्ज़ी नाम (वर्णात्मक नाम) को ज़बान के ज़रिये जपकर, शरीर को ख़ाली करके ऊपर आ जाओ, वहाँ धुनात्मक नाम या अनहद शब्द मिलेगा। वह लिखने, पढ़ने में आनेवाला मज़मून (विषय) नहीं, वहाँ कोई भाषा नहीं, कोई ग्रन्थ-पोथी, किताब नहीं। वहाँ पर या तो रूह (आत्मा) है या वह मुसम्मा (नामी)।

धुनी धुन एक कर जानो। सुरत से शब्द पहिचानो॥

नाम को पकड़कर नामी से जा मिलो। नाम और नामी को एक कर दो। दूसरे लफ़्ज़ों में यह कह दो कि सुरत को शब्द के साथ जोड़कर एक हो जाओ। यही गुरु अंगद देव जी कहते हैं:

अखी बाझहु वेखणा विणु कंना सुनणा॥[12]

वह इन आँखों से नहीं देखा जा सकता, ये आँखें फ़ना हैं। हम बाहर या लैम्प के आसरे देखते हैं या बिजली के या तारों के या सूरज या चन्द्रमा के। जो आँखें परमात्मा को देखनेवाली हैं, वे और हैं।

गुरु अर्जुन साहिब कहते हैं:

नानक से अखड़ीआं बिअंनि जिनी डिसंदो मा पिरी॥[13]

जिन आँखों से उस माबूदे-हक़ीक़ी, उस मालिक को देखा जाता है, वे आँखें ये नहीं। वे आँखें कब मिलेंगी? जब यह अन्दर जाकर परदा खोलेगा। फिर ये कान उस आवाज़ को नहीं सुन सकते। वे कान और हैं। उन्हें खोलो और सुरत को शब्द के साथ जोड़ दो ताकि मालिक मिल जाये।

शब्द और सुरत भये एका। नाम धुनआत्मक देखा॥

अब कहते हैं कि जब रूह ने नाम का पल्ला पकड़ लिया या आत्मा ने परमात्मा का पल्ला पकड़ लिया, तसल्ली हो गयी। बूँद समुद्र में जाकर एक हो गयी, फिर आने की ज़रूरत नहीं। यह तरीक़ा सारी दुनिया के अभ्यास के तरीक़ों से सादा और आसान है। सारी दुनिया इसे प्यार के साथ कर सकती है। बच्चा, बूढ़ा हर कोई कर सकता है। यह तरीक़ा एक ही है और सारी दुनिया का साँझा है। आज का नहीं बल्कि सतयुग से चला आ रहा है और यह क़ुदरती है, किसी आदमी का बनाया हुआ नहीं। यही योगियों ने गुरु नानक साहिब से पूछा:

कितु बिधि पुरखा जनमु वटाइआ॥ काहे कउ तुझु इहु मनु लाइआ॥
कितु बिधि आसा मनसा खाई॥ कितु बिधि जोति निंरतरि पाई॥[14]

कि हे महात्मा! तेरा जन्म-मरण किस तरह ख़त्म हुआ? सन्त किस तरह जीते-जी जन्म-मरण ख़त्म कर देते हैं? तूने इस दर्जे को किस तरह पाया? यह नूर, तजल्ली (प्रकाश) तुझे किस तरह मिला? तो गुरु साहिब ने जवाब दिया:

सतिगुरु कै जनमे गवनु मिटाइआ॥ अनहति राते इहु मनु लाइआ॥
मनसा आसा सबदि जलाई॥ गुरमुखि जोति निरंतरि पाई॥[15]

कि सतगुरु की कृपा से आवागमन यानी चौरासी को ख़त्म किया। सतगुरु के बख़्शे हुए नाम के साथ जुड़कर मन को खड़ा किया। जिस तरह ज़मींदार जब बीज बो देता है तो उसे आशा बँध जाती है कि छः महीने तक फ़सल तैयार हो जायेगी। इसी तरह सन्त-महात्मा का जिज्ञासु या तालिब को दिया हुआ सत्य का उपदेश ख़ाली नहीं जाता। खण्ड-ब्रह्माण्ड सूख जायें, वह हरा ही रहेगा। सतगुरु ने हमें अभ्यास का तरीक़ा बताया, दसवीं गली की राह बतायी। जब मेहनत की तो आसा-मनसा यानी हिर्स और हवस मिट गयी। जब गुरुमुख बने, अन्दर परदा खुल गया, रुकावट ही न रही।

गुरू बिन और बिना करनी। मिले कस कहो यह रहनी॥

कहते हैं, रूहानी दौलत यानी परमात्मा से मिलने के दो ही ज़रिये हैं। एक तो उस महात्मा के उपदेश, हिदायत और सत्संग जो रूहानी मण्डलों पर जाता है। जिस तरह जब तक कोई लड़का किसी उस्ताद के पास नहीं जाता, उसे कोई ज्ञान नहीं होता, इसी तरह परमात्मा से मिलने के लिए भी गुरु की ज़रूरत है। गुरु अमर दास जी कहते हैं:

बिनु गुर दाते कोइ न पाए॥ लख कोटी जे करम कमाए॥[16]

चाहे कोई क़ौम हो, कोई आदमी हो, यह दौलत सभी के अन्दर है, मगर बग़ैर मेहनत और कमाई के नहीं मिलती। पूरा गुरु राह बताता है और इसकी मेहनत और कमाई से परदा खुल जाता है। जो इस ताकत को लेना चाहे, वह गुरु से नाम ले और मेहनत करे। दुनिया कमाई करना नहीं चाहती, बिना कमाई यह दौलत मिलती नहीं। यह बातों का मज़मून (विषय) नहीं, बल्कि कमाई का मज़मून है, कोई आसान बात नहीं। हरएक महात्मा की जीवनी पढ़कर देखो, उन्होंने मेहनत की है। गुरु नानक साहिब ने ग्यारह साल तपस्या की, रोड़ों को बिछौना बनाया। क्या उनको गद्दे नहीं मिलते थे? हज़रत मुहम्मद साहिब छः-छः महीने पहाड़

की गुफा में रहे। गुरु अमर दास जी ने बारह साल सेवा की, बहत्तर से चौरासी साल की वृद्ध अवस्था में पानी ढोया। किस-किस का नाम लिया जाये? सभी ने कमाई की है, तन, मन, धन क़ुर्बान किया है। नाम बातों के ज़रिये नहीं मिलता, न बाज़ार में मोल बिकता है और न खेतों में उगता है। यहाँ मज़हबों का सवाल नहीं, क़ुर्बानी का सवाल है। आदमी में क़ुर्बानी का जज़्बा होना चाहिए। जिन्होंने क़ुर्बानी दी, फल ले लिया। जो करेंगे, ले लेंगे। यह जीते-जी मरने का मज़मून है। बहुत-से सत्संगी शिकायत करते हैं कि जी! सुरत नहीं टिकती, नाम लिये दस-बारह बरस हो गये, अन्दर शब्द नहीं खुला। मेहनत तो आधा घण्टा भी नहीं करते, फिर शब्द किस तरह मिले? दसवें भाग का हुक्म है। दसवें भाग के ढाई घण्टे बनते हैं। रुपयों का दसवाँ भाग निकालना आसान है, तनख़्वाह आयी और दसवाँ भाग निकाल दिया, वक़्त का दसवाँ भाग देना मुश्किल है। ढाई घण्टे कमाई करना शिष्य का फ़र्ज़ है। अगर ज़्यादा वक़्त दे, ज़्यादा फल मिलेगा। मगर हमारे बहुत-से भाई घण्टा-आधा घण्टा बैठते हैं और घड़ी पास में रख लेते हैं। यह ध्यान घड़ी का हुआ या नाम का? यह मेहनत की चीज़ है। अगर सुरत शब्द के साथ जुड़ जाये तो कई-कई घण्टे गुज़र जाने पर भी ख़बर नहीं होती।

चाह अनुराग जिस होई। भाग बड़ गुरुमुखी सोई॥

कहते हैं, जिसे मनुष्य-जन्म पाकर उस वाहिद-हू ला-शरीक से मिलने का शौक़ पैदा हो गया, परमात्मा से विसाल का पक्का ख़याल हो गया, उसके बड़े ऊँचे भाग्य हैं। क्यों? क्योंकि मनुष्य-जन्म ही मुक्ति का दरवाज़ा है, और कोई जन्म है नहीं। यह अशरफ़ुल-मख़लूक़ात है, इसके अन्दर करोड़ों खण्ड-ब्रह्माण्ड और लौलाक हैं। सभी महात्मा, सभी किताबें यही कहती हैं कि तेरे अन्दर ब्रह्माण्ड है। मुसलमान फ़क़ीर कहते हैं कि आलमे-सग़ीर (पिण्ड), आलमे-कबीर (ब्रह्माण्ड) का नमूना है। इसके अन्दर ख़ुद ख़ुदा है, बाहर से न किसी को मिला, न मिलेगा। लोगों ने

समुद्रों-पहाड़ों को छान मारा, मगर वह नहीं मिला, बल्कि जिसे भी मिला है, अपने अन्दर ही मिला है। सो, जिसे मनुष्य-जन्म में नाम की ख़्वाहिश हो, उसके बड़े ऊँचे भाग्य हैं।

नाम नामी दोऊ गाया। अभेदी भेद समझाया॥

फ़रमाते हैं कि हमने नाम और नामी की कैफ़ीयत बयान कर दी है। जो छिपा हुआ राज़ था, ज़ाहिर कर दिया है। जो कमाई करेंगे, वहाँ पहुँचेंगे। सबके लिए एक ही राह है, एक ही मंज़िल है, एक ही हाड़, चाम, मांस है, एक ही मन-इन्द्रियाँ हैं, एक ही परमात्मा है।

गुरू की मौज में सब कुछ। जिसे चाहें करें गुरुमुख॥

अब बात तो यह है कि जिस तरह हरएक आदमी को अपना-अपना रोज़गार करके रुपया कमाना पड़ता है, बिना मेहनत के दौलत हासिल नहीं होती, गुज़ारा नहीं होता, इसी तरह हरएक को नाम की कमाई करनी पड़ती है, लेकिन कभी-कभी यह भी होता है कि एक अमीर किसी ग़रीब को आधी दौलत देकर अपने बराबर का बना लेता है। इसी तरह किसी-किसी महात्मा ने किसी-किसी को अपनी कमाई देकर महात्मा बना दिया, लेकिन हरएक को नहीं।

शेख़ फ़रीद साहिब के बारे में कहा जाता है कि उनका एक शिष्य बड़ा नेक, पाक था। जब वह बाज़ार जाता तो एक वेश्या उसे अपने पास बुलाने की कोशिश करती, वह बेचारा दूसरी तरफ़ ध्यान कर लिया करता। ज्यों-ज्यों वह दूसरी तरफ़ ख़याल करता, वेश्या उसका और ज़्यादा ध्यान खींचने की कोशिश करती, ज़्यादा छेड़ती। एक दिन फ़रीद साहिब ने उस शिष्य को कहा कि आग चाहिए। पुराने ज़माने में लोग आग दबाकर रखते थे। घर में आग नहीं थी, उसने गली-मुहल्ले में पूछा, बहुत भटका लेकिन आग नहीं मिली। बाज़ार में गया। देखता है कि वही वेश्या हुक्का पी रही है। अब सोचता है कि यह मुझे हरदम परेशान करती है, पर पीर का हुक्म

है। सो, वह मकान की ऊपर की मंज़िल पर चढ़ गया। वेश्या उसे देखकर कहती है कि क्या बात है? कहता है, ''माता जी! आग चाहिए।'' वह मज़ाक़ करते हुए कहने लगी, ''आग का मूल्य आँख है। आँख निकालकर दे जाओ और आग ले जाओ।'' उसने फ़ौरन अँगुली डालकर आँख निकालकर आगे रख दी। वेश्या डर गयी और आग दे दी। मन में कहती है कि मैंने तो मज़ाक़ किया था। वह आँख पर पट्टी बाँधकर फ़रीद साहिब के पास आ गया। उन्होंने पूछा, ''आग ले आया है?'' कहता है, ''हाँ हुज़ूर! ले आया हूँ।'' फ़रीद साहिब ने कहा, ''यह आँख पर पट्टी क्यों बँधी हुई है?'' कहता है, ''जी! आँख आयी हुई है।'' उन्होंने कहा, ''अगर आँख आयी हुई है तो पट्टी खोल दे।'' जब पट्टी खोली तो आँख पहले की तरह बिल्कुल ठीक थी।

इसी तरह एक और फ़क़ीर का ज़िक्र है, बड़ी कमाई वाले थे। इन फ़क़ीरों में क़ुतुब, ग़ौस आदि दर्जे होते हैं। किसी जगह का क़ुतुब गुज़र गया था। वहाँ के लोगों ने आकर अर्ज़ की कि हज़रत! हमें क़ुतुब चाहिए। कहने लगे कि भेज देंगे। कुछ इन्तज़ार करने के बाद वे फिर आये और कहा कि हज़रत! क़ुतुब की ज़रूरत है। आपने कहा, ''अच्छा! कल ले जाना।'' वे भी आँखों वाले थे यानी अन्दरुनी राज़ से वाक़िफ़ थे। उन्होंने नज़र मारकर देखा कि इनके मुरीदों में कोई कमाई वाला है, मगर क़ुतुब के लायक़ कोई नज़र नहीं आया। मन में कहने लगे, ''कहाँ से देंगे?''

रात को एक चोर आपकी घोड़ी खोलने के लिए आया। वह पहले आगे के पैर खोलकर फिर पिछले पैर खोलने लगा। जब पिछले पैर खोले तो आगे के पैर बँध गये। आगे के खोले तो पिछले पैर बँध गये। चोर हठी था, कहता है कि घोड़ी को लेकर ही जाऊँगा। सारी रात खोलता रहा। जब भजन का वक़्त हुआ तो आप जागे। क्या देखते हैं कि एक आदमी घोड़ी को खोल रहा है। आपने पूछा, ''भाई, तू कौन है और क्या कर रहा है?'' कहता है, ''हज़रत! मैं चोर हूँ। सारी रात लगा रहा हूँ और बना कुछ भी नहीं।'' आपको उसकी यह अदा पसन्द आ गयी

कि इसने सच कहा है। प्यार के साथ बोले, "आ, तुझे यह घोड़ी दे देता हूँ।" ज्यों नज़र भरकर देखा तो उसे चोर से क़ुतुब बना दिया। जब दूसरा दिन हुआ तो उन लोगों ने हाज़िर होकर कहा कि हज़रत! हमें क़ुतुब दीजिये। आपने कहा कि इसे ले जाओ। सो, यह एक-आध बार हरएक महात्मा के जीवन में होता है, आम नहीं, लेकिन जहाँ सुगन्धि की पिटारी होती है, कभी न कभी ख़ुशबू निकल ही जाती है।

गुरुमुख होय तन धन से। करे फिर प्रीत निज मन से॥

शिष्य का क्या धर्म है? कहते हैं, अगर शिष्य को पूरा गुरु मिल जाये तो उसे गुरुमुख बनना चाहिए। गुरुमुख किसे कहते हैं?—पहले हमारी आत्मा पर यह स्थूल ग़िलाफ़ (परदा) है। इसके अन्दर सूक्ष्म और उसके अन्दर कारण। जब हम किसी महात्मा से उपदेश लेकर दोनों आँखों तक चढ़ेंगे, आगे तुरिया पद आयेगा। वह सूक्ष्म देश है और वहाँ हमारा सूक्ष्म शरीर है। उसे पार करने पर सूक्ष्म शरीर उतर जायेगा। जब ब्रह्म में जायेंगे तो वहाँ कारण परदा है। उसको पार करके पारब्रह्म, दसवें द्वार में जाकर कारण परदा भी उतर जाता है। वहाँ अमृतसर है, जिसमें स्नान करके आत्मा नंगी, सारे परदों से रहित हो जाती है। वहाँ पर इसका अपना नूर बारह सूरज का है। इसके विपरीत, यहाँ हम एक सूरज की तरफ़ भी मुँह नहीं कर सकते। वहाँ जाकर यह कहती है कि मैं आत्मा हूँ। जब इसे ख़याल आता है कि परमात्मा कौन है, फिर उसकी तलाश करती है। जब अभ्यास करते हुए दर्जे-ब-दर्जे सचखण्ड पहुँचती है तो कहती है कि मेरा मालिक सतपुरुष है, मेरी क़ौम सतनाम और मेरा देश सतलोक है। मुसलमान उसे मक़ामे-हक़्क़ कहते हैं और इसी तरह अन्य फ़क़ीर अपनी-अपनी भाषा में बयान करते हैं। शिष्य को चाहिए कि गुरु पर तन, मन, धन क़ुर्बान कर दे, लेकिन गुरु न तन लेता है, न धन लेता है और न मन। इसका मतलब सिर्फ़ शिष्य की आत्मा को इन चीज़ों से अलग करना है, ताकि शिष्य के अन्दर 'मैं-मेरी' न रहे। गुरु जो हुक्म देता है, वही करे।

एक बार राजा जनक ने चाहा कि मैं परम-पद हासिल करूँ। यह सोचकर उसने एक हज़ार गायें लीं। हरएक गाय के सींग से बीस-बीस मोहरें बाँध दीं और हुक्म दिया कि जो शास्त्रार्थ में जीत जाये, वह गायें ले जाये। कई महीनों तक बहस-मुबाहिसा होता रहा। आख़िर याज्ञवल्क्य सभी ऋषियों में श्रेष्ठ निकले और मोहरों सहित एक हज़ार गायें ले गये। राजा ने कहा कि मैं उसे इसी तरह मोहरों सहित एक हज़ार गायें और दूँगा जो मुझे अन्दर ले जाकर ज्ञान दे दे। याज्ञवल्क्य ऋषि वाचक ज्ञानी थे। वाचक ज्ञान के द्वारा ही सारा भेद समझा दिया, मगर ज्ञान न दे सके यानी अन्दर न ले जा सके। आख़िर राजा ने एक सिंहासन बनवा दिया, इसलिए कि जो कोई मुझे ज्ञान दे, उस पर बैठकर दे। इसके बाद उसने देश के सभी महात्माओं को बुलवाया और कहा कि मैं इतनी जल्दी ज्ञान माँगता हूँ जितनी जल्दी घोड़े पर सवार होने में लगता है। ऋषि सोचने लगे कि ज्ञान कोई घोलकर पिलानेवाली चीज़ नहीं कि इसे पिला दें। पहले कुछ लिखाएँ, पढ़ाएँ, फिर आगे का बतायें। इतने में अष्टावक्र जी आ गये। वे शरीर से टेढ़े-मेढ़े और कुबड़े थे। उन्होंने सोचा कि अगर राजा को ज्ञान न हुआ तो महात्मा के भेष को लज्जित होना पड़ेगा। सो, यह सोचकर वे चुपचाप सिंहासन पर जा बैठे। ऋषियों ने सोचा कि कोई पागल सिंहासन पर आ बैठा है। सब हँस पड़े। अष्टावक्र ने कहा, "मैं समझता था कि ये महात्मा हैं, मगर नहीं! ये आत्मा को नहीं देखते, शरीर को देखते हैं। शरीर को देखना चर्म-दृष्टि वालों का काम है।" सभी चुप हो गये। ऋषि ने कहा, "राजा! तुझे ज्ञान लेना है?" राजा ने कहा, "जी हाँ!" अष्टावक्र ने कहा, "ज्ञान की कुछ दक्षिणा भी होती है, शुक्राना भी होता है, देगा?" राजा ने कहा, "जो कुछ मेरी ताकत में है, मैं आपको देने के लिए तैयार हूँ।" अष्टावक्र ने कहा, "मैं वही माँगूँगा जो कुछ तेरी ताकत में है। अच्छा! मैं तीन चीज़ें माँगता हूँ—तन, मन और धन।" राजा ने थोड़ी देर सोचकर कहा कि मैंने दे दीं। अष्टावक्र ने कहा, "फिर सोच ले।" राजा ने कहा, "जी! मैंने सोच लिया।" अष्टावक्र ने कहा कि भर संकल्प। राजा ने संकल्प भर लिया। उन दिनों में रिवाज था कि पानी की

चुल्ली भरी और इक़रार हो गया। अब अष्टावक्र ने रोब के साथ राजा से कहा, ''देख राजा! तू मुझे अपना तन, मन और धन दे चुका है। इनका मालिक अब मैं हूँ, तू नहीं। मैं हुक्म देता हूँ कि तख़्त से उतरकर सबके जूतों में जा बैठ!'' देश का राजा! बिरादरी, सभा और प्रजा के सामने यह करना आसान नहीं। लोक-लाज भजन में बड़ी रुकावट है, जैसा कि स्वामी जी महाराज फ़रमाते हैं:

लाज जग काज बिगाड़ा री। मोह जग फन्दा डारा री॥[17]

दरबार में सन्नाटा छा गया। सब चुप। अब अपनी प्रजा, अपना राज, मगर राजा सयाना था, ज़रा भी न झुँझलाया। चुपचाप जूतों में जा बैठा। अष्टावक्र ने यह क्यों किया? इसलिए कि जो लोक-लाज है, वह निकल जाये। लोक-लाज बड़ी भारी रुकावट है, बड़े-बड़े यहाँ आकर रह जाते हैं।

अष्टावक्र ने कहा कि अब धन मेरा है, मेरे धन में मन न लगाओ। राजा का ख़याल औरतों की तरफ़ जाता है, फिर लौट आता है कि यह तो अब ऋषि की हैं। धन की तरफ़ जाता है, पर वापस लौट आता है कि यह तो ऋषि का है। मन की आदत है, यह कभी ख़ाली नहीं बैठता, कुछ न कुछ बराबर सोचता रहता है। सो, राजा का ख़याल जाता है, लौट आता है, जाता है, लौट आता है। ऋषि देखता रहा। आख़िर राजा आँखें बन्द करके बैठ गया कि न बाहर झाँकूँ, न ख़याल बाहर जाये। यही ऋषि चाहता था। अपना मतलब पूरा होता देखकर ऋषि ने कहा कि तू कहाँ है? कहता है, ''मैं अन्दर हूँ।'' ऋषि ने कहा, ''जो मन है, वह भी तू मुझे दे चुका है। ख़बरदार! उसके ज़रिये कोई ख़याल न उठाना।'' राजा समझदार था, समझ गया कि मेरा मन पर कोई दावा नहीं । समझने की देर थी, मन रुक गया। जब ख़याल बन्द हुआ, अष्टावक्र ने अपनी तवज्जुह दे दी। रूह अन्दर चल पड़ी, रूहानी मंज़िलों की सैर और नाम की लज़्ज़त लेने लग गयी।

अष्टावक्र ने ऋषियों से कहा कि इसको बुलाओ, पर अब बोले कौन? ऋषि ने जितनी देर मुनासिब समझा राजा को अन्दर लज़्ज़त लेने दी। आख़िर उसका ख़याल नीचे ले आया। जब राजा ने आँखें खोलीं तो पूछा कि ज्ञान हो गया? राजा ने कहा, "जी, हो गया।" ऋषि ने कहा कि कोई शक? राजा ने कहा—"जी, कोई नहीं।" ऋषि ने कहा, "यह तन, मन, धन मैं तुझे बतौर प्रसाद देता हूँ, इन्हें अपना न समझना। राज भी कर और भजन भी कर।" यही गुरु अमर दास जी कहते हैं:

तनु मनु धनु सभु सउपि गुर कउ हुकमि मंनिऐ पाईऐ॥[18]

अगर शिष्य तन, मन, धन गुरु पर क़ुर्बान करते हुए उसके हुक्म के मुताबिक़ मेहनत करे तो मालिक मिल जाता है, लेकिन गुरु को शिष्य के तन, मन, धन का क्या करना है? उसके पास अपना है, उसे पराया लेकर क्या करना है?

यह गुरुमुख तब बनता है जब तन, मन, धन में से अपना मोह निकाल दे। जिस तरह साहब लोगों की 'आया' होती हैं, वे बच्चों को पालती-पोसती हैं, मतलब कि हर क़िस्म की सेवा करती हैं, लेकिन अगर बच्चा मर जाये तो वे नहीं रोतीं, बल्कि बच्चे के माता-पिता और अन्य रिश्तेदार रोते हैं। इसी तरह आप इनमें अपना मोह न रखो। जब इस नुक़्ते पर आकर मालिक को अन्दर देख लो तो आपको कोई दुःख नहीं।

बाबू हीरा सिंह: जब रूह पारब्रह्म में पहुँच गयी, फिर इसे मालिक में जज़्ब हो जाना चाहिए, क्योंकि वहाँ माया नहीं है, वहाँ सिर्फ़ आत्मा है या शब्द और गुरु है। फिर यह जुदा क्यों है?

महाराज जी: वहाँ यह जुदा ही रहेगी क्योंकि अभी महासुन्न का मैदान बाक़ी है। जब तक महासुन्न का मैदान तय न हो, रूह और शब्द को अलग-अलग रहना है। पारब्रह्म में इसका अपना नूर बारह सूरज का है, मगर वहाँ महासुन्न में बारह सूरज काम नहीं देते। ज्यों-ज्यों रूह ऊँची मंज़िलों पर जायेगी, इसकी ताकत, इसकी रोशनी ज़्यादा होती चली जायेगी। आख़िर वह वक़्त आयेगा जब रूह प्रकट रूप में मालिक से अलग रहती हुई, अन्दर

उसमें मिली हुई रहेगी। जैसे मेरी मुट्ठी में आकाश है, मुट्ठी बन्द है, आकाश अन्दर है। मुट्ठी खोल दें तो बाहर भी है और अन्दर भी।

लगे तब जाय सुन धुन से। गये तब तीन गुन तन से॥

जब आत्मा दुनिया की तरफ़ से हटी तो आसमानी मंज़िलों पर चली गयी यानी ब्रह्म और तुरिया पद दोनों को लाँघ गयी। उस वक़्त—स्थूल, सूक्ष्म और कारण—तीनों शरीर, तीनों गुण, मन, माया आदि सभी ग़िलाफ़ उतर गये। उस वक़्त इसका अपना प्रकाश बारह सूरज का होता है। अभी तो यह एक सूरज की तरफ़ भी नहीं देख सकती। इस पर जो परदे पड़े हुए हैं, जब तक ये परदे नहीं उतरते, इसे कुछ पता नहीं। जिस तरह लैम्प के ऊपर हम टाट के दस-बीस परदे चढ़ा दें तो लैम्प की रोशनी बिल्कुल नहीं दिखती। ज्यों-ज्यों परदे उतारते जाओ, लैम्प की रोशनी तेज़ होती जायेगी। इसी तरह आप कमाई करोगे, प्यार बढ़ता जायेगा। जब आत्मा पारब्रह्म में पहुँची, इसके सारे ग़िलाफ़ उतर गये, आत्मा नंगी हो गयी।

वर्ण धुन भेद दोउ बरना। वाच और लक्ष इन कहना॥

अब स्वामी जी महाराज कहते हैं कि मैंने वर्णात्मक और धुनात्मक नाम का पूरा-पूरा बयान कर दिया है। चाहे उसे वाच और लक्ष्य कह दो, चाहे वर्ण और धुन। जो लिखा जाये, पढ़ा जाये, बोला जाये, वह वाच है और जो लिखा, पढ़ा, बोला न जाये, वह लक्ष्य है।

वाच वर्णात्मक जानो। लक्ष धुन धुनी पहिचानो॥

लिखना, पढ़ना, बोलना यानी सिमरन करना, यह वाच है। आत्मा का रूहानी मण्डलों पर चढ़कर नाम की लज़्ज़त लेना लक्ष्य है। नाम को पकड़कर नामी से मिलना है। बूँद को समुद्र में जाकर समुद्र होना है। आत्मा को परमात्मा में लीन होकर परमात्मा बनना है। जो ला-बयान है, निर्वचनीय है, वह लक्ष्य है। उसके बेशुमार नाम हैं। एक फ़क़ीर की बाणी है:

बनामे ऊ किह् ऊ नामे नदारद,
बहर नामे किह् ख़्वानी सर बर आरद।[19]

वह ताकत जिसका कोई नाम नहीं और जिस नाम से भी उसे याद करो, वह मदद करता है, प्रकट हो जाता है।

वर्ण में भेष जग भूला। मर्म धुन संत कोइ तोला॥

अब कहते हैं कि सारा संसार पढ़ने-पढ़ाने, सोचने, ज़बानी जमा-ख़र्च और पाठ करने में लग गया। आत्मा को धुनात्मक नाम से स्पर्श नहीं किया। आप देख लो, कोई विष्णु-सहस्रनाम का जाप करता है, कोई संध्या, कोई गायत्री मंत्र का जाप करता है। रावण चारों वेदों का पढ़ा हुआ ही नहीं था, बल्कि भाष्यकर्ता पण्डित भी था। उसके वेद-भाष्य के मुक़ाबले और कोई वेद-भाष्य नहीं, मगर नतीजा क्या निकला? इतनी विद्या पढ़कर भी उसने सीता का हरण किया। वही रावण जिसका पुतला बनाकर आप हर साल जलाते हो। सो, चाहे करोड़ों ग्रन्थ पढ़ लो, आत्मा अन्दर नहीं जाती। दुनिया समझती है कि पढ़ने से मुक्ति हो जायेगी। कहते हैं कि सारा संसार पढ़ने में ही रह गया, अन्दर कोई-कोई महात्मा ही गया।

वर्ण जप जप पचें भेषी। मिले कुछ फल नहीं नेकी॥

सभी क़ौमें, वेद-शास्त्र और अपनी-अपनी मज़हबी किताबों का पाठ करती रहीं। मैं उन्हें बुरा नहीं कहता, न करने से तो यह अच्छा और श्रेष्ठ कर्म है, मगर मुक्ति नहीं होती। जो नाम मुक्ति देता है, वह आपके अन्दर है।

भेद धुन का नहीं पाया। नाम फल हाथ नहिं आया॥

कहते हैं, बड़ी तादाद में लोग ज़बानी नाम जपते हैं, बेशक, कुछ न करने से तो यह अच्छा है। मगर इससे आत्मा रूहानी मंज़िलों यानी मक़ामे-हक़्क़ या सचखण्ड में नहीं जा सकती। वर्णात्मक नौ दरवाज़ों तक है, वह दसवीं

गली में नहीं ले जा सकता। आगे धुनात्मक नाम है, उसकी कशिश ही खींचेगी। नाम जपना, कुछ न करने से तो अच्छा है, मगर पूरी कामयाबी नहीं हो सकती। जब तक आत्मा उस बाँग को नहीं सुनती, पूरा फ़ायदा नहीं होता। जब तक आत्मा आला मुक़ाम पर नहीं पहुँचती तब तक मन-इन्द्रियों की ग़ुलामी से आज़ाद नहीं होती। न गुरु मिला, न धुन का भेद मिला, फिर पूरा फ़ायदा किस तरह हो!

जपें नित सहस और लाखा। खुले नहिं नेक उन आँखा॥

अब कहते हैं कि कोई सौ बार माला फेरता है, कोई लाख बार लिख-लिख कर आटे में गूँथकर मछलियों को देता है। न अन्दर गया, न परदा खोला, न रोशनी हुई, बना कुछ भी नहीं। सारी उम्र धर्म-ग्रन्थों का पाठ करते रहे, पर मौत के वक़्त किसी ने आकर नहीं बचाया। क्या कहते हैं एक महात्मा:

राम राम जपेंदिआं मेरी जिहबा घस गई।
अन्दर राम न लभयो ए की धाड़ पई।

कि राम-राम जपते जीभ घिस गयी लेकिन अन्दर परदा नहीं खुला। यही गुरु अमर दास जी कहते हैं:

राम राम सभु को कहै कहिऐ रामु न होइ॥
गुर परसादी रामु मनि वसै ता फलु पावै कोइ॥[20]

'राम-राम' तो सारी दुनिया कहती है, लेकिन 'राम-राम' कहने से राम नहीं मिलता। मस्जिद का मुल्ला सौ साल मस्जिद में रहा, पर आत्मा रूहानी मंज़िलों पर नहीं गयी। पूरे ग्रन्थ साहिब के सौ-सौ पाठ* कर चुके भाइयों से पूछो कि क्या कभी अन्दर प्रकाश हुआ है? आत्मा चढ़ती है? कहेंगे कि नहीं। पढ़ना काफ़ी नहीं।

---

* सिक्ख धर्म में ग्रन्थ साहिब के पाठ की समाप्ति के अनुष्ठान को 'भोग' कहते हैं, जिसे बड़ी श्रद्धा से सम्पन्न किया जाता है।

गुरु अर्जुन साहिब कहते हैं :

सभ किछु घर महि बाहरि नाही॥ बाहरि टोलै सो भरमि भुलाही॥[21]

सबकुछ अन्दर है, मगर संसार बाहर ढूँढ़ता है। मुझे एक आदमी मिला, कहता है कि मैंने पूरे ग्रन्थ साहिब के आठ सौ पाठ किये हैं। मैंने कहा, ''मैं तेरे पैरों को छूता हूँ, लेकिन मैं एक-दो सवाल पूछता हूँ, उनका जवाब दे।'' कहता है, ''पूछो।'' मैंने कहा कि क्या तेरे अन्दर कभी प्रकाश हुआ है? आत्मा खण्डों-ब्रह्माण्डों पर गयी है? कभी अन्दर जाकर अमृत पिया है? कभी अन्दर कोई महात्मा मिले हैं? कहता है, ''जी! नहीं।'' क्योंकि भागते-भागते गुरुद्वारे गये, भागते आये, पन्ने पलटाये, घर आ गये। इसी तरह कई गीता के प्रेमी हैं। सारी उम्र गीता पढ़ते रहे, मगर जो गीता कहती है वह नहीं किया। सारी उम्र किताबें पढ़ते रहो, बनता कुछ नहीं। बुल्लेशाह क्या कहता है:

इल्मों बस करीं ओ यार, इक्को अलफ़ तेरे दरकार।[22]

वेद-शास्त्र और अन्य किताबें पढ़ने का मक़सद क्या है? अन्दर जायें, खण्डों-ब्रह्माण्डों पर चढ़ें। अगर सारी उम्र पढ़ता रहा, मगर अन्दर जाने की कोशिश न की तो पढ़ना, न पढ़ना एक जैसा ही है।

तिमर संसार नहिं जावे। मोह मद काम भरमावे॥

सारी उम्र पढ़ते रहे पर वैसा ही काम, वैसा ही क्रोध, वैसा ही लोभ, वैसा ही मोह और वैसा ही अहंकार। यहाँ सारी उम्र मेहनत करते रहने का क्या फ़ायदा है? जब तक यह धुनात्मक नाम के साथ नहीं जुड़ता, परदा नहीं खुलता, अन्दर नहीं जाता, मुक्ति नहीं मिलती। वैसा ही काम, वैसा ही क्रोध, वैसा ही लड़ाई-झगड़ा। फिर पढ़ने का फ़ायदा नहीं हुआ, सारी उम्र आँखों के बाहर बैठा रहा। पाँच ज्ञानेन्द्रियाँ, पाँच कर्मेन्द्रियाँ, चार अन्तःकरण, ये चौदह ताकतें आत्मा को दबाये बैठी हैं। जब तक यह अन्दर नहीं जाता, पता नहीं लगता।

धुनी धुन भेद नहिं चीन्हा। सुरत और शब्द नहिं लीन्हा॥

उन लोगों में कसर क्या रही? अन्दर नहीं गये, आत्मा को धुनात्मक नाम के साथ नहीं जोड़ा। दूसरे शब्दों में, सुरत शब्द के साथ नहीं जुड़ी। गुरु अमर दास साहिब फ़रमाते हैं:

बिनु सबदै अंतरि आनेरा॥ न वसतु लहै न चूकै फेरा॥
सतिगुर हथि कुंजी होरतु दरु खुलै नाही गुरु पूरै भागि मिलावणिआ॥[23]

बिना सतगुरु के हमारा मक़सद पूरा नहीं होता। हमारा मक़सद नाम-धुन है, जिसका ताल्लुक़ गुरु के साथ है। जब तक गुरु नहीं मिलता, अन्दर रास्ता नहीं खुलता। मन मजिस्ट्रेट है, तेरा हाल अच्छी तरह बता देगा। मन, पापों-ऐबों से वाक़िफ़ है, ख़ुद कह देगा कि तेरे अन्दर ये ऐब हैं। इसकी आत्मा मालिक के साथ नहीं जुड़ी, बाहर ही बाहर उम्र गुज़ार दी, जन्म-मरण ख़त्म नहीं हुआ। योगियों ने गुरु नानक साहिब से पूछा कि संसार-समुद्र से तरने की कौन-सी राह है? गुरु नानक साहिब ने जवाब दिया:

जैसे जल महि कमलु निरालमु मुरगाई नै साणे॥
सुरति सबदि भव सागरु तरीऐ नानक नामु वखाणे॥[24]

जिस तरह कमल का फूल जल में होते हुए भी सूखा है या मुर्ग़ाबी (जल-कुक्कुट) जल में रहती है, जल में ही खाती-पीती है, मगर जब उड़ती है तो सूखे परों के साथ। इसी तरह संसार में निर्लेप रहकर सुरत को शब्द के साथ जोड़ दो। गुरु अर्जुन साहिब ने कहा है:

नानक सतिगुरि भेटीऐ पूरी होवै जुगति॥
हसंदिआ खेलंदिआ पैनंदिआ खावंदिआ विचे होवै मुकति॥[25]

अगर पूरा सतगुरु मिल जाये तो यह दुनिया में रहते हुए, काम-काज करते हुए, हँसते-खेलते पार हो जाता है।

मिला नहिं गुरू धुन भेदी। लखावे धुन मिटे खेदी॥

फ़रमाते हैं कि अगर धुनात्माक नाम का भेद नहीं मिला, अन्दर जाने की राह नहीं मिली, आत्मा रूहानी मंज़िलों पर नहीं गयी, सचखण्ड में नहीं पहुँची, जन्म-मरण ख़त्म नहीं हुआ तो या तो इसने गुरु की तलाश नहीं की या अगर की है तो पूरा गुरु नहीं मिला। अगर मिला भी है तो विश्वास नहीं आया।

काल ने बुद्धि उन छेदी। मुफ़्त नर देह उन दे दी॥

अब कहते हैं कि जो आदमी नाम से ख़ाली रह गये, उनकी बुद्धि काल ने भ्रष्ट कर दी। यह मनुष्य-जन्म जो चौरासी लाख योनि भोगकर मिला था, बरबाद हो गया। गुरु अर्जुन साहिब कहते हैं:

> कई जनम भए कीट पतंगा॥ कई जनम गज मीन कुरंगा।
> कई जनम पंखी सरप होइओ॥ कई जनम हैवर ब्रिख जोइओ।
> मिलु जगदीस मिलन की बरीआ॥ चिरंकाल इह देह संजरीआ।[26]

यह वक़्त भजन करने का है, परमात्मा से मिलने का है। चौरासी लाख योनियों में से निकलने की राह सिर्फ़ मनुष्य-जन्म ही है। अगर इसे शराबों-कबाबों और अन्य विषय-विकारों में गँवा दिया तो आगे फिर चौरासी का चक्र मौजूद है। चौरासी के जेलख़ाने से निकलने का यही समय है। इसलिए इसे चाहिए कि सतगुरु के साथ प्रेम-प्यार और ताल्लुक़ पैदा करे, मगर इसने चोरों-ठगों के साथ दोस्ती कर ली। अगर मनुष्य-जन्म में नाम नहीं मिला तो और कोई जन्म है नहीं। बिना मेहनत के यह दौलत मिलती नहीं। गिरधर कविराय अपनी कुण्डली में लिखते हैं कि ब्रह्मा को बनाना तो बैल था, पर उसने दाढ़ी-मूँछ लगाकर कुछ और बना दिया। बैल के भी बाल-बच्चे हैं, मनुष्य के भी बाल-बच्चे हैं। फ़र्क़ सिर्फ़ यह है कि इसको नाम जपना था, और कोई फ़र्क़ नहीं। आप फ़रमाते हैं:

बैल भूल बिधि नर रचे लगा दी दाढ़ी मूँछ।
अकल वही हैवान की बिना सींग बिन पूँछ।
बिना सींग बिन पूँछ और तो पशु की रहनी।
भै मैथन आहार पुंन निंदरा सुननी और कहनी।
कहे गिरधर कविराय चले न सूधी गैल।
खाल आदमी की लेकर पहिरी है तो बैल।[27]

दया कर संत गोहरावें। ज़रा नहिं चित्त में लावें॥

अब सन्त जो सचखण्ड से आते हैं, उनका काम मज़हब बनाना नहीं, न ही वे मज़हबों को तोड़ते हैं। वे तो पहले ही बने हुए हैं। सन्तों का मक़सद धुनात्मक नाम के ज़रिये रूहानी मण्डलों पर ले जाकर, सचखण्ड पहुँचाना है, मालिक से मिलाना है। देखो, सन्तों की तालीम कितनी ऊँची है, वह रब्बी ज्ञान है, वह मज़हबों को नहीं देखती। कोई किसी देश, किसी मज़हब का क्यों न हो, सबके साथ प्यार करना सिखाती है। वे महात्मा चोरों-ठगों को भी गले लगाने के लिए तैयार हैं।

जिस तरह धोबी के पास तेली और हलवाई का कपड़ा भी आता है, वह उसे धोने से इनकार नहीं करता। वह कहता है कि एक भट्ठी न सही, दो भट्ठी चढ़ा लूँगा, इसके अन्दर सफ़ेदी है, मैं निकाल लूँगा। इसी तरह सन्तों के सत्संग में चोर भी आते हैं, ठग भी आते हैं और प्रेमी भी आते हैं। ज्यों-ज्यों सोहबत होती है, त्यों-त्यों चोर चोरी छोड़ देते हैं, डाकू डकैती छोड़ देते हैं, महात्मा बन जाते हैं। बिधीचन्द डाकू था, भूमिया चोर था। बुरे से बुरे आदमी भी सन्तों की शरण में आकर महात्मा बन गये। तुम चाहे उनके साथ कैसा भी सलूक करो, वे तुमसे प्यार ही करेंगे। हर ज़माने में चोर-ठग सन्तों के पास आये, उन्होंने नाम देकर, परदा खोलकर मालिक से मिला दिया।

एक साखी है। एक बड़ा ज़बरदस्त चोर और डाकू था। जब वह मरने लगा तो उसने अपने पुत्र से कहा कि तू न किसी गुरुद्वारे, न ठाकुरद्वारे, न किसी सत्संग में जाकर किसी महात्मा के पास बैठना। दूसरे, अगर तू चोरी

करते पकड़ा जाये तो बताना मत, चाहे लोग मार-मार कर चूर कर द। यह कहकर वह चोर मर गया। अब उसका पुत्र रोज़ चोरी किया करता। एक दिन उसने एक घर में सेंध लगाई। घर वाले जाग उठे तो वह दौड़ पड़ा, लोग भी उसके पीछे भागे। आगे सिपाहियों की टोली खड़ी थी। उन्होंने लोगों से कहा कि इस तरफ़ हम खड़े हैं, अब यह कहीं नहीं जाता। अब चोर सोचता है, ''मैं किधर जाऊँ, पीछे घर वाले हैं, आगे सिपाहियों की टोली।'' पास ही एक धर्मशाला थी जहाँ कीर्तन हो रहा था। उसने सोचा कि चलो यहाँ चलें, कीर्तन नहीं सुनेंगे, जान तो बच जायेगी। यह सोचकर वह धर्मशाला में दाख़िल हुआ, कानों में अँगुली दे ही रहा था कि यह आवाज़ कानों में पड़ी, 'देवी-देवताओं की परछाईं नहीं होती'। मन में कहता है—''मुझे क्या! देवी-देवताओं की परछाईं हो या न हो।'' इतने में सिपाही आ गये और वह पकड़ा गया। हाकिम के पास ले गये, उसे मारा-पीटा मगर वह नहीं माना। हाकिम ने कहा कि जब तक यह न माने, छोड़ना मत। एक ठगिनी ने कहा कि मैं इससे मनवा लेती हूँ। वह जानती थी कि चोर या तो देवी के भक्त होते हैं या मुसलमान पीर के। वह एक रात दो नक़ली भुजाएँ लगाकर, मशाल जलाकर, देवी बनकर जेलख़ाने में गयी और चोर से बोली कि मैं तुझे बचाने के लिए आयी हूँ, अगर तूने चोरी की है तो मुझे सच-सच बता दे। चोर के मन में ख़याल आया कि यह देवी है, मैं इसे सच-सच क्यों न बता दूँ? अचानक उसकी नज़र देवी की परछाईं पर जा पड़ी। मन में कहता है, ''इसकी तो परछाईं है, देवी-देवताओं की तो परछाईं नहीं होती, यह देवी नहीं बल्कि धोखा है।'' कहता है, ''माता! मैंने चोरी नहीं की, हाकिम मुझे यों ही मरवाता है।'' अगले दिन उसने हाकिम से कह दिया कि यह चोर नहीं। हाकिम ने चोर को छोड़ दिया। अब चोर ने सोचा कि सत्संग की एक तुक सुनी और जेलख़ाने से आज़ाद हो गया हूँ , अगर रोज़ सुनूँ तो ज़रूर कुछ न कुछ बन जाऊँगा। वह रोज़ सत्संग में जाने लगा, आख़िर वह महात्मा बन गया। इसी तरह कई चोर महात्मा बन गये। उनकी जीवनियाँ पढ़कर देखो। सन्त दयावान होते हैं, हम पर रहम करते हैं। सन्त किसी घोड़े पर

सवार हों, जो कीड़े-पतंगे उनके पैरों के नीचे आते हैं, उन्हें मनुष्य-जन्म दे सकते हैं। किसी पेड़ का फल खा लिया तो उसे मनुष्य-जन्म मिल सकता है। उनका मन हर वक़्त नाम में लगा रहता है। मेरा अपना अनुभव है, क़रीब चालीस-पचास साल पहले की बात है। एक सत्संगी सुनार का एक पुत्र था, गुरु की उस पर रहमत थी। उसका लड़का बीमार हो गया, मर्ज़ ला-इलाज हो गया। जब उस लड़के का अन्त समय आया तो उसका पिता रोने लगा। पुत्र ने कहा, ''आप रोते क्यों हो? मैं पिछले जन्म में बबूल (कीकर) का वृक्ष था। मेरी दातुन गुरु साहिब ने की थी, इसलिए मुझे मनुष्य का जन्म मिला है। अब मैं जीने लगा हूँ, मरने नहीं लगा। अब मुझे नाम मिल गया है और इससे अच्छा जन्म मिलेगा।'' सो, यह नाम का प्रताप है और सन्तों की ताकत है। सन्त हरएक क़ौम और हरएक मज़हब के साथ प्यार करते हैं।

पाँच धुन भेद बतलावें। सुरत की राह दिखलावें॥

जितने सन्त-महात्मा हैं उनका एक ही उपदेश है कि ऐ जीव, यह देश तेरा देश नहीं, यह मज़हब तेरा मज़हब नहीं। तेरा देश सचखण्ड है, तेरा मज़हब सतनाम है, तू सतपुरुष का अंश है, मगर दुनिया में आकर फँस गया है और निकलने की राह यह है। चाहे महात्मा किसी देश, किसी मज़हब, किसी क़ौम में आयें, सबकी एक ही राह है। गुरु नानक साहिब, कबीर साहिब, शम्स तब्रेज़, मौलाना रूम और अन्य महात्मा जो भी सचखण्ड गये, पाँच शब्द के द्वारा ही गये। उनकी वाणियाँ पढ़कर देख लो। क्या कहते हैं गुरु नानक साहिब :

> पंच सबद धुनिकार धुनि तह बाजै सबदु नीसाणु॥[28]

यही कबीर साहिब कहते हैं:

> पंचे सबद अनाहद बाजे संगे सारिंगपानी॥
> कबीर दास तेरी आरती कीनी निरंकार निरबानी॥[29]

मौलाना रूम साहिब भी कहते हैं:

> ब-हफ़्तम चर्ख़ नौबत पंज दारी,
> चूँ ख़ैमा ज़ि शश जिहत बरकंदा बाशी।[30]
>
> ख़ामोश ओ पंज नौबत बिशनौ ज़ि आसमाने,
> क-आँ आसमाने-बैरूँ ज़ां हफ़्त ओ ईं शश आमद।[31]

पाँच धुनें, पाँच कलमे, जो लिखने-पढ़ने में नहीं आते, तेरे अन्दर हैं। जितने महात्मा, कामिल फ़क़ीर, सचखण्ड, मक़ामे-हक़्क़ तक पहुँचे हैं, सभी अन्दर से ही पहुँचे हैं। सभी की तालीम एक ही है। हमारा अमृतसर हमारे अन्दर है, पाँच शब्द अन्दर ही हैं। हरएक फ़क़ीर यही कहता हुआ चला गया। जिसके ऊपर मालिक की रहमत है, बेशुमार रूहें उससे फ़ैज़ (लाभ) पाकर सचखण्ड पहुँच जाती हैं। इसके अन्दर पाँच नौबतें हैं, जिनकी आवाज़ सुनने से काम-क्रोध मर जाते हैं, अन्दर परदा खुल जाता है। जो मुसलमान फ़क़ीर वहाँ पहुँचे हैं, वे कहते हैं कि सातवें आसमान से पहली नौबत या पहला नाम शुरू होता है। छः चक्रों में नाम नहीं, सिर्फ़ लफ़्ज़ ही लफ़्ज़ हैं। योगियों और ऋषियों ने लफ़्ज़ों का सिमरन किया है या हृदय से जाप किया है, मगर आँखों के नीचे-नीचे बाँग या शब्द नहीं है। सचखण्ड में जाकर पाँचों बाँगें मुकम्मल (पूर्ण) हो जाती हैं। एक ही राह है, एक ही मनुष्य, एक ही कलमा, एक ही धुन और एक ही मालिक है।

हरएक फ़क़ीर, जो पाँच धुनों या पाँच कलमों का भेद जानता है, हमारी रूह को रूहानी मंज़िलों पर ले जा सकता है, वह मुर्शिद है। उसको मुर्शिद कहना धर्म है। अगर पाँच शब्द का भेद नहीं जानता तो वह कामिल फ़क़ीर नहीं, बल्कि नीचे के चक्रों में बैठा है। उस मालिक यानी हक़्क़ तक पहुँचने के लिए पाँच नौबतें मिलती हैं। राह एक है, पर शरीअतें* अलग-अलग हैं। शरीअत हरएक मज़हब की अलग-अलग है,

* धार्मिक नियम तथा आचार, कर्मकाण्ड।

लेकिन हक़ीक़त* व मारफ़त† एक है। हरएक सन्त यही कहता है कि आत्मा को अन्दर शब्द के साथ जोड़ दो। राह सबके लिए एक ही है। गुरु नानक साहिब खत्री थे, गुरु रविदास जी जूते गाँठने का काम करते थे, कबीर साहिब जुलाहे थे।

मगर गुरु अर्जुन साहिब फ़रमाते हैं:

खत्री ब्राहमण सूद वैस उपदेसु चहु वरना कउ साझा॥
गुरमुखि नामु जपै उधरै सो कलि महि घटि घटि नानक माझा॥[32]

शायद अरब के मुसलमान कहें कि ग्रन्थ साहिब पंजाबी में है और कलमा तो अरबी में है। कलमा क्या है? नाम है। कलियुग में सुरत को शब्द के साथ जोड़ने से ही पार उतरा जा सकता है। नाम सारे संसार के लिए एक ही है और सबके अन्दर है। सुरत को शब्द के साथ जोड़कर जन्म-मरण ख़त्म कर लो। अफ़सोस! हम गुरु नानक साहिब की बाणी को सिर्फ़ अपने लिए ही समझते हैं, यह तंगदिली है। ग्रन्थ साहिब में कई सन्तों की बाणियाँ हैं। कबीर जुलाहा, धन्ना जाट, पीपा राजपूत, त्रिलोचन ब्राह्मण, मतलब यह कि हर क़ौम की बाणियाँ ग्रन्थ साहिब में हैं, सभी हक़दार हैं। मारफ़त और हक़ीक़त की राह एक है, मगर दुनिया से क्या कहा जाये। जो सन्त आते हैं, वे कहते हैं कि भाई, तेरे अन्दर सचखण्ड है, पाँच शब्द का आसरा लेकर चढ़ जा।

धुनों के नाम दरसावें। रूप अस्थान कह गावें॥

पूरा गुरु हर मंज़िल की कैफ़ीयत, लीला, रोशनी, नग़मे और हालात से बाख़बर होता है, वह जानता है कि किस-किस राह से जाना है। सतगुरु शरीर नहीं, बल्कि ताकत है। इसी तरह सतगुरु अलग नहीं, बल्कि हर मंज़िल पर शिष्य के साथ है।

---

* परमात्मा से मिलाप की उच्चतम रूहानी अवस्था।

† रूहानी अभ्यास से प्राप्त हुए आन्तरिक भेद।

सुरत का जोग लखवावें। जीव नहिं कहन उन मानें॥

जो पापी आत्माएँ हैं यानी मैले चित्त वाले हैं, उन्हें मालिक की भक्ति अच्छी नहीं लगती, वे इधर नहीं आते जिस तरह मक्खी चन्दन, कस्तूरी, मुश्क़, कपूर वग़ैरह ख़ुशबूदार चीज़ों पर नहीं बैठती, मैले पर सारा दिन भिन-भिन करती है और ख़ुशबू उसे बुरी लगती है। कबीर साहिब कहते हैं:

कबीर पापी भगति न भावई हरि पूजा न सुहाइ॥
माखी चंदनु परहरै जह बिगंध तह जाइ॥[33]

जो सन्तों के पास जाता है, वे उससे यह नहीं कहते कि उजाड़ों, पहाड़ों, तीर्थों, मूर्तियों पर माथा रगड़। वे यह भी नहीं कहते कि तू अपना मज़हब छोड़। मज़हब छोड़ने से परमात्मा नहीं मिलता। न ही वे कहते हैं कि बाल-बच्चे छोड़। यह भी नहीं कहते कि काम-काज छोड़, बल्कि वे कहते हैं कि अपने-अपने मज़हब में रहो, बाल-बच्चों में रहो, हक़ की कमाई करो और नाम जपकर परदा खोल लो। न केश बढ़ाने हैं, न सिर मुँड़ाना है, न कपड़े रँगने हैं। आसान से आसान है कि सुबह उठकर दो-ढाई घण्टे नाम के साथ आत्मा को जोड़ दो।

सुरत ले गगन चढ़वावें। पिंड में सार बतलावें॥

जब अच्छे भाग्य से महात्मा मिल जायें, फिर वे इसे किताबों में नहीं भरमाते और न विद्या-बुद्धि में लगाते हैं, बल्कि अन्दर ले जाते हैं। कहते हैं कि बाहर मत देख बल्कि अन्दर चढ़कर देख, कुल ब्रह्माण्ड और सारा रूहानी ख़ज़ाना तेरे अन्दर है, बाहर नहीं।

चढ़े ब्रहमंड तब परखे। सहसदल मध्य कुछ निरखे॥

जब रूह नौ दरवाज़े ख़ाली करके सूरज, चन्द्रमा और तारा-मण्डल लाँघकर ऊपर तुरिया पद, मक़ामे-अल्लाह में पहुँच गयी, तब सतगुरु पर

इसका पूरा भरोसा हो गया। वहाँ हज़ार बत्ती की जोत है, वहाँ अमृत बरस रहा है, ख़ुशी और शान्ति है। वहाँ जाकर मन-इन्द्रियाँ अधीन हो जाती हैं, काम-क्रोध वग़ैरह मर जाते हैं, नाम की लज़्ज़त आनी शुरू हो जाती है। वहाँ पहुँचकर निश्चय आ जाता है कि सतगुरु जो कुछ कहता है, वह ठीक है। यहाँ से पहली धुन शुरू हो जाती है। यहाँ से फ़क़ीरों की रूहानियत की अलिफ़-बे शुरू होती है। यह गुरु नानक साहिब की पहली मंज़िल है, हमें पाँचवीं मंज़िल पर जाना है।

बंक चढ़ तिरकुटी धावे। सुन्न दस द्वार गति पावे॥

बंकनाल कहते हैं टेढ़ी सुरंग को। तुरिया पद के बाद इसमें से लाँघकर जाना पड़ता है। आगे ब्रह्म का देश है, जो मुक्ति का दरवाज़ा है। जिस दरवाज़े को लाँघकर मुक्ति मिलती है, वह राई के दसवें भाग के बराबर है और मन हाथी है, लाँघे तो किस तरह?

गुरु नानक साहिब कहते हैं:

राह खुदाई भीहावना वालहु दसवें भाई॥
हाथी जाइ न सकनी होमे रख अड़ाई॥[34]

गुरु अमर दास साहिब भी कहते हैं:

खंनिअहु तिखी वालहु निकी एतु मारगि जाणा॥[35]

ब्रह्म, 'मक़ामे-अल्लाहू' है और सुन्न, 'मक़ामे-हू' है। लफ़्ज़ों का फ़र्क़ है। मुसलमान फ़क़ीरों ने अपनी भाषा में नाम रखे हैं, हमने अपनी भाषा में रख लिये।

महासुन जाय हरखानी। भँवर में जा सुनी बानी॥

जब आत्मा पारब्रह्म से महासुन्न में आयी और फिर भँवरगुफा में, यह सोहं का देश है। सोहं का अर्थ है, 'जो तू है, सो मैं हूँ'। मुसलमान इस

मुक़ाम को 'अनाहू' कहते हैं। अनाहू का अर्थ भी 'जो तू है, सो मैं हूँ', तू समुद्र है और मैं क़तरा (बूँद) हूँ। सचखण्ड अति सुन्दर और अति सुहावना समुद्र है। अब रूह उस समुद्र में मिलने की कोशिश करती है। मौलाना रूम साहिब की मसनवी का पहला शेर ही यहाँ से शुरू होता है:

बिशनौ अज़ नै चूँ हिकायत मी कुनद,
वज़ जुदाइहा शिकायत मी कुनद।[36]

सुनो! बाँसुरी क्या कहती है? वह अपनी जुदाई की शिकायत करती है कि जब से मुझे बाँसों के बन से काटा गया है, उस समय से रो रही हूँ यानी जब से आत्मा अपने प्यारे से जुदा होकर मक़ामे-हक़्क़ (सतलोक) से बिछुड़कर इस संसार में आ फँसी है, तब से दुःखी है। किसी महात्मा ने अरबी में कह दिया, किसी ने सस्कृत में, किसी ने फ़ारसी में, लेकिन मक़सद और मतलब सबका एक ही है।

अमर पद मूल जा देखा। बीन धुन का मिला लेखा॥

अब रूह सचखण्ड यानी मक़ामे-हक़्क़ में पहुँच गयी। यहाँ न प्रलय का ख़ौफ़ है, न महाप्रलय का। यह अचल, अटल, लाफ़ानी और अविनाशी देश है। यहाँ पहुँचकर जन्म-मरण ख़त्म हो जाता है और रूह को अनन्त शान्ति, अनन्त ख़ुशी और सच्ची मुक्ति हासिल हो जाती है। इस देश की महिमा करने के लिए लफ़्ज़ नहीं मिलते। जिस तरह किसी कच्चे मकानों वाले नगर में आगरा के ताजमहल के बारे में समझाना हो तो किस कोठी की मिसाल देंगे? कोई नहीं! जब मिट्टी की मिसाल मिट्टी में नहीं मिल सकती तो फिर वह तो करोड़ों गुना से भी ज़्यादा शोभा वाला है, उसकी महिमा किस तरह की जा सकती है? फिर भी सन्तों ने इशारा किया है, निशानी दे दी है कि वहाँ बीन की एक मस्त धुन हो रही है। नामदेव जी कहते हैं:

अखंड मंडल निरंकार महि अनहद बेनु बजावउगो॥
बैरागी रामहि गावउगो॥[37]

गुरु अर्जुन साहिब भी फ़रमाते हैं:

रहंत जनमं हरि दरस लीणा॥ बाजंत नानक सबद बीणां॥[38]

सभी महात्मा अपने रूहानी सफ़र का निशान देते चले जाते हैं।

अलख और अगम भी पेखा। नाम का मूल अब देखा॥

इससे ऊपर अलख और अगम, दो अचिन्त द्वीप हैं, जिनकी महिमा नहीं हो सकती। इससे आगे आख़िरी मुक़ाम है। महात्मा अपनी-अपनी वाणियों में उनका निशान देते चले गये हैं। जैसा कि गुरु नानक साहिब कहते हैं:

तू अकाल पुरखु नाही सिरि काला॥ तू पुरखु अलेख अगंम निराला॥[39]

फिर कहते हैं:

सति लोक के ऊपर धावे॥ अलख अगम की तब गति पावे॥
ताके ऊपर संतन धाम॥ नानक दास कीआ बिसराम॥[40]

कहूं क्या खोल राधास्वामी। सैन यह समझ परमानी॥

अब रूह आख़िरी देश, राधास्वामी धाम यानी ला-मक़ाम पर पहुँच गयी। गुरु अर्जुन साहिब ने इसे 'स्वामी-स्वामी' कहा है। आप फ़रमाते हैं:

ऊच अपार बेअंत सुआमी ...॥[41]

स्वामी जी महाराज ने भी उसे 'स्वामी-स्वामी' कहा है:

सब की आदि कहूं अब स्वामी॥[42]

क्योंकि स्वामी से परे और कोई लफ़्ज़ है नहीं, स्वामी जी ने इसे 'राधास्वामी' कहा, आत्मा का स्वामी कह दिया। क़तरा समुद्र में मिलकर समुद्र हो गया, यहाँ पहुँचकर सभी महात्मा चुप हो गये। स्वामी जी कहते हैं कि हमने इशारा दे दिया है, जो खोजी होंगे, खोज लेंगे।

गोंड महला 5

गुरू गुरू गुरु करि मन मोर॥ गुरू बिना मै नाही होर॥
गुर की टेक रहहु दिनु राति॥ जा की कोइ न मेटै दाति॥ 1॥
गुरु परमेसरु एको जाणु॥ जो तिसु भावै सो परवाणु॥ 1॥ रहाउ॥
गुर चरणी जा का मनु लागै॥ दूखु दरदु भ्रमु ता का भागै॥
गुर की सेवा पाए मानु॥ गुर ऊपरि सदा कुरबानु॥ 2॥
गुर का दरसनु देखि निहाल॥ गुर के सेवक की पूरन घाल॥
गुर के सेवक कउ दुखु न बिआपै॥ गुर का सेवकु दह दिसि जापै॥ 3॥
गुर की महिमा कथनु न जाइ॥ पारब्रहमु गुरु रहिआ समाइ॥
कहु नानक जा के पूरे भाग॥ गुर चरणी ता का मनु लाग॥ 4॥[1]

सत्संग के बचन

गुरू गुरू गुरु करि मन मोर॥ गुरू बिना मै नाही होर॥

यह पाँचवीं पातशाही, श्री गुरु अर्जुन साहिब का शब्द है। जिस तरह इन्होंने कहा है कि गुरु के बग़ैर कुंजी नहीं मिलती, इसी तरह सारा ग्रन्थ साहिब कह रहा है। क्या कहते हैं गुरु अंगद साहिबः

गुरु कुंजी पाहू निवलु मनु कोठा तनु छति॥
नानक गुर बिनु मन का ताकु न उघड़ै अवर न कुंजी हथि॥[2]

बात यह है कि हरएक आदमी को, उसकी आँखों के पीछे परदा लगाकर बाहर निकाला हुआ है। यह सारी उम्र बाहर ही बाहर रहा, अन्दर

नहीं गया। जब तक उसे कोई अन्दर जानेवाला पूर्ण गुरु नहीं मिले जो खण्डों-ब्रह्माण्डों पर जाता हो, राह नहीं मिलती। परमात्मा ने जो दौलत इसके अन्दर रखी हुई थी, इसने उसे हाथ भी नहीं लगाया। मौत के वक़्त इसके साथ न बेटे-बेटियाँ, न माता-पिता, कोई नहीं जाता। वह दौलत (नाम) ही साथ जाती है। अब गुरु अर्जुन साहिब कहते हैं कि इस दुनिया में गुरु से बढ़कर हमें और कोई प्यारा नहीं, जो इस दुनिया में भी साथ रहता है और खण्डों-ब्रह्माण्डों में भी साथ है। फिर न शिष्य का रूप शरीर है और न गुरु का स्वरूप शरीर है। गुरु का स्वरूप शब्द है और शिष्य का स्वरूप सुरत है, यह अन्दर जाकर पता लगता है, बाहर नहीं।

गुर की टेक रहहु दिनु राति॥ जा की कोइ न मेटै दाति॥

कहते हैं, हमें दिन-रात गुरु की याद, गुरु का भरोसा, गुरु का ही आसरा है। क्यों? क्योंकि गुरु वह दात देता है जिसे न यमदूत छीन सकते हैं, न चोर चुरा सकते हैं। वह क्या है? 'नाम'! जो दात गुरु देता है, वह शिष्य के साथ जाती है, इस दुनिया की कोई दात साथ नहीं जाती। अगर साथ जानेवाली कोई चीज़ है, तो एक गुरु और दूसरा नाम।

गुरु परमेसरु एको जाणु॥ जो तिसु भावै सो परवाणु॥

अब कहते हैं कि गुरु और परमेश्वर को एक समझ! क्यों? क्योंकि शिष्य को समाना है गुरु में और गुरु को समाना है परमात्मा में यानी शिष्य को भी मालिक के साथ मिल जाना है। इस तरह दोनों क़तरों (बूँदों) को समुद्र में मिलकर समुद्र बन जाना है। इसलिए जो हुक्म सतगुरु देता है उसे मान, उसकी क़द्र कर। अब यह बात मुश्किल है, यहाँ आकर मन शोर मचाने लगता है। हम फेल हो जाते हैं, क्योंकि वह हमारे जैसा मनुष्य दिखायी देता है, हम उसको मनुष्य समझते हैं। क्या कहते हैं गुरु अर्जुन साहिब:

गुर की महिमा किआ कहा गुरु बिबेक सत सरु॥
ओहु आदि जुगादी जुगह जुगु पूरा परमेसरु॥[3]

बल्कि हम उन्हें मनुष्य से भी नीचे समझते हैं, फिर हमारे पल्ले क्या पड़े?

गुर चरणी जा का मनु लागै॥ दूखु दरदु भ्रमु ता का भागै॥

अगर मन गुरु के चरणों में लग जाये, कोई दुःख ही नहीं आता। मैं बाहर के चरणों को भी नमस्कार करता हूँ, मगर यहाँ मुराद अन्दर के चरणों से है। सूरज, चन्द्रमा और तारों को पार करके वह जो नूर है, वह सतगुरु के चरणों की धूलि है। वहाँ गुरु का स्वरूप नूरी है। आप कहीं चले जाओ, वह स्वरूप आपके सामने है। जब यह आँखों से ऊपर चढ़ गया, गुरु के चरणों में पहुँच गया, तो इससे ज़्यादा सुख कौन-सा है? क्या कहते हैं गुरु अर्जुन साहिब:

नानक दासु इहै सुखु मागै मो कउ करि संतन की धूरे॥[4]

जब गुरु अन्दर प्रत्यक्ष हो जाये, फिर दुःख कैसा? जब कोई दुःख आता है, गुरु सामने है, वह कहता है, ऐसा कर। यह तेरा प्रारब्ध है, प्यार के साथ भुगत ले। यही तुलसी साहिब कहते हैं:

छिन छिन सुरति सँवार लार दृग के रहौ।
तन मन दर्पन माँज साज स्रुति से गहौ॥
लगन लगै लख पार सार तब पाइया।
अरे हाँ रे तुलसी संत चरन की धूर नूर दर्साइया॥[5]

आत्मा को दोनों आँखों के बीच इकट्ठा करो, अन्दर तवज्जुह दो, परदा खुल जायेगा। सभी ऋषि-मुनि, सन्त-महात्मा अन्दर के चरणों की महिमा करते हैं। वे कहते हैं, वहाँ जाकर देखो।

गुर की सेवा पाए मानु॥ गुर ऊपरि सदा कुरबानु॥

कहते हैं, अगर गुरु से प्यार कर ले, अगर गुरु की सेवा कर ले, इससे बढ़कर और कौन-सा कर्म है? जो परमात्मा से मिलाप करा दे, उससे बढ़कर बड़ाई किसकी है? यह दर्जा गुरु की कृपा से नसीब होता है। इसलिए गुरु अर्जुन साहिब फ़रमाते हैं कि हम गुरु पर क़ुर्बान जाते हैं।

एक सत्संगी: महाराज जी! हुज़ूर यह जो कहते हैं कि इन चरणों से मुराद नहीं, वे चरण अन्दर हैं। सच्चे पातशाह! रामायण में तुलसीदास जी देह-स्वरूप की बड़ाई, नूरी स्वरूप से भी बहुत ज़्यादा करते हैं, वे तो फ़रमाते हैं कि जो कुछ है, देह-स्वरूप ही है।

महाराज जी: यह धोखा है। उन्होंने जो कुछ कहा है, अन्दर का ज़िक्र है। अगर यह यक़ीन आ जाये तो परमार्थ को पाना कोई मुश्किल नहीं।

एक सत्संगी: महाराज जी! ग्रन्थ साहिब में भी यही लिखा है:

> गुपतु परगटु तूं सभनी थाई॥[6]

महाराज जी: पर अगर उसे पहचान लें। इसमें कोई शक नहीं कि सबसे ज़्यादा महिमा देह-स्वरूप की है, पर उस पर विश्वास होना बड़ा मुश्किल है। जो वेद-शास्त्र कहते हैं, सच है, पर देह-स्वरूप का कहना मानता कौन है? हमारे अन्दर मन बैठा है, यह मानने नहीं देता।

गुर का दरसनु देखि निहाल॥ गुर के सेवक की पूरन घाल॥

अन्दर चढ़कर देखो, सैकड़ों सूरज, सैकड़ों चन्द्रमा का इतना नूर नहीं जितना गुरु का है। क्या कहते हैं गुरु अंगद साहिब:

> जे सउ चंदा उगवहि सूरज चड़हि हजार॥
> एते चानण होदिआं गुर बिनु घोर अंधार॥[7]

इस दुनिया में लाखों सूरज, लाखों चन्द्रमा चढ़ जायें तो यहाँ प्रकाश हो जायेगा, जब आँखें बन्द करो तो अन्दर अँधेरा है। जब तक गुरु न

मिले, अन्दर प्रकाश होता ही नहीं। अगर भाग्य से पूरा गुरु मिल जाये तो शिष्य का धर्म है कि उसकी सेवा करे। उसकी सेवा क्या है? वह कहता है कि परदा खोल, चल ऊपर, मैं तेरे साथ हूँ। गुरु दुनिया की कोई चीज़ नहीं लेता, ये सब फ़ना हैं। फ़ना चीज़ वह लेता नहीं।

गुर के सेवक कउ दुखु न बिआपै॥ गुर का सेवकु दह दिसि जापै॥

गुरु साहिब समझाने में कोई कसर तो नहीं छोड़ते। अगर यह गुरु की शरण में आ जाये, चाहे यह कुछ न करे, तो भी वे सँभाल करेंगे। करनी सरल है, शरण लेना बहुत मुश्किल है। क्यों? क्योंकि गुरु हमारे जैसा मनुष्य है। गुरु जो हुक्म देता है, अगर उसका पूरी तरह पालन करें तो भजन-सिमरन की परवाह नहीं। भजन-सिमरन चाहे थोड़ा ही हो, गुरु का प्यार पूरा-पूरा होना चाहिए। शिष्य को चाहिए कि अपने आप को गुरु के हवाले कर दे, जो गुरु हुक्म देता है, उसका पालन करे, उसमें फिर मन का दख़ल न होने दे। जब हुक्म मिलता है तो फिर मन का दख़ल क्यों? अगर बच्चा अपने आप को माँ के हवाले कर दे तो वह उसे खिलाती है, पहनाती है, नहलाती है, उसका हर तरह से ख़याल रखती है, कहीं आग में हाथ न डाल दे, नाली में न गिर पड़े। ठीक इसी तरह गुरु अपने शिष्य की सँभाल करता है। इतना ही नहीं बल्कि किसी-किसी जीव के तो ऐसे कर्म होते हैं कि सतगुरु को वे भी साथ होकर भुगतवाने पड़ते हैं, पर अगर वह सेवक बन जाये तब। गुरु अमर दास साहिब फ़रमाते हैं:

नानक जिन्ह कउ सतिगुरु मिलिआ तिन्ह का लेखा निबड़िआ॥[8]

मन बेईमान है, अपने ऊपर इल्ज़ाम (दोष) नहीं लेता। यह अपना इल्ज़ाम दूसरों पर डाल देता है।

गुर की महिमा कथनु न जाइ॥ पारब्रहमु गुरु रहिआ समाइ॥

कहते हैं, इस दुनिया के अन्धे, जो अन्दर ही नहीं गये, गुरु की महिमा क्या कर सकते हैं। गुरु पारब्रह्म है, गुरु सतपुरुष है। जो अन्दर नहीं जाते,

उन्हें क्या पता है कि गुरु किस हस्ती का मालिक है? कबूतरों और कौवों को क्या ख़बर कि हंस किस देश से आते हैं? सुखदेव जब गुरु धारण करके अपने पिता के पास आया तो उसने कहा कि गुरु किसके जैसा है? सुखदेव चुप। पिता ने कहा कि क्या गुरु सूरज के जैसा है? तो कहता है, ''हाँ! प्रकाश तो सूरज के जैसा ही है, पर सूरज में तपिश है, उसमें तपिश नहीं।'' ''तो फिर किसके जैसा है?'' सुखदेव फिर चुप। तब पिता ने कहा कि क्या गुरु चन्द्रमा के जैसा है? कहता है, ''हाँ! ठण्डक तो चन्द्रमा जैसी है, पर चन्द्रमा में दाग़ है, गुरु में कोई दाग़ नहीं।'' ''तो फिर गुरु किसके जैसा है?'' तो सुखदेव ने कहा कि गुरु जैसा और कोई नहीं! वह जो है, सो है!!

कहु नानक जा के पूरे भाग॥ गुर चरणी ता का मनु लाग॥

अब सबकुछ कहकर गुरु अर्जुन साहिब कहते हैं, पूरे भाग्य वाला कौन है? जिसे मनुष्य-जन्म पाकर गुरु मिल गया, कमाई की, आत्मा खण्डों-ब्रह्माण्डों पर चली गयी और मालिक से मिल गयी। यह तालीम है गुरु साहिब की, पर हम कहते हैं कि गुरु की ज़रूरत नहीं, 'एह जग मिट्ठा, अगला किन डिट्ठा'। बहुत ऊँचे भाग्य हों तो यह पूरे गुरु की तरफ़ आये।

वाणी पलटू साहिब

कुण्डली

सीस उतारै हाथ से सहज आसिकी नाहिं॥
सहज आसिकी नाहि खाँड़ खाने को नाहीं।
झूठ आसिकी करै मुलुक में जूती खाही॥
जीते जी मरि जाय करै ना तन की आसा।
आसिक को दिन रात रहै सूली पर बासा॥
मान बड़ाई खोय नींद भर नाहीं सोना।
तिल भर रक्त न माँस नहीं आसिक को रोना॥
पलटू बड़े बेकूफ वे आसिक होने जाहिं।
सीस उतारै हाथ से सहज आसिकी नाहिं॥[1]

सत्संग के बचन

सीस उतारै हाथ से सहज आसिकी नाहिं॥

प्रेम कोई आसान नहीं, बल्कि महँगे मोल बिकता है। जब तक यह जीते-जी नहीं मरता यानी इसकी रूह नौ दरवाज़ों को छोड़कर ऊपर दसवीं गली में नहीं जाती, प्रेम कहाँ! आज प्रेम आया, कल चला गया, यह प्रेम नहीं, यह झूठ है।

सहज आसिकी नाहि खाँड़ खाने को नाहीं।
झूठ आसिकी करै मुलुक में जूती खाही॥

मजनूँ लैला का आशिक़ था। लैला का बाप बादशाह था। उसने लैला की ख़ुशी के ख़याल से हुक्म दे दिया कि मजनूँ जिस दुकान से मिठाई खाये, कपड़ा ले, पैसा ले या कोई और चीज़, उसका हिसाब मैं दूँगा। जब लोगों ने सुना कि चाहे जो चीज़, जिस दुकानदार से मर्ज़ी हो ले लो, तो एक मजनूँ की जगह कई मजनूँ हो गये और रोज़-ब-रोज़ बढ़ने लगे और शहर उजड़ने लगा। आख़िर लोगों ने बादशाह से जाकर पूछा कि मजनूँ एक है या बहुत सारे? बादशाह ने जवाब दिया, "मैं लैला को बुलाकर पूछ लेता हूँ।" जब लैला से पूछा कि मजनूँ एक है या बहुत सारे तो उसने कहा कि मजनूँ एक है। बादशाह ने कहा, "उधर तो सारा शहर लुट गया है और तू कहती है कि मजनूँ एक है?" आख़िर बादशाह ने कहा कि इसका कोई इलाज? लैला ने कहा कि कल कर दूँगी। दुकानदार चले गये। दूसरे दिन लैला के कहने से बादशाह ने ढिंढोरा पिटवा दिया कि मजनूँ के जिगर का गोश्त लैला को चाहिए, मेरा जल्लाद आयेगा और आकर ले जायेगा। सारे मजनूँ भाग गये, एक रह गया। उसको कहा गया कि अपने जिगर का गोश्त दे दे, उसने उसी वक़्त काटकर दे दिया। लैला ने बादशाह से कहा कि यह मजनूँ है। सो, खाने-पीने को तो सभी प्रेमी बन जाते हैं, लेकिन जब इम्तिहान होता है तो फेल हो जाते हैं। जब तक नाम की लज़्ज़त न आये प्रेम की बातें झूठी हैं। जो हमारी आशिक़ी है, वह आज आ गयी, कल चली गयी। यह झूठी आशिक़ी है। सच्ची आशिक़ी प्रेम और प्यार की होनी चाहिए।

जीते जी मरि जाय करै ना तन की आसा।
आसिक को दिन रात रहै सूली पर बासा॥

कम खाना, कम सोना और रात-दिन प्यारे के ध्यान में लीन रहना—यह आशिक़ी है। जब तक यह ऊपर नहीं चढ़ता, रूहानी मंज़िलों पर नहीं जाता, अमृत की लज़्ज़त नहीं लेता, आशिक़ी कैसी?

मान बड़ाई खोय नींद भर नाहीं सोना।
तिल भर रक्त न माँस नहीं आसिक को रोना॥

आशिक़ के तो प्राण सूखे रहते हैं। उसका ध्यान हर वक़्त अपने प्रीतम की तरफ़ लगा रहता है।

पलटू बड़े बेकूफ वे आसिक होने जाहिं।
सीस उतारै हाथ से सहज आसिकी नाहिं॥

जो झूठे आशिक़ हैं, वे बेवकूफ़ हैं। सच्चा आशिक़ बनना चाहिए। एक बार पतंगों के बीच में एक भुनगा (उड़नेवाला छोटा कीड़ा) आ गया। उन्होंने पूछा कि तू कौन है? कहता है, "मैं पतंगा हूँ।" उन्होंने देखा कि वह पतंगा नहीं। आपस में सलाह करके कहा कि जा, शहर में जाकर देख, दीये जलते हैं? भुनगा गया, थोड़ी देर बाद वापस आकर कहता है कि हाँ, जल रहे हैं। उन्होंने कहा कि तू पतंगा नहीं। अगर पतंगा होता तो वापस नहीं आता, बल्कि वहीं जलकर मर जाता। सो, जिनके दिल में सच्चा प्रेम, सच्चा प्यार और सच्ची मुहब्बत है, वह रोम-रोम में समा जाती है, बोलने की ज़रूरत नहीं।

माझ महला 3

तेरीआ खाणी तेरीआ बाणी॥ बिनु नावै सभ भरमि भुलाणी॥
गुर सेवा ते हरि नामु पाइआ बिनु सतिगुर कोइ न पावणिआ॥ 1॥
हउ वारी जीउ वारी हरि सेती चितु लावणिआ॥
हरि सचा गुर भगती पाईऐ सहजे मंनि वसावणिआ॥ 1॥ रहाउ॥
सतिगुरु सेवे ता सभ किछु पाए॥ जेही मनसा करि लागै तेहा फलु पाए॥
सतिगुरु दाता सभना वथू का पूरै भागि मिलावणिआ॥ 2॥
इहु मनु मैला इकु न धिआए॥ अंतरि मैलु लागी बहु दूजै भाए॥
तटि तीरथि दिसंतरि भवै अहंकारी होरु वधेरै हउमै मलु लावणिआ॥ 3॥
सतिगुरु सेवे ता मलु जाए॥ जीवतु मरै हरि सिउ चितु लाए॥
हरि निरमलु सचु मैलु न लागै सचि लागै मैलु गवावणिआ॥ 4॥
बाझु गुरू है अंध गुबारा॥ अगिआनी अंधा अंधु अंधारा॥
बिसटा के कीड़े बिसटा कमावहि फिरि बिसटा माहि पचावणिआ॥ 5॥
मुकते सेवे मुकता होवै॥ हउमै ममता सबदे खोवै॥
अनदिनु हरि जीउ सचा सेवी पूरै भागि गुरु पावणिआ॥ 6॥
आपे बखसे मेलि मिलाए॥ पूरे गुर ते नामु निधि पाए॥
सचै नामि सदा मनु सचा सचु सेवे दुखु गवावणिआ॥ 7॥
सदा हजूरि दूरि न जाणहु॥ गुर सबदी हरि अंतरि पछाणहु॥
नानक नामि मिलै वडिआई पूरे गुर ते पावणिआ॥ 8॥[1]

सत्संग के बचन

तेरीआ खाणी तेरीआ बाणी ॥ बिनु नावै सभ भरमि भुलाणी ॥

जब तक आदमी को सुरत-शब्द का रास्ता न मिले, किसी सन्त की बाणी में से कुछ नहीं मिलता। क्योंकि जो सन्तों की 'थ्योरी', 'फ़िलॉसफ़ी' है, 'नेचुरल साइंस', 'रब्बी ज्ञान' है, इसका सम्बन्ध रूहानी चढ़ाई से है, मगर जो रूहानी मंज़िलों पर नहीं गये, अन्दर खण्डों-ब्रह्माण्डों पर नहीं चढ़े, सिर्फ़ किताबें ही पढ़ी हैं, उन्हें उसका क्या इल्म? अब यह विचार करने योग्य शब्द है। गुरु अमर दास जी फ़रमाते हैं कि दुनिया के जीवों की चार क़िस्में हैं—अण्डज, जेरज, स्वेदज और उद्‌भिज्ज। पहली वह जो अण्डे से पैदा होते हैं, जैसे पक्षी। दूसरी वह जो झिल्ली में लिपटे हुए पैदा होते हैं, जैसे इनसान, हैवान, चौपाये वग़ैरह। तीसरी वह जो मौसम की तब्दीली से पैदा होते हैं, जैसे मच्छर, जूँ आदि। चौथी वह जो ज़मीन से पैदा होते हैं, जैसे घास-फूस, फल-फूल, पेड़ आदि। ये चार क़िस्में या चार खानियाँ हैं। इसी तरह कुल दुनिया के इनसानों की चार वाणियाँ हैं—परा, पश्यंती, मध्यमा और बैखरी। पहली मन की सूक्ष्म वृत्ति के ज़रिये नाभि में जो योगी-जन हिलोर उठाते हैं। दूसरी वह जो मन के ज़रिये हृदय में बोली जाती है। तीसरी वह जो मन के ज़रिये कण्ठ में धीरे-धीरे बोली जाती है और चौथी वह जो ज़बान से बोली जाती है, जिस तरह हम और आप बोलते हैं।

चार खानियों और चार वाणियों को नाम की ख़बर नहीं। सारी दुनिया की बोलियाँ (भाषाएँ), जितने दुनिया के इल्म हैं, उनकी किताबें, वेद-शास्त्र और अन्य धर्म-पुस्तकें इन चारों वाणियों में आ गयीं। जो नाम मुक्ति देनेवाला है, वह इनमें नहीं। हिन्दू हो या मुसलमान, ईसाई हो या सिक्ख, वह नाम हरएक इनसान के अन्दर है। नाम न अरबी है, न फ़ारसी, न अंग्रेज़ी और न कोई और भाषा। वह 'अनरिटन लॉ एण्ड अनस्पोकन लैंग्वेज' यानी लिखने-पढ़ने और बोलने में न आनेवाला ज्ञान है। वेद-शास्त्र, क़ुरान, इंजील और अन्य ग्रन्थ सभी उसकी महिमा करते हैं। इन सबमें उसके गुण हैं, हासिल करने के तरीक़े हैं, बज़ाते-ख़ुद नाम

नहीं, वह आपके अन्दर है। क्या मज़हबों वाले यह सुन सकते हैं? नहीं, बल्कि डण्डे लेकर तैयार हो जाते हैं, मगर बाणी, बाणी है, वह लिहाज़ नहीं करती। जो लोग किताबें पढ़ने में मुक्ति समझते हैं, उनके लिए गुरु नानक साहिब कहते हैं:

पड़ीअहि जेते बरस बरस पड़ीअहि जेते मास॥
पड़ीऐ जेती आरजा पड़ीअहि जेते सास॥
नानक लेखै इक गल होरु हउमै झखणा झाख॥[2]

फिर कहते हैं :

नानक कागद लख मणा पड़ि पड़ि कीचै भाउ॥
चाहे लाखों मन काग़ज़ प्रेम से पढ़ लो।
मसू तोटि न आवई लेखणि पउणु चलाउ॥
बेशुमार काग़ज़ लेकर हवा की तरह लिखते जाओ।
भी तेरी कीमति ना पवै हउ केवडु आखा नाउ॥[3]

मगर नाम कोई और चीज़ है। वह एक है। चाहे हिन्दू होकर जाओ, सिक्ख होकर जाओ, ईसाई होकर जाओ या किसी और मज़हब के। मिलता कब है? जब दोनों आँखों के बीच में आ जाओ। क्योंकि नीचे गुदा-चक्र में गणेश है, इन्द्रिय-चक्र में ब्रह्मा है, नाभि में विष्णु है, हृदय में शिव है, कण्ठ में शक्ति है और आँखों के पीछे रूह और मन है। इसके नीचे-नीचे लफ़्ज़ हैं। देख लो, लोग अपनी-अपनी किताबों का पाठ करते हैं, नाम का नहीं। नाम कोई और चीज़ है। कितना ऊँचा ख़याल है, कितनी ऊँची कमाई है सन्तों की। अब सवाल पैदा हुआ कि वह नाम कहाँ से मिलता है? आगे बताते हैं।

गुर सेवा ते हरि नामु पाइआ बिनु सतिगुर कोइ न पावणिआ॥

अगर कोई रूहानी मण्डलों पर जानेवाला गुरु मिल जाये और शिष्य को अन्दर जाने की राह दे दे, यह कमाई करके सूरज, चन्द्रमा, तारे और

देवों-पितरों का मार्ग पार करे, आगे नाम है, तब नाम मिलता है, वरना करोड़ों उपाय करो, नाम नहीं मिलता। जो अन्दर नहीं गया, वह अन्धा आया और अन्धा ही चला गया। गुरु अमर दास साहिब कहते हैं:

बिनु गुर दाते कोइ न पाए॥ लख कोटी जे करम कमाए॥[4]

अगर लफ़्ज़ नाम हो तो गुरु के पास जाने की क्या ज़रूरत है? मगर नहीं। नाम कोई और वस्तु है। अब जिन महात्मा की बाणी हम पढ़ रहे हैं, उन्होंने बारह साल पानी ढोया है। जितने दुनिया के झगड़े हैं, लफ़्ज़ों की वजह से हैं। बिना नाम के यह ख़ाली आया और ख़ाली चला गया।

हउ वारी जीउ वारी हरि सेती चितु लावणिआ॥

अब गुरु अमर दास जी कहते हैं, हम बार-बार श्री गुरु अंगद साहिब पर क़ुर्बान जाते हैं, जिन्होंने हमारी रूह को नाम के साथ जोड़ दिया। हमें जो कुछ मिला है, गुरु अंगद साहिब से मिला है। यही गुरु गोबिन्द सिंह जी फ़रमाते हैं:

बेद कतेब न भेद लखयो जिह सोऊ गुरू गुर मोहि बतायो॥[5]

जिस गुरु या नाम का भेद वेदों को भी मालूम नहीं, मुझे गुरु ने वह बता दिया।

हरि सचा गुर भगती पाईऐ सहजे मंनि वसावणिआ॥

कहते हैं, परमात्मा सतगुरु की कृपा से मिलता है। करोड़ों ग्रन्थ पढ़ लो, कुछ नहीं बनता। पूरे ग्रन्थ साहिब के सौ-सौ पाठ* कर चुके प्रेमी पोठोहार में मिलते हैं। अगर उनसे पूछें कि क्या कभी अन्दर रोशनी हुई? कोई नहीं! अन्दर शान्ति आयी? कोई नहीं। तमाम दुनिया मन के

---

* सिक्ख धर्म में ग्रन्थ साहिब के पाठ की समाप्ति के अनुष्ठान को 'भोग' कहते हैं, जिसे बड़ी श्रद्धा से सम्पन्न किया जाता है।

'अण्डर-ऑर्डर' यानी मातहत है। मन के कहे खाती, मन के कहे पीती, मन के कहे रिश्ते-नाते क़बूल करती है। जितने दुनिया के काम हैं, सारे मन के कहे हो रहे हैं। मन रूह के ऊपर हावी हो गया है, छाया हुआ है। दुनिया में जितने योग हैं, सबसे उत्तम सहज-योग है। गुरु नानक साहिब और अन्य सन्तों ने सहज-योग को अपनाया है। सहज-योग के अभ्यास से मन वश में आ जाता है। सो, जब तक पूरा गुरु नहीं मिलता और वह सहज-योग का भेद नहीं देता, यह उन पर विश्वास करता हुआ कमाई नहीं करता, उसे अन्दर प्रत्यक्ष नहीं करता, तब तक अन्दर नहीं जा सकता और न ही मन वश में आता है। सिमरन करने से 'विल पावर', विचार-शक्ति बलवान, मज़बूत हो जाती है। सिमरन सिर्फ़ आँखों तक जाता है, आगे नाम है।

सतिगुरु सेवे ता सभ किछु पाए॥ जेही मनसा करि लागै तेहा फलु पाए॥

चाहे हिन्दू हो या मुसलमान या कोई अन्य क़ौम; अगर पूरा गुरु मिल जाये, वह अन्दर जाने की राह दे दे, यह मेहनत करके नौ दरवाज़ों से चेतन-सत्ता को निकालकर ऊपर आ जाये तो अन्दर गुरु प्रत्यक्ष हो जायेगा। क्या कहते हैं गुरु अर्जुन साहिब:

गुरु मेरै संगि सदा है नाले॥[6]

जब परदा खुल गया, सतगुरु प्रत्यक्ष हो गया। अब अफ्रीका जाओ, सतगुरु साथ है, अमेरिका जाओ, सतगुरु साथ है। जो सन्तों की फ़िलॉसफ़ी है, बड़ी सूक्ष्म यानी गूढ़ है, लोगों ने इसे समझा ही नहीं। अगर गुरु पूरा नहीं है तो यह अन्दर नहीं जा सकता। अगर सतगुरु पूरा है लेकिन इसका सतगुरु के साथ पूरा प्रेम नहीं तो चाहे सौ साल टक्करें मारता रहे, इधर-उधर भटकता रहे तो भी अन्दर नहीं जा सकता। अगर सतगुरु पूरा है और प्यार भी पूरा है तो जल्दी परदा खुल जायेगा, वरना असली और पूरा फ़ायदा नहीं होगा। सतगुरु को शिष्य के प्यार की ज़रूरत नहीं, उसका

तो अपने सतगुरु के साथ प्यार जुड़ा हुआ है। गुरु निर्मल है, हमें निर्मल होने के लिए उसकी ज़रूरत है। गुरु शीशे की मिसाल है। हमें शीशे की ज़रूरत है, शीशे को हमारी ज़रूरत नहीं। शीशे की सतह 'स्मूथ', साफ़ होती है। हमारे चेहरे की किरणें उससे टकराकर हमारा मुँह दिखाती हैं। अगर हँसते हुए देखो तो हँसता नज़र आता है। इसी तरह हमारे हृदय की किरणें सतगुरु से टकराकर हमारी अपनी पहचान बताती हैं। अब वह निर्मल है, ज्यों-ज्यों उसके साथ प्यार करेंगे, हम निर्मल होते जायेंगे। इसलिए अगर सतगुरु के पास नहीं जायेंगे तो कुछ भी नहीं मिलेगा। सारे ग्रन्थ साहिब में तीन चीज़ें हैं—सतगुरु, नाम और सत्संग।

सतिगुरु दाता सभना वथू का पूरै भागि मिलावणिआ॥

गुरु अंगद साहिब कहते हैं:

गुरु कुंजी पाहू निवलु मनु कोठा तनु छति॥
नानक गुर बिनु मन का ताकु न उघड़ै अवर न कुंजी हथि॥[7]

जब तक गुरु कुंजी न लगाये, यह मेहनत न करे, परदा नहीं खुलता। पूरे गुरु हिन्दुओं में भी हैं; मुसलमानों में भी हैं; मगर आजकल दुनिया 'गुरुडम' से नफ़रत करती है।

इहु मनु मैला इकु न धिआए॥ अंतरि मैलु लागी बहु दूजै भाए॥

कहते हैं, लोगों के मन मैले हैं। नाम हरएक आदमी के अन्दर है, मगर इसको आँखों के पीछे परदा लगाकर बाहर निकाला हुआ है। यह न गुरु के पास गया, न अन्दर परदा खोला, न नाम प्रकट किया, न मन निर्मल हुआ। सारी उम्र बाहर ही बाहर उलझनों में पड़ा रहा, ख़ाली आया और ख़ाली चला गया। वह नाम सारे खण्डों-ब्रह्माण्डों के जानों की जान है। जब तक रूह उसके साथ न जुड़े, मन निर्मल नहीं होता।

तटि तीरथि दिसंतरि भवै अहंकारी होरु वधेरै हउमै मलु लावणिआ॥

कहते हैं, यह सारी उम्र तीर्थों-मूर्तियों, मन्दिरों और कई देशों-प्रदेशों में फिरता रहा और अहंकार पैदा हो गया कि मैं पापों को उतार आया हूँ। यह उतार नहीं आया, बल्कि और मैल चढ़ा लाया है। जो अहंकार है, वह सारे पापों का मूल है। अहंकार हो गया कि मैं यह हूँ, मैं वह हूँ। अब जो गुनाहगार होकर कहे कि मैं बड़ा भलामानस हूँ, उसे आप क्या कहोगे! जो तीर्थ पापों की मैल उतारता है, वह दसवें द्वार में है। गुरु अमर दास जी कहते हैं:

काइआ अंदरि अंम्रित सरु साचा ...॥[8]

उस तीर्थ को गुरु साहिब ने अमृतसर कहा है, कबीर साहिब ने मानसरोवर, ऋषि-मुनि उसे प्रयाग-राज और त्रिवेणी कहकर बयान करते हैं। पापों की मैल को धोनेवाला तीर्थ एक ही है और वह काया के अन्दर है। दुनिया के तीर्थ पापों की मैल नहीं धो सकते, शरीर की मैल धो सकते हैं।

सतिगुरु सेवे ता मलु जाए॥ जीवतु मरै हरि सिउ चितु लाए॥

अब श्री गुरु अमर दास जी फ़रमाते हैं कि अगर इसे कोई रूहानी मण्डलों पर जानेवाला गुरु मिल जाये और वह राह बता दे, यह कमाई करके जीते-जी मरे, नौ दरवाज़ों को बन्द करके दसवीं गली खोले, तो नाम मिल जाये, जन्म-मरण की मैल दूर हो जाये और मुक्ति हो जाये। यही गुरु अमर दास साहिब कहते हैं:

नउ दर ठाके धावतु रहाए॥ दसवै निज घरि वासा पाए॥[9]

जब तक यह नौ दरवाज़ों में बैठा है, वह मुक्ति देनेवाला नाम नहीं मिलता। नाम तब मिलेगा, जब रूह ऊपर आयेगी। अब किताबों में नाम नहीं, वे उसका इशारा देती हैं। जिस तरह साहूकार की बही में रुपये नहीं होते, वह रुपयों का ब्योरा बताती है। जब तक नाम नहीं मिलता, कुछ

नहीं बनता। नाम इन आँखों का मज़मून (विषय) नहीं। यही गुरु अंगद साहिब कहते हैं:

अखी बाझहु वेखणा विणु कंना सुनणा॥

उस नाम को बिना आँखों के देखना और बिना कानों के सुनना है।

पैरा बाझहु चलणा विणु हथा करणा॥

रूहानी मण्डलों पर चढ़ना है, मगर ये पैर काम नहीं देते। इसी तरह वहाँ काम करना है, मगर ये हाथ बेकार हैं।

जीभै बाझहु बोलणा इउ जीवत मरणा॥
नानक हुकमु पछाणि कै तउ खसमै मिलणा॥[10]

वहाँ बिना ज़बान के बात करनी है, मतलब कि जीते-जी मरना है। जब तक यह जीते-जी नहीं मरता, वह नाम नहीं मिलता और न मुक्ति होती है। गुरु राम दास जी ने उसे बाणी भी कहा है। कहते हैं, 'बाणी गुरू गूरू है बाणी ...।'[11] हज़रत ईसा उसे 'वर्ड' कहते हैं और अन्य महात्मा भी उसी की महिमा करते हैं।

हरि निरमलु सचु मैलु न लागै सचि लागै मैलु गवावणिआ॥

जिसे आप हरि कहते हो, 'आदि सचु जुगादि सचु'[12] कहते हो, वह निर्मल है, पाक (पवित्र) है। जब तक रूह उसके साथ नहीं जुड़ती, आप निर्मल नहीं हो सकते। सो, निर्मल के साथ प्यार करके निर्मल हो जाओ यानी पाक के साथ लगकर पाक हो जाओ।

बाझु गुरू है अंध गुबारा॥ अगिआनी अंधा अंधु अंधारा॥

जब तक इसे कोई रूहानी मण्डलों पर जानेवाला महात्मा नहीं मिलता, यह उसकी शरण में नहीं जाता, तब तक इसे ज्ञान नहीं होता। गुरु नानक साहिब पढ़ने-पढ़ाने को ज्ञान नहीं कहते, बल्कि वे कहते हैं:

गिआनु धिआनु धुनि जाणीऐ अकथु कहावै सोइ॥[13]

मगर यह किताबें पढ़ने को ज्ञान कहता है। जो गुरु नानक साहिब का ज्ञान है, वह इसके अन्दर है।

बिसटा के कीड़े बिसटा कमावहि फिरि बिसटा माहि पचावणिआ॥

जिस तरह मोरी के कीड़ों को बाग़ की ख़ुशबू की ख़बर नहीं, इसी तरह जो नौ दरवाज़ों में आँखों तक बैठे हुए हैं, उन्हें उस बाग़ यानी सचखण्ड की ख़ुशबू का पता नहीं। यह वेद-शास्त्र, ग्रन्थ-पोथियाँ पढ़कर विचार नहीं करता। वे कहते हैं कि करोड़ों खण्ड-ब्रह्माण्ड, दरिया-पहाड़, आदमी के अन्दर हैं। करोड़ों ख़ुशियाँ, करोड़ों शान्तियाँ इसके अन्दर हैं, मगर यह कहता है कि हड्डी, चमड़ी, मांस है, और कुछ नहीं। पीपा साहिब कहते हैं:

जो ब्रहमंडे सोई पिंडे जो खोजै सो पावै॥
पीपा प्रणवै परम ततु है सतिगुरु होइ लखावै॥[14]

जो अन्दर गये हैं, यह उनका कहना है। इसके विपरीत, डॉक्टर कहते हैं, हमने कइयों का पोस्टमार्टम, चीर-फाड़ किया है, लेकिन खण्ड-ब्रह्माण्ड और अन्य सामान कहीं नहीं देखे। डॉक्टर सच कहते हैं, मगर सन्तों का कहना भी झूठ नहीं, क्योंकि वह 'मटीरिअल' या जड़ नहीं, सूक्ष्म है और मन के परदे के पीछे है। मन का परदा उठाओ, सबकुछ नज़र आयेगा। अगर परदा न खोला, रूह नाम के साथ न जुड़ी, यह अन्धा आया और अन्धा ही चला गया। दुनिया के जीव यानी भोगी कीड़े दुनिया को भोगने आये, लेकिन दुनिया ने इन्हें भोग लिया। दुनिया को खाने आये, दुनिया ने इन्हें खा लिया, ख़ाली आये और ख़ाली चले गये।

मुकते सेवे मुकता होवै॥ हउमै ममता सबदे खोवै॥

अब श्री गुरु अमर दास जी कहते हैं कि मुक्ति देनेवाली पावर या शक्ति तेरे अन्दर है। अगर तू उसके साथ अपनी रूह को जोड़ दे, हौंमैं-ममता

नाश हो जायेगी, मुक्ति हासिल हो जायेगी। उसको शब्द भी कहते हैं। क्या कहते हैं गुरु नानक साहिब:

> सबदे धरती सबदे आगास।

शब्द ने धरती बनायी, शब्द ने आकाश बनाया।

> सबदे सबद भया परगास॥

सबको बनानेवाला शब्द है।

> सगली सृष्टि सबद के पाछे।

सबकुछ उसके आसरे है। अब शिष्य पूछता है कि वह शब्द है कहाँ? गुरु साहिब कहते हैं:

> नानक सबद घटे घटि आछे॥[15]

वह छोटे-बड़े, ऊँचे-नीचे हरएक के अन्दर है, वह सच्चा कीर्तन है। आप सो जाओ वह नहीं सोता, वह बराबर जारी है। वह यह गाने-बजाने वाला शब्द नहीं। जब तक आप परदा खोलकर अन्दर न जाओ, उसका कोई फ़ायदा नहीं। जिस तरह किसी के घर करोड़ रुपया दबा हुआ हो, वह बाहर कौड़ी-कौड़ी माँगता मर जाये; कंगाल का कंगाल रहा, न रुपया निकाला, न अमीर बना। इसी तरह जब तक आप नौ दरवाज़े छोड़कर अन्दर न जाओ, नाम नहीं मिलता, मुक्ति नहीं होती। बिना नाम के दुनिया ख़ाली आयी, ख़ाली चली गयी। 'सिध-गोसटि'* पढ़कर देखो। वहाँ गुरु नानक साहिब ने कहा है कि जब तक यह शब्द के साथ नहीं जुड़ता, न नाम का पता लगता है, न मुक्ति होती है, चाहे बाहर करोड़ों उपाय कर लो। फिर कहा है :

---

* गुरु नानक देव जी की सिद्धों के साथ गोष्ठी; देखिये, आदि ग्रन्थ, पृ. 938-46; गुरु नानक का रूहानी उपदेश, पृ. 139-54

मनसा आसा सबदि जलाई॥ गुरमुखि जोति निरंतरि पाई॥[16]

गुरु अमर दास जी फ़रमाते हैं:

क्रिपा करे ता मेलि मिलाए॥ हउमै ममता सबदि जलाए॥[17]

अनदिनु हरि जीउ सचा सेवी पूरै भागि गुरु पावणिआ॥

कहते हैं, अगर इसके बड़े भाग्य हों, इसे कोई पूरा गुरु मिल जाये, जो इसकी रूह को नाम के साथ जोड़ दे तो परदा खुलता है, नहीं तो सारी दुनिया हौंमैं में आयी और हौंमैं में चली गयी। आप 'आसा दी वार' में रोज़ पढ़ते हो:

हउ विचि आइआ हउ विचि गइआ॥ हउ विचि जंमिआ हउ विचि मुआ॥[18]

गुरु अंगद साहिब कहते हैं:

हउमै दीरघ रोगु है दारू भी इसु माहि॥

हौंमैं ला-इलाज बीमारी है, मीठी तपेदिक है, मगर इसकी दवा भी साथ है।

किरपा करे जे आपणी ता गुर का सबदु कमाहि।॥[19]

अगर यह नाम की कमाई करे तो बीमारी दूर होती है, वरना सारा जहान रोगी आया और रोगी ही चला गया।

आपे बखसे मेलि मिलाए॥ पूरे गुर ते नामु निधि पाए॥

जब परमात्मा किसी जीव को बख़्शना चाहता है तो उसका पूरे गुरु से मिलाप करा देता है। पूरा गुरु नाम देता है, वह नाम की कमाई करके ऊपर चढ़ता है। हरएक आदमी के अन्दर अमृत बरस रहा है जिसे पीकर मुक्ति होगी। जब वह अमृत पीता है, उसकी मुक्ति का सामान हो जाता है।

सचै नामि सदा मनु सचा सचु सेवे दुखु गवावणिआ॥

जब इसकी रूह सच्चे नाम के साथ जुड़ेगी, मन और इन्द्रियाँ क़ाबू में आ जायेंगी। मन जन्मों-जन्मों से लज़्ज़त का आशिक़ है। चाहे इसे दुनिया की करोड़ों लज़्ज़तें दो, यह तृप्त ही नहीं होता। नाम से बढ़कर कोई लज़्ज़त नहीं। जब आप नाम की लज़्ज़त दोगे तो मन सब रसों, सब भोगों को छोड़ देगा। नाम कहो या सच! जब रूह खण्डों-ब्रह्माण्डों पर चढ़ेगी, नाम की लज़्ज़त लेगी तो मुक्ति होगी। अगर यह बातों का मज़मून होता तो गुरु अमर दास जी कीले से केश बाँधकर क्यों खड़े रहते? उन्हें क्या ज़रूरत थी कि यह तकलीफ़ उठाते? सो, बिना नाम न किसी को मालिक मिला है, न मिलेगा।

सदा हजूरि दूरि न जाणहु॥ गुर सबदी हरि अंतरि पछाणहु॥

कहते हैं, मालिक तेरे अन्दर है, कहीं दूर नहीं, सिर्फ़ बीच में एक परदा है। जब कोई पूरा गुरु मिल जाये, वह शब्द का भेद दे, यह शब्द की कमाई करे, परदा खुल जायेगा, मालिक प्रकट हो जायेगा। शब्द भी अन्दर है, मालिक भी अन्दर है, लेकिन गुरु के बिना शब्द का भेद नहीं मिलता और शब्द के बिना मुक्ति नहीं होती।

नानक नामि मिलै वडिआई पूरे गुर ते पावणिआ॥

कहते हैं, परमात्मा की दरगाह में नाम वाले को बड़ाई मिलती है और नाम पूरे गुरु से मिलता है। वह नाम न तुर्की है, न अरबी, न फ़ारसी, न अंग्रेज़ी, न ही कोई और भाषा। वह हरएक के अन्दर है।

वाणी स्वामी जी महाराज

महिमा शब्द स्वरूप सतगुरु की

धन्य धन्य धन धन्य पियारे। क्या कहुं महिमा शब्द की॥ 1॥
जो परचे हैं शब्द से। सो जानें महिमा शब्द की॥ 2॥
छिन छिन रक्षा हो रही। क्या उपमा कहुं मैं शब्द की॥ 3॥
बिन शब्द फिरें भरमातियाँ। नहिं जाने गति मति शब्द की॥ 4॥
जिन गुरु पाया शब्द का। और प्रीति करी जिन शब्द की॥ 5॥
बड़ भागी वह जीव हैं। जो करें कमाई शब्द की॥ 6॥
बिना शब्द मन बस नहीं। तुम सुरत करो अब शब्द की॥ 7॥
वह क्यों आये इस जगत में। जिन मिली न पूँजी शब्द की॥ 8॥
धुन घट में हर दम हो रही। क्यों सुने न बानी शब्द की॥ 9॥
तू बैठ अकेला ध्यान धर। तो मिले निशानी शब्द की॥ 10॥
तज आलस निंद्रा काहिली। तू लगन लगा ले शब्द की॥ 11॥
पाँच शब्द घट में बजें। यह निर्णय कर ले शब्द की॥ 12॥
गुरु ज्ञान बताया शब्द का। तू होजा ध्यानी शब्द की॥ 13॥
मैं शब्द शब्द बहुतक कहा। कोई न माने शब्द की॥ 14॥
जन्म अकारथ खो दिया। जो चढ़े न घाटी शब्द की॥ 15॥
राधास्वामी कह कह चुप हुए। बिन भाग न धारा शब्द की॥ 16॥[1]

सत्संग के बचन

धन्य धन्य धन धन्य पियारे। क्या कहुं महिमा शब्द की॥

जो ताकत सारी दुनिया को पैदा करती है, पालती है, उसे शब्द कहते हैं। हुज़ूर स्वामी जी फ़रमाते हैं कि उस शब्द की महिमा क्या बयान करें! उसे शब्द कहो या नाम कहो।

जो परचे हैं शब्द से। सो जानें महिमा शब्द की॥

जिन्होंने नौ दरवाज़े छोड़कर दसवीं गली में जाकर शब्द के साथ रूह जोड़ दी, वे जानते हैं कि शब्द क्या है। जो अन्दर नहीं गये, उन्हें क्या पता कि शब्द क्या चीज़ है।

छिन छिन रक्षा हो रही। क्या उपमा कहुं मैं शब्द की॥

हरएक आदमी के अन्दर शब्द की धुन हो रही है, जो कभी बन्द नहीं होती। वह तब बन्द होगी जब उसकी मौत होगी। यह शरीर आग, हवा, मिट्टी, पानी और आकाश—पाँच तत्त्वों का बना हुआ है, जो सभी आपस में दुश्मन हैं। मिट्टी का दुश्मन कौन है? पानी। पानी का दुश्मन कौन है? आग। आग का दुश्मन कौन है? हवा। हवा का दुश्मन कौन है? आकाश। ये शब्द के आसरे ठहरे हुए हैं।

बिन शब्द फिरें भरमातियाँ। नहिं जाने गति मति शब्द की॥

सारा जहान पत्थर, पानी और अनेक कर्मों और भ्रमों में भटकता फिरता है। कहते हैं, अगर अन्दर जाये, परदा खोले, जीते-जी मरे, शब्द को प्रकट करे तो काम, क्रोध मर जाते हैं, मुक्ति हो जाती है। जिनके अन्दर शब्द प्रकट नहीं हुआ, उनकी मुक्ति नहीं हुई। गुरु अमर दास जी कहते हैं:

माइआधारी अति अंना बोला॥
सबदु न सुणई बहु रोल घचोला॥[2]

जिन गुरु पाया शब्द का। और प्रीति करी जिन शब्द की॥
बड़ भागी वह जीव हैं। जो करें कमाई शब्द की॥

जिन्हें शब्द-स्वरूपी, शब्द-अभ्यासी गुरु मिल गया, अन्दर जाने की राह मिल गयी, उन्होंने शब्द की कमाई की। कहते हैं, दुनिया में उनका आना मुबारक है।

बिना शब्द मन बस नहीं। तुम सुरत करो अब शब्द की॥

मन को वश में करने की कोई दवा दुनिया में है नहीं। अगर मन वश में आता है तो शब्द की कमाई के ज़रिये। जब आप शब्द से प्यार करोगे, मन वश में आ जायेगा।

वह क्यों आये इस जगत में। जिन मिली न पूँजी शब्द की॥

अगर मनुष्य-जन्म पाकर कोई शब्द-स्वरूपी, शब्द-अभ्यासी गुरु नहीं मिला, उसने शब्द का भेद नहीं दिया, इसने उसकी कमाई नहीं की, तो जैसे कुत्ते-बिल्ले पेट भरकर चले गये, वैसे ही यह भी चला गया, जन्म व्यर्थ खो दिया।

धुन घट में हर दम हो रही। क्यों सुने न बानी शब्द की॥

शब्द तो हिन्दुओं, मुसलमानों, ईसाइयों, सभी के अन्दर धुनकारें दे रहा है। जो उसके साथ रूह को नहीं जोड़ता, वह बहरा आया और बहरा ही चला गया।

तू बैठ अकेला ध्यान धर। तो मिले निशानी शब्द की॥

कहते हैं, यह अकेला बैठ जाये, अन्दर तवज्जुह दे तो वह शब्द सुनायी दे, जो हरएक घट में गूँज रहा है।

तज आलस निंद्रा काहिली। तू लगन लगा ले शब्द की॥

कहते हैं, रात को जाग, कम खा, कम सो, अन्दर तवज्जुह दे, तेरे अन्दर शब्द बज रहा है।

पाँच शब्द घट में बजें। यह निर्णय कर ले शब्द की॥

कहते हैं, तुम्हें पता है कि हम कौन-से शब्द का ज़िक्र कर रहे हैं। तुम्हारे अन्दर पाँच शब्द बज रहे हैं। क्या कहते हैं गुरु अमर दास साहिब:

वाजे पंच सबद तितु घरि सभागै॥
घरि सभागै सबद वाजे कला जितु घरि धारीआ॥
पंच दूत तुधु वसि कीते कालु कंटकु मारिआ॥[3]

यही कबीर जी कहते हैं:

पंचे सबद अनाहद बाजे संगे सारिंगपानी॥
कबीर दास तेरी आरती कीनी निरंकार निरबानी।।[4]

बेणी जी भी कहते हैं:

पंच सबद निरमाइल बाजे॥ ढुलके चवर संख घन गाजे॥[5]

कि तेरे अन्दर पाँच शब्द हो रहे हैं। यही मौलाना रूम कहते हैं:

ख़ामोश ओ पंज नौबत बिशनौ ज़ि आसमाने,
क-आँ आसमाने-बैरूँ ज़ां हफ़्त ओ ईं शश आमद।[6]

यही कई और महात्मा कहते हैं। यह नहीं कि हिन्दू कुछ और कहते हैं, मुसलमान कुछ और।

गुरु ज्ञान बताया शब्द का। तू होजा ध्यानी शब्द की॥

शब्द सभी के अन्दर गूँज रहा है। गुरु ने तुझे राह दे दी, तू शब्द के साथ प्यार कर, चढ़ ऊपर।

मैं शब्द शब्द बहुतक कहा। कोई न माने शब्द की॥

जितने महात्मा आये, सारे शब्द ही शब्द पुकारते चले गये, लेकिन हमारे कानों पर जूँ भी नहीं रेंगी, हमने मनुष्य-जन्म से कोई फ़ायदा नहीं उठाया।

जन्म अकारथ खो दिया। जो चढ़े न घाटी शब्द की॥

जिनकी रूह अन्दर परदा खोलकर खण्डों-ब्रह्माण्डों पर नहीं गयी, उनका जन्म व्यर्थ चला गया। उन्होंने मनुष्य-जन्म से कोई फ़ायदा नहीं उठाया।

राधास्वामी कह कह चुप हुए। बिन भाग न धारा शब्द की॥

शब्द भाग्य वालों को मिलता है। गुरु भी भाग्य वालों को मिलता है। जिसे गुरु नहीं मिला, शब्द नहीं मिला, उसने कमाई नहीं की, ख़ाली आया और ख़ाली चला गया। जो यह बाहरमुखी शब्द है, आहत शब्द है, अन्दर अनाहत शब्द है और वह आँखों से ऊपर है।

महला 4

होदै परतखि गुरू जो विछुड़े तिन कउ दरि ढोई नाही॥
कोई जाइ मिलै तिन निंदका मुह फिके थुक थुक मुहि पाही॥
जो सतिगुरि फिटके से सभ जगति फिटके नित भंभल भूसे खाही॥
जिन गुरु गोपिआ आपणा से लैदे ढहा फिराही॥
तिन की भुख कदे न उतरै नित भुखा भुख कूकाही॥
ओना दा आखिआ को न सुणै नित हउले हउलि मराही॥
सतिगुर की वडिआई वेखि न सकनी ओना अगै पिछै थाउ नाही॥
जो सतिगुरि मारे तिन जाइ मिलहि रहदी खुहदी सभ पति गवाही॥
ओइ अगै कुसटी गुर के फिटके जि ओसु मिलै तिसु कुसटु उठाही॥
हरि तिन का दरसनु ना करहु जो दूजै भाइ चितु लाही॥
धुरि करतै आपि लिखि पाइआ तिसु नालि किहु चारा नाही॥
जन नानक नामु अराधि तू तिसु अपड़ि को न सकाही॥
नावै की वडिआई वडी है नित सवाई चड़ै चड़ाही॥ 2 ॥[1]

सत्संग के बचन

होदै परतखि गुरू जो विछुड़े तिन कउ दरि ढोई नाही॥
कोई जाइ मिलै तिन निंदका मुह फिके थुक थुक मुहि पाही॥

अगर गुरु मौजूद है, शिष्य उससे बिगड़कर, विमुख होकर बिछुड़ जाये और गुरु का निन्दक बन जाये तो गुरु राम दास जी कहते हैं कि वह परमात्मा की दरगाह में नहीं जा सकता। यह तो निन्दा करनेवाले का हाल है। मगर

जो गुरु की निन्दा सुनता है या निन्दा करनेवाले से प्यार करता है, ऐसे निन्दक के पास बैठनेवाले सत्संगी का मुँह थूकने के क़ाबिल है।

जो सतिगुरि फिटके से सभ जगति फिटके नित भंभल भूसे खाही॥

फिर जिन्हें सतगुरु फटकारता है, दुनिया भी उन्हें फटकारती है। उनकी ज़िन्दगी ख़राब हो जाती है, वे इधर-उधर धक्के खाते हैं। न तो दुनिया में उनकी इज़्ज़त होती है, न दरगाह में।

जिन गुरु गोपिआ आपणा से लैदे ढहा फिराही॥

कहते हैं, जिन्होंने गुरु की निन्दा की, उनका बेड़ा पार लगता ही नहीं। निन्दा कौन करता है? जो अपने आप को ऊँचा मानता है या अक़्लमन्द समझता है, दूसरों को निकम्मा समझता है।

तिन की भुख कदे न उतरै नित भुखा भुख कूकाही॥

कहते हैं, ऐसे भूखों की भूख कभी मिटती ही नहीं। क्यों? क्योंकि भूख मिटती है नाम के ज़रिये! वे नाम से दूर हो गये। फिर उनकी भूख कैसे मिटे? सो, वे दिन-रात भूख-भूख ही चिल्लाते हैं।

ओना दा आखिआ को न सुणै नित हउले हउलि मराही॥

कहते हैं, वे निन्दक, लोगों को अपने ढंग पर लाना चाहते हैं, मगर उनका कहना कोई सुनता ही नहीं। आख़िर झख मारकर पीछे रह जाते हैं।

सतिगुर की वडिआई वेखि न सकनी ओना अगै पिछै थाउ नाही॥

जो शिष्य सतगुरु की बड़ाई, सतगुरु की तरक़्क़ी, सतगुरु की महिमा देख नहीं सकता और कहता है, "हाय! इनकी महिमा क्यों होती है? बड़ाई क्यों होती है? मेरी क्यों नहीं होती?" कहते हैं, उसे आगे-पीछे (लोक-परलोक) कहीं भी ठिकाना नहीं मिलता। ऐसे लोग ख़ाली आये और ख़ाली चले गये।

जो सतिगुरि मारे तिन जाइ मिलहि रहदी खुहदी सभ पति गवाही॥

कहते हैं, जिन्होंने सतगुरु को छोड़ दिया है, जो भी उनसे जाकर मिले, उनकी सोहबत की, उनकी मदद की, उनके हमदर्द बने, उनकी रही-सही इज़्ज़त भी चली गयी।

ओइ अगै कुसटी गुर के फिटके जि ओसु मिलै तिसु कुसटु उठाही॥

कहते हैं, जो गुरु का फटकारा हुआ है, उसको तो मानो कोढ़ ही हो गया है, मगर जो उसके पास जायेगा, उसको भी कोढ़ हो जायेगा।

हरि तिन का दरसनु ना करहु जो दूजै भाइ चितु लाही॥

अब श्री गुरु राम दास जी कहते हैं कि हे परमात्मा! जो गुरु को छोड़कर दूसरी तरफ़ चित्त लगाता है, मुझे उनका मुँह भी न दिखा। मैं उनका दर्शन ही नहीं करना चाहता।

धुरि करतै आपि लिखि पाइआ तिसु नालि किहु चारा नाही॥

कहते हैं, सतगुरु जो हुक्म देता है, मालिक की रज़ा के मुताबिक़ देता है। सतगुरु का हुक्म मालिक का हुक्म है। फिर जो उससे बिगड़े यानी विमुख हो जाये तो उसे क्या कहें?

जन नानक नामु अराधि तू तिसु अपड़ि को न सकाही॥

कहते हैं, गुरु की शरण लेकर क्या फ़ायदा उठाना है? नाम का। नाम के बराबर कोई दौलत नहीं, नाम की कमाई के बराबर कोई ऊँचा कर्म नहीं। बेहतर है कि आप नाम की कमाई करो और फ़ायदा उठाओ।

नावै की वडिआई वडी है नित सवाई चड़ै चड़ाही॥

नाम की महिमा बहुत ऊँची है और दिन-ब-दिन नाम की कमाई करनेवाले की तरक़्क़ी होती है।

वाणी स्वामी जी महाराज

चितावनी भाग पहला

क्यों फिरत भुलानी जगत में, दिन चार बसेरा॥ 1॥
स्वारथ के संगी सभी, जिन तुझ को घेरा॥ 2॥
मात पिता सुत इस्तरी, कोइ संग न हेरा॥ 3॥
बिन गुरु सतगुरु कौन है, जो करे निबेड़ा॥ 4॥
नाम बिना सब जीव, करें चौरासी फेरा॥ 5॥
मन दुलहा गगना चढ़े, सज सूरत सेहरा॥ 6॥
धुन दुलहिन को पाय कर, बसे जाय त्रिकुटी देहरा॥ 7॥
राधास्वामी ध्यान धर, तू साँझ सबेरा॥ 8॥[1]

सत्संग के बचन

क्यों फिरत भुलानी जगत में, दिन चार बसेरा॥
स्वारथ के संगी सभी जिन तुझ को घेरा॥

कई बार उजाड़ों में, किसी-किसी जगह बड़े-बड़े पेड़ होते हैं। दूर-दूर से पक्षी आकर उन पर आराम करते हैं, जिनमें से कोई कोयल की तरह मीठी बोली बोलनेवाले होते हैं और कोई कौवे की तरह कर्कश, कड़वी बोली बोलनेवाले होते हैं। जब सुबह होती है, अपनी-अपनी बोली बोलकर सारे उड़ जाते हैं। इसी तरह हमारे माँ-बाप, बेटे-बेटियाँ और बाक़ी रिश्तेदार हैं, कर्मों के अनुसार कोई कहीं से आ गया और कोई कहीं से आकर

परिवार बन गया। इसलिए जैसे-जैसे उनका वक़्त आता है या यह कह दो कि लेना-देना ख़त्म हो जाता है, वैसे-वैसे वे चले जाते हैं। इसी लिए सन्त-सतगुरु कहते हैं कि तू इनके साथ लेना-देना और दूसरे काम-काज कर, मगर उनसे बँध मत। क्योंकि ये तेरा दीन-ईमान नहीं, न ही ये मौत के वक़्त तेरे साथ जायेंगे। आप रोज़ देखते हो, माँ चली जाती है, बेटा रह जाता है; पत्नी चली जाती है, पति रह जाता है। ये रिश्तेदार दुनियावी यार हैं, परमार्थ के यार नहीं। फिर कहते हैं, ऐ पुरुष! तेरा इनके साथ दुनियावी नाता है, परमार्थ का नहीं। आया ख़याल!

मात पिता सुत इस्तरी, कोइ संग न हेरा॥
बिन गुरु सतगुरु कौन है, जो करे निबेड़ा॥

कहते हैं, जब मौत आती है, माँ साथ नहीं जाती, पिता साथ नहीं जाता, स्त्री साथ नहीं जाती, बेटा-बेटी साथ नहीं जाते। इस दुनिया से हमारे साथ जानेवाले अगर कोई रिश्तेदार हैं तो दो हैं—एक सतगुरु और दूसरा नाम। इसलिए सन्त कहते हैं कि नाम की कमाई कर, जो तेरे साथ जाये। सारी उम्र परिवार का गधा ही न बना रह, कुछ अपना भी बना। घण्टा, दो घण्टा भजन को दे, अन्दर रूहानी मण्डलों पर जा, ताकि दुनिया में रहते हुए तुझे शान्ति मिल जाये। हमारा जन्म-मरण सतगुरु ख़त्म करेगा। हमें मालिक के पास सतगुरु ले जायेगा। सतगुरु ही नाम देता है और सतगुरु ही मुक्ति देगा।

नाम बिना सब जीव, करें चौरासी फेरा॥

कहते हैं, बिना सतगुरु और बिना नाम की कमाई के सारी दुनिया घोर अँधेरे में जा रही है। भागवत् में कृष्ण भगवान् ऊधो से कहते हैं कि यह जो कीड़ा जा रहा है, कई बार ब्रह्मा और कई बार इन्द्र बन चुका है। जब स्वर्ग का राजा इन्द्र और दुनिया को पैदा करनेवाला ब्रह्मा कीड़े बने फिरते हैं तो हम बेचारे क्या हैं! हमें करोड़ों युग हो गये चौरासी का चक्कर काटते,

मुक्ति नहीं हुई। मुक्ति देनेवाला नाम है और वह आप सभी के अन्दर है। जब तक आप परदा खोलकर उसे प्रकट नहीं करते, मुक्ति नहीं होती।

मन दुलहा गगना चढ़े, सज सूरत सेहरा॥
धुन दुलहिन को पाय कर, बसे जाय त्रिकुटी देहरा॥

जिस तरह रूह सचखण्ड के समुद्र की बूँद या सतनाम की अंश है, इसी तरह मन भी ब्रह्म का अंश है। रूह भी अपने घर को भूली हुई है और मन भी अपने घर को भूला हुआ है। अगर मन को यह ख़बर हो जाये कि मेरी पैदाइश त्रिकुटी यानी ब्रह्म से है तो वह अपने घर को चल पड़े। ये खोटी-खोटी लज़्ज़तें छोड़ दे और क़ाबू में आ जाये, एकाग्र हो जाये। जब सन्त-सतगुरु मिल गये, रूह ने नाम ले लिया और मन ने मान लिया, दोनों अन्दर चढ़ गये। मन तो ब्रह्म में जाकर लीन हो गया और रूह सचखण्ड में पहुँचकर सतनाम में मिल गयी। दोनों की मुक्ति हो गयी, दोनों अपने-अपने घर पहुँच गये। असल में रूह का पति परमेश्वर है लेकिन यहाँ (दुनिया में) इसने मन को पति बनाया हुआ है। इसलिए जब तक मन और रूह दोनों अन्दर न जायें, इनकी मुक्ति नहीं होती। ज्यों-ज्यों मन और रूह भजन करते हैं, अन्दर रसाई होती है, त्यों-त्यों मुक्ति के नज़दीक होते जाते हैं। जैसा कि पहले अर्ज़ किया है, मन की मुक्ति ब्रह्म में और रूह की मुक्ति सतनाम में लीन होकर होगी।

राधास्वामी ध्यान धर, तू साँझ सबेरा॥

राधास्वामी से मुराद सतगुरु से है। कहते हैं, सतगुरु हर मंज़िल पर तेरे साथ है। जब हम देह में बैठे हैं, सतगुरु देह-स्वरूप में हमारे सामने है। जब सहँस-दल-कँवल में जायेंगे, सतगुरु विदेह रूप यानी सूक्ष्म-रूप है, त्रिकुटी में शब्द-रूप है, ऊपर पारब्रह्म में जाकर पारब्रह्म-रूप है। इसी तरह जब उससे ऊपर जायेंगे तो उसका रूप सतनाम है।

धनासरी महला 5

जिनि तुम भेजे तिनहि बुलाए सुख सहज सेती घरि आउ॥
अनद मंगल गुन गाउ सहज धुनि निहचल राजु कमाउ॥ 1॥
तुम घरि आवहु मेरे मीत॥
तुमरे दोखी हरि आपि निवारे अपदा भई बितीत॥ रहाउ॥
प्रगट कीने प्रभ करनेहारे नासन भाजन थाके॥
घरि मंगल वाजहि नित वाजे अपुनै खसमि निवाजे॥ 2॥
असथिर रहहु डोलहु मत कबहू गुर कै बचनि अधारि॥
जै जै कारु सगल भू मंडल मुख ऊजल दरबार॥ 3॥
जिन के जीअ तिनै ही फेरे आपे भइआ सहाई॥
अचरजु कीआ करनैहारै नानक सचु वडिआई॥ 4॥[1]

सत्संग के बचन

जिनि तुम भेजे तिनहि बुलाए सुख सहज सेती घरि आउ॥

पाँचवीं पातशाही, श्री गुरु अर्जुन देव जी महाराज क्या पैग़ाम (सन्देश) देते हैं? आप फ़रमाते हैं कि जिस मालिक ने तुम्हें दुनिया में भेजा है, वही तुम्हें हमारे ज़रिये बुलाता है। आओ! तुम्हें ले चलें और मालिक के साथ मिला दें। मगर चले कौन? चलना आसान नहीं। फिर कहते हैं, जब तुम अभ्यास करके सहज अवस्था में आ जाओगे, तुम सुखी हो जाओगे। मगर इस देश को छोड़े कौन? सन्त न तो कोई मज़हब बनाते हैं, न तोड़ते हैं। उनका मक़सद यह होता है कि जो हमारे जैसे जीव चौरासी के जेलख़ाने

में क़ैद हैं, उनकी मदद से आज़ाद हो जायें, जन्म-मरण ख़त्म हो जाये, आनन्द के देश में चले जायें। वे यह सन्देश लेकर दुनिया में आते हैं।

अनद मंगल गुन गाउ सहज धुनि निहचल राजु कमाउ॥

कहते हैं, आप अन्दर धुन को पकड़कर उस मालिक में जाकर लीन हो जाओ। जो बूँद समुद्र में मिल गयी, वह समुद्र हो गयी। इसी तरह आप भी सतनाम के समुद्र में मिलकर सतनाम का समुद्र बन जाओ, अकालपुरुष, वाहिगुरु में मिलकर अकालपुरुष, वाहिगुरु बन जाओ। अकालपुरुष करोड़ों खण्डों-ब्रह्माण्डों का मालिक है और लाफ़ानी (अविनाशी) है, तुम भी उसमें मिलकर करोड़ों खण्डों-ब्रह्माण्डों के मालिक और लाफ़ानी बन जाओ।

तुम घरि आवहु मेरे मीत॥

गुरु अर्जुन साहिब कहते हैं, ऐ प्यारे, यह दुनिया हमारा घर नहीं, यह मन-माया का देश है। जिस शरीर में हम बैठे हुए हैं, यह भी हमारा नहीं, बल्कि किराये का मकान है। हमारा देश सचखण्ड, सतनाम और अनामी है। आओ, मेहनत करो, परदा खोलो और चलो ऊपर।

तुमरे दोखी हरि आपि निवारे अपदा भई बितीत॥

यहाँ संसार में हमारा दुश्मन कौन है? मन, माया, इन्द्रियाँ, काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार। जिस वक़्त गुरु ने नाम दिया, हमने नाम की कमाई की, शब्द की लज़्ज़त आयी तो जितने दोष थे, सारे भाग गये, जितने दुश्मन थे, सारे निकलकर बाहर हो गये, रूह ख़ाली यानी आज़ाद हो गयी। गुरु अर्जुन साहिब कहते हैं कि तुम्हारे सारे दुःख दूर हो गये। मालिक ने सारे बन्धन काट दिये। चलो, अब अपने घर चलें।

प्रगट कीने प्रभ करनेहारे नासन भाजन थाके॥

जब सतगुरु की कृपा से अन्दर नाम की लज़्ज़त आ जाये, फिर मन दौड़ता नहीं। नाम की लज़्ज़त से बढ़कर दुनिया में कोई लज़्ज़त नहीं। उसे पाकर मन लीन हो गया, उसका भागना-दौड़ना बन्द हो गया। जब भाग-दौड़ से हट गया, अन्दर गुरु प्रकट हो गया।

घरि मंगल वाजहि नित वाजे अपुनै खसमि निवाजे॥

गुरु अर्जुन साहिब कहते हैं, जब रूह खण्डों-ब्रह्माण्डों पर गयी तो अन्दर मीठे-मीठे बाजे और राग-रागनियाँ होने लग गये, जिसे तुम कीर्तन भी कहते हो। फिर जैसे-जैसे लज़्ज़त आती गयी, रूह ऊपर की तरफ़ खिंचनी शुरू हो गयी।

असथिर रहहु डोलहु मत कबहू गुर कै बचनि अधारि॥

यह सारा सामान कब मिलता है? जब इसे गुरु पर भरोसा आ जाये। अब गुरु अर्जुन साहिब कहते हैं, जो वचन गुरु कह दे, चाहे ब्रह्माण्ड पलट जाये तुम्हारा ख़याल न पलटे, तुम उस पर दृढ़ रहो। इतना ऊँचा और सच्चा प्यार होना चाहिए।

जै जै कारु सगल भू मंडल मुख ऊजल दरबार॥

जब तुम गुरु-भक्ति पूर्ण करके नाम-भक्ति पूर्ण करोगे, तुम्हारी शोभा न सिर्फ़ दुनिया में ही होगी, बल्कि मालिक की दरगाह में भी होगी। कहते हैं, तुम्हारी रूह सुहागिन हो जायेगी और परमात्मा के साथ मिल जायेगी।

जिन के जीअ तिनै ही फेरे आपे भइआ सहाई॥

अब गुरु अर्जुन साहिब कहते हैं, तुम परमात्मा के जीव थे, परमात्मा ने ही तुम्हें खींचकर अपने पास बुला लिया। वह गुरु को भेजकर अपने जीवों

की सहायता करता है या यह कह दो कि वह गुरु बनकर दुनिया में आता है। यह तरीक़ा आज का नहीं बल्कि जिस दिन से दुनिया बनी है, तभी से चला आ रहा है। जब तक परमेश्वर की कृपा न हो, जीव न सत्संग में आता है, न नाम के साथ प्यार करता है। इसके खोटे कर्म इसे सन्तों के दरबार में आने नहीं देते।

अचरजु कीआ करनैहारै नानक सचु वडिआई॥

कहते हैं, अचरज है कि हम करोड़ों जन्मों से यहाँ चौरासी भोगते और कुत्ते-बिल्ले, सूअर-गधे बनते रहे, गुरु ने हमें नाम देकर परमात्मा से मिला दिया। यह अचरज नहीं तो और क्या है?

सोरठि महला 5

हम संतन की रेनु पिआरे हम संतन की सरणा॥
संत हमारी ओट सताणी संत हमारा गहणा॥ 1॥
हम संतन सिउ बणि आई॥ पूरबि लिखिआ पाई॥
इहु मनु तेरा भाई॥ रहाउ॥
संतन सिउ मेरी लेवा देवी संतन सिउ बिउहारा॥
संतन सिउ हम लाहा खाटिआ हरि भगति भरे भंडारा॥ 2॥
संतन मो कउ पूंजी सउपी तउ उतरिआ मन का धोखा॥
धरम राइ अब कहा करैगो जउ फाटिओ सगलो लेखा॥ 3॥
महा अनंद भए सुखु पाइआ संतन कै परसादे॥
कहु नानक हरि सिउ मनु मानिआ रंगि रते बिसमादे॥ 4॥[1]

सत्संग के बचन

हम संतन की रेनु पिआरे हम संतन की सरणा॥

गुरु अर्जुन साहिब सन्तों की कितनी महिमा करते हैं! कहते हैं कि हम सन्तों के चरणों की धूलि हैं। सन्तों की पदवी बहुत ऊँची है।

संत हमारी ओट सताणी संत हमारा गहणा॥

कहते हैं, हमें सन्तों का आसरा है। सन्त हमारा गहना यानी साथी हैं। अगर हमारे साथ सचखण्ड जानेवाले कोई हैं तो सन्त हैं।

हम संतन सिउ बणि आई॥ पूरबि लिखिआ पाई॥

कहते हैं, शुक्र है कि हमारा सन्तों के साथ प्यार हो गया। किस तरह हो गया? हमारे कोई पिछले जन्मों के बड़े ऊँचे कर्म थे, जिनकी वजह से सन्तों से मिलाप हो गया, सन्तों के दर्शन हुए, सन्तों का सत्संग मिला।

इहु मनु तेरा भाई॥

ऐ मालिक! ऐ सन्तो! यह तन, मन, धन सब तुम्हारा है।

संतन सिउ मेरी लेवा देवी संतन सिउ बिउहारा॥

कहते हैं, हम सन्तों की शरण में आ गये हैं। अब हमारा सन्तों के साथ ही मिलना-जुलना, सन्तों के साथ ही बर्ताव है।

संतन सिउ हम लाहा खाटिआ हरि भगति भरे भंडारा॥

कहते हैं, सन्तों की शरण में आकर हमें बड़ा ही फ़ायदा हुआ। जन्म-मरण ख़त्म हो गया, भक्ति का ख़ज़ाना मिल गया, रूह खण्डों-ब्रह्माण्डों पर चली गयी, मालिक के दर्शन हो गये। हमें जो कुछ मिला है, सन्तों की कृपा से।

संतन मो कउ पूंजी सउपी तउ उतरिआ मन का धोखा॥

कहते हैं, सन्तों ने नाम की पूँजी, नाम की दौलत हमें दे दी, अन्दर परदा खुल गया, शब्द की लज़्ज़त आ गयी। अब हमें कोई धोखा नहीं, न जन्म का, न मरण का।

धरम राइ अब कहा करैगो जउ फाटिओ सगलो लेखा॥

कहते हैं, धर्मराय हरएक प्राणी के कर्मों के मुताबिक़ आगे जन्म देता है—नरकों में, स्वर्गों में या किसी योनि में। मगर हमें उसके पास हिसाब

देने के लिए नहीं जाना पड़ता। क्यों? क्योंकि जब वह खाता या एमालनामा ही फट गया तो हिसाब किसको देना है? नाम की कमाई और गुरु की कृपा से वह काग़ज़ फट जाता है। अगर कर्मों का पर्चा ही फट गया तो बाक़ी क्या रह गया? इसी तरह जो सन्तों के पास जायेंगे, वे उनका काग़ज़ फाड़ देंगे, मगर शर्त यह है कि यह कमाई करके परदा खोले। जिसने परदा खोल लिया, वह कह सकता है कि मेरा लेखा फट गया है, अब धर्मराय मेरा कुछ नहीं बिगाड़ सकता, मगर जो अन्दर नहीं गया, उसका लेखा ज्यों का त्यों है। जिस तरह अगर बीमार दवाई खायेगा तो बीमारी जायेगी। अगर दवाई आले में पड़ी रही तो बीमारी कैसे दूर हो सकती है? कभी नहीं।

महा अनंद भए सुखु पाइआ संतन कै परसादे॥

अब गुरु अर्जुन साहिब कहते हैं, अन्दर परदा खुल गया, रूह ऊपर खण्डों-ब्रह्माण्डों पर चली गयी, अमृतसर में नहायी, अमृत पिया, सुखी हो गयी। फिर कहते हैं, परदा किस तरह खुलता है? जब सतगुरु मिले, उन्होंने नाम दिया, हमने नाम की कमाई की, परदा खुल गया।

कहु नानक हरि सिउ मनु मानिआ रंगि रते बिसमादे।

अब गुरु अर्जुन साहिब कहते हैं, परदा खुल गया, मालिक का रंग चढ़ गया। अब किसका डर है?

कलिआन महला 4

राम गुरु पारसु परसु करीजै ॥
हम निरगुणी मनूर अति फीके मिलि सतिगुर पारसु कीजै ॥ 1 ॥ रहाउ ॥
सुरग मुकति बैकुंठ सभि बांछहि निति आसा आस करीजै ॥
हरि दरसन के जन मुकति न मांगहि मिलि दरसन त्रिपति मनु धीजै ॥ 1 ॥
माइआ मोहु सबलु है भारी मोहु कालख दाग लगीजै ॥
मेरे ठाकुर के जन अलिपत है मुकते जिउ मुरगाई पंकु न भीजै ॥ 2 ॥
चंदन वासु भुइअंगम वेड़ी किव मिलीऐ चंदनु लीजै ॥
काढि खड़गु गुर गिआनु करारा बिखु छेदि छेदि रसु पीजै ॥ 3 ॥
आनि आनि समधा बहु कीनी पलु बैसंतर भसम करीजै ॥
महा उग्र पाप साकत नर कीने मिलि साधू लूकी दीजै ॥ 4 ॥
साधू साध साध जन नीके जिन अंतरि नामु धरीजै ॥
परस निपरसु भए साधू जन जनु हरि भगवानु दिखीजै ॥ 5 ॥
साकत सूतु बहु गुरझी भरिआ किउ करि तानु तनीजै ॥
तंतु सूतु किछु निकसै नाही साकत संगु न कीजै ॥ 6 ॥
सतिगुर साधसंगति है नीकी मिलि संगति रामु रवीजै ॥
अंतरि रतन जवेहर माणक गुर किरपा ते लीजै ॥ 7 ॥
मेरा ठाकुरु वडा वडा है सुआमी हम किउ करि मिलह मिलीजै ॥
नानक मेलि मिलाए गुरु पूरा जन कउ पूरनु दीजै ॥ 8 ॥[1]

सत्संग के बचन

राम गुरु पारसु परसु करीजै॥

शायर और किताबें कहती हैं कि पारस एक पत्थर होता है जो लोहे को सोना बना देता है। अब कबीर साहिब कहते हैं कि पारस और सन्त में बड़ा फ़र्क़ है:

पारस में औ संत में, बड़ो अंतरो जान॥
वह लोहा कंचन करै, ये कर लें आप समान॥[2]

सन्त जीवों को उपदेश देकर अपने जैसा सन्त बना लेते हैं और पारस लोहे को सोना बना देता है, लेकिन पारस नहीं बना सकता। पारस भी मिट्टी है और सोना भी मिट्टी। दुनिया में असली पारस दो हैं—एक राम, दूसरा गुरु; एक अकालपुरुष, दूसरा गुरु। दो अलग-अलग तत्त्व हैं, हैं एक ही, मगर शाखाएँ दो हो गयीं। एक ही चीज़ है, बयान करने के लिए अलग-अलग हैं। गुरु साहिब कहते हैं, अगर पारस की ज़रूरत है तो वे दो पारस ले लो।

हम निरगुणी मनूर अति फीके मिलि सतिगुर पारसु कीजै॥

अब अपना तजुरबा बयान करते हुए फ़रमाते हैं कि मैं गुणहीन था, मैं लोहा भी नहीं था, मनूर (ज़ंग) था। मनूर लोहे की मैल को कहते हैं। मैं सन्त बन गया और परमात्मा के साथ मिल गया। यह गुरु से मिलने का फ़ायदा हुआ।

सुरग मुकति बैकुंठ सभि बांछहि निति आसा आस करीजै॥

दुनिया में कोई स्वर्ग माँगता है, कोई बैकुण्ठ और इनको हासिल करने के लिए तीर्थ, व्रत और दूसरे कई कर्म करते हुए उम्र बिता देते हैं। सारी

दुनिया स्वर्ग के ख़याल में मशग़ूल (डूबी) है, लेकिन मालिक के प्यारों का क्या ख़याल है? यह आगे कहते हैं:

हरि दरसन के जन मुकति न मांगहि मिलि दरसन त्रिपति मनु धीजै॥

वे वाहिगुरु, अकालपुरुष के आशिक़ मुक्ति की तरफ़ देखते भी नहीं। अगर तवज्जुह जाती है तो हरि के दर्शन की ओर! वे और कुछ नहीं चाहते। जब वह मिल गया, फिर बाक़ी क्या रह गया? अब राम और गुरु के बारे में बता दिया कि राम का यह फ़ायदा है और गुरु का यह।

माइआ मोहु सबलु है भारी मोहु कालख दाग लगीजै॥
मेरे ठाकुर के जन अलिपत है मुकते जिउ मुरगाई पंकु न भीजै॥

दुनिया में माया का ज़बरदस्त ज़ोर है। सारी दुनिया काजल की कोठरी है। कितना भी सयाना इसमें दाख़िल हो जाये, दाग़ लगे बिना नहीं निकलता। किसी को कोई दाग़ लगा है, किसी को कोई। माया के प्यारे सभी काले रंग वाले हैं, ख़ाली कोई नहीं और जो परमात्मा के आशिक़ हैं, वे बेटे-बेटियों में, दुनिया के काम-धन्धों में रहते हुए भी ला-तअल्लुक़ (अनासक्त) हैं। जिस तरह मुर्ग़ाबी पानी में रहती है, पानी में खाती है, मगर जब उड़ती है, पंख सूखे के सूखे। पानी उनको स्पर्श नहीं करता। इसी तरह परमात्मा के आशिक़ दुनिया में रहते हुए, दुनिया की लज़्ज़त लेते हुए, भोग भोगते हैं और फिर बेदाग़ चले जाते हैं। उन पर माया असर नहीं करती। क्यों? क्योंकि अभ्यासी महात्मा उस मक्खी की तरह हैं, जो शहद के बर्तन के किनारे पर बैठकर शहद की लज़्ज़त भी ले जाती है और साफ़ पंखों से उड़ भी जाती है। दुनियादार उस मक्खी की तरह हैं, जो शहद के बर्तन के बीच में आ बैठी, बैठते ही पंख लिबड़ गये, शहद भी न खाया और फँस भी गयी। दुनियादार ईर्ष्या और बदले की भावना रखते हैं। द्वेष, जलन, ईर्ष्या वाले यहाँ भी जलते हैं, आगे भी जलेंगे। महात्मा ने दुनिया की लज़्ज़त भी ली और मालिक की दरगाह में भी चले गये।

चंदन वासु भुइअंगम वेड़ी किव मिलीऐ चंदनु लीजै॥
काढि खड़गु गुर गिआनु करारा बिखु छेदि छेदि रसु पीजै॥

चन्दन इतनी ठण्डी चीज़ है कि ज़हरीले साँप अपने ज़हर की तपिश को कम करने के लिए चन्दन के पेड़ के साथ लिपटे रहते हैं। अगर चन्दन लेना चाहें तो वे डस लेते हैं। अगर साँपों को मार दें तो चन्दन मिल सकता है। यह बाहर की मिसाल है। अन्दर की बात यह है कि शान्ति, नाम की लज़्ज़त हमारे अन्दर है, मगर हमारे हृदय के ऊपर मन रूपी साँप बैठा हुआ है। जब तक यह साँप पकड़ा न जाये, नाम की लज़्ज़त नहीं मिलती। दूसरे लफ़्ज़ों में, परमात्मा और हमारे बीच मन का परदा है। जब तक यह 'मोशनलैस', बे-हरकत या खड़ा नहीं होता, वह नूर, वह प्रकाश नज़र नहीं आता। मन को खड़ा करने के लिए सिवाय नाम के और कोई दवा नहीं और वह आप सभी के अन्दर है। क्राइस्ट (हज़रत ईसा) ने उसे 'वर्ड' कहा है। मन रूपी साँप को मारने के लिए क्या चाहिए? ज्ञान का खड्ग। ज्ञान या शब्द की तलवार से मन को काट दो, मन 'मोशनलैस', खड़ा हो जायेगा, रूह पिण्ड को छोड़कर ब्रह्माण्ड पर चढ़ जायेगी। दुनिया लफ़्ज़ों में उलझकर मर गयी, नाम का पता न लगा कि वह क्या चीज़ है। गुरु अंगद साहिब फ़रमाते हैं:

अखी बाझहु वेखणा विणु कंना सुनणा॥

यह कानों की घूँ-घूँ शब्द नहीं।

पैरा बाझहु चलणा विणु हथा करणा॥
जीभै बाझहु बोलणा इउ जीवत मरणा॥
नानक हुकमु पछाणि कै तउ खसमै मिलणा॥[3]

उस दुनिया में कोई भाषा नहीं, न गुरुमुखी है, न अरबी, न फ़ारसी, न संस्कृत। वहाँ कोई किताब नहीं—न वेद, न शास्त्र, न क़ुरान, न इंजील। वह 'अमरे-रब्बी' है, 'अनरिटन लॉ एण्ड अनस्पोकन लैंग्वेज',

लिखने-पढ़ने में न आनेवाला विषय है। कब मिलता है? जब नौ दरवाज़े छोड़कर दसवीं गली में आये। वह ताकत, जो करोड़ों खण्डों-ब्रह्माण्डों को लिये खड़ी है, कैसे मिले? यह सवाल है। आप आगे जवाब देते हैं:

आनि आनि समधा बहु कीनी पलु बैसंतर भसम करीजै॥

वह किताबें पढ़ने से, विचार करने से नहीं मिलता। क्या कहते हैं गुरु नानक साहिब:

गिआनु धिआनु धुनि जाणीऐ अकथु कहावै सोइ॥[1]

वह अकथ है, उसका ज्ञान चाहिए। जब उस ज्ञान की तलवार को पकड़ें तो साँप काटा जायेगा यानी जब शब्द को पकड़ेंगे, मन 'मोशनलैस' हो जायेगा, खड़ा हो जायेगा। अब नाम की महिमा करके गुरु की महिमा की तरफ़ आते हैं।

महा उग्र पाप साकत नर कीने मिलि साधू लूकी दीजै॥

जिस तरह करोड़ों मन लकड़ियों का ढेर हो, आग की एक चिंगारी उसे राख करने के लिए काफ़ी है। इसी तरह करोड़ों पाप, करोड़ों खोटे कर्म क्यों न हों, जब यह जीव प्रेम लेकर सत्संग में आता है, सारे भस्म हो जाते हैं। यह गुरु राम दास जी का कहा हुआ वचन है। ब्रह्माण्ड पलट जाये, सन्तों का वाक् (वचन) नहीं टल सकता। सन्तों के दर्शन करने से करोड़ों पाप नाश हो जाते हैं।

साधू साध साध जन नीके जिन अंतरि नामु धरीजै॥
परस निपरसु भए साधू जन जनु हरि भगवानु दिखीजै॥

घर-बार छोड़ने से, कपड़े रँगने से साधु नहीं बनता, बल्कि जो साधना करके नाम को अन्दर प्रकट कर ले, वह साधु कहलाता है। जिस तरह एम. ए., बी. ए. की 'डिग्री' है, इसी तरह साधु, सन्त और परम-सन्त भी

रूहानी प्राप्ति की 'डिग्रियाँ' हैं। जिस वक़्त यह नौ दरवाज़ों से निकलकर दसवीं गली से होकर आकाश-मार्ग पर आ जाये और सूरज, चन्द्रमा पार करके, तुरिया पद में पहुँचकर जोत प्रकट कर ले, उस वक़्त शिष्य कहलाने का हक़दार होता है। जब तक मन इन्द्रियों का ग़ुलाम है, भोगों में रहता है, यह शिष्य कैसे हो सकता है? गुरु गोबिन्द सिंह जी फ़रमाते हैं कि जब तक अन्दर जोत प्रकट नहीं होती, शिष्य नहीं बनता। मैं भी यही कहता हूँ कि जब तक शिष्य तुरिया पद में पहुँचकर जोत प्रकट न कर ले, जब तक काम, मन, इन्द्रियाँ क़ाबू में नहीं आतीं, तब तक शिष्य, शिष्य नहीं बन सकता।

गुरु नानक साहिब कहते हैं:

सचु तां परु जाणीऐ जा आतम तीरथि करे निवासु॥[5]

इसी तरह साध किसे कहते हैं? जिसने अपनी आत्मा पर से स्थूल, सूक्ष्म, कारण तीनों ग़िलाफ़ उतार लिये, जिसका पिण्डी मन पिण्ड को छोड़कर ब्रह्माण्डी मन में मिल गया; फिर ब्रह्म, पारब्रह्म में पहुँच गया। वहाँ अमृतसर है, जो वहाँ स्नान करता है उसका नाम साधु है। गुरु अर्जुन साहिब फ़रमाते हैं:

साध की धूरि करहु इसनानु॥ साध ऊपरि जाईऐ कुरबानु॥[6]

आगे फ़रमाते हैं:

साध की महिमा बेद न जानहि॥ जेता सुनहि तेता बखिआनहि॥[7]

'साध' कोई मामूली अवस्था नहीं। शिष्य ही नहीं मिलते तो 'साध' कहाँ? जो पारब्रह्म में पहुँचे, वह 'साध' है। गुरु अर्जुन साहिब फ़रमाते हैं:

संतसंगि अंतरि प्रभु डीठा॥ नामु प्रभू का लागा मीठा॥[8]

साधुओं की संगति करके ही अकालपुरुष मिलता है।

साकत सूतु बहु गुरझी भरिआ किउ करि तानु तनीजै॥
तंतु सूतु किछु निकसै नाही साकत संगु न कीजै॥

कहते हैं, जो सूत गाँठों से भरा हुआ हो, तार, धागा कुछ न निकल सके, उसका कपड़ा नहीं बुना जा सकता। इसी तरह जो साकत या मनमुख पुरुष हैं, जिनका मन हर वक़्त खोटे ख़यालों की तरफ़ लगा रहता है, वे नाम की तरफ़ आ ही नहीं सकते। ऐसे पुरुषों की संगति नहीं करनी चाहिए। ऐसा न हो कि तुम्हें कोई उलटा ख़याल देकर भक्ति से गिरा दें।

सतिगुर साधसंगति है नीकी मिलि संगति रामु रवीजै॥

जो मन-बुद्धि के दायरे में रहते हैं, वे इन सन्तों को बे-इल्म (अज्ञानी) और मूर्ख कहते हैं। अब गुरु साहिब फ़रमाते हैं कि सतगुरु और साध-संगति दुनिया में बड़े भाग्य से मिलते हैं। इनके मिलने से वह राम, परमात्मा याद आता है।

यही कबीर साहिब कहते हैं:

> कबीर दरसन साध का, साहिब आवैं याद।
> लेखे में सोई घड़ी, बाकी के दिन बाद॥[9]

इसलिए सच्चे साधु से मिलना चाहिए। गुरु नानक साहिब फ़रमाते हैं:

> सतसंगति कैसी जाणीऐ॥ जिथै एको नामु वखाणीऐ॥[10]

गोस्वामी तुलसीदास जी कहते हैं:

> गुर निंदक नराइण होई। ताका मुख न देखो कोई।[11]

जहाँ गुरु या सन्तों की निन्दा हो और कोई भी करता हो, उसका मुँह न देखो। क्यों? क्योंकि गुरु की निन्दा महापाप है।

अंतरि रतन जवेहर माणक गुर किरपा ते लीजै॥

दो चीज़ें इनसान के काम आती हैं—एक गुरु, दूसरा राम यानी शब्द। करोड़ों सिद्धियाँ, करोड़ों ख़ुशियाँ इसके अन्दर हैं, लेकिन जब तक पूरा गुरु, मंज़िलों का वाक़िफ़, राह नहीं बताता और यह मेहनत करके ऊपर नहीं चढ़ता, ये चीज़ें नहीं मिलतीं। शान्ति, दौलत अन्दर है, बाहर नहीं। कस्तूरी मृग की नाभि में है, मगर ढूँढ़ता वह झाड़ियों में है।

मेरा ठाकुरु वडा वडा है सुआमी हम किउ करि मिलह मिलीजै॥

अब सवाल है कि वह अकालपुरुष सचखण्ड में है, हम इस दुनिया में हैं। सभी जगह ढूँढ़कर थक गये, मिले तो कैसे मिले? आगे आप ही जवाब देते हैं:

नानक मेलि मिलाए गुरु पूरा जन कउ पूरनु दीजै।।॥

अब फ़रमाते हैं कि गुरु पूरा हो, मुर्शिद कामिल हो, शिष्य को विरह और शौक़ हो, गुरु राह दे दे तो मिलाप हो जाये—वह बाहर से नहीं मिलेगा।

वाणी तुलसी साहिब (हाथरस वाले)

भेद पिंड और ब्रह्मांड का

॥ सोरठा ॥

स्रुति बुँद सिंध मिलाप, आप अधर चढ़ि चाखिया।
भाखा भोर भियान, भेद भान गुरु स्रुति लखा॥

॥ छन्द स्रुति सिंध ॥

सत सुरति समझि सिहार साधौ। निरखि नित नैनन रहौ॥
धुनि धधक धीर गँभीर मुरली। मरम मन मारग गहौ॥ 1 ॥
सम सील लील अपील पेलै। खेल खुलि खुलि लखि परै॥
नित नेम प्रेम पियार पिउ कर। सुरति सजि पल पल भरै॥
धरि गगन डोरि अपोर परखै। पकरि पट पिउ पिउ करै॥ 2 ॥
सर साधि सुन्न सुधारि जानौ। ध्यान धरि जब थिर थुवा॥
जहँ रूप रेख न भेष काया। मन न माया तन जुवा॥ 3 ॥
अलि अत मूल अतूल कँवला। फूल फिरि फिरि धरि धसै॥
तुलसि तार निहार सुरति। सैल सत मत मन बसै॥ 4 ॥

॥ छन्द 2 ॥

हिये नैन सैन सुचैन सुन्दरि। साजि स्रुत पिउ पै चली॥
गिर गवन गोह गुहारि मारग। चढ़त गढ़ गगना गली॥ 1 ॥
जहँ ताल तट पट पार प्रीतम। परसि पद आगे अली॥

घट घोर सोर सिहार सुनि के। सिंध सलिता जस मिली॥ 2॥
जब ठाट घाट बैराट कीन्हा। मीन जल कँवला कली॥
अली अंस सिंध सिहार अपना। खलक लखि सुपना छली॥ 3॥
अस सार पार सम्हारि सूरति। समझि जग जुगजुग जली॥
गुरु ज्ञान ध्यान प्रमान पद बिन। भटकि तुलसी भौ मिली॥ 4॥

॥ छन्द 3॥

अलि अधर धार निहारि निज कै। निकरि सिखर चढ़ावही॥
जहँ गगन गंगा सुरति जमुना। जतन धार बहावही॥ 1॥
जहँ पदम प्रेम प्रयाग सुरसरि। धुर गुरू गति गावही॥
जहँ संत आस बिलास बेनी। बिमल अजब अन्हावही॥ 2॥
कृत कुमति काग सुभाग कलि मल। कर्म धोइ बहावही॥
हिये हेरि हरष निहारि घर कौ। पार हंस कहावही॥ 3॥
मिलि तूल मूल अतूल स्वामी। धाम अबिचल बसि रहो॥
अलि आदि अंत बिचारि पद कौ। तुलसि तब पिव की भई॥ 4॥[1]

सत्संग के बचन

॥ सोरठा॥

स्रुति बुँद सिंध मिलाप, आप अधर चढ़ि चाखिया॥
भाखा भोर भियान, भेद भान गुरु स्रुति लखा॥

तुलसी साहिब कहते हैं कि मेरी रूह रूपी बूँद उस मालिक रूपी समुद्र में जाकर समा गयी यानी मेरा मालिक से मिलाप हो गया। किसकी कृपा से? कामिल मुर्शिद की, पूरे सतगुरु की कृपा से। कहते हैं, मैं जो कुछ अन्दर देखता हूँ, वही कहता हूँ यानी मैं बुद्धि, विद्या के बल से सोचा हुआ और पोथियों-किताबों से पढ़ा हुआ नहीं कहता, बल्कि जो अपने अन्दर अनुभव किया है, वही कहता हूँ।

॥ छन्द स्रुति सिंध॥

सत सुरति समझि सिहार साधौ। निरखि नित नैनन रहौ॥
धुनि धधक धीर गँभीर मुरली। मरम मन मारग गहौ॥

अब बताते हैं कि हम किस राह से गये। सबसे पहले अपनी तवज्जुह को आँखों के पीछे खड़ा किया। यह तो मामूली आदमी भी जानते हैं। जब सारे शरीर से रूह सिमटकर आँखों के पीछे आ गयी तो वजूद यानी शरीर रूपी शहर ख़ाली हो गया। फिर शरीर इस तरह नज़र आया जिस तरह पराया मुर्दा है, मेरा नहीं। गुरु अमर दास जी कहते हैं:

नउ दर ठाके धावतु रहाए॥ दसवै निज घरि वासा पाए॥
ओथै अनहद सबद वजहि दिनु राती गुरमती सबदु सुणावणिआ॥[2]

क्या हिन्दू, क्या मुसलमान, क्या कोई और मज़हब, जो भी फ़क़ीर अन्दर गया, इसी राह से गया। सबकी राह एक है। इस वक़्त रूह छः चक्रों को छोड़कर, शरीर को ख़ाली करके, सातवें आसमान पर पहुँच गयी, वह शब्द-धुन जिसको मैंने मुरली कहकर बयान किया है, उसकी लज़्ज़त पाकर मन को छोड़ दिया, आत्मा आज़ाद हो गयी। यह दवा है, जो कामिल फ़क़ीरों ने कही है।

सम सील लील अपील पेलै। खेल खुलि खुल लखि परै॥
नित नेम प्रेम पियार पिउ कर। सुरति सजि पल पल भरै॥

आँखों के ऊपर चढ़ना मुश्किल नहीं, यह राह क़ुदरती है। आज का नहीं, जब से दुनिया बनी, तब से चला आ रहा है। इसके लिए केवल पाक ज़िन्दगी और अभ्यास की ज़रूरत है। अगर हृदय निर्मल हो तो रूह (आत्मा) फ़ौरन अन्दर चली जाये। रूह के अन्दर जाने के लिए नेक चरित्र का होना बहुत ज़रूरी है। रूह उस प्रीतम की आशिक़ है, इसलिए सोते-जागते, चलते-फिरते, उठते-बैठते उस मालिक का ध्यान

होना चाहिए ... 'दस्त बा-कार, दिल बा-यार' मतलब कि हाथ काम में और दिल यार में।

धरि गगन डोरि अपोर परखै। पकरि पट पिउ पिउ करै॥

जो धार सचखण्ड से आ रही है, वह बाँगे-आसमानी है, कलामे-इलाही है और रूह के लिए वह सड़क है, डोर है। उसे पकड़कर उसके पीछे-पीछे जाना है। उसमें कशिश है। वह रूह को खींचकर कहाँ ले जायेगी? जहाँ से वह आ रही है यानी सचखण्ड में। वह मालिक हरएक इनसान के अन्दर है, चाहे हिन्दू होकर अन्दर जाओ, चाहे मुसलमान होकर जाओ। वह किसी क़ौम की विरासत नहीं। वह हर वक़्त जागता है। हम सोते हैं, वह नहीं सोता। जब दरवाज़ा खटखटाओगे, वह परदा खोल देगा।

सर साधि सुन्न सुधारि जानौ। ध्यान धरि जब थिर थुवा॥
जहँ रूप रेख न भेष काया। मन न माया तन जुवा॥

अब रूह ब्रह्म के देश को छोड़कर पारब्रह्म या सुन्न स्थान पर आ गयी। वहाँ मानसरोवर या अमृतसर है, जिसे ऋषियों ने गंगा, जमुना, सरस्वती का संगम यानी प्रयाग और त्रिवेणी कहा है। बाहर की गंगा, जमुना, सरस्वती जहाँ मिलती हैं, यह असली त्रिवेणी नहीं बल्कि गंगा, जमुना, सरस्वती से सन्तों का मतलब सत, रज, तम, तीनों गुणों से है। जहाँ तीनों गुणों की धाराएँ एक होती हैं, वह त्रिवेणी है। इसमें स्नान करने से पाँच तत्त्व, पच्चीस प्रकृतियाँ, तीन गुण, स्थूल, सूक्ष्म, कारण—तीनों शरीर, मन, माया, मतलब कि रूह के ऊपर जितने ग़िलाफ़ थे, सारे उतर गये। सब गुनाह नाश हो गये। बाहर के पानी में ताकत नहीं कि पापों की मैल दूर करे। वहाँ पहुँचकर न रंग, न देह, न मन और न माया। दुनिया में ऐसी कोई चीज़ नहीं, जिसकी मिसाल देकर समझायें। यह दुनिया 'मटीरियल', जड़ है, वह 'मटीरियल' नहीं। वहाँ रूह का ख़याल एकटक लगता है। इससे नीचे मन-माया का राज है। कभी दस दिन ख़याल अन्दर लग गया,

कभी न लगा। यहाँ रूह की धार पानी की तरह पतली और टूटनेवाली है, मगर वहाँ तेल की तरह एकतार है। पारब्रह्म में न मन है, न माया, न बूढ़ा है, न जवान। इसलिए वहाँ न माया धोखा दे सकती है, न मन।

अलि अत मूल अतूल कँवला। फूल फिरि फिरि धरि धसै॥
तुलसि तार निहार सुरति। सैल सत मत मन बसै॥

उस तालाब में एक कमल है, जिसकी कैफ़ीयत (हालत) ज़बान बयान नहीं कर सकती। जब गुरु राम दास जी ने अमृतसर का तालाब बनवाया तो उस कमल की नक़ल भी बना दी, मगर इसमें वह 'पावर' शक्ति नहीं आ सकती। उस कमल की कैफ़ीयत ही अजीब है। उसे देखकर ज्ञान होता है कि मैं आत्मा हूँ और उस मालिक के समुद्र की बूँद हूँ। वहाँ पहुँचकर इसे अपनी समझ आती है; नहीं तो यह ब्रह्म और पारब्रह्म में ही चक्कर लगाती रहती है। गुरु नानक साहिब ने क़ाज़ी रुकनुद्दीन को मक्का में उपदेश दिया कि ऐ रुकनुद्दीन! यह शरीर अमृतसर या आबे-हयात का हौज़ है, जिसमें एक अचल कमल है। वहाँ पहुँचकर रूह को ज्ञान होता है कि मुझे सचखण्ड जाना है। अब रूह सचखण्ड जाने की आशिक़ हो गयी और उसके अन्दर सचखण्ड जाने की ज़बरदस्त ख़्वाहिश पैदा हो गयी।

॥ छन्द 2 ॥

हिये नैन सैन सुचैन सुन्दरि। साजि स्रुत पिउ पै चली॥
गिर गवन गोह गुहारि मारग। चढ़त गढ़ गगना गली॥

जिस तरह स्त्री सुन्दर-सुन्दर कपड़े पहनकर, हार-शृंगार करके, इत्र लगाकर प्यार के साथ अपने पति से मिलने जाती है, इसी तरह मेरी रूह इश्क़-प्रेम, विरह-वैराग्य, विवेक के साथ अपने पति अकालपुरुष से मिलने के लिए रूहानी मंज़िलों का सफ़र करती है। रास्ते में क्या-क्या देखा? बेशुमार पहाड़, अनगिनत दरिया, ब्रह्म, पारब्रह्म! रूह सबको 'क्रॉस'

(पार) करती हुई ऊपर जाती है। इसी मज़मून (विषय) पर मौलाना रूम साहिब कहते हैं:

> चूँ शवी महरम कुशाइम बा तू लब,
> ता बिबीनी आफ़ताबे-नीम शब।[3]

अगर तू आधी रात को सूरज देखता है तो मेरे साथ बात कर। अगर नहीं देखता तो मुझे ज़रूरत नहीं कि तेरे साथ बात करूँ। सूरज किसके अन्दर चढ़ता है? आप फ़रमाते हैं :

> जुज़ रवाने पाक ऊ रा शरक़ नै,
> दर तलूअश रोज़ो-शब रा फ़रक़ नै।[4]

यह हालत पाक (पवित्र) रूहों में प्रकट होती है। उस देश में न दिन है न रात; केवल नूर है :

> अंदर आँ बहिरो-बीयबानो-जिबाल,
> मुनकतअ मी गरदद ओहामो-ख़याल।[5]

रास्ते में बेशुमार पहाड़, जंगल, दरिया और समुद्र आते हैं, जिन्हें रूह समझ नहीं सकती और वहम (भ्रम) से ख़याल वहाँ आजिज़ (दुःखी) है :

> ईं बियाबाँ दर बियाबाँहाय ऊ,
> हमचू अन्दर बहरे-पुर यक तारे-मू।[6]

यह सारी दुनिया उस (त्रिकुटी के) मैदान में ऐसी है, जैसे समुद्र में एक बाल। यह सारी सृष्टि उस रचना के आगे कुछ हैसियत नहीं रखती। अब सवाल पैदा हुआ कि किस राह से जायें? यह आगे कहते हैं:

> नरदबाँहा ईस्त पिनहां दर जहाँ,
> पाया पाया ता अनाने-आसमाँ।[7]

हरएक इनसान के अन्दर शब्द की सीढ़ी लगी हुई है और हरएक मंज़िल पर जाने का रास्ता मौजूद है। जितने फ़क़ीर अन्दर गये, एक ही ख़याल ज़ाहिर कर गये।

यही स्वामी जी फ़रमाते हैं :

शब्द शब्द पौड़ी पै चढ़ कर। पहुँचो सच्चखंड सतनाम॥[8]

अफ़सोस यह है कि हम उनके ग्रन्थों, किताबों या वाणी को प्यार से नहीं पढ़ते। हरएक आदमी अपनी-अपनी मज़हबी किताबों में उलझकर क़ैद हुआ बैठा है। जो कुछ है, अन्दर है, बाहर नहीं। जब तक सारे महात्माओं के ग्रन्थ प्यार से न पढ़े जायें, यह कैफ़ीयत नहीं आती।

जहँ ताल तट पट पार प्रीतम। परसि पद आगे अली॥
घट घोर सोर सिहार सुनि के। सिंध सलिता जस मिली॥

कहते हैं, इस तरह शौक़ और प्रेम के साथ मेरी रूह ब्रह्म और पारब्रह्म से होकर तालाब की सैर करके सचखण्ड में पहुँच गयी, मालिक में लवलीन हो गयी। 'सलिता' कहते हैं नदी को। जिस तरह नदी जंगलों, पहाड़ों, मैदानों को चीरती हुई समुद्र की गोद में जाकर आराम करती है, इसी तरह मेरी रूह भी उस मालिक की गोद में जाकर आराम करती है।

जब ठाट घाट बैराट कीन्हा। मीन जल कँवला कली॥
अली अंस सिंध सिहार अपना। खलक लखि सुपना छली॥

फ़रमाते हैं, जब तक मेरी रूह त्रिलोकी में थी यानी ब्रह्म, पारब्रह्म तक गयी थी, मैं समझता था कि विराट ही सबकुछ है, जो कुछ है सो यही है; इससे परे और कुछ नहीं। मैं इस पर इस तरह आशिक़ था, जिस तरह भँवरा फूल पर और मछली पानी पर। अब जब रूह ने सचखण्ड का समुद्र देखा तो पता लगा कि यह सारा संसार सपना है यानी इसे नाश हो

जाना है, मगर यह समझ धुर-धाम पहुँचकर आयी। गुरु नानक साहिब, तुलसी साहिब, शम्स तब्रेज़ और कई महात्मा यही कहते चले आये हैं।

अस सार पार सम्हारि सूरति। समझि जग जुगजुग जली॥
गुरु ज्ञान ध्यान प्रमान पद बिन। भटकि तुलसी भौ मिली॥

जब मैं उस कुल-मालिक के देश में पहुँच गया, तब मुझे पता लगा कि यह चोला (शरीर) काम-क्रोध के हाथों जलता चला आया है और जलता चला जाता है। जब तक हम इस देश में हैं, कोई शान्ति नहीं।

॥ छन्द 3 ॥

अलि अधर धार निहारि निज कै। निकरि सिखर चढ़ावही॥
जहँ गगन गंगा सुरति जमुना। जतन धार बहावही॥

'अलि' कहते हैं सखी को यानी रूह को। अब कहते हैं कि ऐ प्यारी रूह! यहाँ से ऊपर चढ़कर देख तो सही, तेरे अन्दर ही गंगा है, अन्दर ही जमुना है, अन्दर ही सरस्वती है यानी तीनों धाराएँ तेरे अन्दर हैं। जहाँ इनका संगम होता है और जिसे प्रयाग कहते हैं, वह भी तेरे अन्दर है। वह पारब्रह्म का देश है, वहाँ अमृतसर है।

जहँ पदम प्रेम प्रयाग सुरसरि। धुर गुरू गति गावही॥
जहँ संत आस बिलास बेनी। बिमल अजब अन्हावही॥

यह वह तीर्थ है, जहाँ नहाने से जन्मों-जन्मों के पाप दूर हो जाते हैं। उस त्रिवेणी के आसपास उन सन्तों की मण्डलियाँ हैं, जो कमाई करके ऊपर गये हैं।

कृत कुमति काग सुभाग कलि मल। कर्म धोइ बहावही।

अब यहाँ हमारी कौवे जैसी गति है। कौवे की ख़ुराक क्या है? विष्टा। बेटे-बेटियों की मुहब्बत और अन्य विषय-विकार, यह विष्टा है। कहते

हैं, जब उस तीर्थ में जाकर नहाओगे, तुम्हारी हंस-गति हो जायेगी। हंस की ख़ुराक क्या है? मोती। फिर जितने अच्छे-बुरे कर्म हैं, सारे नाश हो जायेंगे; जितने विषय-विकार हैं, सभी दूर हो जायेंगे। फिर इसे न कोई कर्म रोकता है और न कोई और ताकत। सो, कहते हैं कि यह सारा सामान परमात्मा ने हरएक आदमी के अन्दर रखा हुआ है, आगे निकालना, न निकालना इसका अपना काम है।

हिये हेरि हरष निहारि घर कौ। पार हंस कहावही॥

अब उसी मज़मून को दोहराते हुए कहते हैं कि यहाँ कौवे की गति है और वहाँ पहुँचकर इसकी हंस की गति हो जायेगी।

मिलि तूल मूल अतूल स्वामी। धाम अबिचल बसि रहो॥

अब रूह सतलोक, सतनाम के देश में पहुँच गयी। ओम् तक सृष्टि प्रलय में ढह जाती है और सोहं तक महाप्रलय में गिर जाती है। मगर वह देश लाफ़ानी (अविनाशी) है। वहाँ न प्रलय जाती है, न महाप्रलय।

अलि आदि अंत बिचारि पद कौ। तुलसि तब पिव की भई॥

कहते हैं, रूह वहीं चली गयी, जहाँ से आयी थी। वहाँ जाकर रूह सुहागिन होती है यानी वहाँ जाकर रूह और मालिक एक हो जाते हैं। यह सन्तों का मत है। बस! इतना ही काफ़ी है।

रागु सूही महला 3 घरु 10

1 ओ सतिगुर प्रसादि

दुनीआ न सालाहि जो मरि वंञसी ॥
लोका न सालाहि जो मरि खाकु थीई ॥ 1 ॥
वाहु मेरे साहिबा वाहु ॥
गुरमुखि सदा सलाहीऐ सचा वेपरवाहु ॥ 1 ॥ रहाउ ॥
दुनीआ केरी दोसती मनमुख दझि मरंनि ॥
जम पुरि बधे मारीअहि वेला न लाहंनि ॥ 2 ॥
गुरमुखि जनमु सकारथा सचै सबदि लगंनि ॥
आतम रामु प्रगासिआ सहजे सुखि रहंनि ॥ 3 ॥
गुर का सबदु विसारिआ दूजै भाइ रचंनि ॥
तिसना भुख न उतरै अनदिनु जलत फिरंनि ॥ 4 ॥
दुसटा नालि दोसती नालि संता वैरु करंनि ॥
आपि डुबे कुटंब सिउ सगले कुल डोबंनि ॥ 5 ॥
निंदा भली किसै की नाही मनमुख मुगध करंनि ॥
मुह काले तिन निंदका नरके घोरि पवंनि ॥ 6 ॥
ए मन जैसा सेवहि तैसा होवहि तेहे करम कमाइ ॥
आपि बीजि आपे ही खावणा कहणा किछू न जाइ ॥ 7 ॥
महा पुरखा का बोलणा होवै कितै परथाइ ॥
ओइ अंम्रित भरे भरपूर हहि ओना तिलु न तमाइ ॥ 8 ॥
गुणकारी गुण संघरै अवरा उपदेसेनि ॥
से वडभागी जि ओना मिलि रहे अनदिनु नामु लएनि ॥ 9 ॥

देसी रिजकु संबाहि जिनि उपाई मेदनी ॥
एको है दातारु सचा आपि धणी ॥ 10 ॥
सो सचु तैरै नालि है गुरमुखि नदरि निहालि ॥
आपे बखसे मेलि लए सो प्रभु सदा समालि ॥ 11 ॥
मनु मैला सचु निरमला किउ करि मिलिआ जाइ ॥
प्रभु मेले ता मिलि रहै हउमै सबदि जलाइ ॥ 12 ॥
सो सहु सचा वीसरै ध्रिगु जीवणु संसारि ॥
नदरि करे ना वीसरै गुरमती वीचारि ॥ 13 ॥
सतिगुरु मेले ता मिलि रहा साचु रखा उर धारि ॥
मिलिआ होइ न वीछुड़ै गुर कै हेति पिआरि ॥ 14 ॥
पिरु सालाही आपणा गुर कै सबदि वीचारि ॥
मिलि प्रीतम सुखु पाइआ सोभावंती नारि ॥ 15 ॥
मनमुख मनु न भिजई अति मैले चिति कठोर ॥
सपै दुधु पीआईऐ अंदरि विसु निकोर ॥ 16 ॥
आपि करे किसु आखीऐ आपे बखसणहारु ॥
गुर सबदी मैलु उतरै ता सचु बणिआ सीगारु ॥ 17 ॥
सचा साहु सचे वणजारे ओथै कूड़े ना टिकंनि ॥
ओना सचु न भावई दुख ही माहि पचंनि ॥ 18 ॥
हउमै मैला जगु फिरै मरि जंमै वारो वार ॥
पइऐ किरति कमावणा कोइ न मेटणहार ॥ 19 ॥
संता संगति मिलि रहै ता सचि लगै पिआरु ॥
सचु सलाही सचु मनि दरि सचै सचिआरु ॥ 20 ॥
गुर पूरे पूरी मति है अहिनिसि नामु धिआइ ॥
हउमै मेरा वड रोगु है विचहु ठाकि रहाइ ॥ 21 ॥
गुरु सालाही आपणा निवि निवि लागा पाइ ॥
तनु मनु सउपी आगै धरी विचहु आपु गवाइ ॥ 22 ॥
खिंचोताणि विगुचीऐ एकसु सिउ लिव लाइ ॥
हउमै मेरा छडि तू ता सचि रहै समाइ ॥ 23 ॥

सतिगुर नो मिले सि भाइरा सचै सबदि लगंनि॥
सचि मिले से न विछुड़हि दरि सचै दिसंनि॥ 24 ॥
से भाई से सजणा जो सचा सेवंनि॥
अवगण विकणि पल्हरनि गुण की साझ करंन्हि॥ 25 ॥
गुण की साझ सुखु ऊपजै सची भगति करेनि॥
सचु वणंजहि गुर सबद सिउ लाहा नामु लएनि॥ 26 ॥
सुइना रुपा पाप करि करि संचीऐ चलै न चलदिआ नालि॥
विणु नावै नालि न चलसी सभ मुठी जमकालि॥ 27 ॥
मन का तोसा हरि नामु है हिरदै रखहु सम्हालि॥
एहु खरचु अखुटु है गुरमुखि निबहै नालि॥ 28 ॥
ए मन मूलहु भुलिआ जासहि पति गवाइ॥
इहु जगतु मोहि दूजै विआपिआ गुरमती सचु धिआइ॥ 29 ॥
हरि की कीमति ना पवै हरि जसु लिखणु न जाइ॥
गुर कै सबदि मनु तनु रपै हरि सिउ रहै समाइ॥ 30 ॥
सो सहु मेरा रंगुला रंगे सहजि सुभाइ॥
कामणि रंगु ता चड़ै जा पिर कै अंकि समाइ॥ 31 ॥
चिरी विछुंने भी मिलनि जो सतिगुरु सेवंनि॥
अंतरि नव निधि नामु है खानि खरचनि
न निखुटई हरि गुण सहजि रवंनि॥ 32 ॥
ना ओइ जनमहि ना मरहि ना ओइ दुख सहंनि॥
गुरि राखे से उबरे हरि सिउ केल करंनि॥ 33 ॥
सजण मिले न विछुड़हि जि अनदिनु मिले रहंनि॥
इसु जग महि विरले जाणीअहि नानक सचु लहंनि॥ 34 ॥[1]

सत्संग के बचन

दुनीआ न सालाहि जो मरि वंञसी॥
लोका न सालाहि जो मरि खाकु थीई॥

तीसरी पातशाही, श्री गुरु अमर दास जी महाराज की बाणी है और प्रेम से सुनने और विचार करने योग्य है। आपने गुरु की सेवा में बारह साल पानी ढोया, चाहे बरसात हो, आँधी हो, तूफ़ान हो, गर्मी हो या सर्दी। बताओ, कोई आसान काम है! जब भी कोई पूछता है, मैं कहता हूँ कि सतगुरु की असली सेवा अन्दर परदा खोलकर ऊपर चढ़ना है, मगर यह किनके लिए है? जो गुरुमुख हैं, अन्दर जाते हैं। जो अन्दर नहीं जाते उनके लिए सतगुरु की सेवा भजन-सिमरन है, लेकिन जिन्हें अभी नाम नहीं मिला, अन्दर जाने की राह नहीं मिली, उनके लिये क्या है? साधु-सन्तों की बाहर की सेवा। कइयों ने आटा पीसकर खिलाया है या कोई और सेवा की है। मैं अपनी कहता हूँ। मैंने ख़ुद महाराज जी (बाबा जैमल सिंह जी) को आटा पीसकर खिलाया है। ऐसी सेवा से हाथ-पैर निर्मल होते हैं, अन्तःकरण पवित्र होता है। कई कहते हैं कि बाहर की सेवा क्या करनी है, अन्दर की करनी चाहिए। बाहर की कौन करेगा? जो कमाई करते हैं, अन्दर जाते हैं, असली सेवा वे करते हैं। जो अन्दर नहीं गये, उन्हें बाहर की सेवा करनी चाहिए। सेवा सारी सेवा ही है, मगर सबसे उत्तम सेवा सुरत को शब्द के साथ जोड़ना है। ज़िक्र है कि एक सेवादार गुरुद्वारे में बर्तन माँजने की सेवा किया करता था। जिस ज़माने की बात है, उस वक़्त सिक्ख मुग़लों को तंग करते थे। मुग़लों ने सिक्खों से कहा कि तुम छेड़खानी न करो और हमसे यह इलाक़ा ले लो। जब रातों-रात बादशाह का आदमी पट्टा लेकर आया तो सिक्खों ने कहा कि हमें जागीरों का क्या करना है? यह सोचकर कहने लगे कि ले, ओ कपूरिया, तू पट्टा ले ले यानी सेवादार इलाका ले गया। उसे उसकी सेवा का फल मिल गया। फिर गुरु अमर दास साहिब को सेवा का फल क्यों नहीं मिलता, जिन्होंने बारह साल पानी ढोया।

महाराज जी कहते हैं कि भाई, दुनिया के सामान के साथ प्यार न कर, इसे यहीं रह जाना है। लोगों के साथ प्यार न कर, इन्हें मर जाना है। करोड़ों आये और करोड़ों चले गये। मिट्टी से पैदा हुए और मरकर फिर क़ब्र में जा पड़ना है। अब सवाल पैदा हुआ कि अगर दुनिया के सामान के साथ प्यार नहीं करें, दुनिया के लोगों से प्यार नहीं करें, फिर करें किसके साथ? इसका जवाब गुरु साहिब अगली तुक में देते हैं:

वाहु मेरे साहिबा वाहु॥ गुरमुखि सदा सलाहीऐ सचा वेपरवाहु॥

कि वह सच्चा रब, सच्चा परमेश्वर, वाहिद-हू ला-शरीक, ख़ुद ख़ुदा तुम्हारे अन्दर है। अगर सच्चा प्यार करना है तो उसके साथ करो। अब परमात्मा कब मिलता है? जब हम गुरुमुख बनें। गुरुमुख कब बनते हैं? जब स्थूल, सूक्ष्म, कारण, तीनों परदे पार कर जायें। हमारा रूह रूपी तोता इन तीनों पिंजरों में क़ैद है। जब यहाँ (दोनों आँखों) तक आ गया, स्थूल परदा उतर गया। रूह अमरे-रब्बी है, आत्मा परमात्मा की अंश है, उस सतनाम समुद्र की बूँद है। यह कोई छोटी चीज़ नहीं, लेकिन मन-इन्द्रियों से घिरकर इसकी मिट्टी पलीत हो रही है।

दुनीआ केरी दोसती मनमुख दझि मरंनि॥
जम पुरि बधे मारीअहि वेला न लाहंनि॥

गुरुमुखों की तारीफ़ करके मनमुखों की तरफ़ आते हैं। मनमुख वे हैं जिन्हें नाम नहीं मिला और वे अन्दर नहीं गये। उनकी रूह मन के मातहत (अधीन) है और वे मन के कहे लगकर, नेकी-बदी, पुण्य-पाप करते हैं। जब मौत आती है, तब यमदूत आते हैं और धर्मराय के दरबार में पकड़कर ले जाते हैं। फिर वह कहता है कि भाई, जो कुछ किया है, उसका फल ले ले। वहाँ जाकर होश आता है कि हाय-हाय, मुझे मनुष्य-जन्म मिला, मैंने कोई नेक काम नहीं किया। फिर रोता और पछताता है, मगर अब रोने से क्या फ़ायदा! यमदूत नरकों में डालते हैं, आग में जलाते हैं। नरकों का हाल पढ़कर देखो कि वहाँ क्या-क्या होता है!

गुरमुखि जनमु सकारथा सचै सबदि लगंनि॥
आतम रामु प्रगासिआ सहजे सुखि रहंनि॥

अब मनमुखों का हाल कहकर फिर गुरुमुखों की तरफ़ आते हैं और कहते हैं कि गुरुमुखों का जन्म सार्थक है। अब सवाल पैदा हुआ कि गुरुमुखों के अन्दर क्या ख़ासियत है, क्या बड़ाई है? गुरु साहिब जवाब देते हैं कि उनके अन्दर गुरुबाणी प्रत्यक्ष है। वह बाणी है तो सबके अन्दर, मगर गुरुमुखों के अन्दर प्रकट है। उन्होंने कमाई करके परदा खोल लिया, अन्दर नाम की लज़्ज़त आ गयी, आत्मा परमात्मा में मिल गयी, रूह का रब के साथ मिलाप हो गया, वे सहज-समाधि, सचखण्ड, मक़ामे-हक़्क़ में पहुँच गये।

गुर का सबदु विसारिआ दूजै भाइ रचंनि॥
तिसना भुख न उतरै अनदिनु जलत फिरंनि॥

अब कहते हैं कि जिन्हें शब्द का भेद नहीं मिला या अगर मिला भी मगर उन्होंने कमाई नहीं की, वे बार-बार दुनिया में आते हैं और रोते-चिल्लाते हैं। उनकी भूख कभी दूर नहीं होती। वे दुनिया में ही आये और दुनिया में ही मर गये। मोरी के कीड़े मोरी में ही पैदा हुए और मोरी में ही मर गये। वे तपते आये और तपते चले गये, न परमात्मा की बन्दगी की, न अन्दर परदा खोला। अब कहते हैं कि अगर कहीं सुख है तो आदमी के अन्दर है। बाहर कहीं सुख है नहीं। सो, जब तक यह अन्दर नहीं जाता, कभी शान्ति आयी, कभी चली गयी, इसे सदा का सुख नहीं मिलता।

दुसटा नालि दोसती नालि संता वैरु करंनि॥
आपि डुबे कुटंब सिउ सगले कुल डोबंनि॥

कहते हैं, जो बदमाशों के साथ दोस्ती करते हैं और नेक पुरुषों के साथ दुश्मनी करते हैं वे आप भी नाश हो जाते हैं और अपने कुल का भी नाश कर लेते हैं। कृष्ण भगवान् यादव कुल में हुए हैं। उनके कुल के

कुछ लड़कों को शरारत सूझी, एक लड़के के पेट पर बाटी (टिक्कड़) बाँधकर, ज़नाने कपड़े पहनाकर दुर्वासा ऋषि के पास चले गये और मज़ाक़ के तौर पर पूछा कि महात्मा जी! इसके पेट में से क्या होगा? उन्होंने कहा कि यहाँ से वह पैदा होगा जो तुम्हारे कुल का नाश करेगा। लड़के सोचने लगे कि यह तो श्राप हो गया। अब क्या करें? उन्होंने क्या किया, दरिया पर जाकर सारी बाटी को घिसा-घिसा कर, ज़र्रा-ज़र्रा बना दिया और कहने लगे कि अब हमारा क्या बिगड़ सकता है? उस ज़र्रे-ज़र्रे से वहाँ घास पैदा हुई, जो कि तलवार की तरह तेज़ थी। वे सभी उससे आपस में लड़-लड़ कर मर गये। हालाँकि कृष्ण भगवान् का कुल था मगर बुरी संगति और साधु के साथ मज़ाक़ करने का नतीजा बुरा होता है।

निंदा भली किसै की नाही मनमुख मुगध करंनि॥
मुह काले तिन निंदका नरके घोरि पवंनि॥

गुरु अमर दास जी कहते हैं कि भले आदमी की निन्दा करना तो पाप है ही, बुरे से बुरे आदमी की भी निन्दा न करो। क्या वजह है? जो मैल से भरा हुआ है, अगर हम उसके साथ लगेंगे तो हम भी मैल से भर जायेंगे। शेख़ सादी कहता है कि अगर मैं निन्दा करूँ तो अपनी माँ की करूँ, ताकि मेरी नेकियाँ मेरे घर में तो रहें। हम जिसकी निन्दा करते हैं, बिना पैसे उसका मैल धोते हैं। निन्दा सबसे बड़ा पाप है। अगर हम कोई और पाप करते हैं तो उसमें कोई न कोई लज़्ज़त है, लेकिन निन्दा में क्या लज़्ज़त है? अगर कोई बे-लज़्ज़त गुनाह है तो निन्दा है। इसी लिए गुरु साहिब कहते हैं कि किसी की निन्दा न करो। परमात्मा की दरगाह में निन्दकों के मुँह काले होते हैं और वे नरकों में जाते हैं, लेकिन आजकल मज़हबों के पास बड़ा तोपख़ाना निन्दा है। एक मज़हब दूसरे मज़हब की निन्दा करता है। इसके विपरीत, सन्तों के सत्संग में निन्दा नहीं है, बल्कि भक्ति का, इबादत का, मुक्ति का उपदेश है। ग्रन्थ साहिब पढ़कर देखो, वहाँ खोटे को खोटा कहा है, मगर निन्दा नहीं की।

ए मन जैसा सेवहि तैसा होवहि तेहे करम कमाइ॥
आपि बीजि आपे ही खावणा कहणा किछू न जाइ॥

सोचो क्या कहते हैं? कि जैसा बोओगे, जैसे-जैसे कर्म करोगे, वैसा ही फल पाओगे। अच्छे कर्म करोगे, अच्छा फल मिलेगा, बुरे कर्म करोगे, बुरा फल मिलेगा।

शेख़ फ़रीद कहते हैं:

फरीदा लोड़ै दाख बिजउरीआं किकरि बीजै जटु॥
हंढै उंन कताइदा पैधा लोड़ै पटु॥[2]

कि यह बबूल बोता है और अंगूर माँगता है। बताओ! कभी हो सकता है? बबूल से तो काँटे ही चुभेंगे। इसी तरह यह कातता है ऊन और माँगता है रेशम! वह तो नहीं मिलेगा। हमें तो अपनी करतूत का फल मिलेगा। 'आप घाती सो महा पापी,' जो पाप करता है वह अपना गला अपनी छुरी से ख़ुद काटता है। जो ख़ुद पर रहम नहीं करता, उस पर परमात्मा भी रहम नहीं करता।

महा पुरखा का बोलणा होवै कितै परथाइ॥
ओइ अंम्रित भरे भरपूर हहि ओना तिलु न तमाइ॥

फिर कहते हैं कि अच्छे पुरुषों, नेक बन्दों, कामिल फ़क़ीरों, सन्त-महात्माओं की संगति करो। वे नेक कमाई वाले होते हैं, उनके बोल सोचे-समझे होते हैं, उनके वचन अमृत से भरे होते हैं और सोलह आने ठीक होते हैं, क्योंकि वे अन्दर जाते हैं। ऐसे महापुरुषों को तिल जितना या थोड़ा-सा भी लालच नहीं होता। वे अपने लोभ-लालच के लिए नहीं आते, बल्कि दुनिया की भलाई के लिए, दुनिया की सेवा के लिए आते हैं।

गुणकारी गुण संघरै अवरा उपदेसेनि॥
से वडभागी जि ओना मिलि रहे अनदिनु नामु लएनि॥

वे महात्मा गुणों का समुद्र होते हैं। वे ख़ुद नेकी करते हैं और दुनिया को नेकी सिखाते हैं। अब कहते हैं कि वे धन्य हैं जो लोगों को नेकी सिखाते हैं। आप हिन्दू होकर अन्दर जाओ, मुसलमान होकर अन्दर जाओ, मतलब कि किसी क़ौम के होकर अन्दर जाओ, जो गुरु साहिब का उपदेश है, वह सबके लिए है। अब मैं आपको फ़क़ीरों की महानता बताता हूँ। ज़िक्र है, जब पाण्डवों ने यज्ञ किया तो कृष्ण भगवान् ने कहा कि तुम्हारा यज्ञ तब सम्पूर्ण होगा जब आकाश में घण्टा बजेगा। जब यज्ञ किया, सभी ऋषि-मुनि और अन्य लोग खाकर चले गये, मगर घण्टा नहीं बजा। हुक्म हुआ कि जो भी महात्मा रह गये हैं, उन्हें ढूँढ़कर लाओ। महात्मा लाये गये और उन्हें भी खिलाया, मगर घण्टा नहीं बजा। फिर उन्होंने कृष्ण भगवान् से कहा कि आप खायें। उन्होंने भी खाया, लेकिन घण्टा फिर भी नहीं बजा। फिर पाण्डवों ने कृष्ण भगवान् के आगे अर्ज़ की कि जो-जो साधु हमें मिला, हमने उन्हें लाकर खिला दिया, हमें तो और कोई नहीं मिलता। अब आप ही अपनी अन्तर्दृष्टि से देखो। जब कृष्ण भगवान् ने योग-दृष्टि से देखा तो एक साधू नज़र आया जो कबीर साहिब द्वारा दीक्षित या चिताया हुआ साधु सुपच था। कबीर साहिब चारों युगों में आये हैं—सतयुग में उनका नाम सतसुकृत था, त्रेता में मुनीन्द्र, द्वापर में करुणामय और कलियुग में कबीर साहिब था। जब किसान फ़सल काट लेते थे तो जो दाने वहाँ रह जाते थे, सुपच उनको चुन-चुन कर खाता था। कृष्ण भगवान् ने कहा, "जब तक वह नहीं खायेगा, तुम्हारा यज्ञ सम्पूर्ण नहीं होगा, उसे लाओ।" अब बारी-बारी से सभी पाण्डव उसके पास गये और कहा कि हमारे यहाँ यज्ञ है, आप चलो। उसने सभी से यही कहा कि मेरा प्रण है, जो मुझे सौ अश्वमेध यज्ञ का फल दे, मैं उसके घर रोटी खाऊँगा। पाण्डवों ने कहा कि हमारा एक यज्ञ सम्पूर्ण नहीं होता, हम तुम्हें सौ यज्ञ का फल कहाँ से दें। सुपच ने कहा, "फिर जाओ।" बारी-बारी से सभी वापस आ गये

और निराश होकर बैठ गये कि हमारा यज्ञ रह गया, जिसे शुरू किये बारह साल हो गये और इसी सिलसिले में वीर अभिमन्यु और बृहदबल भी मारे गये। इतने में द्रोपदी आ गयी। उसने पूछा कि आप सब निराश क्यों बैठे हो? तब पाण्डवों ने कहा कि जब तक सुपच नहीं आता, हमारा यज्ञ पूरा नहीं हो सकता और वह सौ अश्वमेध यज्ञ का फल माँगता है। अब वह कामिल फ़क़ीर है, हम उसके साथ ज़बरदस्ती नहीं कर सकते। द्रोपदी कहने लगी कि मैं जाकर ले आती हूँ। पाण्डव कहने लगे कि तू औरत ज़ात उसे कैसे लायेगी? द्रोपदी ने कहा कि मैं उसे ले आऊँगी। उन्होंने उसे आज्ञा दे दी। उसने क्या किया कि नंगे पाँव पानी लायी, रसोई साफ़ की और रोटी बनायी। फिर नंगे पाँव महात्मा के पास गयी और कहा कि महाराज, हमारे यहाँ यज्ञ है, आप कृपा करके चलें। सुपच ने कहा कि तुम्हें पाण्डवों ने बताया होगा कि मेरा क्या प्रण है? द्रोपदी ने कहा कि हाँ! आप सौ अश्वमेध यज्ञ का फल माँगते हो, मगर मैंने वेद-शास्त्रों में पढ़ा है और आप जैसे महात्माओं से सुना है कि अगर कमाई वाले महात्मा की तरफ़ जायें तो एक-एक क़दम पर अश्वमेध यज्ञ का फल मिलता है। क्या यह ठीक है? सुपच ने कहा, ''हाँ, ठीक है।'' द्रोपदी ने कहा कि फिर मैं जितने क़दम आयी हूँ, उनमें से अपने सौ पूरे कर लें, बाक़ी के मुझे दे दें और मेरे साथ चल पड़ें। महात्मा चुपचाप उठकर साथ चल पड़े। जब वहाँ पहुँचे तो द्रोपदी ने अच्छे-अच्छे व्यंजन, अलग-अलग बर्तनों में उनके सामने रख दिये। उस ज़माने में राजाओं की लड़कियों का खाना बनाने का इम्तिहान होता था, जिसमें द्रोपदी सबसे अव्वल रहती थी। उसे ऋषियों से वरदान मिला हुआ था कि जब तक तू बर्तन धो नहीं लेगी, तेरा लंगर समाप्त नहीं होगा। अब वह महात्मा सारे व्यंजन मिलाकर खाने लग गया। द्रोपदी ने देखा और सोचा कि अगर यह अलग-अलग खाता तो इसे पता लग जाता कि द्रोपदी भी कुछ है। फिर मन में कहा कि इसे खाने की क्या क़द्र? जब सुपच खा चुका तो फिर भी घण्टा न बजा। तब द्रोपदी ने हाथ जोड़कर कहा कि महात्मा जी! अब क्या कसर

है? महात्मा ने कहा कि तेरे हृदय का क़ुसूर है। जब हृदय साफ़ किया तो घण्टा बज गया। मतलब यह कि जो कमाई वाले महात्मा होते हैं, वे दुनिया के स्वाद नहीं लेते। सुपच ने कहा कि मुझे तेरे खाने के स्वाद की ज़रूरत नहीं, इसलिए मैं सारा खाना मिलाकर खाने लग गया। सो, मालिक के प्यारे की तरफ़ चलें, चाहे वह कोई भी हो, तो एक-एक क़दम पर अश्वमेध यज्ञ का फल होता है।

पाठी भान सिंह: हुज़ूर, कबीर साहिब भी यही कहते हैं:

> बिधीवत यग्य करत सदा, जो द्विज उत्तम गोत।
> साध निकट चल जात ही, सो फल पग-पग होत॥[3]

यानी सेवा, सेवा ही है, चाहे वह हाथों की है या पैरों की या ज़बान की।

देसी रिजकु संबाहि जिनि उपाई मेदनी॥
एको है दातारु सचा आपि धणी॥

कहते हैं, वह परमात्मा कुल दुनिया का एक है और सबको रिज़्क (रोज़ी, जीविका) देता है। हमें उसके साथ प्यार करना है।

सो सचु तेरै नालि है गुरमुखि नदरि निहालि॥
आपे बखसे मेलि लए सो प्रभु सदा समालि॥

अब गुरु साहिब कहते हैं कि जिस परमात्मा को तू तीर्थों में, मन्दिरों में, मस्जिदों और ठाकुरद्वारों में ढूँढ़ता है, वह तेरे अन्दर है। अगर तुझे उससे मिलना है तो गुरुमुख बन और इबादत कर। जब तू अभ्यास करके सेत-सुन्न में पहुँचेगा तो गुरुमुख हो जायेगा। जब तू परदा खोलकर अन्दर जायेगा, वह तुझे बख़्श लेगा, अपने साथ मिला लेगा, तेरी मुक्ति हो जायेगी। वेद-शास्त्रों में परमात्मा नहीं है, उनमें उसका ज़िक्र है, वह ख़ुद तो तेरे अन्दर है।

मनु मैला सचु निरमला किउ करि मिलिआ जाइ॥
प्रभु मेले ता मिलि रहै हउमै सबदि जलाइ॥

अब जिज्ञासु सवाल करता है कि जब वह मालिक मेरे अन्दर है तो मुझे दिखायी क्यों नहीं देता? तो गुरु साहिब जवाब देते हैं कि तेरा मन मैला है और वह निर्मल है। जब मन निर्मल हो जायेगा तो वह अन्दर की आँख उसे देखने लग जायेगी। फिर उससे मिलने का उपाय क्या है? कहते हैं, तेरे अन्दर शब्द है, कलामे-इलाही है, बाँगे-आसमानी है। तू उसके साथ प्यार कर। जब तू प्यार करेगा, परदा खुल जायेगा, तेरा जन्म-मरण ख़त्म हो जायेगा। कौड़ी ख़र्च नहीं होगी। हम जानते ही हैं कि वह परमात्मा हमारे अन्दर है, मगर मन सिर फेर देता है। इसके विपरीत, अगर कहीं दस साल का बच्चा खड़ा हो तो हम कोई गुनाह नहीं करते। हमें परमात्मा का दस साल के बच्चे जितना भी डर नहीं। मगर नहीं, वह परमात्मा हमारी हरएक हरकत को देखता है। ज़िक्र है, हज़रत यूसुफ़ के भाइयों ने देखा कि यह होनहार है, अगर यह हमारे बीच रहा तो हमारी इज़्ज़त नहीं होने देगा। यह सोचकर उन्होंने उसे कुएँ में फेंक दिया। उधर से मिस्र के सौदागर जा रहे थे। उन्होंने क्या देखा कि एक आदमी कुएँ में गिरा पड़ा है। उन्होंने उसे निकालकर बादशाह के हाथ बेच दिया। अब मिस्र के बादशाह की जो औरत थी, उसका नाम ज़ुलेखा था। यूसुफ़ की सुन्दर सूरत देखकर उसका मन मैला हो गया। एक दिन वह उसे कई ड्योढ़ियों में से निकालकर एक कमरे में ले गयी और दरवाज़ा बन्द करके खोटा ख़याल प्रकट किया। अब यूसुफ़ सोचता है कि अगर हुक्म मानता हूँ तो गुनाहगार होता हूँ और अगर नहीं मानता हूँ तो यह झूठा इल्ज़ाम लगाकर मुझे मरवा देगी। करूँ तो क्या करूँ? यह सोच ही रहा था कि ज़ुलेखा ने एक पत्थर की मूर्ति के ऊपर रूमाल डाल दिया। यूसुफ़ ने पूछा कि यह क्या? कहती है कि यह मेरा माबूद (भगवान्) है, मैं इसकी पूजा करती हूँ। चूँकि मैं एक खोटा कर्म करने लगी हूँ, इसलिए इसके ऊपर रूमाल डाल दिया है, ताकि यह देख न ले। यूसुफ़ ने कहा कि अगर तेरा पत्थर

देखता है तो मेरा परमात्मा तो हर वक़्त देखता है। यह कहकर, दौड़कर बाहर आ गया। वह परमात्मा तो हर वक़्त हमारे अन्दर है। हम झूठ बोलते हैं, पाप करते हैं, क्या वह देखता नहीं? फिर हमारा परदा कैसे खुले?

सो सहु सचा वीसरै ध्रिगु जीवणु संसारि॥
नदरि करे ना वीसरै गुरमती वीचारि॥

कहते हैं, जब वह परमेश्वर हमारे अन्दर है और हमने उसे भुलाया हुआ है तो हमारा जीना भी लानत ही समझो। फिर हमें क्या करना चाहिए? कहते हैं, कामिल मुर्शिद (पूर्ण गुरु) के पास जाकर राह लेनी चाहिए और फिर अन्दर जाना चाहिए, क्योंकि परमात्मा अन्दर से मिलता है, बाहर से नहीं। अब फिर उसी मज़मून (विषय) को दोहराते हुए कहते हैं कि अगर हमें कामिल मुर्शिद मिल जाये और वह अन्दर जाने की राह दे, हम उसकी हिदायत के मुताबिक़ अन्दर चले जायें तो वह परमेश्वर मिल जाता है, ऐसे नहीं।

सतिगुरु मेले ता मिलि रहा साचु रखा उर धारि॥
मिलिआ होइ न वीछुड़ै गुर कै हेति पिआरि॥

फिर कहते हैं, परमात्मा से मिलानेवाला कौन है? कामिल मुर्शिद। अब कहते हैं कि जो मालिक से मिलना चाहता है, उसे चाहिए कि जो युक्ति कामिल मुर्शिद बताता है, उसके मुताबिक़ अमल करे। फिर परदा खुल जायेगा। अगर हम गुरु से प्यार करते हुए शब्द की कमाई करें तो फिर वह मालिक बिछुड़ता नहीं और न ही हम उसे छोड़ते हैं।

पिरु सालाही आपणा गुर कै सबदि वीचारि॥
मिलि प्रीतम सुखु पाइआ सोभावंती नारि॥

अब गुरु अमर दास जी यह कहकर सारी दुनिया को होका देते हुए उपदेश देते हैं कि तेरा पति यानी तेरी रूह रूपी शोभावन्ती स्त्री का मालिक तेरे

अन्दर है। तू गुरु से राह लेकर ख़ूब कमाई कर। अब बार-बार शब्द पर ज़ोर देते हैं, बन्दगी पर ज़ोर देते हैं, कमाई पर ज़ोर देते हैं कि अगर तू शब्द की कमाई करेगा, तेरा जन्म-मरण ख़त्म हो जायेगा, हमेशा का सुख प्राप्त हो जायेगा।

मनमुख मनु न भिजई अति मैले चिति कठोर॥
सपै दुधु पीआईऐ अंदरि विसु निकोर॥

कहते हैं, जो खोटे मनुष्य हैं, ऐबी, पापी, गुनाहगार हैं, उनके हृदय इतने मैले हैं कि उन्हें कुछ सूझता नहीं यानी उनके अन्दर इतना ज़हर है कि उनके ऊपर नेकी का असर नहीं होता, जिस तरह साँप को दूध पिलायें तो वह ज़हर बन जाता है, क्योंकि उसके अन्दर ज़हर होता है।

आपि करे किसु आखीऐ आपे बखसणहारु॥
गुर सबदी मैलु उतरै ता सचु बणिआ सीगारु॥

फिर कहते हैं कि यह सारा उस मालिक का खेल है। उसे जिन्हें गले लगाना होता है, उन्हें कोई गुरु मिल जाता है और वह कहता है कि नाम की कमाई करो। जिन्हें वह अपने साथ नहीं मिलाना चाहता, वे चोरियाँ-ठगियाँ करते हैं, अन्य गन्दे-गन्दे काम करते हैं। अब गुरु साहिब कहते हैं कि जब तक यह नाम की कमाई नहीं करता, बख़्शा नहीं जाता, चाहे वह किसी क़ौम का क्यों न हो। जितने गुनाह नाश होते हैं, शब्द की कमाई से होते हैं। वह शब्द, मीठे से मीठा राग हमारे अन्दर हर वक़्त हो रहा है।

सचा साहु सचे वणजारे ओथै कूड़े ना टिकंनि॥
ओना सचु न भावई दुख ही माहि पचंनि॥

हम सब वणजारे (व्यापारी) हैं और यहाँ वणिज (व्यापार) करने आये हैं। हमें क्या वणिज करना है? परमात्मा के नाम का। कहते हैं, उसका वणिज

भी सच्चा है और जो उसके वणजारे हैं, वे भी सच्चे हैं। जो गुनाहगार, ऐबी-पापी हैं उनके लिए वहाँ जगह ही नहीं। वे दु:खों में पैदा हुए, दु:ख ही कमाये और दु:खों में ही मर गये।

हउमै मैला जगु फिरै मरि जंमै वारो वार॥
पइऐ किरति कमावणा कोइ न मेटणहार॥

समझाते हैं, जिन-जिन को नाम नहीं मिला, वे कहते हैं कि मेरी क़ौम, मेरा मज़हब, मेरे बेटे, मेरी जायदाद। उन्हें हौंमैं की बीमारी ने खा लिया यानी वे खोटे आदमी हैं। वे जो खोटे कर्म करते हैं, वैसा ही खोटा फल पाते हैं। जब दरगाह में हिसाब होता है तो वे बार-बार नीचे की योनियों में जन्म लेते और मरते हैं।

संता संगति मिलि रहै ता सचि लगै पिआरु॥
सचु सलाही सचु मनि दरि सचै सचिआरु॥

कहते हैं, परमात्मा सच्चा है। अगर हम सन्त-महात्माओं की सोहबत में जायें, जो परमात्मा के साथ मिले हुए हैं, वे हमें सच की तालीम देंगे। वे कहेंगे कि तुम्हारे अन्दर नाम है, बाँगे-इलाही है। जब हम नाम की कमाई करेंगे, उस बाँग को सुनेंगे तो सच्चे रब की दरगाह में पहुँच जायेंगे। जब तक हम नाम की कमाई नहीं करते, चाहे किसी क़ौम के क्यों न हों, मुक्ति नहीं होती। अब कहते हैं कि अगर तुम्हें परमात्मा से मिलना है तो सच की कमाई करो।

गुर पूरे पूरी मति है अहिनिसि नामु धिआइ॥
हउमै मेरा वड रोगु है विचहु ठाकि रहाइ॥

कहते हैं, हमारे पूरे गुरु ने हमें पूरी समझ दी है कि हौंमैं को छोड़ दो, यह जन्म-मरण का घर है। अब कहते हैं कि अगर तू इस बीमारी से

बचना चाहता है तो सोते-जागते, उठते-बैठते, मतलब कि हर वक़्त रब का नाम ज़बान पर रख। जब तुम दिन-रात इबादत करोगे, नाम को हृदय में रखोगे, हौंमैं को निकाल दोगे, तुम्हारा काम बन जायेगा।

गुरु सालाही आपणा निवि निवि लागा पाइ॥
तनु मनु सउपी आगै धरी विचहु आपु गवाइ॥

अब मुर्शिद के साथ प्यार करना बताते हैं। कहते हैं कि हमारा अपने मुर्शिद के साथ प्यार लगा हुआ है। हमने अपना तन, मन, धन उस पर क़ुर्बान किया हुआ है। इसलिए कि वह दुनिया में भी साथ है, अन्दर भी साथ है और परमात्मा की दरगाह में भी साथ है लेकिन हमें बीच में से अपना आपाभाव निकाल देना चाहिए। 'मैं, मैं' न रहे, 'तू ही तू' रह जाये।

खिंचोताणि विगुचीऐ एकसु सिउ लिव लाइ॥
हउमै मेरा छडि तू ता सचि रहै समाइ॥

अब कहते हैं, जो अलग-अलग देवी-देवताओं और तीर्थों की पूजा है, यह 'खींचातानी' है, इसे छोड़ दे। तेरे अन्दर सच है, तू उसकी पूजा कर ताकि तेरे अन्दर रब का नूर (प्रकाश) पैदा हो जाये और काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार सो जायें। जब तक अन्दर 'मैं' घुसी हुई है तब तक कुछ नहीं मिलता। अगर यह निकल जाये तो सबकुछ मिल जाये।

सतिगुर नो मिले सि भाइरा सचै सबदि लगंनि॥
सचि मिले से न विछुड़हि दरि सचै दिसंनि॥

कहते हैं कि दुनिया में परमात्मा को कौन प्यारा है? फिर आप ही जवाब देते हैं कि जो सतगुरु से मिलता है। सतगुरु कहता है कि तेरे अन्दर नाम है, बाँगे-इलाही है, वह सच है। जब यह अभ्यास करके अन्दर जाता है,

सच का परदा खोलता है, इसकी रूह सुहागिन हो जाती है। रब इसे गले से लगा लेता है और फिर जुदा नहीं करता।

से भाई से सजणा जो सचा सेवंनि॥
अवगण विकणि पल्हरनि गुण की साझ करंन्हि॥

अब कहते हैं कि हमारी बिरादरी कौन-सी है? हिन्दू, मुसलमान, सिक्ख, यहूदी, ईसाई या कोई और? फिर आप ही जवाब देते हैं कि नहीं। जो बन्दे परमात्मा से प्यार करते हैं, नाम की कमाई करते हैं, वे हमारी बिरादरी हैं, क्योंकि हमारा और उनका परमात्मा एक है। यहाँ क़ौमों और मज़हबों का सवाल नहीं, बल्कि प्यार का सवाल है। अगर कोई मुसलमान परमात्मा के साथ मिला हुआ हो, हम उसके साथ प्यार करेंगे, अगर हिन्दू मिला हुआ हो, हम उसके साथ भी प्यार करेंगे। गुरु अर्जुन साहिब का मियाँ मीर के साथ प्यार था। इसी तरह अन्य फ़क़ीरों का हाल है। जो परमात्मा की बन्दगी करते हैं, परमात्मा से प्यार करते हैं, वे चाहे किसी क़ौम के हों, वे हमारे भाई हैं, वे गुरुमुख हैं।

गुण की साझ सुखु ऊपजै सची भगति करेनि॥
सचु वणंजहि गुर सबद सिउ लाहा नामु लएनि॥

कहते हैं कि हमारे और उनके गुणों में समानता है। वे भी प्यार करते हैं, हम भी प्यार करते हैं, वे हमारे भाई हैं। अगर इस उपदेश को सभी हृदय में बिठा लें तो दुनिया में कोई झगड़ा न रहे, सभी परमात्मा के बन्दे बन जायें, मगर शैतान (मन) यह नहीं होने देता। जब परमात्मा एक है फिर अलग-अलग भाषाएँ, अलग-अलग मज़हब क्यों? यह ख़ुदग़र्ज़ी (स्वार्थ) है। ख़ुदग़र्ज़ी ने सभी को तबाह किया हुआ है। सच्चा वणिज कौन-सा है? वह नाम, बाँगे-आसमानी, कलामे-इलाही, शब्द-धुन। जो उसे सुनता है, चाहे वह किसी क़ौम का है, हमारा भाई है, हमारा हमदर्द है।

सुइना रुपा पाप करि करि संचीऐ चलै न चलदिआ नालि॥
विणु नावै नालि न चलसी सभ मुठी जमकालि॥

अब कहते हैं कि छीनकर, लूट-पाट करके सोना इकट्ठा किया मगर वह मौत के वक़्त साथ नहीं जाता। बेटे-बेटियाँ साथ नहीं जाते, और तो और शरीर भी साथ नहीं जाता। ग़ज़नी के बादशाह, सुलतान महमूद ने हिन्दुस्तान पर सत्रह हमले किये। सोना, चाँदी, जवाहरात, जो कुछ मिला, इकट्ठा करके ले गया। यहाँ तक कि मुहम्मद शाह का तख़्त भी उठाकर ले गया, मगर जब बीमार हुआ और समझ में आया कि अब मैं नहीं बच सकता तो हुक्म दिया कि सारा सामान सजाया जाये, मैं देखना चाहता हूँ। हिन्दुस्तान का सारा धन, हीरे-जवाहरात जो जमा किये थे, उन्हें कई कोसों तक सजाया गया। पालकी में बैठकर देखने के लिए आया और देखकर रो पड़ा कि इस धन के लिए मैंने कितने बच्चे यतीम (अनाथ) किये, कितनी औरतें विधवा कीं, कितने ही आदमियों का ख़ून किया, दुनिया को तबाह किया, अब यह मेरे साथ नहीं चलेगा। आख़िर इसी पछतावे में मर गया। सो, इस दुनिया से कोई चीज़ हमारे साथ नहीं जाती। अगर कुछ साथ जाता है तो गुरु और नाम, और कुछ नहीं। अगर यहाँ के सामान यहीं रह जायेंगे तो फिर इनका क्या करना है?

मन का तोसा हरि नामु है हिरदै रखहु सम्हालि॥
एहु खरचु अखुटु है गुरमुखि निबहै नालि॥

अब गुरु अमर दास साहिब फिर समझाते हुए कहते हैं कि अगर हमें कहीं दस दिन के लिए जाना हो तो हम कपड़े बाँध लेते हैं, सफ़र-ख़र्च ले लेते हैं और दूसरी ज़रूरी चीज़ें इकट्ठी कर लेते हैं। फिर यह भी सोच लेते हैं कि किस मुसाफ़िरख़ाने, धर्मशाला या सराय में रहेंगे, मगर जहाँ जाकर हमेशा रहना है, कभी सोचा है कि वहाँ का भी सामान इकट्ठा कर लें? जब मरेंगे तो साथ क्या ले जायेंगे? सारी दुनिया ग़फ़लत में पड़ी हुई है। कहते हैं, अगर तुम्हें परमात्मा की दरगाह में जाना है तो नाम का तोशा (सफ़र-ख़र्च)

ले लो, फिर आसानी से उसकी दरगाह में पहुँच जाओगे। नहीं तो ख़ाली आये और ख़ाली ही चले जाओगे। अगर साथ जानेवाली कोई दौलत है तो नाम है, बाक़ी दुनिया की कोई चीज़ साथ नहीं जाती, मगर शैतान (मन) ने ऐसा भुलाया हुआ है कि हम पर एक भी बात का असर नहीं होता। इस कान में पड़ी, दूसरे कान से निकल गयी। यह पापों का फल है।

ए मन मूलहु भुलिआ जासहि पति गवाइ॥
इहु जगतु मोहि दूजै विआपिआ गुरमती सचु धिआइ॥

अब फिर सारी दुनिया को होका देते हुए कहते हैं कि भाइयो, तुम्हें मनुष्य-जन्म मिला, अशरफ़ुल-मख़लूक़ात! तुम क्यों इसे बरबाद करके जा रहे हो। दुनिया भूली हुई है, कोई भी जीव भूल से ख़ाली नहीं। अब अपने मन से कहते हैं कि हे मन! अगर दुनिया भूली हुई है तो भूलने दे, तू मुर्शिद से नाम लेकर उसकी कमाई कर।

हरि की कीमति ना पवै हरि जसु लिखणु न जाइ॥
गुर कै सबदि मनु तनु रपै हरि सिउ रहै समाइ॥

कहते हैं, दुनिया में नाम की क़ीमत है नहीं। अगर दुनिया की करोड़ों मुहब्बतें हों तो नाम की मुहब्बत का मुक़ाबला नहीं कर सकतीं। नाम की महिमा लिखी नहीं जाती। अब कहते हैं, अगर इसके दिन अच्छे हों, इसे कोई गुरु मिल जाये और वह इसे नाम दे दे, यह नाम की कमाई करे तो इसकी मुक्ति हो जाये। और कोई इलाज नहीं। इसलिए इसे चाहिए कि गुरु से शब्द का भेद लेकर उठते-बैठते उसकी कमाई करे।

सो सहु मेरा रंगुला रंगे सहजि सुभाइ॥
कामणि रंगु ता चड़ै जा पिर कै अंकि समाइ॥

कहते हैं, हमारा परमात्मा रंगरेज़ है, उसके पास नाम का रंग है। जो उसके पास जाये, उसे वह नाम का रंग देता है। रँगता कब है? जब यह अपना

आपा उसको दे दे। अब कहते हैं कि स्त्री कब सुहागिन होती है, जब यह आपाभाव छोड़कर अपने आप को पति के हवाले कर दे। इसी तरह जब यह अपना आपा छोड़ देगा, वह इसे अपने साथ मिला लेगा।

चिरी विछुंने भी मिलनि जो सतिगुरु सेवंनि॥
अंतरि नव निधि नामु है खानि खरचनि
न निखुटई हरि गुण सहजि रवंनि॥

कहते हैं, चाहे ये करोड़ों युगों से मालिक से बिछुड़े हुए हैं, करोड़ों युगों से गुनाहगार, पापी भी हैं, अगर सतगुरु की शरण में आकर नाम की कमाई करें तो इन्हें कोई फ़िक्र नहीं। हम सबके अन्दर नाम के ख़ज़ाने भरे हुए हैं, लेकिन खोटी क़िस्मत वाले अन्दर नहीं जाते।

ना ओइ जनमहि ना मरहि ना ओइ दुख सहंनि॥
गुरि राखे से उबरे हरि सिउ केल करंनि॥

कहते हैं, जो अन्दर परदा खोलकर नाम की कमाई करते हैं, वे फिर दुनिया में नहीं आते, जन्म-मरण में नहीं आते। इस दुःख से बच जाते हैं। बूँद समुद्र में मिलकर समुद्र हो जाती है यानी उनकी रूह का परमात्मा से विसाल हो जाता है।

सजण मिले न विछुड़हि जि अनदिनु मिले रहंनि॥
इसु जग महि विरले जाणीअहि नानक सचु लहंनि॥

अगर एक बार परदा खोलकर लज़्ज़त आ जाये और वह साजन (परमात्मा) मिल जाये तो फिर वह नहीं बिछुड़ता। अब श्री गुरु अमर दास जी कहते हैं कि दुनिया में थोड़े आदमी हैं, जो सच के पीछे लगते हैं। बाक़ी दुनिया झूठी है, झूठ के पीछे लगकर ख़्वार हो रही है।

वाणी स्वामी जी महाराज

महिमा सतगुरु स्वरूप राधास्वामी की

गुरू गुरू मैं हिरदे धरती। गुरु आरत का सामाँ करती॥ 1॥
गुरु मेरे पूरण पुरुष बिधाता। नित चरनन पर मन मेरा राता॥ 2॥
गुरु हैं अगम अपार अनामी। गुरु बिन दूसर और न जानी॥ 3॥
नहिं ब्रह्मा नहिं विष्णु महेशा। नहिं ईश्वर परमेश्वर शेषा॥ 4॥
राम कृष्ण नहिं दस औतारी। व्यास वशिष्ठ न आदि कुमारी॥ 5॥
ऋषि मुनि देवी देव न कोई। तीरथ बर्त धर्म नहिं होई॥ 6॥
जोगी जती तपी ब्रह्मचारी। जनक सनक सन्यास विचारी॥ 7॥
आतम परमातम नहिं मानूं। अक्षर नि:अक्षर नहिं जानूं॥ 8॥
सत्तनाम जानूं न अनामी। लिख ग्रन्थ सब करत बखानी॥ 9॥
सब को करूं प्रनाम जोड़ कर। पर कोई नहिं सतगुरु समसर॥ 10॥
सतगुरु कृपा सबन को जाना। बिन सतगुरु कैसे पहिचाना॥ 11॥
सतगुरु भेद दिया इक इक का। तब जाना इन सब का ठेका॥ 12॥
सतगुरु सब का भेद बखानें। अब किसको गुरु से बढ़ जानें॥ 13॥
गुरु ने सब का पद दरसाई। जस जस जिनकी गति तस गाई॥ 14॥
ताँते सतगुरु सब के करता। सतगुरु ही हैं सब के हरता॥ 15॥
याते सतगुरु का पद भारी। सतगुरु सम नहिं कोइ बिचारी॥ 16॥
जब जिव सरन गुरू की आवे। कर्म धर्म और भर्म नसावे॥ 17॥
जो गुरु मारग देहिं लखाई। सोइ निज कर्म धर्म हुआ भाई॥ 18॥
गुरु आज्ञा से जो शिष करई। वह करतूत भक्ति फल देई॥ 19॥
ताते पिरथम गुरु को खोजो। शब्द बतावें सो गुरु सोधो॥ 20॥

अस गुरु सम कोइ और न आना। गुरू मिले फिर कहा कमाना॥ 21॥
या ते मो मत निश्चय येही। गुरु बिन दूसर और न सेई॥ 22॥
जाके हिरदे गुरु परतीती। काल कर्म वा से नहिं जीती॥ 23॥
सब के सिर पर उस का डंका। काहू की उसके नहिं संका॥ 24॥
बड़े बड़े उधरें उस संगा। गुरुमुख है इन सब से चंगा॥ 25॥
गुरुमुख की गति सब से भारी। गुरुमुख कोटिन जीव उबारी॥ 26॥
कहाँ लग महिमा गुरुमुख गाऊँ। कोई न जाने किस समझाऊँ॥ 27॥
जग में पड़ा काल का घेरा। जीव करें चौरासी फेरा॥ 28॥
जो चौरासी छूटन चावें। तो गुरुमुख सेवा चित लावें॥ 29॥
और काम सब देहिं बहाई। शब्द गुरु की करें कमाई॥ 30॥
कोटिन जन्म रहे कोइ काशी। बेद पाठ और तीरथ बासी॥ 31॥
जप तप संजम बहु बिधि करई। भेख बनावे विद्या पढ़ई॥ 32॥
पिछलों की जो धारें टेका। जिन को कभी आँख नहिं देखा॥ 33॥
पोथिन में सुनी उनकी महिमा। टेक बाँध मन सब का भरमा॥ 34॥
अब इन को जो कोइ समझावे। टेक छोड़ते जिव सा जावे॥ 35॥
कोई शिव और कोई विष्णु की। कोई राम और कोई कृष्ण की॥ 36॥
कोई देवी कोई गंगा जमना। कोई मूरत कोई चारों धामा॥ 37॥
कोई मथुरा कोई टेक मुरारी। मदन मोहन कोई कुँज बिहारी॥ 38॥
कोई गोकुल कोई बलभाचारी। कोई कंठी माला गल धारी॥ 39॥
कोई अचार कोई संध्या तर्पन। गया गायत्री करें समर्पन॥ 40॥
कोई गीता कोई भागवत पढ़ते। कथा पुरान नेम से सुनते॥ 41॥
क्या दादू क्या नानकपंथी। क्या कबीर क्या पलटू संती॥ 42॥
सब मिल करते पिछली टेका। वक्त गुरू का खोज न नेका॥ 43॥
बिन गुरु वक्त भक्ति नाहिं पावे। बिना भक्ति सतलोक न जावे॥ 44॥
यह कहना उन जीवन कारन। जिनके बिरह अनुराग की धारन॥ 45॥
विषई संसारी और रागी। इन को टेक न चहिये त्यागी॥ 46॥
इन को टेक सहारा भारी। टेक बिना कुछ नाहिं अधारी॥ 47॥
उनको नहिं उपदेश हमारा। उनको जगत कामना मारा॥ 48॥
कोइ कुटुम्ब कोइ धन आधीना। कोइ कोइ मान प्रतिष्ठा लीना॥ 49॥

मारे डर के टेक न छोड़ें। वक्त गुरू में मन नहिं जोड़ें॥ 50॥
जो अनुरागी बिरही भाई। भक्ति गुरू की उन प्रति गाई॥ 51॥
वक्त गुरू जब लग नहिं मिलई। अनुरागी का काज न सरई॥ 52॥
परिथम सीढ़ी भक्ति गुरु की। दूसर सीढ़ी सुरत नाम की॥ 53॥
जब लग गुरु भक्ती नहीं पूरी। मन मनसा यह होयँ न चूरी॥ 54॥
मन चूरे बिन सुरत न निर्मल। कैसे चढ़े और लगे शब्द चल॥ 55॥
गुरु भक्ति अस कैसे आवै। सतसंग कर गुरु सेवा धावै॥ 56॥
गुरु को पल पल माहिं रिझावै। गुरु प्रसन्नता नित्य कमावै॥ 57॥
गुरु जब इसको प्यारे होई। गुरु को प्यारा जब यह होई॥ 58॥
पूरन दया गुरू जब करई। भक्ति पदारथ जबही मिलई॥ 59॥
यह भी जोग मेहर से होगा। दया मेहर बिन जानो धोखा॥ 60॥

॥ दोहा॥

क्या हिन्दू क्या मुसलमान, क्या ईसाई जैन।
गुरु भक्ती पूरन बिना, कोइ न पावे चैन॥ 61॥
परिथम सीढ़ी है गुरु भक्ति। गुरु भक्ति बिन काज न रत्ती॥ 62॥
और उपाय अनेकन करते। गुरु भक्ती को मुख्य न रखते॥ 63॥
यही कसर है सब के मत में। सिद्धान्त न पावें ओछे चित में॥ 64॥

॥ दोहा॥

गुरु भक्ती दृढ़ के करो, पीछे और उपाय।
बिन गुरु भक्ति मोह जग, कभी न काटा जाय॥ 65॥
मोटे बंधन जगत के, गुरु भक्ती से काट।
झीने बंधन चित्त के, कटें नाम परताप॥ 66॥
मोटे जब लग जायँ नहिं, झीने कैसे जायँ।
ताते सबको चाहिये, नित गुरु भक्ति कमायँ॥ 67॥
एक जन्म गुरु भक्ति कर, जन्म दूसरे नाम।
जन्म तीसरे मुक्तिपद, चौथे में निज धाम॥ 68॥

अब आरत गुरु करूँ सँवारा। काया थाल मन दीपक बारा॥ 69॥
भक्ति जोत और भोग अनुरागा। दृष्टि जोड़ चित चरनन लागा॥ 70॥
यों आरत अब करी बनाई। सतगुरु पूरे रहें सहाई॥ 71॥[1]

सत्संग के बचन

गुरू गुरू मैं हिरदे धरती। गुरु आरत का सामाँ करती॥

जितने ऋषि-मुनि, महात्मा हुए हैं, सारे 'गुरु-गुरु' करते आये हैं। क्यों? इसलिए कि गुरु के बराबर कोई रिश्तेदार नहीं। गुरु इस दुनिया में भी शिष्य के साथ है और आगे भी साथ है। गुरु का असली स्वरूप शब्द है और शिष्य का सुरत है। जो गुरु का देह-रूप है, हमें समझाने के लिए है; वरना गुरु का रूप देह नहीं। देह तो न शिष्य की रहेगी, न गुरु की। यह तो बाहर का मेल-मिलाप है यानी जब हम स्थूल देश और शरीर में हैं, गुरु का स्वरूप स्थूल है। जब हम सूक्ष्म देश में जायेंगे, वहाँ गुरु का स्वरूप सूक्ष्म है। जब ब्रह्म में जायेंगे, वहाँ गुरु कारण स्वरूप में है। जब पारब्रह्म में जाओ, वहाँ गुरु शब्द-स्वरूप है। इसी तरह जब आप सचखण्ड में जाओगे, वहाँ गुरु को सतपुरुष के स्वरूप में देखोगे। जिस तरह एक लड़का विद्या पढ़ने के लिए स्कूल जाता है, उसका उस्ताद एम. ए. है, मगर लड़के को कोई ख़बर नहीं कि एम. ए. किसे कहते हैं। जब तक ख़बर नहीं, तब तक प्यार नहीं। जब लड़का पढ़-लिख कर एम. ए. हो जायेगा तो उसका उस्ताद के साथ पूरा प्यार हो जायेगा। इसी तरह जब हम रूहानी मण्डलों पर चढ़ेंगे, सचखण्ड पहुँचेंगे, तो दर्जेवार धीरे-धीरे पूरा पता लगेगा कि गुरु क्या ताकत है! मगर सतगुरु यह नहीं कहता कि मुझे गुरु कहो, बल्कि वह कहता है कि मुझे दोस्त समझ ले, बड़ा भाई समझ ले। हाँ, जब तू अन्दर जायेगा, फिर जो तेरी मर्ज़ी हो कह लेना। अब हुज़ूर स्वामी जी महाराज फ़रमाते हैं कि गुरु क्या ताकत है? गुरु की तालीम क्या है? गुरु का और हमारा सम्बन्ध क्या है? हम क्यों गुरु को हृदय में धारण करते हैं और उसकी आरती का सामान करते हैं?

आरती का मतलब है उसमें रम जाना यानी समा जाना, बूँद का समुद्र में मिलकर समुद्र हो जाना। आगे कहते हैं:

गुरु मेरे पूरण पुरुष बिधाता। नित चरनन पर मन मेरा राता॥

कहते हैं, हम गुरु को कुल-मालिक समझते हैं। इसमें शक नहीं कि ईश्वर-परमेश्वर, ब्रह्म-पारब्रह्म सब हमारे अन्दर हैं, मगर उनके होते हुए भी हमने करोड़ों जन्म पाये। जिस दिन से दुनिया बनी है, उस दिन से हम यहाँ आये हुए हैं। हमारा आज यहाँ होना इस बात का सबूत है कि हमें परमेश्वर से मिलने की राह नहीं मिली। जब गुरु नहीं मिला था, ईश्वर-परमेश्वर, ब्रह्म-पारब्रह्म अन्दर होते हुए भी नहीं मिले। जब गुरु मिला, तब ये भी मिल गये। कहते हैं, मेरा प्यार गुरु के चरणों के साथ है। गुरु हमारे जैसा नहीं, बल्कि वह ख़ुद ख़ुदा है। यह उनका ख़याल है, जो धुर-धाम पहुँचे हैं। उस लज़्ज़त, उस कैफ़ीयत को जिन्होंने देखा, वे ही जानते हैं। यह स्वामी जी ही नहीं कह रहे, बल्कि अन्य महात्मा भी कहते हैं। इसलिए गुरु अर्जुन साहिब कहते हैं:

गुरु परमेसरु एको जाणु॥ जो तिसु भावै सो परवाणु॥[2]

गुरू गुरू गुरु करि मन मोर॥[3]

जो महात्मा अन्दर सचखण्ड में पहुँचे, वे नाम रूपी समुद्र में लीन हो गये। अब नाम या मालिक में और उनमें कोई फ़र्क़ नहीं। 'गुरु मेरे पूरण पुरुष बिधाता', यह उनका ही कहना है। हम नहीं कह सकते क्योंकि हमने वह सचखण्ड देश नहीं देखा, उसकी 'पोज़ीशन' नहीं देखी। इसलिए हमारे अन्दर वह प्यार भी नहीं।

गुरु हैं अगम अपार अनामी। गुरु बिन दूसर और न जानी॥

कहते हैं, अगर ब्रह्म-पारब्रह्म, ईश्वर-परमेश्वर से भी कोई परे है, जिसे अनामी कहते हैं यानी जिसका कोई नाम नहीं, मैं अपने गुरु को वही

समझता हूँ। अगर मेरा कोई मालिक है तो वह गुरु है। मतलब कि शिष्य गुरु को कुल-मालिक समझता है। कितना ऊँचा ख़याल है!

नहिं ब्रह्मा नहिं विष्णु महेशा। नहिं ईश्वर परमेश्वर शेषा॥

कहते हैं, गुरु के मुक़ाबले में न ब्रह्मा है, जो दुनिया को पैदा करता है; न ही विष्णु को समझते हैं, जो दुनिया को पालता है और न शिव को मानते हैं, जो दुनिया का नाश करता है। इसी तरह गुरु के बराबर न ईश्वर है, जो तुरिया पद का मालिक है; न परमेश्वर जो त्रिकुटी का मालिक है और न शेषनाग है। गुरु इन सबसे परे है।

राम कृष्ण नहिं दस औतारी। व्यास वशिष्ठ न आदि कुमारी॥
ऋषि मुनि देवी देव न कोई। तीरथ बर्त धर्म नहिं होई॥

अब कहते हैं, हम गुरु के बराबर न ऋषियों-मुनियों को समझते हैं, न देवी-देवताओं को, न अवतारों आदि को। इसी तरह न तीर्थ को, न धर्म को और न व्रत को गुरु के बराबर समझते हैं। गुरु इन सभी से परे और बड़ा है, गुरु अपनी मिसाल आप है। गुरु के बराबर हमारा कोई रिश्तेदार नहीं। जिन्हें अन्दर जाना है, परदा खोलना है, परमात्मा से मिलना है, यह उपदेश उनके लिए है। जिन्हें अन्दर ही नहीं जाना, उनके लिए यह तालीम नहीं। जिसे राग नहीं सीखना, चाहे राग का मास्टर तानसेन उसकी जूतियाँ झाड़ता रहे, उसे क्या? इसके विपरीत, जिसे राग सीखना है, वह तानसेन की जूतियाँ झाड़ेगा और उसकी अन्य सेवा भी करेगा।

जोगी जती तपी ब्रह्मचारी। जनक सनक सन्यास विचारी॥

गुरु के बराबर न कोई योगी है, न यती है और न तप करनेवाला है। इसी तरह गुरु के बराबर न राजा जनक है, न ब्रह्मा के चारों बेटे—सनक, सनन्दन, सनातन और सनत्कुमार हैं और न संन्यास ही है। गुरु इन सबसे परे है।

आतम परमातम नहिं मानूं। अक्षर निःअक्षर नहिं जानूं॥

कहते हैं, हम गुरु के मुक़ाबले न आत्म-पद यानी सहँस-दल-कँवल या तुरिया पद को समझते हैं, न परमात्म-पद यानी ब्रह्म को समझते हैं। इसी तरह गुरु के बराबर न अक्षर यानी दसवाँ द्वार या पारब्रह्म है और न निःअक्षर यानी भँवरगुफा है। गुरु इससे भी आगे जाता है। फिर क्या मुक़ाबला करें? क्या बतायें?

सत्तनाम जानूं न अनामी। लिख ग्रन्थ सब करत बखानी॥

गुरु के बराबर हम न सतनाम को मानते हैं, न अनामी को! जो सबसे आख़िरी मंज़िल है, इसको क्या कहोगे? अब कहते हैं, यह गुरुमत है, जो युगों-युगों से चली आ रही है। इसमें शक नहीं कि ब्रह्म-पारब्रह्म, सतनाम, अनामी पहले भी हमारे अन्दर मौजूद थे, मगर इनके होते हुए भी हम जन्म पाते रहे; कभी कीड़े, कभी पतंगे, कभी घास, कभी फूस, कभी पशु, कभी पक्षी, मतलब कि कभी किसी योनि में, कभी किसी योनि में। इसलिए बड़ाई गुरु की है, जिसने हमारा जन्म-मरण ख़त्म कर दिया। बिना गुरु के न हमने यह दौलत निकाली और न जन्म-मरण ख़त्म हुआ। बिना गुरु के हमने करोड़ों जन्म पाये, लेकिन जब गुरु मिला, उसने कहा कि आओ मेरे साथ। जिस तरह आजकल लोग दबा हुआ कुआँ मालूम कर लेते हैं, एक 'ओडा', जो कुआँ मालूम करनेवाला आदमी होता है, वह बता देता है कि यहाँ है, फिर लोग निकाल लेते हैं। इसी तरह ईश्वर-परमेश्वर, ब्रह्म-पारब्रह्म, सचखण्ड, अनामी हमारे अन्दर हैं। सतगुरु ने हमें खण्डों-ब्रह्माण्डों पर ले जाकर बता दिया कि यह ब्रह्म है, यह पारब्रह्म है, यह सचखण्ड है, यह मालिक है। इसलिए हमें जो कुछ मिला, गुरु की कृपा से मिला। फिर सतगुरु यह नहीं कहता कि तू अकेला जा, बल्कि अन्दर हर मंज़िल पर साथ जाता है। हमारे वेद-शास्त्र, ग्रन्थ-पोथियाँ और अन्य किताबें कहती हैं कि परमेश्वर है, वह ऐसा है, वैसा है, लेकिन

अगर उनसे कहें कि लाओ कहाँ है? तो जवाब नदारद। किताबें सिर्फ़ यही बताती हैं कि जो मालिक दुनिया को पैदा करता है, पालता है, वह तेरे अन्दर है। वह सतनाम है, अनामी है, कुल-मालिक है। अगर पूछें कि अन्दर किस राह से चढ़ें? आँखों के ज़रिये जायें, कानों के ज़रिये जायें, किस राह से दाख़िल होकर मालिक के दर्शन करें? तो कोई जवाब नहीं। इसलिए गुरु की ही बड़ाई है, जिसने साथ ले जाकर दिखा दिया।

सब को करूं प्रनाम जोड़ कर। पर कोई नहिं सतगुरु समसर॥

जितने देवी-देवता हैं, ऋषि-मुनि हैं, पारब्रह्म, ईश्वर-परमेश्वर हैं, हम सभी को नमस्कार करते हैं, सभी का सम्मान करते हैं, लेकिन हमारा जो प्यार सतगुरु के साथ है, वह और किसी के साथ नहीं। कहते हैं, क्यों? उनके साथ वैसा प्यार क्यों नहीं? आगे बताते हैं:

सतगुरु कृपा सबन को जाना। बिन सतगुरु कैसे पहिचाना॥

कहते हैं, करोड़ों जन्मों से आँखों के पीछे परदा लगाकर हमें बाहर निकाला हुआ है। जब सतगुरु मिला, उसने अन्दर ले जाकर दिखा दिया कि इस जगह ब्रह्मा है, इस जगह विष्णु है, इस जगह शिव है, इस जगह ब्रह्म है, इस जगह पारब्रह्म है, यह सचखण्ड है, यह कुल-मालिक है। जब तक सतगुरु नहीं मिला था, हमारे लिए यह सामान था ही नहीं। हम कुत्ते-बिल्ले, हैवान वग़ैरह बनते रहे। अगर सतगुरु न मिलते तो हम उस मालिक से कभी भी नहीं मिल सकते थे। जब सतगुरु मिला, वह मालिक भी मिल गया और अन्य सामान भी। इसलिए जितनी कृपा है, सतगुरु की है।

सतगुरु भेद दिया इक इक का। तब जाना इन सब का ठेका॥

सतगुरु ने हमसे कमाई करवाकर, परदे खोलकर, साथ ले जाकर हमें एक-एक का भेद बता दिया कि यह ब्रह्म है, यह पारब्रह्म है, यह कुल-मालिक है। बग़ैर गुरु कुछ पता नहीं लगता। यही गुरु अंगद साहिब कहते हैं:

जे सउ चंदा उगवहि सूरज चड़हि हजार॥
एते चानण होदिआं गुर बिनु घोर अंधार॥[4]

अगर इस दुनिया में लाखों सूरज, लाखों चन्द्रमा चढ़ जायें तो बाहर रोशनी ज़्यादा हो जायेगी, लेकिन जब आँखें बन्द करो तो अन्दर अँधेरा है। अन्दर कौन जाये? जब अन्दर रोशनी होती है तो सतगुरु की कृपा से।

सतगुरु सब का भेद बखानें। अब किसको गुरु से बढ़ जानें॥

कहते हैं, कुंजी सतगुरु के हाथ है। अगर वे कुंजी नहीं लगाते तो हमें कुछ भी नहीं मिलता। सतगुरु हमें हर जगह पहुँचाते हैं, सतगुरु ही हमें सबके साथ मिलाते हैं। इसलिए हमारा सबसे ज़्यादा सतगुरु के साथ प्यार है, जिनकी कृपा से हमें सबकुछ मिल गया, नहीं तो यह जीव चाहे सारी उम्र बाहर ठोकरें खाता रहे, कुछ भी नहीं मिलता। यही गुरु नानक साहिब कहते हैं:

बिनु सतिगुर किनै न पाइओ बिनु सतिगुर किनै न पाइआ॥
सतिगुर विचि आपु रखिओनु करि परगटु आखि सुणाइआ॥[5]

एहु जीउ बहुते जनम भरंमिआ ता सतिगुरि सबदु सुणाइआ॥
सतिगुर जेवडु दाता को नही सभि सुणिअहु लोक सबाइआ॥[6]

गुरु ने सब का पद दरसाई। जस जस जिनकी गति तस गाई॥

गुरु ने साथ ले जाकर सारे खण्डों-ब्रह्माण्डों के दर्शन करवा दिये कि यह ब्रह्म है, यह पारब्रह्म है, यह राम है, यह कृष्ण है, यह सतनाम है, यह अनामी है। जिसने जाकर दिखा दिये, बड़ाई तो उसकी है। गुरु परमेश्वर में लीन होता है, जब तक हम गुरु में लीन नहीं होते, तब तक वह नहीं मिलता।

ताँते सतगुरु सब के करता। सतगुरु ही हैं सब के हरता॥

इसलिए इन सबको ज़ाहिर करनेवाले हैं तो सतगुरु हैं। अन्दर जाकर एक-एक की जगह और उनकी कैफ़ीयत दिखा दी। सो, ऊपर के जितने

लोक हैं, सतगुरु की कृपा से ही मिले। अगर सतगुरु दरवाज़ा न खोलता यानी परदा न खोलता तो कुछ भी न मिलता। इसलिए फ़रमाते हैं कि सतगुरु के बराबर कोई नहीं। हम सतगुरु के बराबर और किसी को नहीं समझते। मौलाना रूम साहिब भी कहते हैं:

चूँ किह् करदी ज़ाते-मुर्शिद रा क़बूल,
हम ख़ुदा दर ज़ातश आमद हम रसूल।[7]

कहते हैं, जब तू मुर्शिद से मिला, उसमें फ़ना यानी फ़नाफ़िशैख़ (मुर्शिद में लीन) हुआ, लवलीन हुआ, तब तुझे ख़ुदा भी मिल गया, रसूल भी मिल गया; दोनों ही उसमें आ गये।

याते सतगुरु का पद भारी। सतगुरु सम नहिं कोइ बिचारी॥

अब महात्मा कहते हैं कि हम सतगुरु के बराबर किसी को ख़याल में ही नहीं लाते। सतगुरु का दर्जा बड़े से बड़ा और ऊँचे से ऊँचा है, मगर किनके लिए? जिन्हें परदा नहीं खोलना, उनके लिये नहीं। अगर लोगों का परदा खुला होता तो गुरु नानक साहिब से बोझा न उठवाते, चक्की न पिसवाते, इस तरह कुमार्गी न कहते! मगर ... जन्म साखी में आता है कि गुरु नानक साहिब एक गाँव में गये, किसी ने अन्दर नहीं आने दिया। एक कोढ़ी की कुटिया में, जिसके नज़दीक दिन में भी कोई नहीं आता था, रात काटी। गुरु अर्जुन साहिब पर गर्म रेत डलवायी। हज़रत ईसा को जब फाँसी पर चढ़ाने लगे तब उन्होंने कहा कि ऐ मालिक! इन्हें आँखें दे दे। देखो! फिर भी वे हमारा भला माँगते हैं। अगर आँखें होतीं तो क्या लोग उन्हें फाँसी पर चढ़ाते? इसी तरह अरब के लोगों ने हज़रत मुहम्मद साहिब के बारे में कहा कि यह कुमार्ग (ग़लत रास्ते) पर डालता है। किसी ने उन्हें घर में नहीं आने दिया, भूखे-प्यासे एक ग़ार (गुफा) में जाकर रहे। लोगों ने बहुत तलाश किया, लेकिन वे न मिले। एक हज़रत अबू ज़ाफ़र और एक अबू तालब मक्का पहुँचे और उनसे मिले। इसी

तरह कई महात्मा आये, मगर हमने उनके ज़माने में उन्हें नहीं समझा। अगर आँखें होतीं तो हम उनके साथ यह करते? अगर अब गुरु नानक साहिब आ जायें तो हम उनकी क़द्र करने को तैयार नहीं। क्यों? क्योंकि हमारी वे आँखें नहीं, जिनसे उन्हें पहचान लें। अब स्वामी जी फ़रमाते हैं कि हम सतगुरु के बराबर किसी को नहीं समझते क्योंकि जो एहसान सतगुरु ने हम पर किया है, और किसी ने नहीं किया।

जब जिव सरन गुरू की आवे। कर्म धर्म और भर्म नसावे॥

अब कहते हैं कि जब शिष्य सतगुरु की शरण में आ जाये, नाम ले ले, फिर इसे क्या करना चाहिए? फिर आप ही जवाब देते हैं कि जो कुछ तीर्थ-व्रत, धर्म, जप-तप यह करता है, सारे छोड़ दे। जिस तरह जब कोई नयी ब्याही स्त्री आती है तो ससुराल वाले उसका पहला नाम भी नहीं रहने देते, बल्कि नया नाम रखते हैं, इसी तरह अगर यह पिछले सारे कर्म-धर्म छोड़ दे तो सतगुरु अन्दर परदा खोल देता है। अगर यह गुरु की हिदायत पर चले तो इसे कुछ भी नहीं करना पड़ता। यह जो 'हाय-हाय' करते हैं, इन्हें चाहिए कि पहले अपना चाल-चलन पवित्र बनायें। हमारे मत में पराई स्त्री को माँ के बराबर समझना है। इससे भी बढ़कर फिर कहते हैं कि जी, हमने शराब पी ली, हमने मांस खा लिया। गुरु का हुक्म तो नहीं माना। गुरु कहता है कि ये चीज़ें न खाओ। अगर यह गुरु का हुक्म माने तो गुरु का शिष्य है। इसके विपरीत, अगर मन के कहे चले तो मन का शिष्य है। ज़िक्र है कि गुरु गोबिन्द सिंह जी का दरबार लगा हुआ था। सिखी (शिष्यत्व) के मज़मून (विषय) पर चर्चा हो रही थी। गुरु साहिब ने कहा कि गुरु का शिष्य कोई-कोई है, बाक़ी सब मन के शिष्य हैं या स्त्री और बाल-बच्चों के। एक शिष्य को आज़माते हुए, जो अपने आप को बड़ा भक्त ज़ाहिर करता या समझता था, कहने लगे कि हमें कपड़े के थान की ज़रूरत है। शिष्य ने अगले दिन दरबार में हाज़िर करने का वायदा किया। जब माथा टेककर शहर में आया और कपड़ा ख़रीदकर

घर गया तो स्त्री ने कहा, "यह कपड़ा कैसा है?" कहता है, "गुरु साहिब के लिए ख़रीदा है, कल दरबार में देना है।" कहती है, "यह तो मैं कभी नहीं दूँगी, बाल-बच्चों के लिए ज़रूरत है। कपड़ा बहुत अच्छा है, गुरु साहिब को और ला देना।" शिष्य कहता है कि बजाज के पास यही एक थान था, इस जैसा और कपड़ा है नहीं। कहती है, "तब तो मैं ज़रूर यही रखूँगी।" उसने हर तरह से कोशिश की, लेकिन स्त्री के सामने उसकी एक न चली। उसने यह कहकर टाल दिया कि गुरु साहिब को क्या पता है! कल जब पूछेंगे तो कह देना कि अभी मर्ज़ी का कपड़ा नहीं मिला। शिष्य चुप रहा। अगले दिन जब दरबार में गया तो गुरु साहिब ने पूछा कि कपड़ा लाये हो? कहता है, "नहीं जी, अभी नहीं मिला।" उसकी स्त्री भी सत्संग में बैठी थी। उठकर खड़ी हो गयी और बगल से थान निकालकर सामने रख दिया। सो, अगर यह गुरु के हुक्म में चले तो सीधा सचखण्ड पहुँच जाता है, लेकिन हमें बुरी आदतें पड़ी हुई हैं। जो मन करवाता है, वही हम करते हैं।

जो गुरु मारग देहिं लखाई। सोइ निज कर्म धर्म हुआ भाई॥

कहते हैं, जो रास्ता गुरु बताता है कि इस राह से जा, इस तरह अभ्यास कर, ऊपर चढ़, इसके लिए वही कर्म है, वही धर्म है, वही दीन-ईमान है। वही प्रेम-प्यार के साथ करे। गुरु तो सबकुछ बताता है, पर मन अन्दर नहीं जाने देता। अगर यह मन का कहना न माने तो इसे कोई रोकनेवाला नहीं। जो मैल अन्दर भरा हुआ है, पुराने संस्कार हैं, वे अन्दर जाने ही नहीं देते। ये जितने आदमी वक़्त लेते हैं, कहते हैं, "जी, मन नहीं लगता।" आप मन के शिष्य बने हुए, मन के कहे लगते हो, मन के कहे खाते-पीते, विषय-विकार भोगते हो। अगर गुरु का कहना माना तो गुरुमुख बन गये। अगर मन का कहना माना तो मनमुख बन गये। जब तक मन की दोस्ती नहीं छोड़ते, अन्दर कैसे जाओगे? आप मन के कहने पर चल रहे हो। मन आपका दुश्मन है। जो दुश्मन का कहना माने, उसका बचाव किस तरह हो? नरकों में कौन ले जाता है? 'मन'। जो मन का कहना माने, वह दोष किस

पर लगाये? गुरु कहता है कि शराबों-कबाबों, विषय-विकारों को छोड़ दे, काम-क्रोध, आसा-मनसा छोड़ दे और नाम के साथ प्यार लगाकर, अन्दर चढ़कर परदा खोल। अगर गुरु का कहना न माने, मन का कहना माने, वह आज भी मरा, कल भी मरा, क्योंकि मन हमारा दुश्मन है। लेकिन दुनिया की मुहब्बतें इसके दिल में फैली हुई हैं। अगर मैले बर्तन में दूध डालो, फट जायेगा। कबीर साहिब फरमाते हैं:

> कबीर साचा सतिगुरु किआ करै जउ सिखा महि चूक॥
> अंधे एक न लागई जिउ बांसु बजाईऐ फूक॥[8]

सतगुरु ने राह बता दी, अगर इसकी रूह क़बूल नहीं करती तो गुरु का क्या क़ुसूर? रूह मन की ग़ुलाम बनी हुई है, फिर इसका बचाव किस तरह हो? सत्संग ही मन को वश में करने की दवा है, लेकिन हम ज़हर भी खाते जाते हैं और 'हाय-हाय' भी करते जाते हैं। अगर मन की मैल को धोयेंगे, तभी धुलती जायेगी, नहीं तो सत्संग में आने का क्या फ़ायदा है?

गुरु आज्ञा से जो शिष करई। वह करतूत भक्ति फल देई॥

अगर शिष्य गुरु की आज्ञानुसार कमाई करता है, गुरु के कहे अनुसार सिमरन करता है, भजन करता है, ध्यान करता है तो गुरु उसकी हामी भरता है। अगर शिष्य गुरु का कहना नहीं मानता तो गुरु का क्या क़ुसूर? शिष्य की मौत के वक़्त गुरु आये या न आये, उसकी मर्ज़ी है। क्या कहते हैं गुरु नानक साहिब:

> गुरु पीरु हामा ता भरे जा मुरदारु न खाइ॥[9]

एक महात्मा बाज़ार में जा रहा था, रास्ते में एक दुकानदार ने खजूर रखी हुई थी। मन ने कहा, "यह खजूर लेनी चाहिएँ।" उसने मन को समझाया, मगर मन दुनिया के विषय-विकारों का आशिक़ है। जब रात

को सोया, खजूर सामने। रात के पिछले पहर में जब भजन पर बैठा तो खजूर सामने, मन भजन में न लगा। हारकर सुबह जंगल में गया, एक गट्ठर लकड़ियों का, जितना कि उठा सकता था, उठाया। चलता है, गिर पड़ता है, फिर चलता है, गिर पड़ता है। मन से कहा कि खजूर भी तो तुझे ही खानी है। मुश्किल से चलकर शहर में पहुँचा, लकड़ियाँ बेचीं, जो कुछ पैसे मिले उनसे खजूर ख़रीदकर जंगल में ले गया। खजूर सामने रखी, फिर मन से कहता है कि आज तूने खजूर माँगी, कल को अच्छे-अच्छे खाने, अच्छे-अच्छे कपड़े, फिर स्त्री माँगेगा, जब स्त्री आयी तो बाल-बच्चे होंगे, तब तो मैं तेरा ही हो गया। एक मुसाफ़िर जा रहा था, उसको बुलाकर कहता है, ''ले भाई, ये ख़जूर ले जा।'' अगर मन का कहना न मानो तो कुछ हासिल करके ले जाओगे, अगर मानो तो मनमुख बन जाओगे। दुनिया में दो ही राहें हैं—एक गुरुमुख की दूसरी मनमुख की। अगर शिष्य गुरु की आज्ञा में चलता है तो उसके बराबर कोई भक्ति नहीं। सतगुरु का हर हुक्म शिष्य के लिए भक्ति है। पहले भी कई दफ़ा अर्ज़ की गयी है कि ख़्वाजा हाफ़िज़ साहिब कहते हैं:

ब-मै सज्जादा रंगीं कुन गरत पीरे-मुग़ां गोयद,
किह् सालिक बेख़बर न बवद ज़ राहो-रस्मे-मंज़िल हा।[10]

अगर मुर्शिद कहता है कि अपना नमाज़ वाला मुसल्ला (नमाज़ के वक़्त बिछानेवाली दरी) शराब जैसी हराम चीज़ में रँग ले तो रँग ले। हालाँकि ज़ाहिरी तौर पर यह नाजायज़ (अनुचित) हुक्म है, लेकिन शिष्य के लिए जायज़ (उचित) है। शिष्य या तालिब को ख़बर नहीं कि इसमें उसकी क्या बेहतरी है, मगर गुरु बा-ख़बर है। अगर वह ऐसा हुक्म देता है तो शिष्य के फ़ायदे के लिए। इसी तरह गुरु नानक साहिब ने अपने शिष्यों को आज़माते हुए कहा कि मुर्दा खाओ! क्या, यह कोई जायज़ हुक्म था? मगर जब मुर्दे पर से कपड़ा उतारा गया तो पता लगा कि वह मुर्दा नहीं, बल्कि मोहन-भोग है। अब जिन्होंने हुक्म नहीं माना था, वे पछताने लगे। गुरु गोबिन्द सिंह जी ने जब शिष्यों का इम्तिहान लेना चाहा

तो पाँच हज़ार में से सिर्फ़ पाँच ही निकले। अगर शिष्य गुरु के हुक्म में चले तो इसे कोई डर नहीं, बल्कि फ़ायदा ही फ़ायदा है। कई लोगों को लगता है कि गुरु नाजायज़ आज्ञा देता है, लेकिन वह नाजायज़ आज्ञा देता ही नहीं। अगर गुरु कोई ऐसा हुक्म देता है, जो अभी हमारी समझ में नहीं आता, उसका वह ज़िम्मेदार है। वह सबकुछ जानता है। अन्त में उसके हुक्म में चलने में ही हमारा फ़ायदा है।

ताते पिरथम गुरु को खोजो। शब्द बतावें सो गुरु सोधो॥

हमारा पहला धर्म यह है कि गुरु की तलाश करें। पूरा गुरु कहीं भाग्य से मिलता है, वैसे गुरु हिन्दुओं में भी हैं, मुसलमानों में भी हैं। आजकल के पढ़े-लिखे लोग 'गुरुडम' से नफ़रत करते हैं, मगर जो खोजी हैं, वे अपनी तलाश का सिलसिला उस वक़्त तक बराबर जारी रखते हैं, जब तक कि पूरा गुरु नहीं मिल जाता। मैंने ख़ुद बाईस साल खोज की है। सिक्खों के घर पैदा हुआ; छोटी उम्र में ही ग्रन्थ साहिब पढ़ाया गया। बाणी जगह-जगह पूरे गुरु की तलाश पर ज़ोर देती है। कई महात्मा मिले, बातचीत की, मगर तसल्ली न हुई। जब वक़्त आया, घर बैठे महाराज बाबा जैमल सिंह जी मिल गये। जो ख़ुद पाँच शब्द की कमाई करता है और अपने शिष्यों को पाँच शब्द का भेद देता है, वह पूरा गुरु है। जब भाग्य से मिल जाये, उससे राह लेकर ऊपर चढ़ो। हमें उसके साथ रिश्ते-नाते नहीं जोड़ने। जिस तरह स्कूलों, कॉलेजों में मास्टर, प्रोफ़ेसर, हिन्दू भी होते हैं, मुसलमान भी, हम उनसे शिक्षा लेने से इनकार तो नहीं करते। कबीर साहिब मुसलमान जुलाहे थे, उनके शिष्य राजा बीर सिंह, बघेल सिंह क्षत्रिय राजपूत थे।

अस गुरु सम कोइ और न आना। गुरू मिले फिर कहा कमाना॥

कहते हैं, ऐसे गुरु के बराबर और कोई नहीं। जो महात्मा हुए हैं, जैसे गुरु नानक साहिब, कबीर साहिब, दादू साहिब, पलटू साहिब, उनकी भी पाँच

शब्द की ही राह थी। यही पूरे गुरु की पहचान है। जब ऐसा सतगुरु मिल जाये तो उससे राह ले लो। यह न देखो कि वह हिन्दू है या मुसलमान, सिक्ख है या ईसाई या किसी और मज़हब का। उसकी देह का ख़याल न करो! जिस तरह जब हम तालीम लेने जाते हैं, तब यह ख़याल नहीं करते कि मास्टर ईसाई है या सिक्ख है या हिन्दू है, बल्कि तालीम ले लेते हैं। इसी तरह जब इतिहास पढ़ो तो पता लगता है कि गुरु रविदास जी जूते गाँठने का काम करते थे, मेवाड़ के राजघराने की मीरा बाई उनकी सेविका थी। हमें उन महात्माओं के साथ रिश्ता-नाता नहीं करना, न ही मिलकर खाना है, बल्कि उनसे राह लेनी है, और कुछ नहीं करना। अब कहते हैं, अगर कोई शब्द-अभ्यासी सतगुरु मिल जाये तो उससे नाम लेकर कमाई करो, और कुछ करने की ज़रूरत नहीं।

या ते मो मत निश्चय येही। गुरु बिन दूसर और न सेई॥

अब हुज़ूर स्वामी जी फ़रमाते हैं कि हमारा अपना ख़याल यह है कि सिवाय गुरु के हमारा और किसी से प्यार ही नहीं। गुरु के बराबर न हाकिम है, न बादशाह और न कोई और। यही गुरु अर्जुन साहिब कहते हैं:

गुरू गुरू गुरु करि मन मोर॥ गुरू बिना मै नाही होर॥[11]

फिर कहते हैं:

गुरु परमेसरु एको जाणु॥[12]

वे लिहाज़ नहीं करते, बल्कि बेधड़क कह देते हैं कि हम तो सिवाय गुरु के किसी की पूजा करते ही नहीं। हमारा जप-तप, पूजा, मतलब जो कुछ है, गुरु ही है।

जाके हिरदे गुरु परतीती। काल कर्म वा से नहिं जीती॥

जो गुरु पर भरोसा रखता है, गुरु के साथ प्यार करता है और गुरु के हुक्म के मुताबिक़ कमाई करता है, उसे न तो यमों का डर है, जो जान

निकालते हैं और न उससे धर्मराय ही हिसाब माँगता है। शिष्य की मौत के वक़्त कभी यमदूत नहीं आते, सतगुरु आता है और अपने साथ ले जाता है, अगर शिष्य गुरु के हुक्म के मुताबिक़ कमाई करता है। जब गुरु इससे नाम की कमाई करवाकर पारब्रह्म में ले जाता है, वहाँ अमृतसर है, जिसमें नहाकर करोड़ों जन्मों के पाप नाश हो जाते हैं। यह अमृतसर में स्नान करता है। अब इसे यमों का क्या डर और चौरासी का क्या डर? गुरु अमर दास साहिब कहते हैं:

नानक जिन्ह कउ सतिगुरु मिलिआ तिन्ह का लेखा निबड़िआ॥[13]

फिर किसे आना है और किसे जाना है, पर अगर शिष्य सतगुरु के हुक्म में रहे।

सब के सिर पर उस का डंका। काहू की उसके नहिं संका॥

कहते हैं, जब गुरु मिला, परदा खोल लिया, फिर शक कैसा? अगर सामने परदा खुल जाये, रूह खण्डों-ब्रह्माण्डों पर चली जाये, तब भ्रम कैसा? गुरु के मिलाप से सारा भ्रम दूर हो गया।

बड़े बड़े उधरें उस संगा। गुरुमुख है इन सब से चंगा॥

कहते हैं, बड़े-बड़े गुरुमुख की संगति करके भूमिया चोर, सज्जन ठग जैसे कई तर गये। किसकी कृपा से? गुरु की कृपा से। जिसके हृदय में गुरु ने पाँच शब्द का भेद डाल दिया, उसे रहना ही नहीं। चाहे इस जन्म में जाये, अगले जन्म में जाये, उससे भी अगले में जाये। बीज नाश नहीं होगा, वह पेड़ बनेगा और ज़रूर बनेगा, मगर स्वाद तभी है, अगर जीते-जी खण्डों-ब्रह्माण्डों पर चढ़े। बड़ाई तो उसकी है, जो कमाई करके परदा खोले। यह गुरुमुखों का काम है। हमें शर्म आनी चाहिए, अपने ऐब-पाप छोड़ने चाहिएँ और नाम की कमाई करनी चाहिए।

गुरुमुख की गति सब से भारी। गुरुमुख कोटिन जीव उबारी॥

गुरुमुख सबसे अच्छा क्यों है? क्योंकि गुरुमुख की गति सबसे ऊँची है। गुरुमुख को इतनी ताकत होती है कि वह अपने कमाये हुए नाम का एक कण देकर करोड़ों जीवों को पार कर देता है। यही गुरु अर्जुन साहिब कहते हैं:

गुरमुखि कोटि उधारदा भाई दे नावै एक कणी॥[14]

जब राजा जनक स्थूल शरीर त्यागकर अपने धाम को जा रहा था, राह में क्या देखता है कि नरकों में जीव जल रहे हैं और बड़ी चीख-पुकार हो रही है। उसने पहले यमदूतों से पूछा कि ये क्यों जल रहे हैं? फिर धर्मराय से कहा कि इनका छुटकारा कैसे हो सकता है? धर्मराय ने कहा कि अगर कोई महात्मा अपने नाम की कमाई दे तो ये आज़ाद हो सकते हैं। तब राजा जनक ने वहाँ ढाई घड़ी के तप का फल दिया। वे सभी जीव नरकों से आज़ाद होकर मातलोक में आकर मनुष्य बने। तुलसी साहिब कहते हैं:

धन धन राजा जनक है, जिन सुमिरन किया बिबेक॥
एक घड़ी के सुमिरते, पापी तरे अनेक॥

राजा जनक योगीश्वर था, ज्ञानी था, मगर आगे क्या कहते हैं:

ऐसा सुमिरन जानि के, संतन पकड़ी टेक।

कि जो क़ायदा राजा जनक का था, वह सन्तों का नहीं। सन्तों का तरीक़ा बड़ा ऊँचा है। गुरु साहिब का क्या तरीक़ा था:

नानक सुमिरन सार है, बिसरे घड़ी न एक॥[15]

गुरु नानक साहिब और अन्य महात्माओं और स्वामी जी का तरीक़ा सार-शब्द का है, जो पारब्रह्म से ऊपर मिलता है। कबीर साहिब फ़रमाते हैं:

जाप मरै अजपा मरै, अनहद हूँ मरि जाय।
सुरत समानी सबद में, ता को काल न खाय॥[16]

अब कहते हैं कि इसे चाहिए कि यह शब्द के साथ नाता जोड़ दे। अगर नाम लेकर रख छोड़ा तो क्या फ़ायदा? जिस तरह कोई बीमार डॉक्टर से दवाई लाकर आले में रख छोड़े, खाये नहीं तो फ़ायदा नहीं होता। अगर वह डॉक्टर को गालियाँ दे तो डॉक्टर का क्या क़ुसूर? क़ुसूर उसका अपना है। कई सत्संगी शिकायत करते हैं कि नाम लिये बीस साल हो गये, अन्दर एक चिनगारी भी नहीं दिखायी दी। दिखायी किस तरह दे? हृदय में तो बेटे-बेटियों का प्यार भरा हुआ है, काम-क्रोध आदि डाकू बस रहे हैं, नाम कहाँ खड़ा हो? जब तक इन सबको निकालकर नाम न जपे, कुछ भी नहीं बनता। सुथरा एक फ़क़ीर हुआ है। किसी ने उससे पूछा कि घर की छत किस तरह खड़ी रहती है? कहता है, ''खम्भों के ज़रिये।'' इसी तरह हमें नाम का खम्भा लगाना है। हम अपने आप को कभी इल्ज़ाम नहीं देते, बल्कि हमेशा दूसरों पर इल्ज़ाम लगाते हैं, हालाँकि क़ुसूर हमारा अपना है। जब तक यह अपने आप पर इल्ज़ाम नहीं लेता, इसका बनता कुछ नहीं। जो दूसरों पर इल्ज़ाम लगाते हैं, वे ख़ाली आये और ख़ाली चले गये।

कहाँ लग महिमा गुरुमुख गाऊँ । कोई न जाने किस समझाऊँ॥

अब कहते हैं, गुरुमुखों की महिमा क्या करें? हमारे पास वह ज़बान नहीं। कूँजों की अवस्था वे ही जानते हैं, जो कूँजों के साथ उड़ते हैं। कबूतरों और कौओं को क्या पता कि कूँजें किस देश से आती हैं। जो अन्दर जाते हैं, वे गुरुमुखों की अवस्था जानते हैं। जो आँखों से बाहर बैठे हुए हैं, वे क्या जानें कि गुरुमुख कहाँ जाते हैं! लोगों ने गुरु नानक साहिब को कसूर शहर में नहीं आने दिया कि यह कुमार्गी है! ग़लत रास्ते पर डालता है। खडूर ख़हिरिआं में, जहाँ गुरु अंगद साहिब रहते थे; एक तपस्वी योगी भी रहता था, जो ऋद्धियाँ-सिद्धियाँ और करामातें भी जानता था, मगर जब गुरु साहिब ने सत्संग और नामदान की बख़्शिश करनी शुरू की तो योगी के शिष्य और सेवक दिनों-दिन घटने लग गये। वह बहुत दुःखी हुआ और मन ही मन गुरु साहिब से दुश्मनी रखने लगा। मालिक की मौज, एक साल बारिश न हुई।

सन्त तो मालिक की रज़ा में राज़ी रहते हैं और अपने सेवकों को उसकी रज़ा पर चलने का उपदेश देते हैं। पानी का अभाव आ पड़ा तो किसान और ज़मींदार योगी के पास गये और विनती की कि इस बार बारिश नहीं हुई, कृपा करो और पानी बरसा दो। योगी ने इस मौक़े का फ़ायदा उठाया और कहा कि तुम्हारे नगर में जो गुरु बनकर बैठा है और पुण्य-दान, धर्म-कर्म कुछ नहीं करता, जब तक उसे नगर से बाहर नहीं निकालोगे, बारिश कभी नहीं होगी। योगी के श्रद्धालुओं ने गुरु अंगद देव जी के आगे अपना ख़याल प्रकट किया। गुरु साहिब चुपचाप मालिक की रज़ा में मस्त, उठ खड़े हुए और नगर से बाहर आकर अपना डेरा लगा लिया।

कुछ अरसा इसी तरह गुज़र गया, बारिश नहीं हुई। श्रद्धालु बार-बार योगी के पास जाते और पुकार करते। योगी बहुतेरे जन्तर-मन्तर करता और लोगों को टाल देता, मगर बारिश न होनी थी, न हुई। अमर दास जी अपने गुरु के गुरुमुख सेवक थे। जब उन्हें पता लगा कि योगी के कहने पर नगर के जमींदारों ने बे-अदबी की है तो आप बहुत दुःखी होकर नगर में आये और ज़मींदारों से कहा, ''आप क्या चाहते हो?'' उन्होंने कहा, ''बारिश।'' आपने कहा, ''इस योगी को जिस-जिस खेत में ले जाकर खड़ा करोगे, वहाँ-वहाँ बारिश हो जायेगी।'' अन्धे को क्या चाहिए? दो आँखें। ज़मींदारों ने न आव देखा न ताव, योगी को घर से निकालकर आगे कर लिया और खींचते-घसीटते अपने खेतों की तरफ़ ले गये। उसने बहुत शोर मचाया, मगर सुने कौन! ज़मींदारों को तो अपने काम से मतलब था। योगी का खेतों में पहुँचना था कि बारिश होनी शुरू हो गयी। अब हरएक ज़मींदार यही चाहता था कि मेरे खेत में बारिश हो। इसलिए किसी ने बाँह खींची, किसी ने टाँग। नतीजा यह हुआ कि ग़रीब के टुकड़े-टुकड़े हो गये, मगर जिस-जिस खेत में उसका छोटे से छोटा अंग भी पहुँचा, वहाँ ख़ूब बारिश हुई। ज़मींदार ख़ुश, मगर गुरु अंगद साहिब नाराज़। जब अमर दास जी अपने गुरु के पास आये तो आपने पीठ फेर ली। अमर दास जी ने दूसरी तरफ़ जाकर उनके दर्शन करने चाहे, मगर आपने उस तरफ़ से भी मुँह फेर लिया। आख़िर बाबा बुड्डा ने माफ़ी दिलवायी।

मैं जब बाहर जाता हूँ तो लोग कहते हैं कि राधास्वामी ने बड़ा रुपया इकट्ठा कर लिया है! सन्तों को धन का क्या करना है। ग़रीबों को खिलाते हैं। अब रात को आकर देखें कि कितने आदमी सोते हैं, लंगर का कितना ख़र्च है। अब आपकी कमाई आपके सुख के लिए लगायी जाती है। आपस में अमीर-ग़रीब का मिलकर गुज़ारा हो जाता है, लेकिन दुनिया में निन्दा-चुग़ली तो हर वक़्त होती रहती है। हमारा काम निन्दा करना नहीं। मतलब तो इतना ही है कि अगर परमार्थ में जाना है तो लोग ताने-मेहने ज़रूर देंगे, निन्दा-चुग़ली भी करेंगे, हमारा काम भजन-सिमरन पर ज़ोर देना है। जब गुरु आपका चाल-चलन ठीक देखेगा, ख़ुद आपके साथ प्रेम-प्यार करेगा। गुरुमुखों की महिमा कही नहीं जाती, गुरुमुख की महिमा गुरुमुख ही जानते हैं।

जग में पड़ा काल का घेरा। जीव करें चौरासी फेरा॥

कहते हैं, यह सारी त्रिलोकी काल के अधीन है। काल अपने भक्तों को स्वर्ग-बैकुण्ठ, इन्द्रपुरी और अपनी मुक्ति भी देता है, पर लौट-लौट कर अपने दायरे में ही रखता है। 'तपो राज, राजो नरक'। सिवाय सन्तों के, न कोई त्रिलोकी से पार गया है, न जायेगा। चौरासी लाख क़िस्म की योनियाँ हैं। जीव इनमें ही धक्के खाता फिरता है।

जो चौरासी छूटन चावें। तो गुरुमुख सेवा चित लावें॥

कहते हैं, अगर चौरासी से छूटना चाहता है, जन्म-मरण ख़त्म करना है तो उसे चाहिए कि किसी गुरुमुख की शरण में जाये और जो गुरुमुख कहता है, उसके मुताबिक़ कमाई करे।

और काम सब देहिं बहाई। शब्द गुरु की करें कमाई॥

कहते हैं, और सब काम छोड़कर पहले सुरत को शब्द के साथ जोड़ने की कमाई करो। पहले रात को तीन बजे उठकर छः बजे तक भजन करो,

फिर कोई और काम करो। दुनिया के कामों का हर्ज नहीं होता, सिर्फ़ तीन घण्टे नींद ख़राब होती है। बाक़ी सारा दिन काम करने के लिए पड़ा है।

कोटिन जन्म रहे कोइ काशी। बेद पाठ और तीरथ बासी॥

क्या हिन्दू, क्या मुसलमान! जितने भी महात्मा सचखण्ड गये, वे होका देते गये कि बिना नाम के मुक्ति नहीं। कहते हैं, अगर करोड़ जन्म तीर्थों में, काशी में ठोकरें खाता रहे, वेदों का पाठी भी हो, बनता कुछ नहीं। तीर्थों पर शान्ति नहीं, तीर्थों पर मुक्ति नहीं।

जप तप संजम बहु बिधि करई। भेख बनावे विद्या पढ़ई॥

कहते हैं, लोग एक बार तीर्थ में नहाकर ख़याल करते हैं कि मुक्ति हो गयी, मगर नहीं। किसी भी पानी में पापों की मैल धोने की ताकत नहीं। एक जन्म तो क्या, चाहे कोई करोड़ों जन्म भी काशी में रहकर विद्या हासिल करे, अन्दर परदा नहीं खुलता, पापों की मैल नहीं धुलती। कर्म कब नाश होते हैं? जब यह अन्दर के अमृतसर में जाकर नहाये, यों ही नहीं। जब तक यह उसमें नहीं नहाता, चाहे करोड़ों ग्रन्थ पढ़े, मुक्ति-उक्ति कुछ नहीं। अगर वेदों के पाठ से मुक्ति हो जाती तो रावण की सबसे पहले होती, जो चार वेदों का पढ़ा हुआ ही नहीं बल्कि टीकाकार पण्डित भी था। रावण के वेद-भाष्य के मुक़ाबले में कोई वेद-भाष्य नहीं, वही रावण, जिसका पुतला बनाकर हम हर साल जलाते हैं। सो, कर्मकाण्ड में मुक्ति नहीं, बल्कि मुक्ति नाम में है। हम कहते हैं कि मुक्ति बातों से ही मिल जाये, मगर यह बातों का मज़मून (विषय) नहीं, बल्कि क़ुर्बानी करने का है, खण्डों-ब्रह्माण्डों पर चढ़ने का है। कई कहते हैं कि जी, बीस साल हो गये नाम लिये हुए, बना कुछ नहीं। मैं पूछता हूँ कि भजन पर कितनी देर बैठते हो? कहते हैं, "जी आधा घण्टा।" मैं कहता हूँ कि आधे घण्टे से तो कुछ भी नहीं बनता, चाहे सारी उम्र बैठे रहो। ज़िक्र है, कहीं एक मिरासी भूल से मस्जिद में चला गया। वहाँ पाँच

नमाज़ी मौजूद थे। उन्होंने कहा, ''आओ, वुज़ू करके नमाज़ पढ़ें।'' कहता है, ''नमाज़ से फ़ायदा?'' उन्होंने कहा, ''नमाज़ पढ़ने से चेहरे पर नूर आता है।'' कहता है, ''बहुत अच्छा! अभी तो मुझे काम है, घर जाकर ज़रूर पढ़ूँगा।'' वे पाँचों आदमी तो नमाज़ पढ़ने में लग गये, यह घर आ गया। रात में कहीं तवा उलटा पड़ा हुआ था। जब रात के पिछले पहर में उठा तो सोचता है कि अगर वुज़ू किया तो नशा टूट जायेगा—क्योंकि नशा करने की आदत पड़ी हुई थी—नमाज़ भी ज़रूर पढ़नी है, ताकि चेहरे पर ख़ुदा का नूर आये, फिर बिना वुज़ू नमाज़ जायज़ (उचित) भी नहीं। सोच-सोच कर कहता है, ''चलो मिट्टी का वुज़ू कर लें।'' यह सोचकर अँधेरे में ज़मीन पर हाथ मारकर मुँह पर फेरता है। नीचे तवा पड़ा हुआ था, हाथ तवे पर लगा। प्रेम से वुज़ू करके नमाज़ पढ़ी। जब दिन चढ़ा तो मिरासिन से पूछता है, ''भलीमानस! देख, चेहरे पर नूर आया है।'' वह कहती है, ''अगर तो नूर का रंग काला है, तो घटा बनकर आया है और अगर नूर का रंग गोरा है या उसका कोई और रंग है तो पहला रंग भी चला गया है।'' यही हाल हमारा है। हम नाम लेकर कमाई नहीं करते। फिर अन्दर कैसे जायें? परदा कैसे खुले? कहते हैं, करोड़ों जप-तप करो, करोड़ों विद्या पढ़ो, करोड़ों भेष कर लो, जब तक अन्दर नहीं जाते, शान्ति नहीं आती।

पिछलों की जो धारें टेका। जिन को कभी आँख नहिं देखा॥

दुनिया एक और ही ग़लती में पड़ जाती है। जो स्कूल-मास्टर पचास साल हुए गुज़र गया, अगर आप कहो कि हमारे लड़के को पढ़ाये तो हो सकता है? हरगिज़ नहीं। अगर कोई कहे कि मेरे मुकद्दमे का फ़ैसला महाराजा रणजीत सिंह करेगा, यह कभी नहीं हो सकता, मौजूदा मजिस्ट्रेट ही करेगा। अगर कोई औरत कहे कि मुझे राजा विक्रमादित्य से शादी करनी है तो विक्रमादित्य आकर औलाद पैदा नहीं करेगा। औलाद पैदा करने के लिए मौजूदा पति की ज़रूरत है। अगर कोई कहे कि मेरा बच्चा बीमार है, धन्वन्तरि वैद्य आकर इलाज करे तो वह नहीं आयेगा, मौजूदा हकीम

या डॉक्टर ही आकर इलाज करेगा। इसलिए वक़्त का हाकिम, वक़्त का डॉक्टर, स्त्री का वक़्त का पति और वक़्त का गुरु ही होना चाहिए। जो महात्मा गुज़र चुके हैं, वे अपने वक़्त में समर्थ थे। उनके वक़्त में जो उनकी शरण में आये, उन्होंने उनको अपना रूप बना लिया। जिस तरह जब गुरु नानक साहिब आये, जो-जो उनकी शरण में गये, गुरु साहिब ने उनको गुरु नानक ही बना लिया। इसी तरह जो कबीर साहिब की शरण में गये, उन्हें कबीर साहिब ने कबीर ही बना लिया। जिन महात्माओं को हमने देखा ही नहीं, जिन्हें गये हुए हज़ारों साल हो गये, वे हमें कुछ नहीं दे सकते। लोग पिछलों को पकड़कर बैठे हैं, पर अब उन्हें आना नहीं।

पोथिन में सुनी उनकी महिमा। टेक बाँध मन सब का भरमा॥

पुराने महात्माओं की किताबें-पोथियाँ पढ़कर टेक बाँध लेते हैं। कोई कहता है कि मैं रामचन्द्र जी का उपासक हूँ। जब कि कई हज़ार साल हो गये, त्रेता युग में रामचन्द्र जी आये थे। कोई किसी का उपासक है, कोई किसी का। अगर उन महात्माओं को फिर यहाँ भूतों की तरह फिरना था तो नाम जपने का क्या फ़ायदा था? वे शब्द में से आये, पचास-सौ साल दुनिया का काम किया और शब्द में लीन हो गये। अब वे तो अपना काम करके चले गये, यह उन्हें अब यहाँ ढूँढ़ता है। अब तो कोई मौजूदा महात्मा ही अन्दर की राह बता सकता है। एक बार मैं फ़र्रुख़ाबाद गया। एक बूढ़ा गंगा के किनारे आवाज़ें लगा रहा था, "गंगा मैय्या! गंगा मैय्या!" मैंने पूछा, "बाबा, तुम्हें आवाज़ें लगाते कितना वक़्त हो गया है?" कहता है, "चालीस साल हो गये।" मैंने कहा, "कभी बोली है?" कहता है, "कभी बोली तो नहीं।" चालीस साल हो गये, गंगा नहीं बोली!

अब इन को जो कोइ समझावे। टेक छोड़ते जिव सा जावे॥

अब अगर उन लोगों को समझाया जाये कि तुम्हारे अन्दर मालिक है, किसी महात्मा से राह लेकर अन्दर जाओ तो वे नहीं मानते, बल्कि कहते

हैं कि हमारे दादा-परदादा यही कुछ करते आये हैं, क्या वे बेवक़ूफ़ थे? ऐसे लोग लकीर के फ़क़ीर हैं।

कोई शिव और कोई विष्णु की। कोई राम और कोई कृष्ण की॥

राम और कृष्ण को हुए युग बीत गये। क्या अब वे कभी किसी से आकर मिले हैं? नहीं, कभी नहीं। पर अगर अन्दर जायें तो राम, कृष्ण भी मिलते हैं, ब्रह्मा, विष्णु, शिव सब मिल जाते हैं। ये बाहर मन्दिरों में ब्रह्मा, विष्णु, शिव को ढूँढ़ते हैं।

कोई देवी कोई गंगा जमना। कोई मूरत कोई चारों धामा॥

कोई देवी-देवताओं की पूजा करता है, कोई गंगा-जमुना में जाकर स्नान करता है, कोई मूर्ति-पूजा करता है और कोई चारों धाम जाता है। इसी तरह नहाते और कई कर्मकाण्ड करते हुए उम्र हो गयी, मगर रहे ख़ाली के ख़ाली। न रूह खण्डों-ब्रह्माण्डों पर चढ़ी, न मनुष्य-जन्म का फ़ायदा उठाया। जैसे कुत्ते-बिल्ले पेट भरकर चले गये, वैसे ही वे मनुष्य ख़ाली के ख़ाली चले गये।

कोई मथुरा कोई टेक मुरारी। मदन मोहन कोई कुँज बिहारी॥

कोई मथुरा की टेक लेता है, कोई मुरारी की टेक लेता है। इसी तरह, कोई मदनमोहन की और कोई कुंजबिहारी की। दुनिया में बेशुमार मज़हब भरे पड़े हैं। वागड़* में एक मेला लगता है, जिसमें एक लाख के क़रीब आदमी जमा होते हैं। जब देखा तो पूछा कि यहाँ कौन महात्मा हुआ है? लोगों ने कहा, "जी, एक गोगा राजपूत हुआ है जो अब साँप बना बैठा है, उसकी पूजा होती है।" इसी तरह सारा संसार बहा जा रहा है।

---

* वागड़ क्षेत्र के अन्तर्गत कई स्थानों पर गोगा पीर को साँपों के देवता के रूप में पूजा जाता है।

कोई गोकुल कोई बलभाचारी। कोइ कंठी माला गल धारी॥
कोई अचार कोई संध्या तर्पन। गया गायत्री करें समर्पन॥

लोगों ने अलग-अलग भेष बनाकर जन्म बरबाद कर लिया। किसी की किसी भेष में उम्र बीत गयी, किसी की किसी में। जैसे कोई संध्या करने लगा तो सारी उम्र संध्या ही करता रहा। उनसे पूछा कि कभी अन्दर रोशनी हुई है? कहते हैं, कोई नहीं। और कई उपाय करनेवाले मिलते हैं, उनसे पूछा कि कभी अन्दर रोशनी हुई? कभी परदा खुला? कहते हैं, ''जी, कोई नहीं।''

कोई गीता कोई भागवत पढ़ते। कथा पुरान नेम से सुनते॥

गीता एक अच्छी किताब है, जिसमें ज्ञान की तालीम है। दुनिया में मन और बुद्धि के विचार का ज्ञान है। सारी उम्र पढ़ते रहे। न अन्दर गये, न कृष्ण भगवान् के दर्शन हुए। हम पढ़ने से मुक्ति समझते हैं, पढ़ने से मुक्ति नहीं होती, बल्कि जो किताबें कहती हैं, उनके मुताबिक़ अन्दर जाने से मुक्ति होती है। जिस तरह कोई खाना बनाने की किताब हो, अगर सारा दिन पढ़ते जायें कि हलवा ऐसे बनता है तो न पेट भरता है, न स्वाद आता है, लेकिन अगर किताब के मुताबिक़ खाना बना लो तो पेट भी भरेगा और स्वाद भी आयेगा। बहुत-सी दुनिया इसी धोखे में पड़ी हुई है कि किताबें पढ़ने से मुक्ति हो जाती है। अगर समझाओ तो कोई नहीं मानता बल्कि हमारे कान पर जूँ भी नहीं रेंगती।

क्या दादू क्या नानकपंथी। क्या कबीर क्या पलटू संती॥

सोचने की बात है। दादू साहिब भी होका दे गये, गुरु नानक साहिब भी होका दे गये। इसी तरह कबीर साहिब, पलटू साहिब और कई और महात्मा भी होका देकर चले गये कि तुम्हारे अन्दर नाम है। तुम्हारे अन्दर सचखण्ड है, और अन्य सामान है, किसी महात्मा से राह लेकर, परदा खोलकर अपनी दौलत को सँभाल लो। मगर हमें कभी ख़याल आया है? कोई

नहीं। जो राह गुरु नानक साहिब, कबीर साहिब और अन्य महात्मा बता गये हैं, हम उस राह ही नहीं जाते। फिर मिले किस तरह? अब जो गुरु साहिब की तालीम है, हम उससे करोड़ों कोस दूर रहते हैं। वे कहते हैं कि किसी पूरे गुरु से नाम लेकर उसकी कमाई करो, मगर हम करते ही नहीं। वे अपने वक़्त में होका देकर चले गये। जिस तरह किसी भेड़ों के बाड़े में आग लग जाये, लोग रहम खाकर उनको बाड़े से बाहर निकालते हैं, मगर वे लौट-लौट कर बाड़े में जाती हैं। वे जलकर मर जाती हैं, मगर अपनी सोसायटी (संगति) तो नहीं छोड़तीं। यही हाल हमारा है। महात्मा ने हमें सचखण्ड पहुँचाने के लिए मल-मूत्र का चोला पहना, मेहनत की, दुःख उठाये, लेकिन जो राह वे बताते हैं, क्या हम उस पर चलते हैं? कोई नहीं।

सब मिल करते पिछली टेका। वक्त गुरू का खोज न नेका॥

हम पुरानी लीक पीटते चले आते हैं और जो हमारी किताबें, ग्रन्थ-पोथियाँ और अन्य महात्मा कहते हैं कि जाओ किसी महात्मा के पास! वह हम नहीं करते। न किसी महात्मा के पास जाते हैं और न नाम का भेद लेकर उसकी कमाई ही करते हैं।

बिन गुरु वक्त भक्ति नाहिं पावे। बिना भक्ति सतलोक न जावे॥

किसी वक़्त के महात्मा के बिना अन्दर जाने की राह नहीं मिलती और बिना सुरत-शब्द की कमाई के मालिक नहीं मिलता। योगियों ने गुरु नानक साहिब से पूछा कि मालिक किस तरह मिलता है? तो गुरु साहिब ने कहा:

जैसे जल महि कमलु निरालमु मुरगाई नै साणे॥
सुरति सबदि भव सागरु तरीऐ नानक नामु वखाणे॥[17]

जिस तरह कमल का फूल जल में होता है, मगर उस पर जल का असर नहीं होता, जिस तरह मुर्ग़ाबी जल में रहती है, जल में खाती है, मगर जब उड़ती है, सूखी की सूखी। इसी तरह हमें दुनिया में रहते हुए अपनी सुरत

को शब्द के साथ जोड़ना है। सतगुरु भेद देता है कि तेरे अन्दर सुरत है, तेरे अन्दर ही शब्द है, सुरत को शब्द के साथ जोड़कर संसार-समुद्र से पार हो जाओ। मालिक से मिलने के लिए बाहर जाने की ज़रूरत नहीं। अगर कोई पूर्ण वेद, पूर्ण ग्रन्थ है तो आदमी का शरीर है। यही सारी किताबें और अन्य महात्मा कहते हैं। गुरु अमर दास साहिब होका देते हैं:

बिनु गुर दाते कोइ न पाए॥ लख कोटी जे करम कमाए॥[18]

बिना गुरु लाखों-करोड़ों उपाय करो, कुछ नहीं बनता। गुरु नानक साहिब फिर कहते हैं:

आवणु जाणु न चुकई मरि जनमै होइ खुआरु॥[19]

क्यों? क्योंकि हमारे अन्दर लाखों-करोड़ों जन्मों की मैल चढ़ी हुई है। जब तक कोई महात्मा न मिले और शब्द का भेद न दे, यह कमाई न करे, मैल उतर नहीं सकती, जन्म-मरण ख़त्म नहीं होता, बेकार की ख़्वारी होती है।

यह कहना उन जीवन कारन। जिनके बिरह अनुराग की धारन॥

अब हुज़ूर स्वामी जी महाराज फ़रमाते हैं कि हमारा यह उपदेश उनके लिए है, जिन्हें परमात्मा से मिलना है, जन्म-मरण ख़त्म करना है, मुक्ति हासिल करनी है। इसके विपरीत, जो बेटे-बेटियाँ और अन्य दुनिया का सामान माँगते हैं, उनके लिए नहीं। कहते हैं कि यह उपदेश उनके लिए है जिन्हें परमात्मा से मिलने का शौक़ है, जो मानते हैं कि हमारे अन्दर वाहिगुरु, अकालपुरुष बैठा हुआ है।

विषई संसारी और रागी। इन को टेक न चहिये त्यागी॥

कहते हैं कि जो दुनिया का राज-पाट, धन-दौलत, विषय-विकार माँगते हैं, वे जहाँ हैं वहीं लगे रहें। यह उपदेश उनके लिए नहीं, बल्कि उनके लिए है जो जन्म-मरण ख़त्म करना चाहते हैं।

इन को टेक सहारा भारी। टेक बिना कुछ नाहिं अधारी॥

कहते हैं, उनकी आँखें नहीं खुली हैं, टेक पकड़कर बैठ गये हैं, उनके लिए टेक ही सहारा है।

उनको नहिं उपदेश हमारा। उनको जगत कामना मारा॥

जिनका दीन-ईमान दुनिया है, जो दुनिया में रहना चाहते हैं, दुनिया का मज़ा चखना चाहते हैं, हुजूर स्वामी जी कहते हैं कि हमारा उपदेश उनके लिए नहीं है।

कोइ कुटुम्ब कोइ धन आधीना। कोइ कोइ मान प्रतिष्ठा लीना॥

कहते हैं, कोई क़ौमों का नेतृत्व माँगता है, कोई मज़हबों का। कोई बेटे माँगता है, कोई बेटियाँ माँगता है। ये कौड़ियाँ हैं। सन्तों के पास हैं हीरे-जवाहरात! वे इनको कैसे दें?

मारे डर के टेक न छोड़ें। वक्त गुरू में मन नहिं जोड़ें॥

वे तो दुनिया की ख़्वाहिशें लेकर आते हैं। कोई कहता है, मेरी मुक़द्दमे में जीत हो जाये, कोई कहता है, मेरी बीमारी का इलाज हो जाये। कोई कुछ माँगता है, कोई कुछ माँगता है। डर के मारे टेक नहीं छोड़ते कि देवी-देवता ग़ुस्सा हो जायेंगे और सन्तों के पास आकर यहाँ की राह नहीं माँगते।

जो अनुरागी बिरही भाई। भक्ति गुरू की उन प्रति गाई॥

कहते हैं, जो सच्चे खोजी हैं, सच्चे प्रेमी हैं, गुरु की भक्ति उनके लिए है। इसके विपरीत, जो दुनियादार हैं, उन्हें सन्त नाम ही नहीं देते। जिस तरह जिन्हें खद्दर ख़रीदना है, बजाज उन्हें मलमल, रेशम निकालकर क्यों देगा? या जिन्हें जौ ख़रीदना है, उन्हें गेहूँ निकालकर कौन देता है? कोई नहीं! इसी तरह जिन्हें कमाई करनी है, यह गुरु-भक्ति उनके लिए है। इसके विपरीत,

कई आते हैं, जो कहते हैं, "मेरा भरोसा आप पर नहीं रहा क्योंकि लड़का पैदा होना था, लड़की क्यों पैदा हुई?" बताओ! ऐसे लोगों का क्या करें?

वक्त गुरू जब लग नहिं मिलई। अनुरागी का काज न सरई॥

जब तक कोई रूहानी मण्डलों पर जानेवाला महात्मा न मिले, वह राह न दे, हम कमाई करके अन्दर न जायें, तब तक परदा नहीं खुलता। वह नाम अनमोल रत्न है, हम कहते हैं यों ही मिल जाये।

परिथम सीढ़ी भक्ति गुरु की। दूसर सीढ़ी सुरत नाम की॥

गुरु की भक्ति, गुरु का प्यार, कम खाना, कम सोना, परमार्थ का पहला दर्जा है। इसी तरह अभ्यास करना, परदा खोलना, मन और सुरत को शब्द में लीन करना, रूहानी मण्डलों पर चढ़ना, दूसरा दर्जा है। जब तक हमारा चरित्र ऊँचा नहीं, सतगुरु के साथ प्यार नहीं, हम दो-तीन घण्टे भजन में नहीं देते, तब तक दूसरे दर्जे में दाख़िल नहीं होते।

जब लग गुरु भक्ती नहीं पूरी। मन मनसा यह होयँ न चूरी॥

जब तक अन्दर काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार है, आसा-मनसा है, मन-इन्द्रियाँ क़ाबू में नहीं आयीं, विषय-विकारों से मन नहीं हटा, मतलब कि जब तक गुरु-भक्ति पूरी नहीं होती, तब तक रूह अन्दर नहीं जा सकती।

मन चूरे बिन सुरत न निर्मल। कैसे चढ़े और लगे शब्द चल॥

जब तक मन क़ाबू में नहीं आता, न परदा खुलता है, न रूह रूहानी मण्डलों पर जाती है, न नाम की लज़्ज़त आती है और न शान्ति मिलती है। स्त्री-पुरुषों की बड़ी शिकायत तो यह है कि जी, मन नहीं लगता, अन्दर कुछ नज़र नहीं आता। सुनो, जब तक मन के साथ लड़ाई नहीं करोगे, यह अन्दर नहीं जायेगा। गुरु अमर दास जी कहते हैं:

मन ही नालि झगड़ा मन ही नालि सथ ...॥[20]

यानी मन के साथ लड़ाई करो। जो मन कहता है, वह न दो। दुनिया में मनमत और गुरुमत दो ही राहें हैं। अगर जो मन कहे, वही इसे दें तो मनमत है और अगर गुरु के कहने के मुताबिक़ कमाई कर लें तो गुरुमत में आ गये, गुरुमुख हो गये।

गुरु भक्ति अस कैसे आवै। सतसंग कर गुरु सेवा धावै॥
गुरु को पल पल माहिं रिझावै। गुरु प्रसन्नता नित्य कमावै॥

अब फ़रमाते हैं कि गुरु-भक्ति के बिना काम नहीं बनता, पर सवाल करते हैं कि गुरु-भक्ति कैसे बनती है, गुरु-भक्ति किस दुकान से लें? फिर आप ही जवाब देते हैं कि सतगुरु के सत्संग और साध-संगत की सेवा से। पहले तो सत्संग सुनें, सत्संग से उठकर सत्संग पर विचार करें, जो-जो ऐब-पाप गुरु बताता है, उन्हें छोड़ दें और गुरु के हुक्म की तामील, पालना करें। फिर साध-संगत की सेवा प्रेम-प्यार से करें, क्योंकि संगत गुरु की है और जो संगत की सेवा है, वह सतगुरु की ही सेवा है। शिष्य का धर्म है कि गुरु को प्रसन्न करे। गुरु अपने लिए नौकरी करे, खेती-बाड़ी करे या कोई और काम करे, वह अपने लिए कुछ नहीं माँगता, चाहे भूखा मर जाये। आगे सेवा भी चार क़िस्म की है—तन, मन, धन और सुरत-शब्द की। सतगुरु के पास तन, मन, धन अपना है। साध-संगत की सेवा और सुख के लिए वह शिष्यों का धन ख़र्च कर लेता है। साध-संगत की सेवा में धन ख़र्च करने से मन साफ़ होता है। तन की सेवा करने से तन शुद्ध होता है। संगत धन लाती है, संगत ही खाती है और संगत को आराम पहुँचता है। यही कबीर साहिब कहते हैं:

मरि जाऊँ माँगूँ नहीं, अपने तन के काज।
परमारथ के कारने, मोहिं न आवै लाज॥[21]

संगत के लिए लंगर भी चाहिए, सोने के लिए जगह भी चाहिए। यह सबकुछ संगत के धन से ही बना है। संगत का बोझ संगत ही उठाती है। एक बार का ज़िक्र है कि पहाड़ के कुछ लोग डेरे आये। वापस जब गाँव

पहुँचे तो गाँव वालों ने पूछा कि क्या देखा? कहने लगे कि बड़े प्रेम की वर्षा होती है और यह बड़ा तमाशा है कि अमीर लाते हैं और ग़रीब खाते हैं।

गुरु जब इसको प्यारे होई। गुरु को प्यारा जब यह होई॥

जब शिष्य गुरु के साथ प्यार करेगा तो गुरु के मन में प्यार ज़रूर आयेगा। वह बेख़बर नहीं, बल्कि सबकुछ जानता है। जितना प्यार तुम करोगे, उतना वह भी करेगा। दिल को दिल से राह है। कहते हैं, एक बार अकबर और बीरबल जा रहे थे। कुछ फ़ासले पर एक जाट आता हुआ दिखायी दिया। अकबर बादशाह ने बीरबल से कहा कि मैं सोचता हूँ कि इस जाट को गोली मार दूँ। देखूँ, इसके दिल में मेरे बारे में क्या ख़याल आता है। सो, जब वह जाट ज़रा नज़दीक आया तो बीरबल ने बादशाह की तरफ़ इशारा करते हुए उस जाट से कहा कि भाई, डर मत और सच बता कि जब तेरी नज़र इस आदमी पर पड़ी तो तेरे मन में क्या ख़याल आया था? उस जाट ने कहा कि मेरा दिल चाहता था कि इसकी दाढ़ी नोच लूँ। ख़याल की बराबरी (तरजुमानी) हो गयी कि दिल को दिल से राह है। इसी तरह कहते हैं कि अगर शिष्य प्यार करेगा तो गुरु को भी प्यार ज़रूर आयेगा।

पूरन दया गुरू जब करई। भक्ति पदारथ जबहि मिलई॥
यह भी जोग मेहर से होगा। दया मेहर बिन जानो धोखा॥

जब शिष्य की मुहब्बत पूर्णता पर आ गयी तो परदा खुल गया। फ़रमाते हैं कि पूरे गुरु का मिलना, शिष्य में प्रेम का आना मामूली कर्मों का नतीजा नहीं। बेशुमार शुभ कर्म इकट्ठे हों, मालिक की बड़ी दया हो, तो ऐसा हो, तब नाम मिले और मुक्ति हो।

॥ दोहा ॥

क्या हिन्दू क्या मुसलमान, क्या ईसाई जैन॥
गुरु भक्ती पूरन बिना, कोइ न पावे चैन॥

यह क़ानून सारी दुनिया के लिए बराबर है। क्या क़ानून है? कि जब भी मुक्ति मिलेगी किसी कामिल मुर्शिद के ज़रिये मिलेगी।

परिथम सीढ़ी है गुरु भक्ति। गुरु भक्ति बिन काज न रत्ती॥

परमार्थ का पहला दर्जा गुरु-भक्ति है, अगर गुरु से प्रेम नहीं तो आगे राह नहीं मिलती।

और उपाय अनेकन करते। गुरु भक्ती को मुख्य न रखते॥
यही कसर है सब के मत में। सिद्धान्त न पावें ओछे चित में॥

लोग बहुत उपाय करते हैं, लेकिन कामयाब नहीं होते। आम तौर पर नुक़्स है कि उनमें गुरु-भक्ति नहीं। लोग चाहते हैं कि किसी और उपाय से मालिक मिल जाये, लेकिन किसी और उपाय से वह मिलता नहीं।

॥ दोहा ॥

गुरु भक्ती दृढ़ के करो, पीछे और उपाय॥
बिन गुरु भक्ति मोह जग, कभी न काटा जाय॥
मोटे बंधन जगत के, गुरु भक्ती से काट॥
झीने बंधन चित्त के, कटें नाम परताप॥
मोटे जब लग जायँ नहिं, झीने कैसे जायँ॥
ताते सबको चाहिये, नित गुरु भक्ति कमायँ॥
एक जन्म गुरु भक्ति कर, जन्म दूसरे नाम॥
जन्म तीसरे मुक्तिपद, चौथे में निज धाम॥

अगर गुरु का इश्क़ और प्यार शिष्य के हृदय में पूर्ण हो जाये तो बाक़ी सब प्रेम कट जाते हैं। अगर बहुत-से नलों से बहनेवाला पानी एक नल में आ जाये तो उसका प्रवाह कितना ज़ोरदार और फ़ायदेमन्द हो जाता है। अब कहते हैं कि गुरु को हमारे प्यार की ज़रूरत नहीं; जिस तरह शीशे को ज़रूरत नहीं कि उसे देखें। शीशे को न देखने का सुख है और न ही न देखने का दुःख, बल्कि जिस तरह से शीशे में देखेंगे, वैसा ही नज़र आयेगा। अगर हँसते हुए देखेंगे तो हँसता नज़र आयेगा, अगर रोते हुए देखेंगे तो रोता। आपके मन की किरणें शीशे के साथ टकराकर

आपका अक़्स आपको दिखाती हैं। इसी तरह गुरु के स्वरूप का हाल है। अपने प्यार से अन्दर गुरु को जगाना है, ताकि आपका परदा खुल जाये। शराब-कबाब, चोरी-चकारी, दुराचार, सारे ऐब-पाप गुरु-भक्ति से कट जायेंगे। महात्मा बुरी आदतें अपनाने से मना करेगा तो हम छोड़ देंगे। जब बाहर के ऐब-पाप छूट गये, अन्दर का परदा नाम की कमाई से खुल जायेगा। इन ऐबों के होते हुए परदा नहीं खुल सकता। जब दुनिया के मोटे-मोटे ऐब नहीं छूटते, तो अन्दर परदा किस तरह खुले? होना ये चाहिए कि पहले ज़िन्दगी को पवित्र करो और फिर परदा खोलो। जिस तरह वेद-मत में चार आश्रम रखे हैं—ब्रह्मचर्य, गृहस्थ, वानप्रस्थ और संन्यास। इसी तरह सन्तमत में चार दर्जे हैं, जो एक जन्म में तय हो सकते हैं—गुरु के साथ प्यार किया, नाम जपा, रूह पारब्रह्म में गयी, सारे परदे उतर गये, नाम की लज़्ज़त ली, अमृत पिया और रूह सचखण्ड में पहुँच गयी। अगर पूरा काम नहीं बना तो फिर जन्म मिलेगा। चार जन्मों से ज़्यादा सन्त नहीं देते, लेकिन क्यों न यह काम इसी जन्म में ख़त्म कर लें।

अब आरत गुरु करूँ सँवारा। काया थाल मन दीपक बारा॥
भक्ति जोत और भोग अनुरागा। दृष्टि जोड़ चित चरनन लागा॥
यों आरत अब करी बनाई। सतगुरु पूरे रहें सहाई॥

फ़रमाते हैं कि हम गुरु को फिर नमस्कार करते हैं। आम लोग तो आरती में थाल, जोत आदि रखते हैं, हमारी आरती अलग है। हमें वजूद यानी शरीर का थाल बनाना है, मन का दीया रोशन करना है, दीनता और भक्ति की जोत जलानी है, फिर उसमें इश्क़ और प्रेम की मिठाई रखनी है।

बसंतु हिंडोल महला 4

मनु खिनु खिनु भरमि भरमि बहु धावै तिलु घरि नही वासा पाईऐ॥
गुरि अंकसु सबदु दारू सिरि धारिओ घरि मंदरि आणि वसाईऐ॥ 1॥
गोबिंद जीउ सतसंगति मेलि हरि धिआईऐ॥
हउमै रोगु गइआ सुखु पाइआ हरि सहजि समाधि लगाईऐ॥ 1॥ रहाउ॥
घरि रतन लाल बहु माणक लादे मनु भ्रमिआ लहि न सकाईऐ॥
जिउ ओडा कूपु गुहज खिन काढै तिउ सतिगुरि वसतु लहाईऐ॥ 2॥
जिन ऐसा सतिगुरु साधु न पाइआ ते ध्रिगु ध्रिगु नर जीवाईऐ॥
जनमु पदारथु पुंनि फलु पाइआ कउडी बदलै जाईऐ॥ 3॥
मधुसूदन हरि धारि प्रभ किरपा करि किरपा गुरू मिलाईऐ॥
जन नानक निरबाण पदु पाइआ मिलि साधू हरि गुण गाईऐ॥ 4॥[1]

सत्संग के बचन

मनु खिनु खिनु भरमि भरमि बहु धावै तिलु घरि नही वासा पाईऐ॥

चौथी पातशाही, श्री गुरु राम दास जी का शब्द है। जितना प्यार, जितना इश्क़ गुरु राम दास जी ने किया है, शायद ही किसी और महात्मा ने किया हो। मैं सत्संग में कई बार कह चुका हूँ कि जब गुरु अमर दास जी ने चाहा कि मैं गद्दी किसे दूँ तो उन्होंने दोनों पुत्रों, दोनों दामादों और बहुत सारे प्रेमियों को कसौटी पर रख दिया और कहा कि अपनी-अपनी मिट्टी लाओ और चबूतरे बनाओ। जब उन्होंने चबूतरे बनाये तो इत्तला दी कि महाराज! चबूतरे तैयार हैं। महाराज जी कहने लगे कि ये ठीक नहीं, फिर

बनाओ, फिर बनाये। कहने लगे कि ये भी ठीक नहीं, और बनाओ। जब फिर बनाये तो कहने लगे कि ये भी ठीक नहीं, बल्कि इस जगह को ही छोड़ दो और उस मैदान में जाकर बनाओ। जब वहाँ बनाये तो कहने लगे कि यह मिट्टी अच्छी नहीं, फिर बनाओ। उस वक़्त आपकी उम्र एक सौ पाँच साल की थी। लोग कहने लगे कि सत्तर बरस की उम्र में इनसान की याददाश्त, अक़्ल वग़ैरह क़ायम नहीं रहती, इनकी उम्र तो और भी ज़्यादा है। बहुत-से लोग हट गये। जो लोग बाक़ी रह गये, वे चबूतरे बनाते और गुरु साहिब को पसन्द न आने पर तोड़ते रहे। फिर थोड़े और हट गये, थोड़े बाक़ी रह गये। काफ़ी अरसे तक यह काम जारी रखा। आख़िर एक राम दास जी रह गये। सब लोग कहने लगे कि तू भी छोड़ दे, क्योंकि गुरु साहिब की अक़्ल कायम नहीं रही। राम दास जी ने कहा, ''सारा जहान अन्धा है, गुरु सुजाखा (आँखों वाला) है। सारा जहान पागल है, गुरु की अक़्ल क़ायम है।'' ख़ैर, अकेले लगे रहे। लोग कहने लगे कि तू भी पागल है। कहने लगे, ''आप मुझे जो मर्ज़ी कह लो, लेकिन मेरे गुरु को कुछ न कहो। अगर सारी उम्र गुरु अमर दास जी चबूतरे बनवायें तो राम दास बनाता रहेगा।'' गुरु साहिब देख रहे थे, क्योंकि जिस जगह यह नाम रूपी दौलत रखनी है, वह हृदय भी मज़बूत होना चाहिए। आख़िर गुरु-गद्दी दे दी। इतिहास कहता है कि उन्होंने सत्तर बार चबूतरे बनाये और सत्तर बार गिराये। यह उनकी बाणी है। कहते हैं, मन बाहर ही बाहर ठोकरें खाता फिरता है, अन्दर तीसरे तिल में नहीं जाता। तीसरा तिल आँखों के दो तिलों से पीछे और परे है। सो, गुरु राम दास जी कहते हैं कि हम इसको यानी मन को क्या कहें!

गुरि अंकसु सबदु दारू सिरि धारिओ घरि मंदरि आणि वसाईऐ॥

जो हथियार, महावत हाथी को चलाने के लिए उसके सिर पर मारते हैं, उसे अंकुश कहते हैं। मन हाथी है, जो कि अन्दर नहीं जाता। अंकुश किसका है? गुरु के शब्द का। महावत कौन है? गुरु। जिस तरह महावत

अंकुश मार-मार कर हाथी को सीधा चलाता है, इसी तरह जब गुरु शब्द का अंकुश मारता है, तब मन वश में आता है। अन्य करोड़ों उपाय करो, मन वश में नहीं आता। जिस तरह किसी जंगली लड़के को बाहर से लाकर किसी कमरे में बन्द कर दो, तो चूँकि वह आज़ादी-पसन्द है, वह रोयेगा, शोर मचायेगा। आख़िर थककर चुप करके बैठ जायेगा। यह सोचकर कि दरवाज़ा तो कोई भी नहीं खोलेगा, वह कमरे में नज़र दौड़ायेगा। अगर कमरे में अच्छी-अच्छी मिठाइयाँ और अच्छे-अच्छे सामान पड़े हों तो ज़रूरी है कि उसका ध्यान अन्दर लग जायेगा। इसी तरह मन रूपी बालक का हाल है। जब यह एक बार अन्दर चला जाये या इसे अन्दर ले जायें, अन्दर अमृत बरस रहा है, यह अमृत पिये, शब्द को सुने तो इसे अन्दर ही रस मिलने लग जाता है, फिर यह बाहर नहीं दौड़ता।

गोबिंद जीउ सतसंगति मेलि हरि धिआईऐ॥

अब प्रार्थना करते हैं कि ऐ मालिक! कृपा कर कि मुझे गुरु की सोहबत और संगति मिलती रहे, ताकि मेरा भजन बनता रहे और तेरे नाम की कमाई होती रहे, तेरी याद बनी रहे।

हउमै रोगु गइआ सुखु पाइआ हरि सहजि समाधि लगाईऐ॥

कहते हैं, जब मन अन्दर गया और उसने अमृत पिया तो काम-क्रोध आदि नाश हो गये और हौंमैं-ममता मर गयी। वह मन रूपी हाथी, जो अन्दर नहीं जाता था, अब प्रेम-प्यार में आ गया, समाधि में आ गया और अन्दर लज़्ज़त लेने लग गया।

घरि रतन लाल बहु माणक लादे मनु भ्रमिआ लहि न सकाईऐ॥

कहते हैं, हरएक आदमी के अन्दर करोड़ों खण्ड-ब्रह्माण्ड, करोड़ों सूरज-चन्द्रमा हैं, ईश्वर-परमेश्वर है। चूँकि इसका मन अन्दर नहीं जाता,

बल्कि विषय-विकारों में, काम-क्रोध में बाहर ही बाहर फिरता है; इसलिए वह दौलत, जो परमात्मा ने इसके अन्दर रखी हुई है, मिले कैसे?

जिउ ओडा कूपु गुहज खिन काढै तिउ सतिगुरि वसतु लहाईऐ॥

कहते हैं, कई पुरानी आबादियों में, गाँवों में ऐसे कुएँ हैं जो दबे हुए हैं। आम लोगों को उनका पता नहीं। मगर जो 'ओडा' होते हैं, वे आकर देख लेते हैं और कुआँ निकाल देते हैं। ओडा को पानी-पण्डित भी कहते हैं। इसी तरह हरएक आदमी के अन्दर खण्ड-ब्रह्माण्ड हैं, ईश्वर-परमेश्वर है, मगर किसी को पता नहीं। सतगुरु ओडा है। यह सतगुरु का हुक्म मानकर अन्दर जायेगा तो इसको सबकुछ मिलेगा। इसके अन्दर बग़ीचे हैं, अमृत बरस रहा है, जब यह उसकी लज़्ज़त लेगा, सुखी हो जायेगा।

जिन ऐसा सतिगुरु साधु न पाइआ ते ध्रिगु ध्रिगु नर जीवाईऐ॥

अब श्री गुरु राम दास जी कहते हैं कि अगर मनुष्य-जन्म पाकर इसे अन्दर की राह देनेवाला गुरु नहीं मिला और इसने मेहनत करके परदा नहीं खोला तो इसके जन्म लेने पर लानत है। इसका जन्म व्यर्थ चला गया, इसने अपना जन्म यों ही गँवा दिया।

जनमु पदारथु पुंनि फलु पाइआ कउडी बदलै जाईऐ॥

कहते हैं, बहुत सारे पुण्यों का प्रताप जमा हो तो मनुष्य-जन्म मिलता है। सो, जब मनुष्य-जन्म मिल जाये तो यह चाहिए कि नाम जपकर अन्दर खण्डों-ब्रह्माण्डों पर चला जाये। मगर इसने अन्दर जाने के बजाय विषय-विकारों के साथ दोस्ती कर ली, मानो मनुष्य-जन्म कौड़ियों के बदले गँवा दिया। गुरु राम दास जी कहते हैं कि फिर हम क्या करें।

मधुसूदन हरि धारि प्रभ किरपा करि किरपा गुरू मिलाईऐ॥

अब गुरु राम दास जी परमात्मा के आगे प्रार्थना करते हैं कि ऐ अकालपुरुष! मुझ पर यह कृपा कर कि मेरी सुरत हमेशा गुरु के चरणों में लगी रहे, कभी जुदाई न हो।

जन नानक निरबाण पदु पाइआ मिलि साधू हरि गुण गाईऐ॥

अब गुरु राम दास जी कहते हैं कि मेरा परदा खुल गया। जब मैं अन्दर गया, मालिक मिल गया, मुझे निर्वाण-पद हासिल हो गया। अन्दर सन्तों की मण्डलियाँ हैं, जगह-जगह कमाई वाले महात्मा मिलते हैं यानी उनके दर्शन होते हैं। कहते हैं, हम भी उन महात्माओं के साथ मिलकर परमात्मा के गुण गाने लग गये।

वाणी गोस्वामी तुलसीदास जी

भक्ति और ज्ञान का भेद

दोहा

भगति पच्छ हठ करि रहेउँ दीन्हि महारिषि साप॥
मुनि दुर्लभ बर पायउँ देखहु भजन प्रताप॥

चौपाई

जे असि भगति जानि परिहरहीं। केवल ग्यान हेतु श्रम करहीं॥
ते जड़ कामधेनु गृहँ त्यागी। खोजत आकु फिरहिं पय लागी॥
सुनु खगेस हरि भगति बिहाई। जे सुख चाहहिं आन उपाई॥
ते सठ महासिंधु बिनु तरनी। पैरि पार चाहहिं जड़ करनी॥
सुनि भसुंडि के बचन भवानी। बोलेउ गरुड़ हरषि मृदु बानी॥
तव प्रसाद प्रभु मम उर माहीं। संसय सोक मोह भ्रम नाहीं॥
सुनेउँ पुनीत राम गुन ग्रामा। तुम्हरी कृपाँ लहेउँ बिश्रामा॥
एक बात प्रभु पूँछउँ तोही। कहहु बुझाइ कृपानिधि मोही॥
कहहिं संत मुनि बेद पुराना। नहिं कछु दुर्लभ ग्यान समाना॥
सोइ मुनि तुम्ह सन कहेउ गोसाईं। नहिं आदरेहु भगति की नाईं॥
ग्यानहि भगतिहि अंतर केता। सकल कहहु प्रभु कृपा निकेता॥
सुनि उरगारि बचन सुख माना। सादर बोलेउ काग सुजाना॥
भगतिहि ग्यानहि नहिं कछु भेदा। उभय हरहिं भव संभव खेदा॥
नाथ मुनीस कहहिं कछु अंतर। सावधान सोउ सुनु बिहंगबर॥
ग्यान बिराग जोग बिग्याना। ए सब पुरुष सुनहु हरिजाना॥
पुरुष प्रताप प्रबल सब भाँती। अबला अबल सहज जड़ जाती॥

दोहा

पुरुष त्यागि सक नारिहि जो बिरक्त मति धीर।
न तु कामी बिषयाबस बिमुख जो पद रघुबीर॥

सोरठा

सोउ मुनि ग्याननिधान मृगनयनी बिधु मुख निरखि।
बिबस होइ हरिजान नारि बिष्नु माया प्रगट॥

चौपाई

इहाँ न पच्छपात कछु राखउँ। बेद पुरान संत मत भाषउँ॥
मोह न नारि नारि कें रूपा। पन्नगारि यह रीति अनूपा॥
माया भगति सुनहु तुम्ह दोऊ। नारि बर्ग जानइ सब कोऊ॥
पुनि रघुबीरहि भगति पिआरी। माया खलु नर्तकी बिचारी॥
भगतिहि सानुकूल रघुराया। ताते तेहि डरपति अति माया॥
राम भगति निरुपम निरुपाधी। बसइ जासु उर सदा अबाधी॥
तेहि बिलोकि माया सकुचाई। करि न सकइ कछु निज प्रभुताई॥
अस बिचारि जे मुनि बिग्यानी। जाचहिं भगति सकल सुख खानी॥

दोहा

यह रहस्य रघुनाथ कर बेगि न जानइ कोइ।
जो जानइ रघुपति कृपाँ सपनेहुँ मोह न होइ॥
औरउ ग्यान भगति कर भेद सुनहु सुप्रबीन।
जो सुनि होइ राम पद प्रीति सदा अबिछीन॥

चौपाई

सुनहु तात यह अकथ कहानी। समुझत बनइ न जाइ बखानी॥
ईस्वर अंस जीव अबिनासी। चेतन अमल सहज सुख रासी॥

सो मायाबस भयउ गोसाईं। बँध्यो कीर मरकट की नाईं॥
जड़ चेतनहि ग्रंथि परि गई। जदपि मृषा छूटत कठिनई॥
तब ते जीव भयउ संसारी। छूट न ग्रंथि न होइ सुखारी॥
श्रुति पुरान बहु कहेउ उपाई। छूट न अधिक अधिक अरुझाई॥
जीव हृदयँ तम मोह बिसेषी। ग्रंथि छूट किमि परइ न देखी॥
अस संजोग ईस जब करई। तबहुँ कदाचित सो निरुअरई॥
सात्त्विक श्रद्धा धेनु सुहाई। जौं हरि कृपाँ हृदयँ बस आई॥
जप तप ब्रत जम नियम अपारा। जे श्रुति कह सुभ धर्म अचारा॥
तेइ तृन हरित चरै जब गाई। भाव बच्छ सिसु पाइ पेन्हाई॥
नोइ निबृत्ति पात्र बिस्वासा। निर्मल मन अहीर निज दासा॥
परम धर्ममय पय दुहि भाई। अवटै अनल अकाम बनाई॥
तोष मरुत तब छमाँ जुड़ावै। धृति सम जावनु देइ जमावै॥
मुदिताँ मथै बिचार मथानी। दम अधार रजु सत्य सुबानी॥
तब मथि काढ़ि लेइ नवनीता। बिमल बिराग सुभग सुपुनीता॥

दोहा

जोग अगिनि करि प्रगट तब कर्म सुभासुभ लाइ।
बुद्धि सिरावै ग्यान घृत ममता मल जरि जाइ॥
तब बिग्यानरूपिनी बुद्धि बिसद घृत पाइ।
चित्त दिआ भरि धरै दृढ़ समता दिअटि बनाइ॥
तीनि अवस्था तीनि गुन तेहि कपास तें काढ़ि।
तूल तुरीय सँवारि पुनि बाती करै सुगाढ़ि॥

सोरठा

एहि बिधि लेसै दीप तेज रासि बिग्यानमय।
जातहिं जासु समीप जरहिं मदादिक सलभ सब॥

चौपाई

सोहमस्मि इति बृत्ति अखंडा। दीप सिखा सोइ परम प्रचंडा॥
आतम अनुभव सुख सुप्रकासा। तब भव मूल भेद भ्रम नासा॥
प्रबल अबिद्या कर परिवारा। मोह आदि तम मिटइ अपारा॥
तब सोइ बुद्धि पाइ उँजिआरा। उर गृहँ बैठि ग्रंथि निरुआरा॥
छोरन ग्रंथि पाव जौं सोई। तब यह जीव कृतारथ होई॥
छोरत ग्रंथि जानि खगराया। बिघ्न अनेक करइ तब माया॥
रिद्धि सिद्धि प्रेरइ बहु भाई। बुद्धिहि लोभ दिखावहिं आई॥
कल बल छल करि जाहिं समीपा। अंचल बात बुझावहिं दीपा॥
होइ बुद्धि जौं परम सयानी। तिन्ह तन चितव न अनहित जानी॥
जौं तेहि बिघ्न बुद्धि नहिं बाधी। तौ बहोरि सुर करहिं उपाधी॥
इंद्री द्वार झरोखा नाना। तहँ तहँ सुर बैठे करि थाना॥
आवत देखहिं बिषय बयारी। ते हठि देहिं कपाट उघारी॥
जब सो प्रभंजन उर गृहँ जाई। तबहिं दीप बिग्यान बुझाई॥
ग्रंथि न छूटि मिटा सो प्रकासा। बुद्धि बिकल भइ बिषय बतासा॥
इंद्रिन्ह सुरन्ह न ग्यान सोहाई। बिषय भोग पर प्रीति सदाई॥
बिषय समीर बुद्धि कृत भोरी। तेहि बिधि दीप को बार बहोरी॥

दोहा

तब फिरि जीव बिबिधि बिधि पावइ संसृति क्लेस।
हरि माया अति दुस्तर तरि न जाइ बिहगेस॥
कहत कठिन समुझत कठिन साधत कठिन बिबेक।
होइ घुनाच्छर न्याय जौं पुनि प्रत्यूह अनेक॥

चौपाई

ग्यान पंथ कृपान कै धारा। परत खगेस होइ नहिं बारा॥
जो निर्बिघ्न पंथ निर्बहई। सो कैवल्य परम पद लहई॥
अति दुर्लभ कैवल्य परम पद। संत पुरान निगम आगम बद॥

राम भजत सोइ मुकुति गोसाईं। अनइच्छित आवइ बरिआईं॥
जिमि थल बिनु जल रहि न सकाई। कोटि भाँति कोउ करै उपाई॥
तथा मोच्छ सुख सुनु खगराई। रहि न सकइ हरि भगति बिहाई॥
अस बिचारि हरि भगत सयाने। मुक्ति निरादर भगति लुभाने॥
भगति करत बिनु जतन प्रयासा। संसृति मूल अबिद्या नासा॥
भोजन करिअ तृपिति हित लागी। जिमि सो असन पचवै जठरागी॥
असि हरि भगति सुगम सुखदाई। को अस मूढ़ न जाहि सोहाई॥

दोहा

सेवक सेब्य भाव बिनु भव न तरिअ उरगारि।
भजहु राम पद पंकज अस सिद्धांत बिचारि॥
जो चेतन कहँ जड़ करइ जड़हि करइ चैतन्य।
अस समर्थ रघुनायकहि भजहिं जीव ते धन्य॥

चौपाई

कहेउँ ग्यान सिद्धांत बुझाई। सुनहु भगति मनि कै प्रभुताई॥
राम भगति चिंतामनि सुंदर। बसइ गरुड़ जाके उर अंतर॥
परम प्रकास रुप दिन राती। नहिं कछु चहिअ दिआ घृत बाती॥
मोह दरिद्र निकट नहिं आवा। लोभ बात नहिं ताहि बुझावा॥
प्रबल अबिद्या तम मिटि जाई। हारहिं सकल सलभ समुदाई॥
खल कामादि निकट नहिं जाहीं। बसइ भगति जाके उर माहीं॥
गरल सुधासम अरि हित होई। तेहि मनि बिनु सुख पाव न कोई॥
ब्यापहिं मानस रोग न भारी। जिन्ह के बस सब जीव दुखारी॥
राम भगति मनि उर बस जाकें। दुख लवलेस न सपनेहुँ ताकें॥
चतुर सिरोमनि तेइ जग माहीं। जे मनि लागि सुजतन कराहीं॥
सो मनि जदपि प्रगट जग अहई। राम कृपा बिनु नहिं कोउ लहई॥
सुगम उपाय पाइबे केरे। नर हतभाग्य देहिं भटभेरे॥
पावन पर्बत बेद पुराना। राम कथा रुचिराकर नाना॥
मर्मी सज्जन सुमति कुदारी। ग्यान बिराग नयन उरगारी॥

भाव सहित खोजइ जो प्रानी। पाव भगति मनि सब सुख खानी॥
मोरें मन प्रभु अस बिस्वासा। राम ते अधिक राम कर दासा॥
राम सिंधु घन सज्जन धीरा। चंदन तरु हरि संत समीरा॥
सब कर फल हरि भगति सुहाई। सो बिनु संत न काहूँ पाई॥
अस बिचारि जोइ कर सतसंगा। राम भगति तेहि सुलभ बिहंगा॥

दोहा

ब्रह्म पयोनिधि मंदर ग्यान संत सुर आहिं।
कथा सुधा मथि काढ़हिं भगति मधुरता जाहिं॥
बिरति चर्म असि ग्यान मद लोभ मोह रिपु मारि।
जय पाइअ सो हरि भगति देखु खगेस बिचारि॥[1]

सत्संग के बचन

यह वाणी महाकवि सन्त तुलसीदास जी की है, जिन्होंने तुलसी-रामायण के अलावा और भी कई ग्रन्थ रचे हैं। आपके माता-पिता का देहान्त छोटी उम्र में ही हो गया था, जिसका असर इनके सारे जीवन और कविता पर भी पड़ा। काफ़ी खोजबीन के बाद भी यह पता नहीं चलता कि आपका जन्म कब और कहाँ हुआ, परन्तु यह स्पष्ट है कि आप एक ग़रीब ब्राह्मण घराने से थे। इसलिए आपकी सारी उम्र का मक़सद दुःखी लोगों की सहायता करना और भूली हुई जनता को परमेश्वर की ओर लगाना था। इस शब्द में आपने संवाद के द्वारा ज्ञान और भक्ति के ज़रिये प्रभु-प्राप्ति के उपायों की तुलना की है।

दोहा

भगति पच्छ हठ करि रहेउँ दीन्हि महारिषि साप।
मुनि दुर्लभ बर पायउँ देखहु भजन प्रताप॥

काकभुशुण्डि गरुड़ से कह रहा है कि लोमश ऋषि मुझे ज्ञान-मार्ग पर डालना चाहता था और मैं भक्ति-मार्ग में प्रवृत्त होना पसन्द करता था,

उसने मुझे श्राप दे दिया। अब कथा शुरू होती है। गरुड़ और काकभुशुण्डि का संवाद है।

चौपाई

जे असि भगति जानि परिहरहीं। केवल ग्यान हेतु श्रम करहीं॥
ते जड़ कामधेनु गृहँ त्यागी। खोजत आकु फिरहिं पय लागी॥

अब काकभुशुण्डि कहता है, ऐ गरुड़! भक्ति-मार्ग सबसे ऊँचा है और ज्ञान-मार्ग मुश्किल से मुश्किल है। जो आदमी भक्ति-मार्ग को छोड़कर ज्ञान-मार्ग में जाते हैं, वे ऐसे हैं जैसे कोई गाय के दूध को छोड़कर आक का दूध तलाश करे यानी ज्ञान-मार्ग मुश्किल है और भक्ति-मार्ग आसान है।

सुनु खगेस हरि भगति बिहाई। जे सुख चाहहिं आन उपाई ॥

ऐ गरुड़! अगर तू सुख चाहता है तो इसका और कोई उपाय नहीं, केवल मालिक की भक्ति है। अगर सुख चाहता है तो भक्ति कर।

ते सठ महासिंधु बिनु तरनी। पैरि पार चाहहिं जड़ करनी॥

जो ज्ञान के द्वारा पार होना चाहते हैं, वे भक्ति नहीं करते, वे ऐसे हैं कि बिना जहाज़, बिना किश्ती के समुद्र पार करना चाहते हैं। पैदल कोई समुद्र पार नहीं कर सकता।

सुनि भसुंडि के बचन भवानी। बोलेउ गरुड़ हरषि मृदु बानी॥

अब यह कहानी शिव, पार्वती को सुना रहे हैं। कहते हैं, हे पार्वती! भुशुण्डि के ये वचन सुनकर गरुड़ बड़ा ही गद्‌गद हो गया और अब मीठी बोली से कहता है:

तव प्रसाद प्रभु मम उर माहीं। संसय सोक मोह भ्रम नाहीं॥

हे भुशुण्डि! तेरी कृपा से जो मेरे संशय, मोह और शोक थे, वे दूर हो गये।

सुनेउँ पुनीत राम गुन ग्रामा। तुम्हरी कृपाँ लहेउँ बिश्रामा॥

कहते हैं, राम का पवित्र चरित्र, कहानियाँ तेरी ज़बान से सुनकर विश्राम यानी आराम आ गया। जो तूने भक्ति-मार्ग के गुण बताये हैं, उन्हें सुनकर मैं बड़ा ख़ुश हूँ।

एक बात प्रभु पूँछउँ तोही। कहहु बुझाइ कृपानिधि मोही॥

गरुड़ कहता है, हे भुशुण्डि! मैं एक बात तुझसे और पूछना चाहता हूँ। तू कृपा करके मेरा भ्रम दूर कर दे।

कहहिं संत मुनि बेद पुराना। नहिं कछु दुर्लभ ग्यान समाना॥

हे भुशुण्डि! सन्त और मुनि लोग, वेद और शास्त्र यह कहते हैं कि ज्ञान के बराबर कोई चीज़ नहीं, ज्ञान सबसे श्रेष्ठ और ऊँचा है। इसका क्या अर्थ है? यह समझा तो सही।

सोइ मुनि तुम्ह सन कहेउ गोसाईं। नहिं आदरेहु भगति की नाईं॥

तुझे लोमश ऋषि ज्ञान देना चाहता था, तू भक्ति को पसन्द करता था। इसका क्या कारण है? तूने भक्ति के बराबर ज्ञान की क़द्र नहीं की, ज्ञान का आदर नहीं किया, भक्ति का आदर किया। इसका कारण क्या है?

ग्यानहि भगतिहि अंतर केता। सकल कहहु प्रभु कृपा निकेता॥

अब कहते हैं कि मुझे कृपा करके बता कि ज्ञान और भक्ति में क्या फ़र्क़ है? तू सबकुछ जानता है, तुझे तजुरबा है।

सुनि उरगारि बचन सुख माना। सादर बोलेउ काग सुजाना॥

गरुड़ के ये प्यारे वचन सुनकर, काकभुशुण्डि बड़े प्रेम से उसे बताता है। कहता है, ''आ सुन, तवज्जुह (ध्यान) दे।''

भगतिहि ग्यानहि नहिं कछु भेदा। उभय हरहिं भव संभव खेदा॥

कहते हैं, ज्ञान और भक्ति में कुछ फ़र्क़ नहीं। भुशुण्डि कहता है कि भक्ति और ज्ञान में भेद तो कुछ नहीं, भक्ति भी मुक्ति का कारण है और ज्ञान भी मुक्ति का कारण है। भक्ति और ज्ञान दोनों चीज़ें जन्म-मरण ख़त्म करने का ज़रिया हैं, मालिक के साथ मिलाने का ज़रिया हैं, लेकिन इनमें भेद ज़रूर है।

नाथ मुनीस कहहिं कछु अंतर। सावधान सोउ सुनु बिहंगबर॥

ऐ गरुड़! मुनीश्वर और महात्मा इसमें कुछ फ़र्क़ करते हैं। मैं तुझे बताता हूँ और तू विचार कर! इनमें क्या फ़र्क़ है?

ग्यान बिराग जोग बिग्याना। ए सब पुरुष सुनहु हरिजाना॥

कहते हैं, ज्ञान, योग और वैराग्य यह लफ़्ज़ पुरुषवाचक हैं, भक्ति स्त्रीवाचक है।

पुरुष प्रताप प्रबल सब भाँती। अबला अबल सहज जड़ जाती॥

कहते हैं, पुरुष प्रताप वाला होता है, ज़ोर वाला होता है, स्त्री कमज़ोर और जड़ स्वभाव वाली होती है, लेकिन आगे कहते हैं:

दोहा

पुरुष त्यागि सक नारिहि जो बिरक्त मति धीर।
न तु कामी बिषयाबस बिमुख जो पद रघुबीर॥

जो इन्द्रियों को जीत गये, विरक्त हो गये, यति-सती और पूर्ण हो गये, वे स्त्रियों को त्याग सकते हैं, मगर दुनिया तो नहीं त्याग सकती।

सोरठा

सोउ मुनि ग्याननिधान मृगनयनी बिधु मुख निरखि॥
बिबस होइ हरिजान नारि बिष्नु माया प्रगट॥

कहते हैं, वे ऋषि-मुनि जो त्यागी बन गये यानी जंगलों में बसेरा किया, जब कभी स्त्रियों की सोहबत में आये, वे फेल हो गये, क्योंकि स्त्री प्रबल माया है, यह सबको वश में कर लेती है। ऐ गरुड़! बड़े-बड़े ऋषि-मुनि स्त्रियों के आगे दीन हो गये। विष्णु जालन्धर दैत्य की स्त्री के वश में आ गया; जब भगवान ने मोहिनी रूप धारण किया तो शिव कामातुर हो गये; पराशर जी सारी उम्र योग-अभ्यास में रहे, पूर्ण योगी होकर घर को वापस आ रहे थे, रास्ते में मछोदरी पर मारे गये। नारद को देख लो! विश्वामित्र को देख लो! कौन-कौन वश में नहीं आया?

चौपाई

इहाँ न पच्छपात कछु राखउँ। बेद पुरान संत मत भाषउँ॥

अब तुलसीदास जी कहते हैं कि हम यहाँ किसी का पक्षपात करने को तैयार नहीं। जो मैं सन्तों का मत और वेद-पुराणों का मत बयान करता हूँ, आप ही विचार कर लो। मैं निष्पक्ष बयान करने को तैयार हूँ।

मोह न नारि नारि कें रूपा। पन्नगारि यह रीति अनूपा॥

ऐ गरुड़! यह बात साबित है, पक्की बात है; चूँकि भक्ति स्त्रीलिंग है और जो माया है, वह भी स्त्रीलिंग है। साँप, साँप को काटे तो ज़हर किसे चढ़े? औरत, औरत को नहीं मोह सकती। माया ही रोकती है। ऋषियों-मुनियों सभी को माया ने रोका। अगर भक्ति-मार्ग से होकर जायें तो माया क्या कर सकती है?

माया भगति सुनहु तुम्ह दोऊ। नारि बर्ग जानइ सब कोऊ॥
पुनि रघुबीरहि भगति पिआरी। माया खलु नर्तकी बिचारी॥

कहते हैं, मालिक को भक्ति प्यारी है। माया नटनी है, निकम्मी है, इसलिए मालिक उससे नफ़रत करता है। माया ही ऋषियों-मुनियों को रोकती है। इसलिए अगर भक्ति का बल लेकर जाओ, वह नहीं रोक सकती। जो ऋषि-मुनि अपने बल से गये, माया ने मार-मार कर ख़्वार कर दिया।

भगतिहि सानुकूल रघुराया। ताते तेहि डरपति अति माया॥

मालिक भक्ति से ख़ुश है, क्योंकि भक्ति मालिक की दासी है। इसलिए जो भक्ति-मार्ग में जाते हैं, माया उनका कुछ नहीं बिगाड़ सकती।

राम भगति निरुपम निरुपाधी। बसइ जासु उर सदा अबाधी॥

कहते हैं, मालिक की भक्ति जिसके हृदय में बस जाये उसे कोई उपाधि (रुकावट) नहीं आ सकती। वह तो आशिक़ है, सारी दुनिया को भूल जाता है। कहते हैं, जिसके हृदय में मालिक की भक्ति आ जाये, वहाँ न काम है, न क्रोध है। वह दूसरी बात ही नहीं सुनता।

तेहि बिलोकि माया सकुचाई। करि न सकइ कछु निज प्रभुताई॥

भक्ति की ताकत देखकर माया सकुचाती है, इसलिए माया भक्ति का कुछ नहीं कर सकती। वह लड़ना चाहती है, मगर कुछ कर नहीं सकती। जिस हृदय में मालिक का प्रेम आ गया, वहाँ दुराचार, चोरियाँ, ठगियाँ कहाँ? परदा खुल गया।

अस बिचारि जे मुनि बिग्यानी। जाचहिं भगति सकल सुख खानी॥

यह विचार करके जो मुनि और महात्मा लोग हैं, वे भक्ति को लेते हैं, ज्ञान को नहीं लेते, क्योंकि भक्ति सारे गुणों की खान है, इसलिए वे भक्ति-मार्ग को अपनाते हैं, और किसी मार्ग को नहीं अपनाते।

दोहा

यह रहस्य रघुनाथ कर बेगि न जानइ कोइ।
जो जानइ रघुपति कृपाँ सपनेहुँ मोह न होइ॥

कहते हैं, यह जो भक्ति की दौलत है, यह मालिक के इशारे हैं, जो कोई-कोई समझता है। कहते हैं, जिस हृदय में मालिक की भक्ति और इश्क़ आ जाये, उसे सपने में भी दुःख नहीं होता, माया का मोह नहीं होता, लेकिन यह भेद मेहनत करने से समझ में आता है, यों ही नहीं।

औरउ ग्यान भगति कर, भेद सुनहु सुप्रबीन॥
जो सुनि होइ राम पद, प्रीति सदा अबिछीन॥

कहते हैं, ऐ गरुड़! हम तुझे भक्ति और ज्ञान का दूसरा फ़र्क़ समझाते हैं। तू इसे समझ। अगर समझेगा तो तुझे शान्ति आ जायेगी।

चौपाई

सुनहु तात यह अकथ कहानी। समुझत बनइ न जाइ बखानी॥

ऐ गरुड़! जो मैं भक्ति और ज्ञान का फ़र्क़ आगे बयान करता हूँ, यह अकथ है। अन्दर जाकर देखनेवाला है, बयान करने के क़ाबिल नहीं। यह प्रैक्टिकल वर्क (व्यावहारिक कार्य) है, करनी और तजुरबे की वस्तु है, कथनी का मज़मून नहीं।

ईस्वर अंस जीव अबिनासी। चेतन अमल सहज सुख रासी॥

यह जो आत्मा है, मालिक की अंश है, चेतन है, सारे जहान की मालिक है। रूह अमरे-रब्बी है। सारी दुनिया के पदार्थों में यह ताकतवर है। यह निर्मल है, मल से रहित है। कोई पदार्थ इससे ऊँचा नहीं। यह सभी सुखों को देनेवाली है। यह रूह सभी पदार्थों से उत्तम है और मालिक के समुद्र की बूँद है। क्या चीज़ है ? आगे कहेंगे:

सो मायाबस भयउ गोसाईं। बँध्यो कीर मरकट की नाईं॥

यह रूह चाहे उस समुद्र की बूँद है, बड़ी ज़बरदस्त ताकत है, मगर माया ने इसके ऊपर ग़िलाफ़ चढ़ाकर इसे क़ैद किया हुआ है, जैसे पिंजरे में तोता, जैसे रस्सी से बँधा हुआ बन्दर। विचार करो! पाँच तत्त्व, तीन गुण, पच्चीस प्रकृतियाँ, मन और माया, इनकी गाँठ बँध गयी। जैसे सोना, काँसा, पीतल, लोहा आदि धातुएँ मिलाकर गला दें, अब सोने की क़ीमत कम हो गयी, इन धातुओं ने सोने को छिपा लिया मानो यह जीवात्मा माया के खेलों में क़ैद हो गयी। जैसे बहुत सुन्दर गैस लैम्प हो, उसके ऊपर दस-बीस टाट के परदे चढ़ाकर जिस कमरे में ले जाओगे, अँधेरा है। लैम्प ज़रूर रोशन है।

जड़ चेतनहि ग्रंथि परि गई। जदपि मृषा छूटत कठिनई॥

अब यह गाँठ खुलती नहीं। अगर आत्मा के ऊपर से परदे उतर जायें तो आत्मा आज़ाद हो जाये। बड़ा सुन्दर प्रकाश निकल आये, मगर ये परदे उतरते नहीं।

तब ते जीव भयउ संसारी। छूट न ग्रंथि न होइ सुखारी॥

इसलिए सभी जीव इन परदों में आकर, माया के वश होकर संसारी हो गये। वह गाँठ खुलती नहीं; जैसे काँसे और पीतल में से सोना निकलना चाहता है, वे धातुएँ उसे निकलने नहीं देतीं। जैसे टाट के परदों से गैस लैम्प की रोशनी बाहर निकलना चाहती है, वह निकल नहीं सकती। इसी तरह अब गाँठ खुलती नहीं, आत्मा सुखी होती नहीं।

श्रुति पुरान बहु कहेउ उपाई। छूट न अधिक अधिक अरुझाई॥

वेद-शास्त्रों ने बहुत-से उपाय किये, मगर गाँठ न खुली, और उलझ गयी। ख़ैर! तुलसीदास जी दिलेर हैं, निष्पक्ष होकर कहते हैं।

जीव हृदयँ तम मोह बिसेषी। ग्रंथि छूट किमि परइ न देखी॥

अब रूह इन परदों में आकर, दुनिया की लज़्ज़तों, विषय-विकारों में आकर यहाँ बँध गयी और गाँठ खुलती नहीं। वह गाँठ इसे दिखायी भी नहीं देती, अगर नज़र आये तो खोले नहीं? रूह काम-क्रोध के वश आयी हुई कर्म करती है। अन्दर अँधेरा है। अगर अन्दर जाये, रोशनी हो, तब गाँठ खुले।

अस संजोग ईस जब करई। तबहुँ कदाचित सो निरुअरई॥

वह मालिक अति मेहरबानी करे, तब कहीं गाँठ खुले। सारा जहान इन गाँठों में बँधा है, इन पिंजरों में क़ैद है।

सात्त्विक श्रद्धा धेनु सुहाई। जौं हरि कृपाँ हृदयँ बस आई॥

अब यह समझनेवाला भेद है, जो कुछ तुलसीदास जी बयान कर रहे हैं। कहते हैं, गाँठ कैसे खुले? अब बताते हैं कि पूरी शान्ति, पूरा विश्वास, श्रद्धा हो, यह तो होगा ही। क्या, शान्ति और भरोसा इनकी तो गाय हो। पहले पूरी श्रद्धा होनी मुश्किल है। शान्ति और श्रद्धा मालिक की अति दया ही हो तो अन्दर आती है। नहीं तो आये कहाँ से? ज़रा ग़ौर से समझो! यह समझनेवाली चीज़ है।

जप तप ब्रत जम नियम अपारा। जो श्रुति कह सुभ धर्म अचारा॥
तेइ तृन हरित चरै जब गाई। भाव बच्छ सिसु पाद पेन्हाई॥

कहते हैं, फिर उस गाय को घास डालनी है। घास किसका हो? आदमी जप वाला भी हो, तप वाला भी हो। जो वेद कहते हैं, हो, जितने शुभ नियम हैं, वे भी हों। जो वेद-शास्त्र कहते हैं, ये होने मुश्किल हैं। अगर ये हो जायें तो फिर ज्ञान कोई मुश्किल नहीं। अब गाय का बछड़ा होता है, वह क्या है? अति प्रेम और प्यार।

नोइ निबृत्ति पात्र बिस्वासा। निर्मल मन अहीर निज दासा॥

कहते हैं, भाव का तो हो बछड़ा। फिर आगे गाय के पिछले पैरों को रस्सी से बाँधना है। वह रस्सी किसकी होनी चाहिए? निवृत्ति की। ऐसा आदमी कौन होगा! फिर आगे बर्तन कैसा हो? पूर्ण निवृत्ति का। ऐसा आदमी कौन होगा! उस गाय को दुहने के लिए ग्वाला चाहिए। ग्वाला कौन हो? निर्मल मन। इतने पदार्थ आयें कहाँ से। ऐसे गुणों वाला आदमी कैसा हो?

परम धर्ममय पय दुहि भाई। अवटै अनल अकाम बनाई॥

आदमी ऊँचे दर्जे का धर्मात्मा हो; कोई खोटा कर्म सारी उम्र में न किया हो। यह दूध है। समझे! ऊँचे दर्जे का धर्मात्मा, मानो परम धर्म वाला आदमी हो। फिर दूध दुहकर उसे गर्म करना है। उसकी आग किसकी हो? निष्कामता की। ज़रा भी लालच न हो। क्या ये चीज़ें आनी आसान हैं?

तोष मरुत तब छमाँ जुड़ावै। धृति सम जावनु देइ जमावै॥

अब उस दूध को ठण्डा करना है। गर्म दूध को जमाओ तो जमता नहीं या खट्टा हो जाता है। ठण्डा करने के लिए हवा चाहिए। किसकी? धीरज की, सहनशीलता की। अब इस दूध को ठण्डा करके जामन लगाना है। वह किसका है? धारणा का। आदमी में इतने गुण कहाँ से आ जायें? बड़ा मुश्किल है।

मुदिताँ मथै बिचार मथानी। दम अधार रजु सत्य सुबानी॥

अब उस दूध को मथना है। विचार की मथानी चाहिए। आदमी हर वक़्त विचार करता रहे। हर वक़्त ख़ुश रहे, कभी दुःखी न हो और इन्द्रियजीत हो यानी मन-इन्द्रियाँ वश में हों और सच बोलनेवाला हो। ख़ुशी और विचार की मथानी हो। आगे सम-दम की रस्सी का उसका नेता* हो।

---

* मथानी को लपेटनेवाली रस्सी जिससे मथानी घुमायी जाती है।

तब मथि काढ़ि लेइ नवनीता। बिमल बिराग सुभग सुपुनीता॥

तब वैराग्य रूपी पुनीत मक्खन निकलता है जो इतने गुण पैदा करे। किसकी ताकत है? यह ज्ञान है, जो ज्ञान लिये फिरते हैं।

दोहा

जोग अगिनि करि प्रगट तब कर्म सुभासुभ लाइ॥
बुद्धि सिरावै ग्यान घृत ममता मल जारि जाइ॥

कहते हैं, फिर उस मक्खन को गर्म करना है, आग चाहिए। वह किसकी हो? कहते हैं, आदमी योगाभ्यासी बने। और फिर ईंधन चाहिए। वह ईंधन किसका हो? शुभ और अशुभ कर्मों का। समझे! अच्छे-बुरे कर्म दोनों को जला दे। अब श्रेष्ठ बुद्धि पैदा होगी। जो ममता की मैल (छाछ) हो, वह निकाल दे यानी अब श्रेष्ठ बुद्धि रूपी घी निकल आया। अब क्या करना है? आगे कहते हैं:

तब बिग्यानरूपिनी बुद्धि बिसद घृत पाइ॥
चित्त दिआ भरि धरै दृढ़ समता दिअटि बनाइ॥

कहते हैं, निर्मल बुद्धि हो, अन्दर वैराग्य हो तब वह दीया जलाये। सहँस-दल-कँवल की जोत प्रकट होने के लिए सयानी बुद्धि हो और वह ज्ञान का घी हो, अब समता यानी सभी को एक ही नज़र से देखने की बाती हो, चित्त का दीया बनाये, उसमें वह घी डाले। क्या? मन, इन्द्रियों के वश में न हो।

तीनि अवस्था तीनि गुन तेहि कपास तें काढि॥
तूल तुरीय सँवारि पुनि बाती करै सुगढ़ि॥

आगे सत, रज, तम—तीन गुण हैं, तीन अवस्थाएँ हैं। यह कपास है मानो तीनों गुणों को छोड़कर तुरिया पद में पहुँचकर उसकी रूई बनी। उसकी

आगे अब बत्ती बनानी है यानी तीनों अवस्थाएँ जाग्रत, स्वप्न, सुषुप्ति—अब रूह को इनसे ऊपर ले आना है। तीनों गुणों से रूह को निकालकर, अभ्यास करके ऊपर ले आओ। कहो, क्या यह आसान है? यह ज्ञान-मार्ग है।

सोरठा

एहि बिधि लेसै दीप तेज रासि बिग्यानमय॥
जातहिं जासु समीप जरहिं मदादिक सलब सब॥

अगर ज्ञान का दीया जल जाये तो कहते हैं काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार रूपी जितने पतंगे हैं, ये सारे ही जल जाते हैं। उसकी एक हज़ार बत्तियाँ हैं, सारे खण्डों को रोशन करता है, आप सभी के अन्दर है। जब रूह उस दीये को जला ले तो काम, क्रोध आदि जितने ये पतंगे हैं, जल जाते हैं।

चौपाई

सोहमस्मि इति बृत्ति अखंडा। दीप सिखा सोइ परम प्रचंडा॥

जब वह कहता है 'सोहं', तब अखण्ड वृत्ति होती है। नीचे का सारा देश भूल जाता है, वह शब्द-धुन आ जाती है। इसमें कोई शक नहीं कि वह अवस्था बड़ी ख़ुशी देनेवाली है। सहँस-दल-कँवल पर पहुँचा हुआ महात्मा सात विलायत की बादशाहत को ठोकर मारता है। यह लज़्ज़त तो जो लेते हैं, वे ही जानते हैं। बेशुमार ऋषि-मुनि उस जोत पर मस्त हुए बैठे हैं, आगे नहीं गये।

आतम अनुभव सुख सुप्रकासा। तब भव मूल भेद भ्रम नासा॥

जब दीया जल गया तो जितने भ्रम थे, वे सब नाश हो गये। आत्मा के ऊपर से ग़िलाफ़ उतर जाते हैं और रूह को शान्ति आ जाती है। यह सन्तों की पहली मंज़िल है और ऋषियों-मुनियों की यह आख़िरी मंज़िल है। अब इतने दुःख पाकर इसने दीया जलाया। अब विचार करो कि सन्त-मार्ग और ज्ञान-मार्ग में कितना फ़र्क़ है। कौन घर-बार छोड़े, जंगलों में जाये!

इसलिए जो सन्त-मार्ग है यह ऐसा है जैसा कि बैलगाड़ी के मुक़ाबले में हवाई जहाज़। इसमें घर-बार नहीं छोड़ना पड़ता, वे यह भी नहीं कहते कि तू अकेला जा। अगर बग़ैर गुरु के जाये तो क्या-क्या विघ्न पड़ते हैं? आगे कहते हैं:

प्रबल अबिद्या कर परिवारा। मोह आदि तम मिटइ अपारा॥

जब यह दीया जल गया तो काम, क्रोध रूपी पतंगे जल गये। अविद्या हट गयी, रोशनी हो गयी। अब जब जोत जग गयी, अविद्या, माया आदि जो इसके दुश्मन हैं, वे इसे बुझाने की कोशिश करते हैं। काम, क्रोध, लोभ, मोह और अविद्या यह चाहते हैं कि जोत बुझ जाये।

तब सोइ बुद्धि पाइ उँजिआरा। उर गृहँ बैठि ग्रंथि निरुआरा॥

उस वक़्त निर्मल बुद्धि अपने घर में, दीये की रोशनी में बैठकर गाँठ खोलती है।

छोरन ग्रंथि पाव जौं सोई। तब यह जीव कृतारथ होई॥

अगर बुद्धि को गाँठ खोलने का मौक़ा मिल जाये तो रूह आज़ाद हो जाती है। इन परदों को उतारकर रूह ऊपर जाने के क़ाबिल हो जाती है।

छोरत ग्रंथि जानि खगराया। बिघ्न अनेक करइ तब माया॥

जब बुद्धि गाँठ खोलने लगती है, माया दुश्मन है, वह कहती है कि हाय! रूह ऊपर क्यों जाती है। वह दुगुना ज़ोर लगाती है।

रिद्धि सिद्धि प्रेरइ बहु भाई। बुद्धिहि लोभ दिखावहिं आई॥

अब ऋद्धियाँ-सिद्धियाँ, करामातें, मान-बड़ाई आकर लोभ देती हैं कि तुझे दुनिया का राजा बना देंगे। जो लोग कहते हैं कि दिखाओ करामात, ये बाज़ार की वेश्याएँ हैं। सन्तों के सत्संगी रूहानी मण्डलों पर चढ़ते हैं,

उन्हें अन्दर रोज़ करामातें मिलती हैं, लेकिन वे बाहर मदारी के खेल नहीं दिखाते। ऋद्धियाँ-सिद्धियाँ आकर बुद्धि को लोभ देती हैं।

कल बल छल करि जाहिं समीपा। अंचल बात बुझावहिं दीपा॥

ऋद्धियाँ-सिद्धियाँ, करामातें वग़ैरह ज़रा पास गयीं कि झट पल्ला मारा और दीया बुझा दिया। बुद्धि चाहती है कि मुझे ऋद्धियाँ-सिद्धियाँ मिलें, सारे संसार में मेरा नाम हो जाये। जब बुद्धि लोभ में आयी तो दीया बुझ गया।

होइ बुद्धि जौं परम सयानी। तिन्ह तन चितव न अनहित जानी॥

अगर बुद्धि सयानी हो तो उनकी परवाह न करे। शक्तियों की तरफ़ न देखे। मैं कहता हूँ कि अन्दर जाकर देखो, सैकड़ों ऋषि-मुनि राह में बैठे हैं। कई सत्संगी बाहर जाकर सत्संग करते हैं। ज़रा-सा आदर-मान मिला, फूल गये। यों ही सारी दुनिया लुटी जा रही है।

जौं तेहि बिघ्न बुद्धि नहिं बाधी। तौ बहोरि सुर करहिं उपाधी॥

अगर बुद्धि इन ऋद्धियों-सिद्धियों, शक्तियों के क़ाबू में न आयी, उसने मंज़ूर न किया तो जो इन्द्रियों के देवता हैं, ये शोर मचाते हैं। दाहिनी आँख का देवता सूरज है, बाईं का चन्द्रमा, ज़बान का देवता वरुण है। इसी तरह जो बाक़ी इन्द्रियों के अलग-अलग देवता हैं, जिन देवताओं की यह पूजा करता है, वे ही क़साई हैं, वे ही इसको फँसाते हैं।

इंद्री द्वार झरोखा नाना। तहँ तहँ सुर बैठे करि थाना॥

ये देवता नहीं चाहते कि रूह आगे चली जाये। ये तो रूह के दुश्मन हैं। अपने-अपने विषय-विकारों की तरफ़ खींचते हैं। सारी इन्द्रियों के झरोखों के ऊपर ये अपना स्थान बनाकर बैठे हैं। ये नहीं चाहते, रूह ऊपर चली जाये। इनको फ़रिश्ते कहो या देवता।

आवत देखहिं बिषय बयारी। ते हठि देहिं कपाट उघारी॥
जब सो प्रभंजन उर गृहँ जाई। तबहिं दीप बिग्यान बुझाई॥

जब विषयों की हवा आयी, ये दरवाज़े खोल देते हैं। समझे! काम का जोश आ गया या क्रोध चढ़ गया क्योंकि आँखें रूप की आशिक़ हैं, वैसे ही जैसे और इन्द्रियाँ। जब विषयों की हवा आयी, इन्होंने अपना दरवाज़ा खोल दिया। जब विषयों की हवा आयी, दीया बुझ गया, रोशनी है नहीं। हाय! हाय! इतनी मेहनत करके वह दीया जलाया था, वह बुझ गया।

ग्रंथि न छूटि मिटा सो प्रकासा। बुद्धि बिकल भइ बिषय बतासा॥

दीया बुझ गया, गाँठ खुली नहीं, बुद्धि लज़्ज़त लेने लगी। अब विषयों के वश होकर बुद्धि पागल हो गयी।

इंद्रिन्ह सुरन्ह न ग्यान सोहाई। बिषय भोग पर प्रीति सदाई॥

जो इन्द्रियों के देवता हैं, वे ज्ञान को पसन्द नहीं करते। ये जितने देवता हैं, ये सभी तुम्हारे दुश्मन हैं।

बिषय समीर बुद्धि कृत भोरी। तेहि बिधि दीप को बार बहोरी॥

क्यों? क्योंकि इन्द्रियाँ विषय-भोगों की आशिक़ हैं। अब विषयों की लज़्ज़त पाकर बुद्धि पागल हो गयी। अब दीया जलाती है, वह जलता नहीं।

दोहा

तब फिरि जीव बिबिधि बिधि पावई संसृति क्लेस॥
हरि माया अति दुस्तर तरि न जाइ बिहगेस॥

अब दीया जलता नहीं। मानो आदमी अन्तर्यामी हो गया, करामातें आ गयीं, दुनिया में वाह-वाह हो गयी पर अपनी झोंपड़ी तबाह हो गयी।

इसलिए काकभुशुण्डि कहता है कि जो भगवान की माया है, वह अति दुष्कर है, इसका तरना मुश्किल है।

कहत कठिन समुझत कठिन साधन कठिन बिबेक॥
होइ घुनाच्छर न्याय जौं पुनि प्रत्यूह अनेक॥

कहते हैं, यह जो ज्ञान का मार्ग है, पहले तो इसे समझना बड़ा मुश्किल है। अगर हज़ारों-लाखों में कोई ज्ञानी निकल भी आये तो बना क्या? कहते हैं, जैसे घुन लकड़ी को खाता है और क़ुदरती कोई न कोई अक्षर या लफ़्ज़ बन जाता है, पर इससे वह घुन कोई पढ़ा-लिखा तो नहीं बन जाता। वह लफ़्ज़ क़ुदरती बन जाता है। कहते हैं, यही ज्ञान वालों का हाल है।

चौपाई

ग्यान पंथ कृपान कै धारा। परत खगेस होइ नहिं बारा॥

ऐ गरुड़! ज्ञान का रास्ता तलवार की धार है, इस पर से गिरते देर नहीं लगती। हज़ारों ऋषि-मुनि गिरते आये।

जो निर्बिघ्न पंथ निर्बहई। सो कैवल्य परम पद लहई॥

कहते हैं, पहले तो ज्ञान का रास्ता पार होता ही नहीं। अगर हज़ारों-लाखों में से कोई इसे निर्विघ्न पार कर भी जाये तो कहाँ जाता है? कैवल्य-मुक्ति में। कैवल्य-मुक्ति कहाँ है? बंकनाल के नीचे।

अति दुर्लभ कैवल्य परम पद। संत पुरान निगम आगम बद॥

सन्त, पुराण और वेद-शास्त्र कहते हैं, केवली बड़ा ऊँचा पद है, लेकिन यह वेद-मार्गियों के लिए है, सन्तों के लिए तो कोई ऊँचा नहीं।

राम भजत सोइ मुकुति गोसाईं। अनइच्छित आवइ बरिआईं॥

कहते हैं, जो शब्द का मार्ग है, उसकी भक्ति आसान है। बग़ैर माँगे ही यह फल दे देती है यानी सबसे पहले जब यह सतगुरु के साथ प्यार करता है, जितनी दुनिया की उपाधियाँ हैं, दूर हो जाती हैं। पहला उसूल क्या है? मांस-शराब से परहेज़ और पराई औरत को माँ-बहन समझना। जो नौ द्वारों से निकला, देवों-पितरों का मार्ग पार किया, उसकी जन्म-मरण से रिहाई हो जाती है। कहते हैं, सतगुरु को साथ लेकर चलो। जब सतगुरु को साथ लेकर चले तो देवी-देवता क्या कर सकते हैं! और जितनी ऋद्धियाँ-सिद्धियाँ हैं, सतगुरु कहता है, ''भाई, ख़बरदार! इन्हें क़बूल न करना, ये बाज़ार की वेश्याएँ हैं।'' यानी सतगुरु की कृपा से रूह ऊपर की मंज़िलें पार करती है, पर साथ ही यह बात है कि सतगुरु का रास्ता भी आसान नहीं। अगर ज़रा भी मैल है तो परदा नहीं खुलता।

जिमि थल बिनु जल रहि न सकाई। कोटि भाँति कोउ करै उपाई॥

जैसे पानी धरती के बग़ैर नहीं रह सकता, चाहे करोड़ों उपाय करो, पानी ज़मीन के ऊपर ही ठहरेगा। इसी तरह भक्ति के बिना ज्ञान नहीं रह सकता।

तथा मोच्छ सुख सुनु खगराई। रहि न सकइ हरि भगति बिहाई॥
अस बिचारि हरि भगत सयाने। मुक्ति निरादर भगति लुभाने॥

इसलिए जितने महात्मा हैं, वे भक्ति के आशिक़ हैं। ये ज्ञान की तरफ़ नहीं जाते। न दुनिया छोड़नी है, न घर-बार छोड़ना है। सतगुरु और नाम का इश्क़ दोनों पैदा होने चाहिएँ।

भगति करत बिनु जतन प्रयासा। संसृति मूल अबिद्या नासा॥

कहते हैं, कई दिनों की मेहनत से और भक्ति करते-करते अन्दर परदा खुल जाता है। हम हैरान हैं, कभी-कभी लड़कियाँ (अन्दर) परदा खोल लेती हैं, बच्चे खोल लेते हैं।

भोजन करिअ तृपिति हित लागी। जिमि सो असन पचवै जठरागी॥

कहते हैं, जिस तरह आदमी स्वादिष्ट भोजन ज़्यादा खा तो लेता है, अगर हाज़मा क़बूल न करे तो नुक़सान भी हो जाता है।

असि हरि भगति सुगम सुखदाई। को अस मूढ़ न जाहि सोहाई॥

इसलिए जो मालिक की भक्ति है, वह फ़ायदेमन्द है। कौन मूर्ख है जो भक्ति को छोड़कर ज्ञान की तरफ़ जायेगा!

दोहा

सेवक सेब्य भाव बिनु भव न तरिअ उरगारि।
भजहु राम पद पंकज अस सिद्धांत बिचारि॥

अगर कोई सेवक बिना प्रेम-प्यार के सेवा करे तो वह भवसागर को पार नहीं कर सकेगा। सो, सर्पों के शत्रु, गरुड़ जी! इसलिए गुरु या राम के चरण-कमलों का ध्यान करो, यही सबसे ऊँचा सिद्धान्त या विचार है।

जो चेतन कहँ जड़ करइ जड़हि करइ चैतन्य।
अस समर्थ रघुनायकहि भजहिं जीव ते धन्य॥

चौपाई

कहेउँ ग्यान सिद्धांत बुझाई। सुनहु भगति मनि कै प्रभुताई॥
राम भगति चिंतामनि सुंदर। बसइ गरुड़ जाके उर अंतर॥
परम प्रकास रुप दिन राती। नहिं कछु चहिअ दिआ घृत बाती॥
मोह दरिद्र निकट नहिं आवा। लोभ बात नहिं ताहि बुझावा॥
प्रबल अबिद्या तम मिटि जाई। हारहिं सकल सलभ समुदाई॥
खल कामादि निकट नहिं जाहीं। बसइ भगति जाके उर माहीं॥
गरल सुधासम अरि हित होई। तेहि मनि बिनु सुख पाव न कोई॥
ब्यापहिं मानस रोग न भारी। जिन्ह के बस सब जीव दुखारी॥

राम भगति मनि उर बस जाकें। दुख लवलेस न सपनेहुँ ताकें॥
चतुर सिरोमनि तेइ जग माहीं। जे मनि लागि सुजतन कराहीं॥
सो मनि जदपि प्रगट जग अहई। राम कृपा बिनु नहिं कोउ लहई॥
सुगम उपाय पाइबे केरे। नर हतभाग्य देहिं भटभेरे॥
पावन पर्बत बेद पुराना। राम कथा रुचिराकर नाना॥
मर्मी सज्जन सुमति कुदारी। ग्यान बिराग नयन उरगारी॥
भाव सहित खोजइ जो प्रानी। पाव भगति मनि सब सुख खानी॥
मोरें मन प्रभु अस बिस्वासा। राम ते अधिक राम कर दासा॥
राम सिंधु घन सज्जन धीरा। चंदन तरु हरि संत समीरा॥
सब कर फल हरि भगति सुहाई। सो बिनु संत न काहूँ पाई॥
अस बिचारि जोइ कर सतसंगा। राम भगति तेहि सुलभ बिहंगा॥

दोहा

ब्रह्म पयोनिधि मंदर ग्यान संत सुर आहिं।
कथा सुधा मथि काढ़हिं भगति मधुरता जाहिं॥
बिरति चर्म असि ग्यान मद लोभ मोह रिपु मारि।
जय पाइअ सो हरि भगति देखु खगेस बिचारि॥

वह परमेश्वर समर्थ है, जड़ को चेतन और चेतन को जड़ कर सकता है। मूर्ख को ज्ञानी और ज्ञानी को मूर्ख बना सकता है। वह परमेश्वर धन्य है और जो जीव उसकी भक्ति करते हैं, वे भी धन्य हैं। परमेश्वर की भक्ति अनमोल धन है, हर प्रकार के अवगुण और दोष दूर करनेवाली है। काम, क्रोध, लोभ, मोह और अहंकार की नाशक है। यह अमृत जैसी है, दुःखों की नाशक है। सच्चे मान, सच्ची बड़ाई को देनेवाली है। जो लोग प्रेम-भाव से परमेश्वर को खोजते हैं, उन्हें भक्ति की दात मिलती है। प्रभु के भक्त, प्रभु से बढ़कर हैं, पर बिना सन्तों के और उनके सत्संग के यह अनमोल दात प्राप्त नहीं हो सकती।

मारू महला 1

घरि रहु रे मन मुगध इआने॥ रामु जपहु अंतरगति धिआने॥
लालच छोडि रचहु अपरंपरि इउ पावहु मुकति दुआरा हे॥ 1॥
जिसु बिसरिऐ जमु जोहणि लागै॥ सभि सुख जाहि दुखा फुनि आगै॥
राम नामु जपि गुरमुखि जीअड़े एहु परम ततु वीचारा हे॥ 2॥
हरि हरि नामु जपहु रसु मीठा॥ गुरमुखि हरि रसु अंतरि डीठा॥
अहिनिसि राम रहहु रंगि राते एहु जपु तपु संजमु सारा हे॥ 3॥
राम नामु गुर बचनी बोलहु॥ संत सभा महि इहु रसु टोलहु॥
गुरमति खोजि लहहु घरु अपना बहुड़ि न गरभ मझारा हे॥ 4॥
सचु तीरथि नावहु हरि गुण गावहु॥ ततु वीचारहु हरि लिव लावहु॥
अंत कालि जमु जोहि न साकै हरि बोलहु रामु पिआरा हे॥ 5॥
सतिगुरु पुरखु दाता वड दाणा॥ जिसु अंतरि साचु सु सबदि समाणा॥
जिस कउ सतिगुरु मेलि मिलाए तिसु चूका जम भै भारा हे॥ 6॥
पंच ततु मिलि काइआ कीनी॥ तिस महि राम रतनु लै चीनी॥
आतम रामु रामु है आतम हरि पाईऐ सबदि वीचारा हे॥ 7॥
सत संतोखि रहहु जन भाई॥ खिमा गहहु सतिगुर सरणाई॥
आतमु चीनि परातमु चीनहु गुर संगति इहु निसतारा हे॥ 8॥
साकत कूड़ कपट महि टेका॥ अहिनिसि निंदा करहि अनेका॥
बिनु सुमिरन आवहि फुनि जावहि ग्रभ जोनी नरक मझारा हे॥ 9॥
साकत जम की काणि न चूकै॥ जम का डंडु न कबहू मूकै॥
बाकी धरम राइ की लीजै सिरि अफरिओ भारु अफारा हे॥ 10॥
बिनु गुर साकतु कहहु को तरिआ॥ हउमै करता भवजलि परिआ॥

बिनु गुर पारु न पावै कोई हरि जपीऐ पारि उतारा हे॥ 11 ॥
गुर की दाति न मेटै कोई॥ जिसु बखसे तिसु तारे सोई॥
जनम मरण दुखु नेड़ि न आवै मनि सो प्रभु अपर अपारा हे॥ 12 ॥
गुर ते भूले आवहु जावहु॥ जनमि मरहु फुनि पाप कमावहु॥
साकत मूड़ अचेत न चेतहि दुखु लागै ता रामु पुकारा हे॥ 13 ॥
सुख दुखु पुरब जनम के कीए॥ सो जाणै जिनि दातै दीए॥
किस कउ दोसु देहि तू प्राणी सहु अपणा कीआ करारा हे॥ 14 ॥
हउमै ममता करदा आइआ॥ आसा मनसा बंधि चलाइआ॥
मेरी मेरी करत किआ ले चाले बिखु लादे छार बिकारा हे॥ 15 ॥
हरि की भगति करहु जन भाई॥ अकथु कथहु मनु मनहि समाई॥
उठि चलता ठाकि रखहु घरि अपुनै दुखु काटे काटणहारा हे॥ 16 ॥
हरि गुर पूरे की ओट पराती॥ गुरमुखि हरि लिव गुरमुखि जाती॥
नानक राम नामि मति ऊतम हरि बखसे पारि उतारा हे॥ 17 ॥[1]

सत्संग के बचन

घरि रहु रे मन मुगध इआने॥ रामु जपहु अंतरगति धिआने॥

गुरु नानक साहिब कहते हैं कि ऐ पुरुष! तुझे आँखों के पीछे परदा लगाकर बाहर निकाला हुआ है। तू सारी उम्र बाहर ही बाहर रहा, अपने घर आया ही नहीं। करोड़ों जन्म पाये, कभी कुत्ता-बिल्ला बना, कभी घास-फूस बना। अगर मनुष्य-जन्म भी मिला तो भी मन ने अन्दर जाने नहीं दिया। तू सोता हुआ भी बाहर है, जागता हुआ भी बाहर है और कामकाज करता हुआ भी अपने असली घर से बाहर है। ऐब-पाप अन्दर आ जाते हैं मगर रूह अन्दर नहीं जाती। अब कहते हैं कि अगर तू नाम जपे तो तेरी अन्तर्गति हो जाये। किसका नाम? राम का। कौन-सा राम? 'रमतीता सो रामा'—जो सब जगह रमा हुआ है। सो, जब तू 'राम' के साथ लिव लगायेगा, रूह अन्दर चली जायेगी, ध्यान आ जायेगा। इसके विपरीत, जब रूह अन्दर ही नहीं गयी तो ध्यान कैसा?

लालच छोडि रचहु अपरंपरि इउ पावहु मुकति दुआरा हे॥

कहते हैं, बाहर का लालच छोड़, अन्दर जा, तेरी मुक्ति हो जायेगी। मुक्ति न तीर्थों में है, न पानी में है, न मूर्तियों में है, बल्कि इसके अन्दर है। करोड़ों यज्ञ करो, तप करो, शान्ति और मुक्ति नहीं मिलती। इसका यह मतलब नहीं समझ लेना कि इसका फल कुछ नहीं मिलता। नहीं, अगले जन्म में सेठ-साहूकार हो जायेगा, दौलत मिल जायेगी, मगर मुक्ति नहीं। सो, गुरु साहिब कहते हैं कि जब तुम दुनिया के लालच छोड़कर अन्दर चढ़ोगे, मुक्ति हो जायेगी।

जिसु बिसरिऐ जमु जोहणि लागै॥ सभि सुख जाहि दुखा फुनि आगै॥

कहते हैं, जिस राम को भुला देने से हमें सब दुःख लग जाते हैं, जिसे भुलाने से इसे यम ऐसे देखता है जैसे बिल्ली चूहे को देखती है, वह राम तेरे अन्दर है और इसके साथ जुड़ने पर सारे दुःख बिसर जाते हैं। अगर तू अपनी रूह को राम के साथ नहीं जोड़ता तो यमदूत आयेंगे और साथ ले जायेंगे। इसलिए बेहतर है कि तू सतगुरु का कहना मानकर अन्दर जा।

राम नामु जपि गुरमुखि जीअड़े एहु परम ततु वीचारा हे॥

कहते हैं कि तू किसी गुरुमुख से नाम लेकर उसकी कमाई कर। अगर कोई ऊँची से ऊँची कमाई है, उत्तम से उत्तम तरीक़ा मुक्ति हासिल करने का है तो यह कि आपके अन्दर राम है, तुम अपनी सुरत को उसके साथ जोड़ दो।

हरि हरि नामु जपहु रसु मीठा॥ गुरमुखि हरि रसु अंतरि डीठा॥

अब जो ताकत 'राम' है, वह अति मीठी और अति प्यारी है मगर जब तक आप अन्दर जाकर गुरुमुख न बनो, उसकी लज़्ज़त नहीं आती। वह लफ़्ज़ नहीं, वह लिखने, पढ़ने, बोलने में नहीं आता। वेद-शास्त्र और दुनिया की अन्य किताबें उसकी महिमा करती हैं, लेकिन वह इनमें नहीं

है। जब तक आप नाम नहीं जपो, वह नहीं मिलता। सो, जब आप मेहनत करके अन्दर जाओगे और सेत-सुन्न में जाकर सारे पाप उतार दोगे, तब यह हालत होगी।

अहिनिसि राम रहहु रंगि राते एहु जपु तपु संजमु सारा हे॥

कहते हैं कि वह राम, वह राग, वह कीर्तन, प्यारे से प्यारा है। आप रात-दिन उसके साथ अपनी रूह को जोड़ो। जैसे-जैसे कमाई करोगे, उसका रंग चढ़ेगा। अब कहते हैं कि सारे जप, सारे तप, सारे नेक कर्मों का सार क्या है? कि आत्मा को राम के साथ जोड़ना। इससे बढ़कर कोई कमाई नहीं। अगर आत्मा राम के साथ जुड़ गयी तो करोड़ों जप-तप हो गये, मतलब कि सबकुछ इसी में आ गया।

राम नामु गुर बचनी बोलहु॥ संत सभा महि इहु रसु टोलहु॥

कहते हैं, 'राम-राम' लफ़्ज़ को नहीं जपना, बल्कि राम से मिलना है। जब तुम गुरु के पास जाओगे, वह तुम्हें तरकीब समझायेगा कि इस तरह राम के साथ रूह जोड़ी जाती है। अब कहते हैं कि जो राम का रस, राम की लज़्ज़त, राम का स्वाद है, वह सन्तों की सभा में जाकर आता है।

गुरमति खोजि लहहु घरु अपना बहुड़ि न गरभ मझारा हे॥

कहते हैं, गुरु अपने अन्दर जाता है। अगर हम मन की मति छोड़कर गुरु की मति ले लें यानी जिस रास्ते गुरु जाता है, उसी रास्ते चलें तो जन्म-मरण नहीं होता।

सचु तीरथि नावहु हरि गुण गावहु॥ ततु वीचारहु हरि लिव लावहु ॥

कहते हैं, सच्चा तीर्थ तुम्हारे अन्दर मानसरोवर, सुन्न-स्थान या पारब्रह्म में है। जब तुम राम यानी सुरत-शब्द की कमाई करके वहाँ जाओगे, जन्मों-जन्मों

के कर्म नाश हो जायेंगे, आत्मा निष्कर्म हो जायेगी, बारह सूरज की रोशनी तुम्हारी अपनी हो जायेगी। अब गुरु नानक साहिब कहते हैं कि जो सार वस्तु है, वह राम है। 'राम' लफ़्ज़ को नहीं कहते। वहाँ जाकर उसके साथ लिव लगाओ।

अंत कालि जमु जोहि न साकै हरि बोलहु रामु पिआरा हे॥

कहते हैं, अगर तुम सतगुरु से राह लेकर उस प्यारे से प्यारे राम के साथ अपनी सुरत को जोड़ दो, फिर तुम्हारी मौत के वक़्त यमदूत नहीं आयेंगे। अगर यमदूतों को आना है तो हमें सतगुरु की क्या ज़रूरत है? अब शर्त यह है कि यह पूरा भरोसा और पूरा विश्वास रखकर कमाई करे तो मौत के वक़्त सतगुरु आयेगा। अगर ज़रा भी अभाव आ गया तो सतगुरु नहीं आता, परदा नहीं खुलता।

सतिगुरु पुरखु दाता वड दाणा॥ जिसु अंतरि साचु सु सबदि समाणा॥

कहते हैं, सतगुरु सतपुरुष है, दाता है, दाना है। क्यों? क्योंकि वह शब्द के ख़ज़ाने का मालिक है। जब तक सतगुरु शब्द का भेद न दे, हम अन्दर नहीं जा सकते। अन्दर के ख़ज़ाने की चाबी सतगुरु के हाथ है। यही गुरु अंगद साहिब कहते हैं:

गुरु कुंजी पाहू निवलु मनु कोठा तनु छति॥
नानक गुर बिनु मन का ताकु न उघड़ै अवर न कुंजी हथि॥[2]

जब तक सतगुरु चाबी न दे, हम अन्दर नहीं जा सकते, न ही वह ख़ज़ाना मिलता है। ऋषियों-मुनियों ने करोड़ों उपाय किये, मगर अन्दर नहीं जा सके। अब कहते हैं कि सतगुरु के अन्दर शब्द है, वह ख़ुद शब्द की कमाई करता है और हमें शब्द की कमाई करने का तरीक़ा बताता है।

जिस कउ सतिगुरु मेलि मिलाए तिसु चूका जम भै भारा हे॥

कहते हैं, सतगुरु जिसकी सुरत को शब्द के साथ जोड़ दे और वह शब्द की लज़्ज़त ले ले, फिर उसे कुछ करने की ज़रूरत नहीं। समझो! वह सबकुछ कर गया। फिर उसे न यम का ख़ौफ़ है, न मौत का और न किसी और का।

पंच ततु मिलि काइआ कीनी॥ तिस महि राम रतनु लै चीनी॥

कहते हैं, यह शरीर हवा, मिट्टी, पानी, आग और आकाश पाँच तत्त्वों का बना हुआ है। अगर इसके अन्दर कोई क़ीमती चीज़ है तो शब्द है, राम है, नाम की धार है। जब तक इसके अन्दर शब्द है, तब तक पाँचों तत्त्व भी क़ायम हैं। जिस वक़्त शब्द की धार हटी, सारे तत्त्व चले गये। मिट्टी, मिट्टी में चली गयी; हवा, हवा में चली गयी; पानी, पानी में चला गया; आग, आग में चली गयी और आकाश, आकाश में चला गया।

आतम रामु रामु है आतम हरि पाईऐ सबदि वीचारा हे॥

बूँद में समुद्र है और समुद्र में बूँद है यानी राम में यह सारा ब्रह्माण्ड है और राम हरएक आदमी के अन्दर है। अजीब खेल है! कहते हैं, जब तुम शब्द की कमाई करके शब्द-रूप हो जाओगे, तब यह अवस्था आयेगी। शब्द की कमाई के बिना इसकी समझ नहीं आती।

सत संतोखि रहहु जन भाई॥ खिमा गहहु सतिगुर सरणाई॥

कहते हैं, सत्य, सन्तोष, शान्ति और अन्य सारी शुभ चीज़ें लेकर सतगुरु की शरण में आओ तो तुम्हारा परदा खुल जायेगा। सतगुरु के पास शराब-कबाब छोड़कर आओ। सतगुरु की शरण में आकर क्रोधी और अहंकारी नहीं होना चाहिए, विषयी नहीं होना चाहिए, लालची और मोही नहीं होना चाहिए, मतलब कि तुम्हें 'प्योर', साफ़ होकर आना चाहिए।

आतमु चीनि परातमु चीनहु गुर संगति इहु निसतारा हे॥

कहते हैं, हमारा पहला काम, हमारी पहली 'ड्यूटी' सारे *ग़िलाफ़ उतारकर* आत्मा को नंगा करना है, जो सेत-सुन्न में जाकर होगा। यहाँ मातलोक में स्थूल शरीर है, सहँस-दल-कँवल में सूक्ष्म है, ब्रह्म में कारण है। जब तक सारे ग़िलाफ़ न उतारें, बनता कुछ नहीं। जब सारे ग़िलाफ़ उतर जायेंगे तो हम कहेंगे, 'आइ एम दि सोल', 'मैं आत्मा हूँ'। फिर हम कहेंगे कि हमारा परमात्मा कौन है? और फिर हम उससे मिलने की कोशिश करेंगे। सो, यह जीव स्थूल, सूक्ष्म, कारण, तीन पिंजरों का तोता है।

साकत कूड़ कपट महि टेका॥ अहिनिसि निंदा करहि अनेका॥

जो आदमी परदा खोलकर कभी अन्दर ही नहीं गया, उसे कहते हैं मनमुख, साकत। सो, जो साकत अन्दर नहीं गये, किसी के साथ दोस्ती, किसी के साथ दुश्मनी की, अपना कुछ नहीं बनाया, वे ख़ाली आये और ख़ाली चले गये। जिस तरह किसी के घर में करोड़ रुपया दबा हुआ हो, वह उसे न निकाले तो वह जैसा आया, वैसा ही चला गया। यही हाल उनका है जो परदा खोलकर अन्दर नहीं गये। उन्होंने दुनिया खायी, दुनिया पी, दुनिया से ही प्यार किया, जब मौत आयी तो फिर दुनिया में आ गये। वे हमेशा निन्दा में लगे रहते हैं और निन्दा घोर पाप है।

बिनु सुमिरन आवहि फुनि जावहि ग्रभ जोनी नरक मझारा हे॥

जब तक सतगुरु न मिले और यह अन्दर परदा खोलकर नाम की लज़्ज़त न ले, ऐब-पाप दूर नहीं होते, जन्म-मरण ख़त्म नहीं होता। जीव करोड़ों बार गर्भ में आया, कभी घास-फूस, कभी देवी-देवता, कभी पशु, कभी पक्षी बना। जब तक शब्द न मिले, मुक्ति नहीं। अब यह तरीक़ा किसी वली, किसी पैग़म्बर या किसी और का बनाया हुआ नहीं, बल्कि परमेश्वर-रचित है। जब तक दुनिया रहेगी, यही क़ायदा रहेगा। सो, अगर

यह मनुष्य-जन्म पाकर खोटे कर्म करेगा तो योनियों में जायेगा यानी जन्म-मरण से मुक्त नहीं होगा, बल्कि नरकों में भी जलेगा।

साकत जम की काणि न चूकै ॥ जम का डंडु न कबहू मूकै ॥

मनमुख हमेशा यमदूतों के साथ रहेंगे। अगर आदमी का जन्म है तो जब मौत आयी, चलो धर्मराय के दरबार! अगर पशु है तो चलो धर्मराय के पास। कहते हैं, जब साकत मरेगा तो यमदूत आयेंगे और धर्मराय के दरबार में ले जायेंगे, क्योंकि हर जन्म में कर्म करने पड़ते हैं और कर्मों का दण्ड देनेवाले हैं यमदूत या धर्मराय।

बाकी धरम राइ की लीजै सिरि अफरिओ भारु अफारा हे ॥

जब यह धर्मराय के आगे पेश होता है, वह दफ़्तर (लेखा) दिखा देता है कि सारी उम्र के तेरे ये कर्म हैं। जो किया है, ले लो। कहते हैं, करोड़ों जन्मों का बोझ उठा-उठा कर हिसाब देना पड़ा।

बिनु गुर साकतु कहहु को तरिआ ॥ हउमै करता भवजलि परिआ ॥

अब श्री गुरु नानक साहिब कहते हैं कि कोई मनमुख, कोई साकत, बग़ैर गुरु के कभी पार नहीं गया। बग़ैर गुरु और नाम के कभी मुक्ति नहीं। करोड़ों जप, करोड़ों तप करे, जन्म-मरण से छूट नहीं सकता। जन्म-मरण से बचने का एक ही इलाज है, क्या? नाम, शब्द, आकाशवाणी और वह इसके अन्दर है। यह सारी उम्र आँखों से बाहर ही बाहर रहा। 'मैं आलिम, मैं फ़ाज़िल, मैं गुणी, मैं ज्ञानी' और कई तरह के अहंकार में सारी उम्र गुज़ार दी।

बिनु गुर पारु न पावै कोई हरि जपीऐ पारि उतारा हे ॥

अब गुरु नानक साहिब कहते हैं कि बग़ैर गुरु के न कोई अन्दर गया है और न कोई जायेगा। जब गुरु नाम दे, हम नाम की कमाई करें तो मुक्ति

होती है। अगर नाम लेकर रख छोड़ें तो मुक्ति कोई नहीं। जिस तरह अगर डॉक्टर से दवाई लाकर रख छोड़ें तब बीमारी तो नहीं जाती। सो, बग़ैर नाम की कमाई के कोई पार नहीं जा सकता।

गुर की दाति न मेटै कोई॥ जिसु बखसे तिसु तारे सोई॥

कहते हैं, दुनिया की दौलत साथ नहीं जाती, बाल-बच्चे साथ नहीं जाते और अन्य सामान साथ नहीं जाते। यहाँ तक कि यह शरीर भी साथ नहीं जाता। साथ कौन जाता है? सतगुरु। अगर दुनिया में हमारे कोई रिश्तेदार हैं तो सतगुरु और शब्द। दुनिया की दातें यहीं की यहीं रह जाती हैं, मगर जो दात गुरु देता है, वह साथ जाती है। इसलिए अगर कोई उत्तम से उत्तम उपकार करता है तो गुरु करता है। नहीं तो कोई कुआँ खुदवाता है, कोई यज्ञ कराता है, कोई तप कराता है, मगर ये साथ नहीं जाते। सो, अगर कोई दाता है तो सतगुरु है। अब कहते हैं कि सतगुरु की दात को न पानी गला सकता है, न आग जला सकती है और न चोर चुरा सकता है। गुरु अर्जुन साहिब फ़रमाते हैं:

> गुर का बचनु बसै जीअ नाले॥
> जलि नही डूबै तसकरु नही लेवै भाहि न साकै जाले॥[3]

गुरु की दात को फ़ना (नष्ट) नहीं किया जा सकता यानी जिस हृदय में सतगुरु नाम का बीज डाल देते हैं, वह नाश नहीं होता। अगर इस जन्म में कमाई नहीं करेगा तो अगले जन्म में करेगा, उससे अगले जन्म में करेगा। गुरु छोड़ता नहीं, कमाई करवाकर धुर-धाम पहुँचाकर ही रहता है।

जनम मरण दुखु नेड़ि न आवै मनि सो प्रभु अपर अपारा हे॥

कहते हैं, जो नाम जपते हैं, वे फिर न तो जन्म लेते हैं, न मरते हैं बल्कि वे नाम की लज़्ज़त पाकर पार हो जाते हैं।

गुर ते भूले आवहु जावहु॥ जनमि मरहु फुनि पाप कमावहु॥

कहते हैं, अगर मनुष्य-जन्म में गुरु नहीं मिला तो फिर सदा के लिए जन्म-मरण है क्योंकि जब नाम नहीं मिला तो मनुष्य-जन्म भी व्यर्थ गया, फिर मुक्ति कहाँ? देवी-देवता तरस रहे हैं, ब्रह्मा, विष्णु, शिव तरस रहे हैं कि हमें मनुष्य-जन्म मिले! हमें नाम मिले!

साकत मूड़ अचेत न चेतहि दुखु लागै ता रामु पुकारा हे॥

कहते हैं, जिसे नाम नहीं मिला, वे मूर्ख हैं, मनमुख हैं, उन्हें नाम की ख़बर नहीं। जब कोई मुक़द्दमा आ पड़े या कोई और दुःख आ पड़े, तब कहते हैं कि हे राम! मगर उस वक़्त कहने का क्या फ़ायदा? जिस तरह अगर आग लग जाये, तब पानी की मश्कें लेने जायें! इतनी देर में तो घर जल जाता है।

सुखु दुखु पुरब जनम के कीए॥ सो जाणै जिनि दातै दीए॥
किस कउ दोसु देहि तू प्राणी सहु अपणा कीआ करारा हे॥

कहते हैं, हम जन्मों-जन्मों से कर्म करते आये हैं। क्रियमान करते आये हैं और प्रारब्ध भोगते आये हैं। कोई अमीर है, कोई ग़रीब है। जैसे-जैसे पिछले जन्मों में कर्म किये, उसके मुताबिक़ अब का जन्म है यानी तू जो कर्म करता आया है, धर्मराय उसके मुताबिक़ जन्म देगा। जैसा बीज बोओगे, वैसा फल मिलेगा। लेकिन जब हमारे अपने ही किये हुए कर्म हैं तो हमें चाहिए कि प्यार के साथ भोग लें। अगर ग़रीब हैं तो भी प्रेम के साथ भोगने चाहिएँ, अगर बीमार हैं तो हमारे ही खोटे कर्मों का नतीजा है। सो, गुरु नानक साहिब कहते हैं कि जैसी आये, काट ले, बुरा न माने, क्योंकि इसके अपने ही किये कर्मों का फल है।

हउमै ममता करदा आइआ॥ आसा मनसा बंधि चलाइआ॥

कहते हैं, तू करोड़ों पाप करता आया है, तेरे करोड़ों बेटे, करोड़ों बेटियाँ होते आये हैं, तू करोड़ों, अनन्त जन्मों से योनियाँ भोगता आया है। अब अपने किये का फल भोग ले।

मेरी मेरी करत किआ ले चाले बिखु लादे छार बिकारा हे॥

कहते हैं कि तू सारे जन्मों में ही 'मेरी, मेरी' करता आया है और दुःख पाता आया है। तूने हासिल क्या किया?

हरि की भगति करहु जन भाई॥ अकथु कथहु मनु मनहि समाई॥

अब गुरु नानक साहिब फिर कहते हैं कि परमेश्वर की भक्ति करो। कैसे करो? कि तुम्हारे अन्दर आकाशवाणी है, शब्द है, अकथ-कथा है जो बयान नहीं की जा सकती। फिर वह रात-दिन हो रही है। उसके साथ अपनी रूह को जोड़ दो। जब उसकी लज़्ज़त लोगे, मन मर जायेगा, वश में आ जायेगा, रूह अपने घर चली जायेगी।

उठि चलता ठाकि रखहु घरि अपुनै दुखु काटे काटणहारा हे॥

यह मन ही तो दुःखदायी है, जो हमें कहीं बैठने नहीं देता। कभी कलकत्ता, कभी बम्बई, कभी इंग्लैण्ड, कभी अमेरिका, कभी जापान, कभी अफ़्रीका, कभी कहीं, कभी कहीं। कहते हैं, जब मन अमृत की लज़्ज़त लेगा, 'मोशनलैस', निश्चल हो जायेगा यानी वश में आ जायेगा। एक ही दवा है, और कोई दवा नहीं।

हरि गुर पूरे की ओट पराती ॥ गुरमुखि हरि लिव गुरमुखि जाती॥

कहते हैं, जिन्होंने किसी गुरुमुख से नाम लेकर पूरे गुरु और परमेश्वर की ओट ले ली, वे गुरुमुख बन गये। उनका जन्म-मरण ख़त्म हो गया, उन्हें फिर आने की ज़रूरत नहीं।

नानक राम नामि मति ऊतम हरि बखसे पारि उतारा हे॥

अब गुरु नानक साहिब सबकुछ कहकर बताते हैं कि वह राम, वह शब्द उत्तम से उत्तम वस्तु है और तुम्हारे अन्दर है। तुम राम के नाम की कमाई करो ताकि तुम्हारा जन्म-मरण ख़त्म हो जाये, पर बिना कुल-मालिक की दया-मेहर के यह बड़ाई नहीं मिलती। परमेश्वर आप ही दया करके इसे अपने साथ मिलाये तो मिलाये, नहीं तो इस बेचारे के बस में क्या है?

सन्दर्भ-सूची

1. निहचलु एकु सदा सचु सोई

1. आदि ग्रन्थ, पृ. 1057-58
2. आदि ग्रन्थ, पृ. 378
3. आदि ग्रन्थ, पृ. 757
4. आदि ग्रन्थ, पृ. 467
5. आदि ग्रन्थ, पृ. 15
6. जन्म साखी, भाई बाले वाली, पृ. 280
7. आदि ग्रन्थ, पृ. 761
8. आदि ग्रन्थ, पृ. 293
9. मसनवी मौलाना रूम, दफ़्तर 1, पृ. 101
10. आदि ग्रन्थ, पृ. 964
11. प्राप्त नहीं
12. मसनवी मौलाना रूम, दफ़्तर 2, पृ. 273
13. मसनवी मौलाना रूम, दफ़्तर 1, पृ. 230
14. आदि ग्रन्थ, पृ. 1368
15. कुल्लियाते-बुल्लेशाह, काफ़ी 79, पृ. 167
16. आदि ग्रन्थ, पृ. 917
17. आदि ग्रन्थ, पृ. 1350
18. आदि ग्रन्थ, पृ. 974
19. मसनवी मौलाना रूम, दफ़्तर 1, पृ. 211
20. मसनवी मौलाना रूम, दफ़्तर 2, पृ. 273
21. दीवाने-शम्स तब्रेज़, पृ. 136
22. दीवाने-शम्स तब्रेज़, पृ. 138
23. कुल्लियाते-शम्स तब्रेज़, पृ. 312
24. आदि ग्रन्थ, पृ. 284
25. आदि ग्रन्थ, पृ. 124
26. आदि ग्रन्थ, पृ. 718
27. आदि ग्रन्थ, पृ. 1365
28. आदि ग्रन्थ, पृ. 139
29. प्राप्त नहीं
30. संतबानी संग्रह, भाग 1, पृ. 215
31. आदि ग्रन्थ, पृ. 1034
32. मसनवी मौलाना रूम, दफ़्तर 4, पृ. 67
33. मसनवी मौलाना रूम, दफ़्तर 4, पृ. 67
34. मसनवी मौलाना रूम, दफ़्तर 4, पृ. 113
35. मसनवी मौलाना रूम, दफ़्तर 5, पृ. 261
36. बोस्तान, पृ. 178
37. मसनवी मौलाना रूम, दफ़्तर 1, पृ. 310
38. मसनवी मौलाना रूम, दफ़्तर 1, पृ. 311
39. मसनवी मौलाना रूम, दफ़्तर 1, पृ. 311

2. जानै अंतरजामी अचरज अकथ अनामी

1. घट रामायण, भाग 2, पृ. 8
2. आदि ग्रन्थ, पृ. 577
3. आदि ग्रन्थ, पृ. 205

3. घर महि घरु देखाइ देइ

1. आदि ग्रन्थ, पृ. 1291
2. कुल्लियाते-शम्स तब्रेज़, पृ. 871

3. मसनवी मौलाना रूम, दफ़्तर 2, पृ. 273
4. मसनवी मौलाना रूम, दफ़्तर 2, पृ. 273
5. कुल्लियाते-शम्स तब्रेज़, पृ. 824
6. दीवाने-शम्स तब्रेज़, पृ. 136
7. दीवाने-शम्स तब्रेज़, पृ. 138
8. आदि ग्रन्थ, पृ. 1
9. आदि ग्रन्थ, पृ. 1428

4. सतगुरु का नाम पुकारो

1. सारबचन संग्रह, 18:5:1-25
2. आदि ग्रन्थ, पृ. 918
3. आदि ग्रन्थ, पृ. 661
4. आदि ग्रन्थ, पृ. 168
5. आदि ग्रन्थ, पृ. 435
6. आदि ग्रन्थ, पृ. 1372
7. दीवाने-हाफ़िज़, पृ. 29
8. आदि ग्रन्थ, पृ. 722
9. आदि ग्रन्थ, पृ. 292
10. दीवाने-हाफ़िज़, पृ. 29
11. आदि ग्रन्थ, पृ. 879
12. बोस्तान, पृ. 178
13. आदि ग्रन्थ, पृ. 125
14. सारबचन संग्रह, 33:16:11
15. आदि ग्रन्थ, पृ. 684
16. संतबानी संग्रह, भाग 1, पृ. 214
17. आदि ग्रन्थ, पृ. 463
18. मसनवी मौलाना रूम, दफ़्तर 1, पृ. 308
19. कबीर साखी-संग्रह, भाग 1, पृ. 2
20. आदि ग्रन्थ, पृ. 647
21. आदि ग्रन्थ, पृ. 1381
22. श्रीरामचरितमानस, 1:5:3
23. तुलसी साहिब की शब्दावली, भाग 1, पृ. 25
24. सारबचन संग्रह, 21:3:2
25. आदि ग्रन्थ, पृ. 991
26. आदि ग्रन्थ, पृ. 1096
27. कबीर साखी-संग्रह, भाग 1, पृ. 27
28. संत संग्रह, भाग 1, पृ. 73
29. आदि ग्रन्थ, पृ. 1379
30. आदि ग्रन्थ, पृ. 44
31. प्राप्त नहीं

5. नामै ही ते सभु किछु होआ

1. आदि ग्रन्थ, पृ. 753-54
2. मौलाना रूम, हवाला किताबुल-बैअत, पृ. 8
3. मसनवी मौलाना रूम, दफ़्तर 1, पृ. 211
4. आदि ग्रन्थ, पृ. 284
5. कुल्लियाते-शम्स तब्रेज़, पृ. 871
6. आदि ग्रन्थ, पृ. 68
7. सारबचन संग्रह, पृ. 21:3:14
8. कबीर साखी-संग्रह, भाग 1, पृ. 37
9. आदि ग्रन्थ, पृ. 35
10. आदि ग्रन्थ, पृ. 1367
11. जन्म साखी, भाई बाले वाली, पृ. 213-15
12. जन्म साखी, भाई बाले वाली, पृ. 215
13. आदि ग्रन्थ, पृ. 40
14. आदि ग्रन्थ, पृ. 608
15. मसनवी मौलाना रूम, दफ़्तर 6, पृ. 476
16. प्राप्त नहीं
17. मसनवी मौलाना रूम, दफ़्तर 1, पृ. 101
18. आदि ग्रन्थ, पृ. 124
19. प्राप्त नहीं
20. आदि ग्रन्थ, पृ. 1
21. दीवाने-नियाज़ बरेलवी, पृ. 90

6. गुरु कहें जगत सब अंधा

1. सारबचन संग्रह, 19:13:1-17
2. आदि ग्रन्थ, पृ. 749
3. आदि ग्रन्थ, पृ. 754
4. आदि ग्रन्थ, पृ. 425
5. आदि ग्रन्थ, पृ. 1
6. आदि ग्रन्थ, पृ. 313
7. आदि ग्रन्थ, पृ. 1362
8. आदि ग्रन्थ, पृ. 1368
9. आदि ग्रन्थ, पृ. 1
10. आदि ग्रन्थ, पृ. 219
11. आदि ग्रन्थ, पृ. 517
12. आदि ग्रन्थ, पृ. 495
13. प्राप्त नहीं
14. आदि ग्रन्थ, पृ. 87
15. आदि ग्रन्थ, पृ. 250
16. आदि ग्रन्थ, पृ. 1382
17. आदि ग्रन्थ, पृ. 1372
18. प्राप्त नहीं
19. आदि ग्रन्थ, पृ. 435

7. दरसनु भेटत पाप सभि नासहि

1. आदि ग्रन्थ, पृ. 915-16
2. आदि ग्रन्थ, पृ. 684
3. आदि ग्रन्थ, पृ. 1373
4. आदि ग्रन्थ, पृ. 1237
5. आदि ग्रन्थ, पृ. 313
6. आदि ग्रन्थ, पृ. 698
7. आदि ग्रन्थ, पृ. 793
8. सारबचन संग्रह, 21:1:8
9. मसनवी मौलाना रूम, दफ़्तर 1, पृ. 211
10. आदि ग्रन्थ, पृ. 139
11. आदि ग्रन्थ, पृ. 297
12. आदि ग्रन्थ, पृ. 435
13. आदि ग्रन्थ, पृ. 463
14. आदि ग्रन्थ, पृ. 1384

8. गुरु कहें खोल कर भाई

1. सारबचन संग्रह, 20:10:1-13
2. आदि ग्रन्थ, पृ. 1323
3. प्राण-संगली सटिप्पण, भाग 2, पृ. 6,7
4. आदि ग्रन्थ, पृ. 917
5. आदि ग्रन्थ, पृ. 974
6. आदि ग्रन्थ, पृ. 1350
7. कुल्लियाते-शम्स तब्रेज़, पृ. 824
8. दीवाने-शम्स तब्रेज़, पृ. 136
9. दीवाने-शम्स तब्रेज़, पृ. 138
10. आदि ग्रन्थ, पृ. 43
11. आदि ग्रन्थ, पृ. 463
12. आदि ग्रन्थ, पृ. 938
13. आदि ग्रन्थ, पृ. 87
14. आदि ग्रन्थ, पृ. 74
15. कबीर समग्र, भाग 1, पृ. 402
16. कबीर साखी-संग्रह, भाग 2, पृ. 89
17. आदि ग्रन्थ, पृ. 1096

9. इसु गुफा महि अखुट भंडारा

1. आदि ग्रन्थ, पृ. 124
2. आदि ग्रन्थ, पृ. 754
3. आदि ग्रन्थ, पृ. 695
4. आदि ग्रन्थ, पृ. 1100
5. आदि ग्रन्थ, पृ. 313
6. आदि ग्रन्थ, पृ. 424
7. आदि ग्रन्थ, पृ. 236

8. आदि ग्रन्थ, पृ. 1057
9. आदि ग्रन्थ, पृ. 1237
10. आदि ग्रन्थ, पृ. 465-466
11. आदि ग्रन्थ, पृ. 284
12. आदि ग्रन्थ, पृ. 139
13. आदि ग्रन्थ, पृ. 59
14. आदि ग्रन्थ, पृ. 1
15. आदि ग्रन्थ, पृ. 656
16. आदि ग्रन्थ, पृ. 1368
17. आदि ग्रन्थ, पृ. 205

10. नाम निर्णय करूँ भाई

1. सारबचन संग्रह, 10:1:1-38
2. मसनवी मौलाना रूम, दफ़्तर 4, पृ. 113
3. आदि ग्रन्थ, पृ. 124
4. जन्म साखी, भाई बाले वाली, पृ. 214-15
5. आदि ग्रन्थ, पृ. 647
6. आदि ग्रन्थ, पृ. 467
7. आदि ग्रन्थ, पृ. 15
8. दीवाने-शम्स तब्रेज़, पृ. 136
9. दीवाने-शम्स तब्रेज़, पृ. 138
10. मसनवी मौलाना रूम, दफ़्तर 1, पृ. 355
11. कबीर समग्र, भाग 2, पृ. 1825
12. आदि ग्रन्थ, पृ. 139
13. आदि ग्रन्थ, पृ. 577
14. आदि ग्रन्थ, पृ. 939-40
15. आदि ग्रन्थ, पृ. 940
16. आदि ग्रन्थ, पृ. 1057
17. सारबचन संग्रह, 15:2:1
18. आदि ग्रन्थ, पृ. 918
19. प्राप्त नहीं
20. आदि ग्रन्थ, पृ. 491
21. आदि ग्रन्थ, पृ. 102
22. कुल्लियाते-बुल्लेशाह, काफ़ी 79, पृ. 167
23. आदि ग्रन्थ, पृ. 124
24. आदि ग्रन्थ, पृ. 938
25. आदि ग्रन्थ, पृ. 522
26. आदि ग्रन्थ, पृ. 176
27. प्राप्त नहीं
28. आदि ग्रन्थ, पृ. 1291
29. आदि ग्रन्थ, पृ. 1350
30. कुल्लियाते-शम्स तब्रेज़, पृ. 824
31. दीवाने-शम्स तब्रेज़, पृ. 138
32. आदि ग्रन्थ, पृ. 747-48
33. आदि ग्रन्थ, पृ. 1368
34. जन्म साखी, भाई बाले वाली, पृ. 215
35. आदि ग्रन्थ, पृ. 918
36. मसनवी मौलाना रूम, दफ़्तर 1, पृ. 31
37. आदि ग्रन्थ, पृ. 973
38. आदि ग्रन्थ, पृ. 1355
39. आदि ग्रन्थ, पृ. 1038
40. प्राप्त नहीं
41. आदि ग्रन्थ, पृ. 802
42. सारबचन संग्रह, 23:1:28

11. गुरू गुरू गुरु करि मन मोर

1. आदि ग्रन्थ, पृ. 864
2. आदि ग्रन्थ, पृ. 1237
3. आदि ग्रन्थ, पृ. 397
4. आदि ग्रन्थ, पृ. 13
5. तुलसी साहिब की शब्दावली, भाग 1, पृ. 25
6. आदि ग्रन्थ, पृ. 124
7. आदि ग्रन्थ, पृ. 463
8. आदि ग्रन्थ, पृ. 435

12. सीस उतारै हाथ से

1. पलटू साहिब की बानी, भाग 1, पृ. 29

13. तेरीआ खाणी तेरीआ बाणी

1. आदि ग्रन्थ, पृ. 116
2. आदि ग्रन्थ, पृ. 467
3. आदि ग्रन्थ, पृ. 15
4. आदि ग्रन्थ, पृ. 1057
5. दसम् ग्रन्थ, पृ. 714
6. आदि ग्रन्थ, पृ. 394
7. आदि ग्रन्थ, पृ. 1237
8. आदि ग्रन्थ, पृ. 1046
9. आदि ग्रन्थ, पृ. 124
10. आदि ग्रन्थ, पृ. 139
11. आदि ग्रन्थ, पृ. 982
12. आदि ग्रन्थ, पृ. 1
13. आदि ग्रन्थ, पृ. 59
14. आदि ग्रन्थ, पृ. 695
15. प्राण-संगली सटिप्पण, भाग 2, पृ. 6,7
16. आदि ग्रन्थ, पृ. 940
17. आदि ग्रन्थ, पृ. 1054
18. आदि ग्रन्थ, पृ. 466
19. आदि ग्रन्थ, पृ. 466

14. धन्य धन्य धन धन्य पियारे

1. सारबचन संग्रह, पृ. 9:1:1-16
2. आदि ग्रन्थ, पृ. 313
3. आदि ग्रन्थ, पृ. 917
4. आदि ग्रन्थ, पृ. 1350
5. आदि ग्रन्थ, पृ. 974
6. दीवाने-शम्स तब्रेज़, पृ. 138

15. होदै परतखि गुरू जो विछुड़े

1. आदि ग्रन्थ, पृ. 308-09

16. क्यों फिरत भुलानी जगत में

1. सारबचन संग्रह, पृ. 14:9:1-8

17. जिनि तुम भेजे तिनहि बुलाए

1. आदि ग्रन्थ, पृ. 678

18. हम संतन की रेनु पिआरे

1. आदि ग्रन्थ, पृ. 614

19. राम गुरु पारसु परसु करीजै

1. आदि ग्रन्थ, पृ. 1324
2. उपदेश रत्नाकर, पृ. 64
3. आदि ग्रन्थ, पृ. 139
4. आदि ग्रन्थ, पृ. 59
5. आदि ग्रन्थ, पृ. 468
6. आदि ग्रन्थ, पृ. 283
7. आदि ग्रन्थ, पृ. 272
8. आदि ग्रन्थ, पृ. 293
9. कबीर साखी-संग्रह, भाग 2, पृ. 119
10. आदि ग्रन्थ, पृ. 72
11. प्राप्त नहीं

20. स्रुति बुंद सिंध मिलाप

1. घट रामायण, भाग 1, पृ. 1-2
2. आदि ग्रन्थ, पृ. 124
3. मसनवी मौलाना रूम, दफ़्तर 4, पृ. 67

4. मसनवी मौलाना रूम, दफ़्तर 4, पृ. 67
5. मसनवी मौलाना रूम, दफ़्तर 4, पृ. 113
6. मसनवी मौलाना रूम, दफ़्तर 4, पृ. 113
7. मसनवी मौलाना रूम, दफ़्तर 5, पृ. 261
8. सारबचन संग्रह, 8:17:23

21. दुनीआ न सालाहि जो मरि वंञसी

1. आदि ग्रन्थ, पृ. 755-56
2. आदि ग्रन्थ, पृ. 1379
3. प्राप्त नहीं

22. गुरू गुरू मैं हिरदे धरती

1. सारबचन संग्रह, 8:1:1-71
2. आदि ग्रन्थ, पृ. 864
3. आदि ग्रन्थ, पृ. 864
4. आदि ग्रन्थ, पृ. 463
5. आदि ग्रन्थ, पृ. 466
6. आदि ग्रन्थ, पृ. 465
7. मौलाना रूम, हवाला किताबलु-बैअत, पृ. 8
8. आदि ग्रन्थ, पृ. 1372
9. आदि ग्रन्थ, पृ. 141
10. दीवाने-हाफ़िज़, पृ. 29
11. आदि ग्रन्थ, पृ. 864
12. आदि ग्रन्थ, पृ. 864
13. आदि ग्रन्थ, पृ. 435
14. आदि ग्रन्थ, पृ. 608
15. रत्नसागर, पृ. 87
16. कबीर साखी-संग्रह, भाग 2, पृ. 96
17. आदि ग्रन्थ, पृ. 938
18. आदि ग्रन्थ, पृ. 1057
19. आदि ग्रन्थ, पृ. 19
20. आदि ग्रन्थ, पृ. 87
21. कबीर साखी-संग्रह, भाग 2, पृ. 139

23. मनु खिनु खिनु भरमि भरमि

1. आदि ग्रन्थ, पृ. 1179

24. भगति पच्छ हठ करि रहेउँ

1. श्रीरामचरितमानस, 7:114 ख-120 ख

25. घरि रहु रे मन मुगध इआने

1 आदि ग्रन्थ, पृ.1030-31
2. आदि ग्रन्थ, पृ. 1237
3. आदि ग्रन्थ, पृ. 679

सन्दर्भ-ग्रन्थ

उपदेश रत्नाकर, बम्बई: श्री वेंकटेश्वर छापाख़ाना, अश्विन सं. 1951

कबीर समग्र, भाग 1-2, वाराणसी: प्रचारक ग्रन्थावली परियोजना, हिन्दी प्रचारक पब्लिकेशन्स प्रा. लि., प्रथम और पाँचवाँ संस्करण, 2001, 1997

कबीर साखी-संग्रह, भाग 1-2, इलाहाबाद: बेलवीडियर प्रिंटिंग वर्क्स, ग्यारहवाँ संस्करण, 2001

क़लंदर, बू अली, मसनवी, दिल्ली: कुतुबख़ाना नज़ीरिया, 1383 हिजरी (1962)

किताबुल-बैअत, हकीम गुलाम जीलानी शाह, जालन्धर: मियाँ करीम बख़्श बरकतुला, तजरने कुतुब, 1939

घट रामायण, भाग 1-2, इलाहाबाद: बेलवीडियर प्रिंटिंग वर्क्स, सोलहवाँ संस्करण, 2001, 2002

जन्म साखी (भाई बाले वाली), अमृतसर: भाई चतर सिंघ जीवन सिंघ, बारहवाँ संस्करण, 2006

तुलसी साहिब की शब्दावली, भाग 1, इलाहाबाद: बेलवीडियर प्रिंटिंग वर्क्स, 1997

दसम श्री गुरु ग्रन्थ साहिब, सैंची 1, भाई जवाहर सिंह कृपाल सिंह एण्ड कम्पनी, अमृतसर, सं. वि. 2036 (1979)

नियाज़, दीवाने-नियाज़ बरेलवी, लखनऊ: मुंशी नवलकिशोर प्रेस, 1967

पलटू साहिब की बानी, भाग 1, इलाहाबाद: बेलवीडियर प्रिंटिंग वर्क्स, चौदहवाँ संस्करण, 2002

पुरी, जे. आर., गुरु नानक का रूहानी उपदेश, ब्यास: राधास्वामी सत्संग ब्यास, ज़िला अमृतसर, दसवाँ संस्करण, 2002

प्राण-संगली (सटिप्पण), भाग 2, इलाहाबाद: बेलवीडियर प्रिंटिंग वर्क्स, 1989

बुल्लेशाह, कुल्लियाते-बुल्लेशाह, फ़क़ीर मुहम्मद फ़क़ीर (सं.) लाहौर: पंजाबी अदाबी अकादमी, 1970

रत्नसागर, तुलसी साहिब (हाथरस वाले), इलाहाबाद: बेलवीडियर प्रिंटिंग वर्क्स, 2002

रूमी, जलालुद्दीन, कुल्लियाते-शम्स तब्रेज़, लखनऊ: मुंशी नवलकिशोर प्रेस, 1917

रूमी, जलालुद्दीन, दीवाने-शम्स तब्रेज़, लखनऊ: मुंशी नवलकिशोर प्रेस, 1924

रूमी, जलालुद्दीन, मसनवी मौलाना रूम, दफ़्तर 1-6, मौलाना क़ाज़ी सज्जाद हुसैन (अनु.), दिल्ली: सबरंग किताब घर, 1974-76

श्री गुरु ग्रन्थ साहिब (सन्था सैंचीआ), अमृतसर: शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबन्धक कमेटी, 1999

श्रीरामचरितमानस (टीकाकार), हनुमानप्रसाद पोद्दार, गोरखपुर: गीताप्रेस, बीसवाँ संस्करण, 2053 बिक्रमी

संत संग्रह, भाग 1, आगरा: राधास्वामी ट्रस्ट, स्वामी बाग, सोलहवाँ संस्करण, 1960

संतबानी संग्रह (साखी), भाग 1, इलाहाबाद: बेलवीडियर प्रिंटिंग वर्क्स, 2005

सादी, बोस्तान, दिल्ली: सबरंग किताब घर, 1961

स्वामी जी महाराज, सारबचन संग्रह, राधास्वामी सत्संग ब्यास, चौदहवाँ संस्करण, 2004

हाफ़िज़, दीवाने-हाफ़िज़, मौलाना क़ाज़ी सज्जाद हुसैन (अनु.), दिल्ली: सबरंग किताब घर, 1972

अनुक्रमणिका

अंकुश 366
अंजन 182
अकबर, बादशाह 113, 114, 362
अकालपुरुष 16, 20, 57, 62, 68, 112, 180, 286, 294, 300
अक्षर-पद, देखें पारब्रह्म
अगम 54, 90,189
अनहद शब्द, देखें शब्द
अनामी 53, 286, 337, 339
अनाहू, देखें सोहं
अमृत 28, 77, 88, 161, 173, 202, 203, 206, 269
—अन्दर है 63, 88, 173, 175, 269
अमृतसर सच्चा अन्दर है 43, 96, 113, 139, 209, 229, 242, 265, 304, 308, 347, 399
अलख 200, 247
अलि 308
अवस्थाएँ, तीन 387
अशरफ़ुल-मख़लूक़ात 32, 33, 99, 122, 216, 226, 329
अश्वमेध यज्ञ 319-321
अष्ट-दल-कँवल 74
अष्टावक्र 230, 231
असली पारस, दो 294
आकाशवाणी, देखें शब्द
आत्म-पद, देखें तुरिया पद
आत्मा अकर्ता, अभोक्ता 64
आत्मा का पति 283
— की मुक्ति 283
— के आवरण, देखें शरीर, तीन
— परमात्मा की अंश 150, 163, 169, 296, 382
— मन के अधीन 19, 45, 150
आन्तरिक आँख, देखें तीसरा तिल
आनन्द साहिब 34, 188
आरती, अन्दर की 364
आश्रम, चार 364
कीर्तन, देखें शब्द
आबे-हयात, देखें अमृत
आलमे-सग़ीर, देखें पिण्ड
— कबीर, देखें ब्रह्माण्ड
आसा दी वार 269
ओडा 337, 368
इज़राईल 122
इन्द्रियाँ, भोगों के अधीन 45
इस्म, देखें नाम, वर्णात्मक
इस्मे-आज़म, देखें नाम, निज-नाम
ऋद्धियाँ-सिद्धियाँ 90, 169, 223, 349, 389, 392
एमालनामा 291
कबीर साहिब 103, 111, 115, 126, 151, 152, 170, 174, 195, 208, 294, 321, 345, 354, 356
कबीर साहिब, चारों युगों में 319
कर्म, क्रियमान 404

कर्म, प्रारब्ध 251, 404
— का फल 140, 405
— के जाल में, अवतार 95
करामात, देखें ऋद्धियाँ-सिद्धियाँ
कलमा, देखें नाम
कलामे-इलाही, देखें नाम
कलियुग 181, 243
काकभुशुण्डि 376-378, 391
क़ाज़ी रुकनुद्दीन 132-135, 217, 305
काल भगवान् 150, 181, 351
कीर्तन, देखें शब्द
केवली 391
कृष्ण भगवान् 95, 107, 317, 319
खानियाँ, चार 260
गरुड़ 377, 379, 382, 391, 393
गुण, तीन 63, 113, 304, 383, 386
गुरु अंगद देव जी 96, 124, 173, 350
— अमर दास जी 98, 124, 140, 148, 149, 158, 226
— अर्जुन देव जी 111, 128, 136, 147, 159, 166, 171, 180-182
— करन, कारन, समर्थ 171
— का स्वरूप क्या है 41
— — हुक्म 341
— की ओट 406
— के ज़रिये परमेश्वर से मिलाप 167
— क्या देता है 59, 166, 167
— — है 167
— गोबिन्द सिंह 107, 109
— तेग़ बहादुर 93, 94, 107
— नानक साहिब 106, 138, 151, 171, 178, 185, 396
— भक्ति 73, 98, 105 163, 287
— माता और पिता 159
— रविदास जी 60, 91, 92,106
गुरु राम दास जी 106, 136, 174, 184, 277, 279, 369
— वक़्त का 354, 357
— शब्द का दाता 200, 270
— शीशे की मिसाल है 83,142-143, 264, 363-364
— से मिलने का फ़ायदा 167, 170, 171
— हर गोबिन्द 94
गुरुमुख 28, 43, 46, 125, 126, 208, 225, 316, 327
गुरुबाणी सच्ची, देखें नाम
चक्र, छः 62, 86, 87, 123, 261
चण्डूल 43
चार्वाक 17
ज़िक्र, देखें सिमरन
जीते-जी मरना 39, 74, 123, 217, 224, 255
तत्त्व, पाँच 16, 102,129, 272, 383, 400
तीर्थ सच्चा, देखें अमृतसर सच्चा अन्दर है
तीसरा तिल 11, 71, 174, 223, 366
तुरिया पद 23, 30, 43, 54, 56, 60, 65, 113, 125, 161, 206, 229, 244, 245, 298, 336, 337, 386
त्रिकुटी 179, 336
त्रिलोकी 59, 307, 351
त्रिलोचन 101, 102, 243
दसवाँ दरवाज़ा, देखें पारब्रह्म
दसवीं गली 19, 62, 85, 87, 190, 217, 222, 255, 265, 272
दादू साहिब 56, 57, 345
धन्ना 101, 102, 243
धर्मदास 102-104
धर्मराज (धर्मराय) 40, 89, 93, 290, 315, 347, 348, 402
धुन, देखें नाम

धुर-धाम (आख़िरी मुक़ाम), देखें सचखण्ड
नर-नारायणी देह, देखें अशरफ़ुल मख़लूक़ात
नाद, देखें शब्द
नाम 29, 34-36, 45, 54, 88, 119, 120, 123, 132, 148, 153, 176, 184, 190, 209, 214, 304, 322, 326, 327, 398, 402, 405
नाम अन्दर है 26, 29, 32, 33, 37, 119, 264, 274
नाम का जहाज़ 73, 180
— — तोशा 328
— — बीज नष्ट नहीं होता 75
— की कमाई 22, 31, 95, 273, 399
— — — का फ़ायदा 203
— — दौलत, देखें नाम
— — धुन, देखें अनहद शब्द
— — महिमा ग्रन्थ-पोथियों में 24-25, 29, 33, 56-58, 186, 203, 215, 398
— — लज़्ज़त 25, 27, 37, 56, 93, 120, 162, 163, 188, 203, 270, 287, 290, 400, 405
— केवल मनुष्य-जन्म में 99, 100, 102
— छ: चक्रों में नहीं 61
— ताकत है 36, 37, 214
— पाप-नाशक 89,171
— पूर्ण गुरु से 69, 102, 270, 357
— मुक्तिदाता 37, 61, 200, 202, 353
— में कशिश है 189
— लफ़्ज़ नहीं 29, 39, 154, 190, 204, 221
— वर्णात्मक, धुनात्मक 71, 73, 216, 218, 219, 223, 233-235
नामी 73, 223, 227
नारद 191
नि:अक्षर, देखें भँवरगुफा
निज-घर, देखें सचखण्ड
— नाम, देखें नाम
निदाए-आसमानी, देखें शब्द
निरंजन 182
निर्वाण-पद 369
नुक़्ता-ए-सवैदा, देखें तीसरा तिल
नेता 385
नौ दरवाज़े 19, 43, 54, 74, 185, 190, 217, 244
पत्थर-पूजा 101, 102
पपीहा 111
परमात्म-पद, देखें ब्रह्म
परमात्मा अन्दर है 19, 20, 56, 198, 315, 330, 335
— एक है 19, 118
— रंगरेज़ है 329
पलटू साहिब 345, 356
पाँच कलमे, देखें पाँच धुन
— नौबतें, देखें पाँच धुन
— धुन 22, 34, 36, 60, 61, 64, 65, 188
— विकार, डाकू 30, 188, 208
— शब्द, देखें पाँच धुन
पाण्डव 319, 320
पारब्रह्म 23, 38, 43, 56, 60, 63, 73, 113, 125, 151, 155,167, 169, 170, 179, 190, 229, 232, 245, 305, 308, 335-337, 339, 347, 348, 364
पिण्ड 46, 86, 127, 198, 223, 226, 296
पूर्ण गुरु की पहचान 59, 346
प्रकृतियाँ, पच्चीस 113, 304, 383
प्रलय, महाप्रलय 60, 189
फ़नाफ़िशैख़ (मुर्शिद में लीन) 340
बंकनाल 245

बृहदबल 320
ब्रह्म 43, 56, 60, 73, 155, 167, 170, 229, 233, 245, 337, 339, 401
ब्रह्मा के चार बेटे 336
— विष्णु, शिव 122, 336, 338, 355, 404
ब्रह्माण्ड 46, 75, 127, 198, 226, 296
बाँगे-आसमानी, देखें शब्द
— इलाही, देखें शब्द
बाबा जैमल सिंह जी 78, 314
— फ़रीद 179, 227, 228
बाली 95
बीरबल 362
बुल्लेशाह 33, 236
बेणी जी 188, 274
भँवरगुफा 245, 337
भक्त, सच्चे 110
भक्ति और ज्ञान में भेद 379
— की ताकत 381
— — दौलत 382
— मार्ग 377, 381
—, मालिक की दासी 381
भागवत् 282
मक़ामे-अल्लाह, देखें सहँस-दल-कँवल
— अल्लाहू, देखें त्रिकुटी
मन इन्द्रियों का ग़ुलाम 45, 126, 127, 150
— की पैदाइश 283
— — मुक्ति 283
— को वश में करने की दवा 63, 120, 161, 194
— दुश्मन 19, 90, 150, 158, 192, 194, 286
— बेईमान 253
— ब्रह्म का अंश 163, 283
— रूपी हाथी 366
— लज़्ज़त का आशिक़ 63
मनमत, गुरुमत 361
मनमुख 45, 46, 82, 140, 315, 342, 401, 402, 404
महमूद ग़ज़नी 328
महाराजा रणजीत सिंह 353
महासुन्न 232, 245
माया के प्रकार 113
— दुश्मन है 388
— नटनी है 381
मालिक की दया 154
मीरा बाई 60, 126, 218, 346
मुक्ति, नाम से 222
— सच्ची 40
मुसम्मा, देखें नामी
मूतू-क़बलंत-मूतू, देखें जीते-जी मरना
मैकाईल 122
मोमिन 29
मौलाना रूम 120, 123, 138, 139, 147, 175, 188, 216, 217, 220, 221, 241, 246, 306
यमदूत 137, 138, 169, 250, 315, 347, 348, 399, 402
याज्ञवल्क्य ऋषि 230
यूसुफ़, जुलेखा 322
रज़ा (भाणा) 48, 82, 83, 279, 350
राजा जनक 230-232, 348
राजा पीपा 60, 198, 243, 267
राधास्वामी 247, 283
— धाम 247
राम का अर्थ 396
— की लज़्ज़त, देखें नाम की लज़्ज़त
राम लफ़्ज़ नहीं, देखें नाम लफ़्ज़ नहीं
— ताक़त है 397
रामचन्द्र जी 160
रावण 42

रूह अमरे-रब्बी देखें आत्मा, परमात्मा की अंश
रूहानी मार्ग के दर्जे 242-243
ला-मक़ाम, देखें राधास्वामी धाम
लोमश 376, 378
वसिष्ठ 160
वागड़ 355
वाणियाँ, चार (परा, पश्यंती, मध्यमा, बैखरी) 184, 216, 260
विश्वामित्र 191, 380
वुज़ू 353
शब्द, देखें नाम
— अनाहत 275
— आहत 275
— पाँच, अन्दर हैं 22, 60
शम्स तब्रेज़ 171, 188, 217, 241, 308
शरीर, तीन (स्थूल, सूक्ष्म, कारण) 63, 72, 113, 125, 168, 172, 233, 304, 315
शाहरग (सुषुम्ना नाड़ी) 62, 63, 132, 217
शिव, पार्वती 377
शिष्य का असली रूप 41, 250, 334
— — धर्म 82, 229
शेख़ फ़रीद 318
— सादी 83, 317
सचखण्ड (सतनाम) 59-61, 65, 73, 86, 124, 179, 229, 242, 246, 316
सच्चे रिश्तेदार 96, 97, 334, 403
सतगुरु का असली स्वरूप 334
— — उपदेश 70, 167
— — ध्यान 72, 73, 74
— — हुक्म 82, 253, 341
— की चरण-धूलि 289
— — ड्यूटी 75, 85, 86, 164
— — तालीम 86, 153, 253, 262
— — दया 75
सतगुरु की दात, नाम 250, 282
— — निन्दा करना या सुनना 84, 277, 278
— — मदद 41, 79
— — मेहर (कृपा) 63, 75, 161, 178, 208, 211, 253, 262, 338, 339, 347
— — शरण 164, 207, 279
— — हस्ती 75
— कुंजी वाला 37, 173, 200, 203, 210, 399
— के चरण 85, 105, 106, 251, 252
— — देहस्वरूप की महिमा 252
— कौन है 60, 65
—, देहस्वरूप 41, 72, 252, 283, 334
— नाम का वाक़िफ़कार 220
— — के दाता 69, 200, 207, 222, 262, 270, 399
— पारब्रह्म-रूप 283
— मालिक है 74
— मुक्तिदाता है 40, 282
— वक़्त का 201
— विदेह-रूप 283
— शब्द-अभ्यासी 37, 210, 273
— — रूप 283, 334
— — स्वरूपी 41, 85, 178, 210, 273
— सँभाल करता है 72, 73, 76, 77,79, 144, 253
— सतनाम रूप 283, 334
— सतपुरुष है 399
— से मिलाप का फ़ायदा 76, 166, 171
सतलोक, देखें सचखण्ड
सन्त नामदेव 106
सन्तमत का क, ख, ग 206
सन्तों का मक़सद 239

सन्तों का मत 309
— — मार्ग 57
— की निन्दा 299
— — पहली मंज़िल 387
— — शरण 290
सलिता 307
सहज योग 263
—समाधि 124, 142, 316
सहँस-दल-कँवल, देखें तुरिया पद
साध कौन 298
सार-वस्तु 196, 399
सिखी 128, 341
सिध गोसटि 268, 269
सुखदेव 102, 254
सुखमनी 204
सुग्रीव 95
सुन्न 245
सुपच 319, 320
सिमरन 64, 73, 74, 75, 84, 168, 222, 233, 263
सिमरन और ध्यान 73
— क्यों 74
— दुनिया का 69-70
— नाम का 71
— भजन 159, 167, 168, 253, 314
सेवा असली, देखें सिमरन-भजन
— के प्रकार 361
सोहं 23, 60, 179, 245, 387
स्वामी जी महाराज 125, 175, 186, 194, 196, 216, 233, 247, 272, 307, 346, 358
हज़रत ईसा 266, 296, 340
— बू अली शाह क़लंदर 141
— मुहम्मद 97, 141, 151, 203, 225, 340
— मूसा 50-52
हवासे-ख़मसा (कर्मेन्द्रियाँ) 28, 236
— बातिन (ज्ञानेन्द्रियाँ) 28, 29, 236
हौंमैं की दवा 269
— का इलाज 269

हमारे प्रकाशन

हुज़ूर स्वामी जी महाराज

सारबचन संग्रह

सारबचन वार्तिक

बाबा जैमल सिंह जी

परमार्थी पत्र, भाग 1

महाराज सावन सिंह जी

परमार्थी पत्र, भाग 2

सन्तमत सिद्धान्त

शब्द की महिमा के शब्द

सन्तमत प्रकाश, भाग 1 से 5

प्रभात का प्रकाश

परमार्थी साखियाँ

गुरुमत सिद्धान्त, भाग 1, 2

गुरुमत सार

महाराज जगत सिंह जी

आत्म-ज्ञान

रूहानी फूल

महाराज चरन सिंह जी

सन्तों की बानी

सन्त-वचन (सन्त-संवाद, भाग 2)

सन्तमत दर्शन

सन्त-मार्ग

दिव्य प्रकाश

जीवत मरिए भवजल तरिए

प्रकाश की खोज

पारस से पारस

सन्त-संवाद

सत्संग संग्रह, भाग 1 से 6

'पूर्व के सन्त-महात्मा' पुस्तक-माला के अन्तर्गत

सन्त नामदेव—जनक पुरी, वीरेन्द्र कुमार सेठी, टी. आर. शंगारी

सन्त कबीर—शान्ति सेठी

परम पारस गुरु रविदास—के. एन. उपाध्याय

गुरु नानक का रूहानी उपदेश—जनक पुरी

गुरु अर्जुन देव—महिन्दर सिंह जोशी

भाई गुरदास—महिन्दर सिंह जोशी

सन्त तुकाराम—चन्द्रावती राजवाडे

नाम-भक्ति : गोस्वामी तुलसीदास—के. एन. उपाध्याय, पंचानन उपाध्याय

मीरा : प्रेम-दीवानी—वीरेन्द्र कुमार सेठी

सन्त दादू दयाल—के. एन. उपाध्याय

पलटू साहिब—राजेन्द्र कुमार सेठी, आर. सी. बहल

सन्त चरनदास—टी. आर. शंगारी

सन्त दरिया (बिहारवाले)—के. एन. उपाध्याय

तुलसी साहिब—जनक पुरी, वीरेन्द्र कुमार सेठी

उपदेश राधास्वामी (स्वामी जी महाराज)—सहगल, शंगारी, 'ख़ाक', भण्डारी

साईं बुल्लेशाह—जनक पुरी, टी. आर. शंगारी

हज़रत सुलतान बाहू—कृपाल सिंह 'ख़ाक'

सरमद शहीद—टी. आर. शंगारी, पी. एस. 'आलम'

बोलै शेख़ फ़रीद—टी. आर. शंगारी

कामिल दरवेश शाह लतीफ़—टी. आर. शंगारी

सतगुरुओं के विषय में

रूहानी डायरी, भाग 1, 2—राय साहिब मुंशीराम

धरती पर स्वर्ग—दरियाईलाल कपूर

अनमोल ख़ज़ाना—शान्ति सेठी

मेरा सतगुरु—जूलियन पी. जॉनसन

सन्तमत के सम्बन्ध में

नाम-सिद्धान्त—शंगारी, 'ख़ाक', भण्डारी, सहगल

सन्तमत विचार—टी. आर. शंगारी, कृपाल सिंह 'ख़ाक़'

सन्त-सन्देश—शान्ति सेठी

सन्त-समागम—दरियाईलाल कपूर

अमृत नाम—महिन्दर सिंह जोशी

अन्तर की आवाज़—सी. डब्लयू. सेंडर्स

मार्ग की खोज में—फ़्लोरा ई. वुड

रामचरितमानस का सन्देश—एस. एम. प्रसाद

हंसा हीरा मोती चुगना—टी. आर. शंगारी

जपुजी साहिब—टी. आर. शंगारी

हउ जीवा नाम धिआए—हेक्टर एस्पॉण्डा डबिन

हक़-हलाल की कमाई—टी. आर. शंगारी

जिज्ञासुओं के लिए—टी. आर. शंगारी

बिनती और प्रार्थना के शब्द—संकलित

अमृत वचन—संकलित

परमार्थ परिचय—हेक्टर एस्पॉण्डा डबिन

नितनेम की वाणियाँ और सलोक महला ९—टी. आर. शंगारी

बच्चों के लिये पुस्तकें

आत्मा का सफ़र—विक्टोरिया जोन्ज़

एक नूर ते सभ जग उपजआ—विक्टोरिया जोन्ज़

To order books on the internet, please visit: www.rssb.org

भारत में किताबें ख़रीदने के लिये कृपया नीचे लिखे पते पर लिखें:

राधास्वामी सत्संग ब्यास
बी. ए. वी. डिस्ट्रिब्यूशन सेंटर, 5 गुरु रविदास मार्ग
पूसा रोड, नई दिल्ली 110 005

423

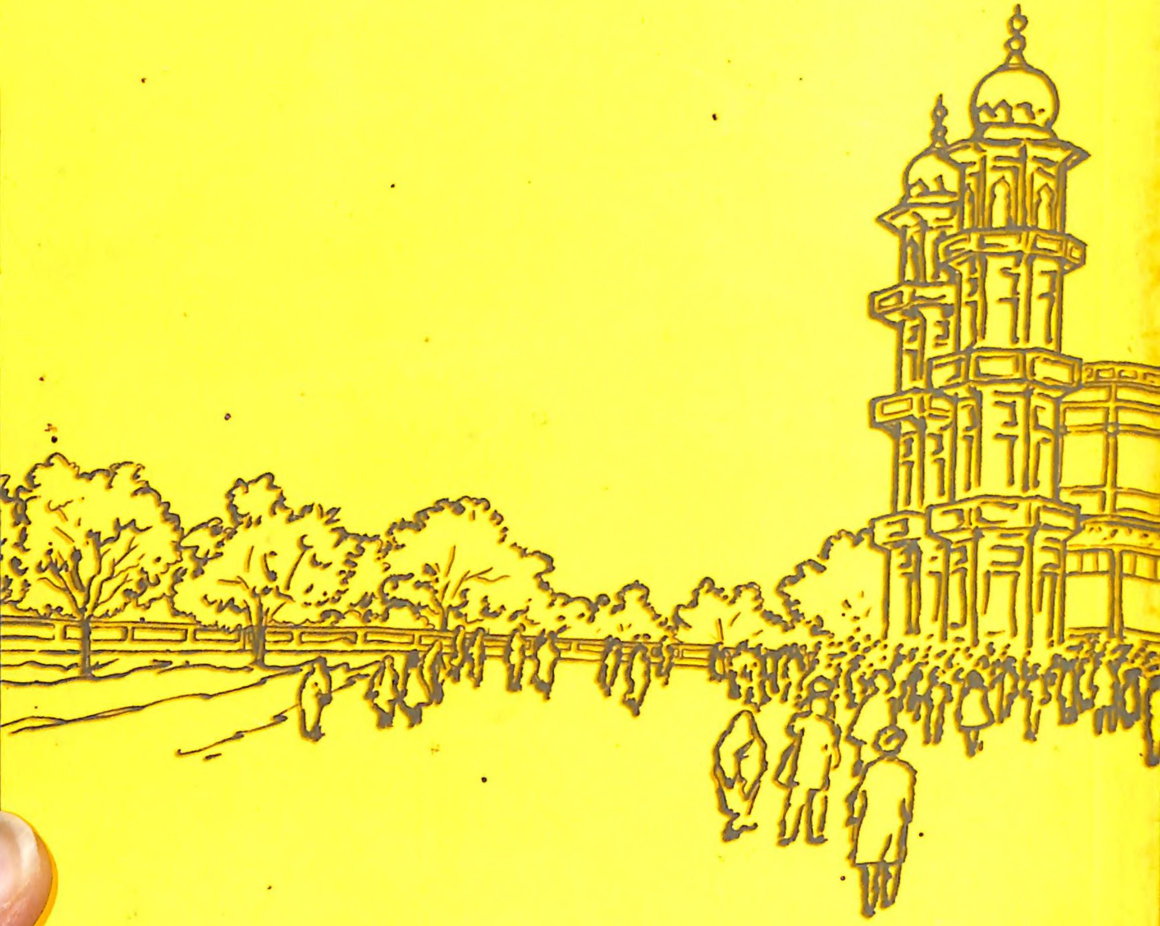

Sant Mat Prakash-2
(Hindi)

ISBN 978-81-8256-745-0